CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ.सं.
५६

ऋग्वेद संहिता

(वैदिकजीवनभाष्ययुता)

पदपाठ, पदार्थ, संस्कृत और
भाषा अनुवाद टिप्पणी और मन्त्रों के
आशय पर व्याख्यान से युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्र.रा.५६

R.

रत्न पुस्तक भण्डार
"ग्रीन हाउस"
२७१, माईतीघर
काठमाडौं, नेपाल
फोन : ४-२४०८५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वे५·६.३५

ऋग्वेद संहिता

(वैदिकजीवनभाष्ययुता)

—०—

पदपाठ, शब्दार्थ, संस्कृत और
भाषा अनुवाद, टिप्पणी और मंत्रों के
आशय पर व्याख्यान से युक्त

प्रथम मण्डल : प्रथम खण्ड

सम्पादक
शिवनाथ आहिताग्नि
पं० शंकरदत्त शास्त्री

NAG PUBLISHERS

नाग प्रकाशक
११ए/यूए, जवाहर नगर, दिल्ली-७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाग प्रकाशक

(१) ११ए/यू० ए० जवाहर नगर, दिल्ली-७
(२) ८ ए/यू० ए० ३ जवाहर नगर, दिल्ली-७
(३) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ० प्र०

ISBN 81-7081-246-1 (SET)

R
Acc. 29053 / 8802-3
NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY पुस्तकालय

प्रथम संस्करण १९०४
द्वितीय संस्करण १९९१

मूल्य: रु० Rs. 2700 (9 Vols Sets)

NAG PUBLISHERS DELHI

श्री नागशरण सिंह द्वारा नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली से प्रकाशित ज्ञान आफसेट, शहजादा बाग, दिल्ली से मुद्रित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेद : ६.३५

॥ ओ३म् ॥

ब्रह्मयज्ञ वा स्वाध्याय की कर्त्तव्यता।

ब्रह्मयज्ञ जिस का दूसरा नाम स्वाध्याययज्ञ है, मनुष्य के उच्च कर्त्तव्यों में से एक है। पंचमहा यज्ञों में यह प्रथम और मुख्य महायज्ञ है। और यह मनुष्य का वह कर्त्तव्य है, जो उसे अपने दूसरे सारे कर्त्तव्य पालन करने के लिये योग्य बनाता है। और अपने स्वतन्त्र फल अलग रखता है, जो बड़े उच्च और पवित्र हैं। शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय की प्रशंसा इस प्रकार लिखी है ॥

शतपथ ब्राह्मण कां० ११ अध्याय ५ ब्राह्मण ७

अथा॒तः स्वा॒ध्यायप्रशꣳसा प्रिये॒ स्वाध्यायप्र-
वच॒ने भवतोयु॒क्तमनाभवत्य॒पराधीनो॒ऽहरहर्॒र्थान्सा-
धय॒ते सुखꣳस्वपितिपरमचिकित्सक॒आत्म॒नोभवती-
न्द्रियसंयम॒श्चैकाराम॒ताचप्रज्ञावृद्धिर्य॒शोलोकपक्तिः।
प्रज्ञाव॒र्धमानाचत॒ुरोध॒र्मान्ब्राह्मण॒मभिनि॒ष्पादयति ब्रा-
ह्मण्यंप्रतिरूपचर्य॑ायशोलोकपक्तिं लोकःप॒च्यमानश्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुभिर्धर्मैर्ब्राह्मणंभुनक्त्यर्चयाचदानेन चाज्येयतयाचा-
वध्यतया च ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

अब इसके आगे स्वाध्याय की प्रशंसा (वर्णन की जाती है) स्वाध्याय (स्वयं वेदादि शास्त्रों का पढ़ना) और प्रवचन (पढ़ाना) यह दोनों बड़े प्रिय कर्म हैं (करनेवालों, को इन में बहुत आनन्द आता है) (इन दोनों के पालन करने से पुरुष) एकाग्रचित्त होजाता है पराधीनता से रहित होजाता है (स्वाध्याय और प्रवचन करने वाला किसी के आधीन नहीं रह सक्ता) और प्रतिदिन वह धनादि अर्थों को प्राप्त करता है (अर्थात् उसके धनादि पदार्थों की प्रतिदिन बृद्धि होती है) वह सुख से सोता है (मन शांत होने से वह आनन्द से सोता है) वह अपना परम चिकित्सक बन जाता है (अर्थात् रोगादिके लिये वह वैद्य का भी पराधीन नहीं होता । प्रथम तो वह रोगादि से पीड़ित ही नहीं होता और हो भी जावे तो उसको अपनी चिकित्सा आपही सूझ जाती है । कोई वैद्य उसके लिये ऐसा चिकित्सक नहीं होसक्ता जैसा वह स्वयं अपने लिये होता है) वा आत्मा के दुःख का परम निवारक होजाता है! इन्द्रियों का संयम,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सदा एकरस रहना, ज्ञान की बृद्धि, यश, और दूस लोगों को निपुण करने का काम, यह सब बातें स्वाध्याय और प्रवचन करने वाले को प्राप्त होती हैं, ज्ञान की वृद्धि होने से यह चार धर्म ब्राह्मण में होजाते हैं,१ (मनुष्यों में सब से ऊंची) ब्राह्मण की पदवी २यथोचित आचार ३ यश और ४दूसरे लोगों को निपुण करना। निपुणता की प्राप्ति के बदले में ये चार धर्म ब्राह्मणके प्रति दूसरे लोगों के होते हैं। १ उसका आदर सत्कार करें२ उसे दान देकर उसकी आजीविका संपादन करें३ उस पर अत्याचार (ज़ुल्म) न होने दें ४ उसको अवध्य समझें ॥१॥

ये ह वै के च श्रमाः। इमेद्यावापृथिवीअन्तरेण स्वाध्यायोहैवतेषांपरमताकाष्ठा यएवं विद्वान्स्वाध्याय मधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

और सचमुच उसके लिये जो इस प्रकार का ज्ञान रखता हुआ स्वाध्याय करता है-जो कुछ इस द्युलोक और पृथिवी के बीच में परिश्रम का काम है स्वाध्याय ही उन सब की परम सीमा है ॥ २ ॥

ब्रह्मयज्ञ वा स्वाध्याय करने की विधि तैत्तिरीयारण्यक में इस प्रकार लिखी है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तैत्ति० आर० प्रपाठक २ अनुवाक ११ ।

ब्रह्मयज्ञेनयक्ष्यमाणः प्राच्यांदिशिग्रामाद
च्छदिर्दर्शउदीच्यांप्रागुदीच्यांवोदितआदित्येदक्षिणत
उपवीयोपविश्य हस्ताववनिज्य त्रिराचामेद्द्भिः परि-
मृज्य सकृदुपस्पृश्य शिरश्चक्षुषी नासिके श्रोत्रे हृद-
यमालभ्य ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

ब्रह्मयज्ञ वा स्वाध्याय की इच्छा करता हुआ ग्राम (वा शहर) से पूर्व की ओर वा उत्तर दिशामें वा ईशान (पूर्वउत्तर कोण) की ओर इतनी दूर जांवे कि घरों की छतें वा छप्पर दिखाई न देवें, सूर्य उदय होने पर यज्ञोपवीती (बायें कन्धे पर जनेऊ डाल कर) बैठ कर दोनों हाथ धोकर तीन बार आचमन करे दोवार मुख को पोंछ कर हाथ धोवे फिर सिर दोनों आंखें दोनों नासिका दोनों कान और हृदय को स्पर्श करे ॥ १ ॥

दर्भाणांमहदुपस्तीर्योपस्थंकृत्वाप्राङासीनः स्वा-
ध्याय मधीयीत .... ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

बहुत सी कुशा बिछा कर उस पर सुखासन से पूर्वाभिमुख बैठ कर स्वाध्याय को पढ़े ॥ ३ ॥

दक्षिणोत्तरौपाणीपादौकृत्वासपवित्रावोमिति प्रतिपद्यते .... ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

बांए जंघा पर दहना पैर रक्खे और उस पर बांया हाथ रख कर उस पर दहना हाथ रक्खे उस में दो कुशाके पवित्रे रक्खे फिर ओ३म् के उच्चारण से आरम्भ करे .... ॥ ४ ॥

त्रीनेव प्रायुंक्तभूर्भुवः स्वरित्याह .... ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

ॐकार के उच्चारण से पश्चात् त्रयी का प्रयोग करे अर्थात् भूर्भुवःस्व इन तीन व्याहृतियों का उच्चारण करे .... ॥ ७ ॥

अथसावित्रींगायत्रींत्रिरन्वाह पच्छोऽर्द्धर्चंशाऽनवानꣳसविताश्रियः प्रसविता श्रियमेवाप्नोत्यथो प्रज्ञातयैवप्रतिपदाछन्दसाꣳसिप्रतिपद्यते ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

इस से पीछे सविता देवता वाली गायत्री का पाठ करे पहिले एक एक पाद पर विराम करके पाठ कर फिर आधी २ ऋचा पर विराम करके पाठ करे। फिर सारी ऋचा का विराम रहित पाठ करे(*) ॥

सविता जो गायत्री का देवता है वह श्री का प्रेरक है इस लिये इस मंत्र का पाठ करने वाला श्री को प्राप्त होता है जो पहिले दिन पाठ किया हो दूसरे दिन उस से आगे आरम्भ करे ॥ ८ ॥

यदि बनमें जाकर पूर्वोक्त विधिसे स्वाध्याय न कर

सूत्र में यह पाठ इस प्रकार से लिखा है ।

ओ३म् भूः । तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

भुवः । भर्गोदेवस्य धीमहि ।

स्वः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओ३म् भूर्भुवः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्य धीमहि ।

स्वः । धियो योनः प्रचोदयात् ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गोदेवस्यधीमहि

धियोयोनःप्रचोदयात् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सके (और गृहस्थ तो सूर्योदय के समय अग्नि होत्र छोड़ कर बन में जा ही नहीं सक्ता) तो घर में ही किसी पवित्र स्थान में बैठ कर (और गृहस्थ अपनी अग्नि शाला में बैठ कर) आचमन आदि करके स्वाध्याय करे, मुख्य कर्म स्वाध्याय है स्थान और कालादि गौण हैं जैसे शतपथ ब्राह्मण में लिखा है॥

शतपथ ब्रा० काण्ड ११ अध्याय ५ ब्राह्मण ७।

यदिहवाअप्यभ्यक्तः अलङ्कृतःसुहितः सुखे शयने शयानःस्वाध्यायमधीत ऽआहैवसनखाग्रेभ्यस्तप्यते यएवंविद्वान्स्वाध्यायमधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

और सचमुच यदि वह (सुगन्धित तैलादि से) अभ्यक्त भी हो और श्रृंगाराभूषण पहने हो और (भोजनादि से) तृप्त,नरम बिछौने पर लेटा हुआ भी हो ऐसी अवस्था में भी यदि स्वाध्याय करता है तो भी वह नखों के अग्रभाग तक तप से पूर्ण हो जाता है जो ऐसा जान कर स्वाध्याय करता है, इस लिये स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये॥ ४॥

स्वाध्याय निरन्तर करना चाहिये और इस में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोई दिन व्यवधान (नागा) नहीं करना चाहिये जैसा शतपथ ब्राह्मण में लिखा है।

शतपथ ब्रा० कां० ११ अ० ५ ब्रा० ७।

यन्ति वाऽआपःएत्यादित्यएतिचन्द्रमायन्ति नक्षत्राणियथाहवाऽएतादेवतानेयुर्नकुर्युरेव हैव तदहर्ब्राह्मणोभवतियदहःस्वाध्यायंनाधीते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्यस्तस्मादप्यृचं वायजुर्वासामवागाथांवाकंव्यां वाभिव्याहरेदव्रतस्याव्यवच्छेदाय ॥ १० ॥

भाषार्थः।

जल सदा चलतेहैं सूर्य सदा चलता है चन्द्रमा सदा चलता है नक्षत्र सदा चलते हैं और जैसे ये देवता न चलें और अपना काम न करें ऐसे ही उस दिन वह ब्राह्मण है जो स्वाध्याय को न करे (अर्थात् जिस तरह जलादि के एक दिन न चलने से,सृष्टि नियम नष्ट भ्रष्ट हो जावे वैसे ही स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण भी सृष्टि नियम का नाशक होता है) इस लिये स्वाध्याय नित्य करना चाहिये और अपने व्रत के न टूटने के लिये चाहे एक ऋचा वा यजुः वा साम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वा गाथा वा कुँठ्या (अर्थात् कोई ब्राह्मण का विधि वाक्य वा अर्थवाद वाक्य) को ही पढ़ लेवे ॥ १० ॥

(व्रत को कदापि तोड़ना नहीं चाहिये, आपत् काल में व्रत को निभाने के लिये चाहे एक ही मंत्र वा श्रुतिका स्वाध्याय कर लेवे ऐसा करने से ही ब्रह्म-यज्ञ सत्र के फल का देने वाला हो सक्ता है)

ऋषि ।

स्वाध्याय के अन्त में ऋषि तर्पण किया जाता है (१) ऋग्वेद के स्वाध्याय में ऋग्वेद के दस मंडलों के

---

(१) आज कल बहुत पुरुष सन्ध्या और गायत्री का जप करकेही तर्पण कर लेते हैं और आशा करते हैं कि ऋषियों की आत्माएं इतनेसे ही तृप्त हो जाती हैं यह बड़ी भूल है ऋषियों की तृप्ति तो तभी हो सक्ती है कि जब उन के सन्तान उन के छोड़े हुए वेदरूपी धनसे पूरा लाभ उठावें,कोई वेद का पाठ मात्र कर लेते हैं परन्तुअर्थ से अनभिज्ञ होने से पूरा लाभ नहीं उठाते,पूरा लाभ तभी हो सक्ता है कि हम मन्त्र द्रष्टा ऋषियों के स्थान में हो कर उनकी उच्चारण की हुई स्तुतियोंको अपना बनावें और उनके देखे हुए पवित्र शब्दों से ही नहीं किन्तु उन के साक्षात् किये हुए धर्मके भावों से भावित होकर परमात्मा से वह गहरा सम्बन्ध पैदा करें जो ऋषि लोगोंने किया था, ऐसा न करनेसे हम ऋषि ऋण से मुक्त नहीं हो सक्ते,इस विषय में प्रोफेसर गोल्डस्टकरका एक सोपालम्भ लेख है जिस ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो द्रष्टा ऋषि हैं उन का तर्पण निम्न लिखितमंत्रों से किया जाता है ॥

कुछ अंश में हमें इस बडे काम को आरम्भ करने के लिये प्रेरण किया है यद्यपि हम इस की योग्यता नहीं रखते, वह लिखते हैं कि "शास्त्रमतानुसारी हिन्दू जानते हैं कि पुत्र पिता के धन के अधिकारी इस नियम पर होते हैं कि वह पितृ सम्बन्धि कर्मों को पूरा करें। आज कल के हिन्दू अपने बड़ों की विद्या के दायभागी होने का अभिमान करते हैं। परन्तु थोड़े से सराहनीय पुरुषों को छोड़ कर उन्होंने उस यज्ञ को करना बन्द कर दिया है, जिस के करने से ही वह इस धर्म रूपी पैतृक धनके अधिकारी हो सक्ते थे। वह यज्ञ जिसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं अर्थात् अपने प्राचीन शास्त्रों का पढ़ना (अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः) एक अध्ययन जिस को उनका सब से प्राचीन धर्म शास्त्र ही नहीं परन्तु छान्दोग्य उपनिषद् भी मनुष्य के तीन मुख्य धर्मों में से एक बतलाता है। निःसन्देह आज कल की प्रजा के मनों में उन के अपने पवित्र शास्त्रों का ज्ञान और स्मृति ऐसे कच्चे तागे से लटके हुए हैं कि उन की तुलना ठीक उन तृणों से हो सकती है जिन के साथ (जैसे महाभारत के इतिहास में आया है) बेचारे ऋषि यायावरों के पितर जरत्कारु अपने अधार्मिक पुत्रके पितृयज्ञ न करने से एक गुहा में लटके हुए नरक में गिरने के भय से कांपते थे"। इस का तात्पर्य यह है कि हमें वेद को अपने कहने का कुछ अधिकार नहीं है जब तक हम वेद का सार्थक स्वाध्याय न करें, वास्तव में इस ग्रन्थ के छापने के मिश [व्याज] से हमने वेद का स्वाध्याय आरम्भ किया है और यदि इस को देखकर औरों को भी इस तरफ प्रेरणा होगी तो हम अपने व्यय और परिश्रम को सफल समझेंगे। (सम्पादक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषितर्पण।

ओं शतर्चिन ऋषयस्तृप्यन्तु।
ओं माध्यमास्तृप्यन्तु।
ओं गृत्समदस्तृप्यतु।
ओं विश्वामित्रस्तृप्यतु।
ओं वामदेव स्तृप्यतु।
ओं अत्रिस्तृप्यतु।
ओं भरद्वाजस्तृप्यतु।
ओं वसिष्ठस्तृप्यतु।
ओं प्रगाथास्तृप्यन्तु।
ओं पावमान्यस्तृप्यन्तु।
ओं क्षुद्रसूक्तास्तृप्यन्तु।
ओं महासूक्तास्तृप्यन्तु।

ऋग्वेद के १० मण्डल हैं "शतर्चिनः" प्रथम मण्डल के द्रष्टा अनेक ऋषियों से तात्पर्य्य है। जिन्होंने अनुमान सौ सौ ऋचाएं देखी हैं।

"माध्यमाः" बीच के अर्थात् २ से ९ मण्डल तक के द्रष्टा अनेक ऋषियों से तात्पर्य्य है। इनमें गृत्समद ऋषि और उसके कुल वाले द्वितीय मण्डलके द्रष्टाहैं॥

विश्वामित्र ऋषि और उसके कुलवाले तृतीय मण्डल के द्रष्टा हैं॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वामदेव ऋषि और उसके कुल वाले चतुर्थ मण्डल के द्रष्टा हैं ॥

अत्रि ऋषि और उसके कुल वाले पंचम मंडल के द्रष्टा हैं ॥

भरद्वाज ऋषि जौर उसके कुल वाले छठे मण्डल के द्रष्टा हैं ॥

वसिष्ठ ऋषि और उसके कुल वाले सातवें मण्डल के द्रष्टा हैं ॥

प्रगाथाः अर्थात् बृहती और सतोबृहती छन्दों से युक्त आठवें मण्डल के प्रगाथकणवआदि अनेक द्रष्टा हैं ।

पावमान सूक्त नवें मण्डल के सूक्त हैं उनके द्रष्टा अनेक ऋषि हैं ॥

क्षुद्र सूक्त और महासूक्त जो दसवें मण्डल के छोटे बड़े सूक्त हैं उन के द्रष्टा अनेक ऋषि हैं ॥

स्वर ।

यह स्थूल रीति से सात अङ्गों में विभक्त हैं । १ उदात्त । २ उदात्ततर । ३ अनुदात्त । ४ अनुदात्ततर । ५ स्वरित । ६ अनुदात्तानुरक्तस्वरित । ७ प्रचय (एक श्रुति)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१–जो अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानों में ऊर्ध्व भाग में बोले जाते हैं वे उदात्त हैं जैसे :–

[ऋ० मं० १ सू० १ मं०४ में]

अग्नेयम् इस में अ और यम् उदात्त हैं; उदात्त के लिये कोई चिह्न नहीं दिया जाता ॥

२–जो कण्ठादि स्थान के अति ऊर्ध्व भाग में बोला जाता है वह उदात्ततर है जैसे :–

(ऋ० मं० १ सू० ९२ मं० ५ में)

"गृभीतान् वौ३षट्" इस याज्या मंत्र में वौ३षट् उदात्ततर है ॥

३–जो कण्ठादि स्थान में अधो भाग में बोला जाता है वह अनुदात्त है जैसेः–

(ऋ० मं १ सू० ६ मं० ८ में)

अनवद्यैः यहां अ और न अनुदात्त हैं, अनुदात्त में नीचे तिर्यक् रेखा दी जाती है ॥

४–जो कण्ठादि स्थान में अत्यन्त अधो भाग में बोला जाता है वह अनुदात्ततरहै जैसे "अनवद्यैः" में व । और (ऋ० मं० ९ सू० १ मं० ३ में)

वरिवोधातमोभव यहां वो अनुदात्ततर है ॥

५–जहां एक ही स्वर में कुछ भाग उदात्त और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुछ भाग अनुदात्त उच्चारण हो वह स्वरित है; जो दो प्रकार का होता है; एक उदात्तानुरक्त, दूसरा अनुदात्तानुरक्त, जैसेः-- (ऋ० मं० १ सू०१ मं०१ में)

पुरोहितम् यहां हि उदात्तानुरक्त स्वरित है। स्वरित में ऊपर खड़ी रेखा दी जाती है॥

६ जिस स्वरित से उदात्त वा स्वरित परे हों वा उदात्त, स्वरित दोनों परे हों वह अनुदात्तानुरक्त स्वरित होता है वह भी तीन प्रकार का होता है १ ह्रस्वानुदात्तानुरक्त स्वरित। २ दीर्घानुदात्तानुरक्त स्वरित। ३ प्लुतानुदात्तानुरक्त स्वरित। जैसेः-

(ऋ० मं० १ सू० २३ मं० १९ में)

"अप्स्व १ न्त" इस में "स्व" स्वरित से परे "न्त" उदात्त है इस से "स्व" ह्रस्वानुदात्तानुरक्त स्वरित हुआ॥

(ऋ० मं० ९ सू० ४ मं० २ में)।

"सनास्व१ विश्वाच" इसमें "स्वर्" इस स्वरित से "विश्वा" यह उदात्तस्वरित दोनों परे हैं इससे यहां भी ह्रस्वाऽनुदात्तानुरक्त स्वरित हुआ, यहां पर १ का अंक इस लिये दिया गया है कि इस स्वरित में अनुदात्त स्पष्ट रीति से उच्चारण हो जैसे "स्वा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आर् विश्वां च "परन्तु स्वा का उच्चारण शीघ्र करते हैं और आर् का विलम्ब से ।

(ऋ० मं० १० सू० ७८ मं० ४ में)

"रथानां नये१राः सनाभयो" यहां 'ये १' दीर्घ अनुदात्तानुरक्त स्वरित है बहुत पुस्तकों में यहां२ का लेख भी देखा जाता है ॥

(ऋ० मं० ९ सू० १ मं० ९ में)

"अभी ३ ममघ्न्यां" यहां "भी३" इस स्वरित से परे "ममघ्न्यां" उदात्त स्वरित है इसलिये 'भी ३' प्लुतानुदात्तानुरक्त स्वरित हुआ ॥

(ऋ०मं०१०सू० १४४ मं०४ में)

"शतचक्रंयो३ह्योवर्तनि" यहां "ह्यो" स्वरित परे रहने से यो ३ प्लुतानुदात्तानुरक्त स्वरित हुआ ॥

७ स्वरित के आगे जो अनुदात्त है उसको एक श्रुति स्वर होजाता है इस का प्रचय और तान भी नाम है । जैसे ॥

(ऋ०मं०१ सू०१ मं४ में)

देवेषु गच्छति। यहां गच्छति में एक श्रुति स्वर है। इसका चिन्ह नहीं है परन्तु जिस स्वरित पर अनुदात्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के आगे उदात्त वा स्वरित हो वह अनुदात्त ही बना रहता है जैसे "द्यो वर्तनिः" यहां "द्यो" स्वरित से आगे "व" को एक श्रुति हुई परन्तु "त" अनुदात्त ही बना रहा क्योंकि इसके आगे "निः" उदात्त है ॥

छन्द

मुख्य वैदिक छन्द सात हैं अर्थात् गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुप् और जगती शेष उनके भेद हैं वा अतिछन्द और विच्छन्द हैं ॥

छन्दों की पहचान प्रायः अक्षर संख्या से होती है यदि अक्षर पूरे न हो सकें तो निम्नलिखित विधि से एक वा दो अक्षर प्रत्येक पाद में बढ़ा लियेजाते हैं ॥

(१) 'य' 'व' के किसी दूसरे अक्षर के साथ संयोग को इ उ बढ़ा कर अलग करलेते हैं जैसे "वरेण्यम्" को "वरेणियम्"; "स्वः" को "सुवः" ।

(२) गुण और बृद्धि को अलग करलेते हैं ॥

जैसे 'ए' को 'अ' और 'इ' करलेते हैं; 'ओ' को 'अ' और 'उ', 'ऐ' को 'अ' वा 'आ' और 'ए', 'औ' को 'अ' वा 'आ' और 'ओ' । यदि इस प्रकार बढ़ाने से भी छन्द की अक्षर संख्या पूरी न हो वा एक दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अक्षर अधिक हों तो वे छन्द विराडादि नामों से पुकारे जाते हैं जैसे नीचे कोष्ट में दिखलाया है ॥

छन्दांसि	विराट्	निचृत्	शुद्धा	भुरिक्	स्वराट्
गायत्री	२२	२३	२४	२५	२६
उष्णिक्	२६	२७	२८	२९	३०
अनुष्टुप्	३०	३१	३२	३३	३४
बृहती	३४	३५	३६	३७	३८
पङ्क्तिः	३८	३९	४०	४१	४२
त्रिष्टुप्	४२	४३	४४	४५	४६
जगती	४६	४७	४८	४९	५०

छन्दों की आर्षी दैवी आदि संज्ञा भी अक्षर संख्या से होती है जैसे नीचेके कोष्टमें दिखलाया गया है ॥

छन्दः	गायत्री	उष्णिक्	अनुष्टुप्	बृहती	पङ्क्तिः	त्रिष्टुप	जगती
आर्षी	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४८
दैवी	१	२	३	४	५	६	७
आसुरी	१५	१४	१३	१२	११	१०	९
प्राजापत्या	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२
याजुषी	६	७	८	९	१०	११	१२
साम्नी	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४
आर्च्ची	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६
ब्राह्मी	३६	४२	४८	५४	६०	६६	७२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छन्दों की वर्णानुक्रम सूची।

छन्दों के अक्षर और पाद संख्या निम्न प्रकार से हैं सुगमता के लिये इनको वर्णानुक्रम से लिखा जाता है ॥

अतिजगती-अति छन्द। पांच पाद ।१२।१२।१२।८।८।

अतिधृतिः-अतिच्छन्द। आठ पाद
१२।१२।८।८।८।१२।८।८।

अतिनिचृत्-गायत्रीभेद। तीन पाद। ७। ६। ७॥

अतिशक्वरी-अतिछन्द। पांच पाद १६।१६।१२।८।८।

अत्यष्टिः-अतिच्छन्द। सात पाद।
१२।१२।८।८।८।१२।८॥

अत्युक्तम्-दोपाद। ४। ४

अनुष्टुप् (ब्) मुख्यछन्द। चारपाद। ८।८।८।८॥

अनुष्टुब्गर्भा-उष्णिग्भेद। चारपाद। ५।८।८।८॥

अभिकृतिः-विच्छन्द। तेरह पाद।
८।८।८।८।७।७।८।८।८।७।७।८।८॥

अभिसारिणी-त्रिष्टुब्भेद। चारपाद१०।१०।१२।१२॥

अष्टिः-अतिच्छन्द। पांचपाद। १६।१६।१६।८।८॥

आकृतिः-विच्छन्द।दसपाद।१६।८।८।८।८।८।८।८।८।८॥

आनुष्टुभ प्रगाथः। अनुष्टुप्+गायत्री+गायत्री॥

आस्तारपङ्क्तिः-पङ्क्तिभेद। चारपाद।८।८।१२।१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्तम्-एक पाद । ४ ।

उत्कृतिः-विच्छन्द । दसपाद ।

१०।८।१३।९।१२।११।१०।११।८।१२॥

उपरिष्टाज्ज्योतिः-त्रिष्टुब्भेद। चारपाद। १२।१२।१२।८॥

उपरिष्टाद्बृहती-बृहतीभेद । चारपाद।८।८।८।१२॥

उरोबृहती-बृहतीभेद । चारपाद । ८।१२।८।८ ॥

उष्णिक्-मुख्यछन्द । तीनपाद ।

८।८।१२। वा चारपाद ।७।७।७।७।

उष्णिग्गर्भा-गायत्री भेद तीनपाद । ६।७।११॥

ऊर्ध्वबृहती-बृहतीभेद । तीनपाद ।१२।१२।१२॥

एक पदाविराट्। एकपाद। १० ॥

ककुभ् (ब्)-उष्णिग्भेद । तीनपाद ।८।१२।८॥

ककुब्न्यंकुशिराः-उष्णिग्भेद । तीनपाद ।११।१२।४॥

काकुभप्रगाथः-ककुप्+सतोबृहती ॥

काविराट्-अनुष्टुब्भेद । तीनपाद ।९।१२।९॥

कृतिः-अनुष्टुब्भेद। तीनपाद । १२। १२। ८॥

कृतिः-विच्छन्द । दसपाद ।८।८।८।८।८।८।८।८।८।८ ॥

गायत्री-मुख्यछन्द । तीनपाद । ८।८।८ ॥

जगती-मुख्यछन्द। चारपाद ।

१२।१२।१२।१२। वा दो१२ दो११ ॥

ज्योतिष्मती-त्रिष्टुब्भेद। चारपाद। १२।१२।१२।८। वा

८।१२।१२।१२। वा १२।८।१२।१२।वा।१२।१२।८।१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तनुशिरा-उष्णिग्भेद। तीनपाद। ११।११।६॥

त्रिष्टुप् (ब्)-मुख्यछन्द। चारपाद।११।११।११।११।
वा दो १२ दो ११॥

द्विपदाविराट्-गायत्रीभेद। दोपाद।१२।८।वा।१०।१०॥

धृतिः-अतिच्छन्द। सातपाद।१२।१२।८।८।८।१६।८॥

नष्टरूपा-अनुष्टुब्भेद। तीनपाद ।९।१०।१३॥

न्यंकुसारिणी-बृहतीभेद। चारपाद ।८।१२।८।८॥

पङ्क्तिः-मुख्यछन्द। पांचपाद ।८।८।८।८।८॥

पङ्क्त्युत्तरा-त्रिष्टुब्भेद। पांचपाद।१०।१०।८।८।८॥

पदपङ्क्तिः-गायत्रीभेद। पांचपाद।
५।५।५।५।६ वा ५।५।५।४।६॥

पादनिचृत्-गायत्रीभेद। तीनपाद ७।७।७॥

पिपीलिकमध्या-उष्णिग्भेद। तीनपाद ।११।६।११॥

पिपीलिकमध्या-अनुष्टुब्भेद। तीनपाद। १२।८।१२॥

पिपीलिकमध्या-बृहतीभेद। तीनपाद । १३।८।१३॥

पुरउष्णिक्-उष्णिग्भेद। तीनपाद । १२।८।८॥

पुरस्ताज्योतिः-त्रिष्टुब्भेद। चारपाद।८।१२।१२।१२॥

पुरस्ताद्बृहती-बृहतीभेद। चारपाद ।१२।८।८।८॥

प्रकृतिः-विच्छन्द। आठपाद।१५।८।८।८।८।८।८।२१॥

प्रतिष्टा तीन पाद ।६।५।६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिष्ठा-गायत्रीभेद। तीनपाद ।८।७।६॥

प्रस्तारपङ्क्तिः-पङ्क्तिभेद। चारपाद। १२।१२।८।८॥

वार्हत प्रगाथः-बृहती + सतोबृहती ॥

बृहती-मुख्यछन्द। चारपाद। ८।८।१२।८वा९।९।९।९॥

मध्यम्-तीनपाद ।४।८।४॥

मध्येज्योतिः-त्रिष्टुब्भेद। चारपाद। वा१२।८।१२।१२।
वा १२।१२।८।१२॥

महापंक्तिः-जगतीभेद। छःपाद ।८।८।७।६।१०।९।
वा ८।८।८।८।८।८॥

महापदपंक्तिः-अनुष्टुब्भेद। छःपाद ।५।५।५।५।५।६॥

महावार्हत प्रगाथः। महाबृहती+महासतोबृहती ॥

महाबृहती-त्रिष्टुब्भेद। पांचपाद।
८।८।८।८।१२। वा १२।८।८।८।८॥

महासतोबृहती-जगतीभेद। पांचपाद ८।८।८।१२।१२॥

यवमध्या-गायत्रीभेद। तीनपाद ।७।१०।७॥

यवमध्या-त्रिष्टुब्भेद। पांचपाद ।८।८।१२।८।८॥

वर्धमाना-गायत्रीभेद। तीनपाद ।६।७।८॥

विकृतिः-विच्छन्द। ग्यारहपाद।
८।८।८।८।८।८।८।८।८।८।१२॥

विपरीता-पंक्तिभेद। चारपाद ।८।१२।८।१२॥

विपरीतोत्तर प्रगाथः-बृहती + विपरीता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विराड्-अनुष्टुब्भेद । तीनपाद ।१०।१०।१०॥
वा ११।११।११।

विराट्-पङ्क्तिभेद । चारपाद ।१०।१०।१०।१०॥

विराट्पूर्वा-त्रिष्टुब्भेद पांचपाद । १०।१०।८।८।८॥

विराड्रूपा-त्रिष्टुब्भेद । चारपाद ।११।११।११।८॥

विराट्स्थाना-त्रिष्टुब्भेद चारपाद ।९।९।१०।११॥
वा १०।१०।९।११॥

विषमपदा-बृहतीभेद । चारपाद ।९।८।११।८॥

विष्टारपङ्क्तिः-पङ्क्तिभेद । चारपाद ।८।१२।१२।८॥

विष्टारबृहती-बृहतीभेद । चारपाद ।८।१०।१०।८॥

शक्वरी-अतिच्छन्द । सातपाद ।८।८।८।८।८।८।८॥

सतीबृहती-पङ्क्तिभेद । चारपाद ।१२।८।१२।८॥

संकृतिः-विच्छन्द । दसपाद ।
८।८।८।८।११।८।११।११।८।१५॥

संस्तार पङ्क्तिः-पङ्क्तिभेद । चारपाद ।१२।८।८।१२॥

सुप्रतिष्टा-तीनपाद ।७।६।७॥

स्कन्धोग्रीवी-बृहतीभेद । चारपाद ।८।१२।८।८॥

ह्रसीयसी-गायत्रीभेद । तीनपाद ।६।६।७॥

देवता ।

शतपथ ब्राह्मणमें देवता विषय में ऐसा लिखा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(शत०ब्रा० काण्ड ११ अ० २। ब्रा०३)

ब्रह्मवाऽइदमग्रऽआसीत्। तद्देवानसृजतत्तद्देवान्सृष्ट्वैषुलोकेषुव्यारोहयदस्मिन्नेवलोकेऽग्निंवायुमन्तरिक्षेदिव्येवसूर्यम्॥ १॥

भाषार्थः।

सचमुच यह (जगत्) पूर्वमें ब्रह्म था। उस (ब्रह्म) ने देवताओं को उत्पन्न किया। उसने देवताओं को उत्पन्न करके इनलोकों में अलग अलग स्थापन किया। इसी लोक (पृथिवी) में अग्नि को। अन्तरिक्ष में वायु को द्युलोक में सूर्यको॥ १॥

अथयेऽतऊर्ध्वालोकाः। तद्याअतऊर्ध्वादेवतास्तेषु तादेवताव्यारोहयत्सयथाहैवेमऽआविर्लोकाइमाश्च-देवताएवमुहैवतआविर्लोकास्ताश्चदेवतायेषुतादेवताव्यारोहयत्॥ २॥

भाषार्थः।

इससे पीछे जो इस से ऊपर के लोक हैं (उनको बनाया)। और जो इस से ऊपर के देवता हैं उन देवताओं को उन (लोकों) में अलग अलग स्थापन किया। और जिस प्रकार ये लोक प्रगट (दृष्ट) हैं और ये देवता प्रगट हैं उसी प्रकार वे लोक प्रगट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं और वे देवता प्रगट हैं जिन लोकोंमें उन देवताओं को अलग अलग स्थापन किया ॥२॥ (यह जो पृथिवी अंतरिक्ष और द्यु है इनसे ऊपर और भी लोक हैं जो हमारी दृष्टि की सीमा से बाहर हैं। परन्तु वहांके रहने वालोंको ऐसेही प्रगट हैं जैसे हम को यह तीनों लोक और जिस प्रकार अग्नि वायु और सूर्य इन तीन लोकों में देवता हैं इसी प्रकार ऊपर के लोकों में देवता हैं। जो हमारे दृष्टि गोचर नहीं होते)

अथ ब्रह्मैवपरार्धमगच्छत् । तत्परार्धंगत्वैक्षत कथंन्विमाँल्लोकान्प्रत्यवेयामिति तद्द्वाभ्यामेवप्रत्यवैद्रूपेण चैव नाम्ना च सयस्य कस्य च नामास्तितन्नाम यस्योऽअपिनामनास्तियद्वेदरूपेणेदꣳरूपमिति तद्रूपमेतावद्वाऽइदंयावद्रूपंचैव नाम च ॥ ३ ॥

भाषार्थः

इस से पीछे ब्रह्म आप (ऊपर के लोकों के) परे जो लोक हैं वहां गया। उस परे के लोक में जाकर (सोचा) कि मैं किस प्रकार इन लोकों में फिर उतरूं वह दो प्रकार से (इन लोकों में) उतरा अर्थात् रूप द्वारा और नाम द्वारा, इसलिये जिस किसी (पदार्थ) का नाम है वह उसी (ब्रह्म) का नाम है, और जिस का नाम नहीं है और जो (पदार्थ) रूप से जाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता है। जैसे (अमुक पदार्थ) अमुक रूप वाला है, वह उसी (ब्रह्म) का रूप है। सचमुच यह (सृष्टि) इतनी ही है जितना नाम और रूप है ॥ ३ ॥

तात्पर्य्य यह है कि यह सब जगत् नाम और रूप से ब्रह्म का आविर्भाव (manifestation) है, इस लिये अग्न्यादि देवता भी नाम और रूप दोनों से ब्रह्म के आविर्भाव हैं। और इनकी स्तुति और पूजा जो वेद मंत्रों में वर्णन की गई है वह ब्रह्म की स्तुति और पूजा है। केवल नाम से नहीं किन्तु रूप से भी, अर्थात् अग्नि ब्रह्म का नाम ही नहीं किन्तु साक्षात् रूप भी है। यह यजुर्वेदके मंत्रसे भी स्पष्ट है।

यजु० अ० ३२ मं० १।

तदे॒वाग्निस्तदा॑दि॒त्यस्तद्वा॒युस्तदु॑ च॒न्द्रमाः।

तदे॒व शु॒क्रं तद्ब्रह्म॒ ता आप॒: स प्र॒जाप॑तिः ॥

भाषार्थः।

वह (ब्रह्म ही) अग्नि है वही सूर्य है वही वायु है वही चन्द्रमा है (जो कुछ) प्रकाश युक्त है, सो वही है, वेद वही है, जल (देवता) वही है। प्रजापति (जगत का स्वामी) वही है ॥

अग्न्यादि देवताओं के नाम और रूप में परमात्मा की स्तुति और पूजा करने की आवश्यकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इसलिये है। कि केवल शुद्ध रूप में वह अज्ञेय है(१)। और जैसे लोक में यह नियम देखा जाता है कि बिना जाने कोई किसी पदार्थ से लाभ नहीं उठा सक्ता इसी प्रकार परमात्मा को जाने बिना उस की सत्ता से कोई लाभ नहीं उठा सक्ता। और उस का जानना इस जगत में ही सम्भव है सो भी नाना देवता रूपमें। क्योंकि उसका महत्व जो इस जगत में भी देखा जाता है इतना बड़ा है कि समष्टि रूप

---

(१) यह उपनिषदों में आता है, कि परमात्मा का शुद्ध रूप "नेति नेति" से अतिरिक्त वर्णन नहीं हो सकता। और इस से कोई लाभ नहीं उठा सकता देखो वृ० आ० उ० ३।८।८ वा वैदिक जीवन भाग १ पृ०१०।

गौतमबुद्ध परमात्मा के विषय में प्रश्न करने पर मौन होजाते थे—जिससे उनका यही आशय था कि वह ज्ञेय पदार्थोंमें से नहीं है

पश्चिम देश के बडे २ विद्वान् प्रायः (Agnostic) कहलाए हैं, क्योंकि वे कहते हैं कि मनुष्य परमात्मा को नहीं जान सकता। यदि उनको ऋषियों का उपाय ज्ञात होता तो वह परमात्मा की सत्ता से अवश्य लाभ उठाते। वास्तवमें जितने आस्तिक मत हैं वे वेद के पीछे के हैं और वेद से ही निकले हैं। इस लिये उन मतों के अनुयायिओं ने भी परिमित रूप में ही परमात्मा को जानकर उसकी सत्ता से लाभ उठाया है। इन मतों का "खुदा" वा "गौड" परमात्मा नहीं है किन्तु राजा वरुण वा इन्द्र ही है जैसे उन मतोंकी पुस्तकों में उसके वर्णन को वेद में इन्द्र और वरुण के वर्णन के साथ मिलाने से स्पष्ट प्रतीत होता है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में उसका ज्ञान मनकी शक्ति से बाहर है। इसलिये परिमित रूप में उसके विकास और शक्तियां जैसे अग्नि, वायु, द्यावापृथिवी, सूर्य, उषा, सोम, वरुण, मित्र, इन्द्र, रुद्र, ब्रह्मणस्पति, अश्वि, पूषा, सविता इत्यादिरूप में उसकी महिमा वेद में वर्णन की गई है। और स्तुति नमस्कार और पूजा द्वारा इनके साथ गहरा सम्बन्ध उत्पन्न करने का उपदेश है॥

अनेक देवताओं के साथ सम्बन्ध की आवश्यकता इसलिये भी है कि वे भिन्न भिन्न गुणों वाले हैं सब मिलकर परमात्मा के गुणों को प्रगट करते हैं, इस लिये पूर्णता की प्राप्ति के लिये और प्रत्येक निर्बलता (कमज़ोरी) को जीतने के लिये सब के साथ अलग अलग सम्बन्धस्थापन करने की आवश्यकता है, जैसे नरभाव अभयता और बल की प्राप्ति के लिये इन्द्र के साथ, सृष्टि नियम के अनुकूल अपना आचरण बनाने के लिये और पापों से बचने के लिये वरुण के साथ, सत्य का ज्ञान ब्रह्मतेज और भक्ति-भाव बढाने के लिये अग्नि के साथ, इसी प्रकार अन्य गुणों के परिपाक के लिये अन्य देवताओं के साथ मेल करने की आवश्यकता है, जैसे लोक में निपुणता की प्राप्ति भिन्न भिन्न सब पदार्थों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के साथ सम्पर्क करने से ही होती है, और जो किसी एक विषय की ओर ध्यान नहीं देता वह उस में अपूर्ण रह जाता है और इस लोक में पूर्ण नहीं कहलाता वैसे ही अपने सब दोष दूर करने के लिये सब देवताओं के साथ अलग अलग सम्पर्क करना अत्यावश्यक है,इसीलिये ऋग्वेद में एक ही देवताकी स्तुति बहुत सूक्तोंमें लगातार नहीं है, प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में अग्नि की, दूसरे में वायु इन्द्र मित्र और वरुण की तीसरे में अश्वि इन्द्र सरस्वती और विश्वेदेवों की, इस प्रकार से नाना देवताओं की स्तुति हैं और आदि से आरम्भ करके स्वाध्यायकरने में शीघ्र ही सब देवताओं की पहचान होजाती है ॥

ऋक्, सूक्त, मंत्र और मंत्रार्थ।

ऋक् वह है जिससे स्तुति की जाय,ऋग्वेद के मंत्रों में प्रायः देवताओं की स्तुति और उनके गुणों का कथन है। और इसके स्वाध्याय का यह आशय है कि बारम्बार देवताओं के गुण कथन और चिन्तन करने से वही दिव्य गुण स्तुति करने वाले में हों जावें। यह एक अटल नियम है, कि जैसा मनुष्य चिन्तन करता है वैसा ही शनैः शनैः बन जाता है, इस नियम से ऋग्वेद को समझकर स्वाध्याय करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाला देवताओं जैसे गुणोंसे सम्पन्न होजाता(१)है।

पूर्ण रीति से किसी एक अर्थ के प्रतिपादक मंत्र समुदाय को सूक्त कहते हैं, जैसे संस्कृत में स्तोत्र और हिन्दी में भजन कई एक पदों के समूह का

---

(१) इस में कोई शंका करे, कि उत्तम गुणों के धारण करने का उपदेश वेद से अन्य पुस्तकों में भी है। फिर वेद जैसी कठिन पुस्तक को पढ़ने और समझने का प्रयास करना वृथा है। इसका उत्तर यह है, कि एक तो वेद में जितना उत्तम गुणों का कथन है इतना किसी और ग्रन्थ में नहीं है और स्वाध्याय में नित्यप्रति उनके चिन्तन से वह गुण इच्छावान् में बिना बहुत प्रयास के ही धीरे धीरे होते जाते हैं यह किसी और ग्रन्थ के विषय में नहीं कहा जा सकता, दूसरी यह बात है जो वेद को पढ़ना अत्यावश्यक बनाती हैं। कि वेद का उपदेश निर्भ्रान्त है और अपौरूषेय होने से उसमें वर्णन किये हुए गुण ऐसे नहीं जो मनुष्य को कभी भी हानिकारक हो सकें। या यूं कहो कि वेदके वाक्य मनुष्य के एक ओर झुकाओ से होने वाले दोषों (errors due to personal equation) से रहित हैं, जैसे बहुत पुस्तकों में जो माननीय समझी जाती हैं किसी से लड़ाई झगड़ा न करने वाला, धन की वा यशकी इच्छा न करने वाला सब मनुष्य मात्र को एक जैसा समझने वाला, अवज्ञा वा मारपीट का भी बदला न लेने वाला, सब के साथ मीठा रहने वाला मनुष्य आदर्श के योग्य समझा जाता है। और उसको सब देवता स्वरूप और महात्मा बतलाते हैं परन्तु वेद में देवताओंके इससे भिन्न गुण पाए जाते हैं। वेद के उपदेश से जो मनुष्य लड़नेके लिये उद्यत है जो किसीसे नहीं डरता, जो भयानक है और सब को दबावमें रखनेवाला है,जो अवज्ञाकोसहन नहीं करता जो और मनुष्यों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम है, वैसे ही कई एक मन्त्रों के समूह का नाम सूक्तहै। ऋग्वेदकी छपीहुई शाखामें १०२८ सूक्त हैं ॥

मन्त्र शब्द का अर्थ यह है कि जिस से मनन किया जाय, वेद मन्त्रों का अर्थ जानने से मन को "चिन्तन"के लिये बहुत अधिक सामग्री मिल सकती है। जिस को वृथा चिन्तन का स्थानीय बनाने से मनुष्य अपने जीवन को बहुत उच्च बना सकता है। वेद के अर्थ जानने में ऐसी कठिनता नहीं है, जैसे लोग समझते हैं,कठिनाई प्रतीत होने का कारण यही है कि उनका पठन पाठन छूट गया है,जितना काल आज कल पंडित लोग व्याकरण और न्याय के सूक्ष्म विषयों में व्यर्थ लगाते हैं, उससे कम काल वेद में लगाने से चारों वेदों के तीन चौथाई मन्त्रों का अर्थ आज कल भी जान सकते हैं। ब्रह्मचारी को उपनयन कराते ही वेद का अर्थ पढ़ाना आरम्भ कर देना चाहिये, यह समझना बड़ी भूल है कि बिना वेदाङ्गों के पढ़े वेद का अर्थ नहीं आ सकता, वेद का

की अपेक्षा अपनी जाति से विशेष प्रेम रखता है जो धन धान्य से समृद्ध और यशस्वी है जो नर के सब गुणों से भूषित है वही देवतुल्य है। जब वेद के और लोक के उपदेशों में इतना अन्तर है तो उन्नति की इच्छा करने वाला बिना वेद के पढ़े कैसे संतोष को प्राप्त कर सकता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थं तो परमात्मा ने मनुष्य को हृदय रूप में पहले ही से दान किया हुआ है, वेदांग पीछे बने हैं और एक मर्य्यादा बान्धने का और वेदों की रक्षा करने का उनका प्रयोजन है, वेद को मर्य्यादा पूर्वक पढ़ना और उन की रक्षा करना भी आर्य्य का धर्म होने से वेदांग पढ़ना भी धर्म है, परन्तु अधिक समय वेद पढ़ने में लगाना चाहिये, पूर्व आचार्य्योंकी यह मर्यादा थी कि श्रावण की पौर्णमासी से आरम्भ करके ५॥ वा ६॥ महीने तक प्रतिदिन वेद और शेष ६॥ वा ५॥ महीनों में शुक्लपक्ष में वेद और कृष्णपक्ष में वेदांग पढ़ते पढ़ाते थे, इस प्रकार साल के १२ महीने में २॥ वा ३ महीने वेदांग और ९ वा ९॥ महीने वेद पढ़े जाते थे यदि आजकल भी इसी नियम पर चला जावे तो बहुत शीघ्र वेद का प्रचार हो सकता है॥

सब लौकिक शब्दवेद के शब्दों से ही बने हैं, इस लिये वैदिक शब्दों का भी वही अर्थ है जो लोक में उन शब्दों का अर्थ है, यह बात जैमिनि मुनि पूर्व मीमांसा० अध्याय १, पाद २, सूत्र ४० में स्पष्ट कह गएहैं, वह सूत्र यह है "अविशिष्टस्तुवाक्यार्थः" इस का अर्थ यह है कि लोक में जो पद और उनके अर्थ हैं उन से वेद के पद और उनके अर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अविशिष्ट हैं अर्थात् भिन्न नहीं हैं, इसलिये जो वैदिक शब्द अमर कोशादि लौकिक शब्दों के कोशों में मिल जावें उनका प्रायः वही अर्थ है जो वहां दिया हुआ है, जो शब्द आज कल लोक में कम आते हैं वह प्रायः निघण्टु में मिल जाते हैं, जो वहां भी नहीं मिलते उनका वेद में ही अन्य मन्त्रों में प्रयोग देखने से अर्थ का निश्चय हो सकता है, इस में प्रोफेसर मैक्समूलर की सूची (Index to Rigveda) से बहुत सहायता मिलती है, इस सूची में उन्होंने शब्दों के अर्थ नहीं दिये हैं परन्तु उन सब मन्त्रों का पता बता दिया है जहां जहां वही शब्द आया है वैदिक शब्दों का सब से अच्छा कोष वेद ही है एक वार निघण्टु और लौकिक कोषों की सहायता से इनको समग्र पढ़ कर फिर भक्ति पूर्वक स्वाध्याय करने से वेद भगवान् !!

उतोत्वस्मैतन्वं१विसस्रेजायेवपत्यउशतीसुवासाः ॥

(ऋ० १०।७१।४)

स्वयं उसको अपना रूप प्रगट कर देते हैं जैसे सुंदर वस्त्रों से ढकी हुई प्रेम भरी पत्नी पति को अपना रूप दिखला देती है॥ ऋग्वेदमें १०५८७ मंत्र हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओ३म्

—: जय :—

न दक्षिणा विचिकिते न सव्या न प्राचीन मादित्यानोतपश्चा । पाक्या चिद्वसवोधीर्याचिद्युष्मा नीतो अभयं ज्योतिरश्याम् । ऋ० २। २७। ११।

अथ ऋग्वेदसंहिता।

ऋ० मं० १ सू० १।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

अग्निमीळेपुरोहितं यज्ञस्यदेव मृत्विजम्। होतारंरत्नधातमम्। १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
ईळे	स्तौमि	मैं स्तुति करता हूं
पुरःऽहितम्	पुरएनंदधति तम् (यास्कः)	पुरोहित रूपसे वर्तमान को
यज्ञस्य	यजतिःपूजाकर्मा तस्य	पूजा कर्म के
देवम्	दाता दीपयिता द्योतयिता वा तम्	देने वाले, प्रकाश करने वाले वा द्योतन करने वाले को
२ऋत्विजम्	ऋतौ ऋतौ यजति तम्	ऋतु२ में पूजने वाले को
होतारम्	आह्वातारम्	बुलाने वाले को
३रत्नधातमम्	रमणीयानांधनानां दातृतमम	रमणीय धनों के सब से अधिक देने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

(अहम् देवानाम्) पुरोहितम् पूजाकर्मणो दातारं दीपयितारं द्योतयितारं वा, ऋतौ ऋतौ यजन्तम्, (देवानाम्) आह्वातारं रमणीयानां धनानां दातृतम मग्निं स्तौमि ॥ १ ॥

भावार्थः ।

मैं (देवताओं में) पुरोहित (रूप से वर्तमान) पूजा कर्म के देने वाले, प्रकाश करने वाले वा द्योतन करने वाले, ऋतु ऋतु में (देवताओं के) पूजने वाले (देवताओं) के बुलाने वाले, रमणीय धनों के सब से अधिक देने वाले अग्नि की स्तुति करता हूं ॥

विनियोग—यह सूक्त प्रातरनुवाक के आग्नेय क्रतु में पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० ४ । १३ । ७)

और पहला मन्त्र पवमानेष्टि में स्विष्ट कृत का याज्या भी है। (आ० श्रौ० सू० २। १ । २६ ।)

(१) अग्नि देवता समष्टि के ब्रह्मभाव को सूचन करते हैं जैसे राष्ट्र में ब्राह्मण (Savants) अगवैया होते हैं। और देश के धर्म धन और सुख की वृद्धि के लिये विद्या में तत्पर रह कर अपने ज्ञान के "प्रकाश" से सब को रस्ता दिखलाते हैं। इसी प्रकार अग्नि देवता परमात्मा की देवसृष्टि में अगवैया हैं वा देवताओं के पुरोहित हैं। जैसे क्षत्रिय और वैश्यादि प्रजा सब देशों में ब्राह्मणों (men illumined with the light of learning) के पीछे चलते हैं इसी प्रकार सब देवता अग्नि के पीछे चलते हैं । क्योंकि मातरिश्वा के ताईं अग्नि के प्रकट हुए पीछे ही सब देवताओं की उत्पत्ति हुई है (देखो पृ० ६९७) ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) अग्निदेव पूजा कर्म के देने वाले हैं। उन्हीं की कृपा से मनुष्य में देवताओं की पूजा के लिये श्रद्धा और उत्साह उत्पन्न होते हैं। यदि अग्निदेव मनुष्य को पूजा का दान न करें तो उस की आत्मा दरिद्री रहती है और पूजा कर्म से होने वाले लाभों से वञ्चित रहती है। अग्निदेव पूजा कर्म के "दीपयिता" प्रकाश करने वाले हैं और मनुष्य की बुद्धि को उद्दीपन करके उससे पूजा कर्म "द्योतन" कराते हैं॥

(३) पहिले अग्नि देवता यज्ञ में ऋत्विक् हैं पीछे मनुष्य। ऋ० २।१।२। में होता, पोता, नेष्टा, अध्वर्यु, आग्नीध्र, ब्रह्मा इत्यादि सारे ऋत्विक् अग्नि को ही बतलाया है॥

(४) वही देवताओं के बुलाने वाले हैं। देवपुरोहित होने से उन्हीं के पीछे २ देवता आते हैं॥

(५) अग्नि देवता पूजा के दान द्वारा मनुष्यकी आत्मा को ही उन्नत नहीं करते, किन्तु उन जैसा धनोंके देने वाला भी दूसरा नहीं है। धन भी कैसे, रमणीक (सुन्दरवस्त्र, सुवर्ण के आभूषण, गौ, घोड़े, रथ इत्यादि रूप में)

ऋ० मं०१ सू० १।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

अ॒ग्निः पूर्वे॑भि॒र्ऋषि॑भि॒रीड्यो॒ नूत॑नैरु॒त।
स दे॒वाँ एह व॑क्षति ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निः	अग्निः	अग्नि
पूर्वेभिः	पुरातनैः	प्राचीनों से
१ ऋषिऽभिः	ऋषिभिः	ऋषियों से
२ ईड्यः	स्तुत्यः	स्तुतिकरने के योग्य
१ नूतनैः	इदानींतनैः	नयों से
उत	अपि	भी
सः	सः	वह
२ देवान्	देवान्	देवताओं को
आ	आ +	—
इह	इह	यहां
३ वक्षति	आ+वक्षति, आवहति	लाता है

संस्कृतार्थः ।

पुरातनैः(भृग्वङ्गिरः प्रभृतिभिः)ऋषिभिःइदानींतनैः(अस्माभिः)अपि स्तोतव्यःसोऽग्निः देवान् इहआवहति॥२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

प्राचीन (भृगुअङ्गिराआदि) ऋषियों से और(हम) नवीनों से भी स्तुति करने के योग्य वह अग्नि देवताओं का यहां पर लाते हैं ॥ २ ॥

(१) पूर्व ऋषि और पिछले ऋषियों का बहुत मन्त्रों में कथन है। पं० बालगंगाधरतिलक की सम्मति में आर्य्यों का पूर्व निवास स्थान उत्तरमेरु के समीप था। भूविद्या से यह बात सिद्ध है कि वहां पर पूर्वकाल में इतना शीत नहीं था किन्तु ठंडी गर्मी और गरम जाडे अर्थात् सदा वसन्त की सी ऋतु रहती थी। जब तक ऐसी अवस्था रही वहां पर आर्य लोग रहते रहे। काल के प्रभाव से वहां पर हिम की प्रलय आरम्भ हो गई। इस लिये आर्य्य लोग और मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के सन्तान भी सब शनैः २ आर्य्यावर्त में चले आये। यहां पर भी वह मन्त्रद्रष्टा हुए। और ऋग्वेद पूर्वऋषि और इन पिछले ऋषि दोनों के देखे हुए मंत्रों का समूह है और भृगु,अंगिरा, नवग्वा, अथर्वा, अप्नवान इत्यादि पूर्व ऋषियों के नाम हैं। मधुछन्दा, मेधातिथि इत्यादि पिछले ऋषियों के नाम हैं।

(२) अग्निदेवताका पूर्व ऋषि अर्चन करते थे और नये ऋषि भी, हमें भी अपने बड़ों की इस उत्तम चालपर चलना चाहिये क्योंकि

(३) अग्नि देवता ही देवताओंको हमारे पास लाने वाले हैं। विना अग्नि के हम देवताओं के पास नहीं बैठ (उपासना नहीं कर) सक्ते। और उपासना द्वारा उन जैसे गुणों को धारण किये विना बाहर और भीतर के शत्रुओं को नहीं जीत सक्ते ॥

ऋ० मं०१स०१।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दाऋषिर्गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्॥ ३॥

१ अग्निना	अग्निना सह	अग्नि के साथ
१ रयिम्	धनम्	धन को
१ अश्नवत्	भुङ्क्ताम्	भोगे
२ पोषम्	पुष्टिकारकम्	पुष्टि कारक को
२ एव	एव	ही
२ दिवेऽदिवे	प्रतिदिनम्	प्रतिदिन
३ यशसम्	यशोयुक्तम्	यश से युक्त को
४ वीरवत्ऽतमम्	अतिशयेन वीर पुत्रादि पुरुषोपेतम्	बहुत अधिकता से वीरपुत्रादि पुरुषों स युक्त को

संस्कृतार्थः।

(मनुष्यः) अग्निना सह प्रतिदिनं पुष्टिकारकमेव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(नतु दुर्बलकारकम्) यशोयुक्तं, अतिशयेन वीरपुरुषोपेतं च धनं भुङ्क्ताम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

(मनुष्य) अग्नि के साथ प्रतिदिन धन को भोगे (जो धन) पुष्टिकारक ही है (विषय सेवनादि से दुर्बलकारक नहीं है) जो धन यशसे मिला हुआ और बहुत अधिक वीर पुत्रादि पुरुषों से युक्त है ॥

विनियोग—यह मंत्र अग्न्याधानकी तृतीयेष्टि के आज्य भाग का अनुवाक्या है । (आं०श्रौ०सू०२।१।२७)

(१) अग्निके साथ अर्थात् साग्निक हो कर धनको भोगना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से वह धन ॥

(२) प्रतिदिन पुष्टिकारक ही होता है, देवभक्ति शून्य होनेसे धन भी मनुष्य को विषय सेवनादि में लग जाने का हेतु बन कर दुर्बल कर देता है परन्तु अग्नि के साथ भोगा हुआ धन नित्य पुष्ट ही करता है ॥

(३) वह धन जो अग्निके साथ भोगाजाताहै यशस्कर होता है, कितने एक मनुष्य हैं जिन के लिये धन अपकीर्ति का कारण हुआ है, परन्तु अग्नि के साथ में भोगा हुआ धन सदा यश को बढ़ाने वाला होता है क्योंकि ऐसा पुरुष दान शील, सब प्रकार की क्षुद्रता से रहित और सुकर्म में धन का व्यय करने वाला होता है ।

(४) अग्नि के साथ भोगा हुआ धन वीर पुत्र भाई और अन्य सहायक और वीर सेवकों से युक्त होता है इस लिये देवभक्त धनी को राजा और चोर आदि से भय नहीं होता जैसे साधारण धनीको होता है वीरवत ही नहीं किन्तु वीरवत्तम वह धन होता है, वीरों से युक्त होने में ऐसे पुरुष को दूसरा धनी बराबरी नहीं कर सक्ता ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० १ ।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दाऋषिर्गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

अग्ने॒ यं य॒ज्ञम॑ध्व॒रं वि॒श्वतः॑ परि॒भूरसि॑ । स इद्दे॒वेषु॑ गच्छति ॥ ४ ॥

अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
यम्	यम्	जिस को
१ य॒ज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
१ अ॒ध्व॒रम्	अकुटिलम् (ध्वृ कौटिल्ये)	कुटिलता से रहित को
२ वि॒श्वतः	सर्वासु दिक्षु	सब ओर से
परि॒ऽभूः	परिवारयिता	घेरने वाला
असि	असि	तू है
सः	सः	वह
इत्	इव	ही
दे॒वेषु	देवानांसमीपम्	देवताओंकेसमीप
ग॒च्छ॒ति	गच्छति	जाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने (त्वम्) अकुटिलं यं यज्ञं सर्वासु दिक्षु परिवारयसि स एव देवानां समीपं गच्छति ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि जिस कुटिलता रहित (सच्चे हृदय से किये हुए) यज्ञ को आप सब ओर से घेर लेते हैं वही देवताओं को पहुंचता है ॥ ४ ॥

विनियोग—यह और अगले दो मंत्र अभिप्लवषडह के मध्यवर्त्ती उक्थ्यों में पढे जाते हैं (आ० श्रौ० सू०उ०१।८।१)

(१) अध्वर शब्द का मुख्य अर्थ कुटिलता रहित है (देखो पं० वामन शिवराम आपटे का संस्कृत इंग्लिश कोश) "अध्वर—नध्वरति कुटिलो न भवति . (not crooked)"

यहां यज्ञ का विशेषण होने से यह अर्थ है । अकेला आने से अध्वर शब्द का यज्ञ ही अर्थ है (देखो मं० ८)

कुटिलता रहित सच्चे हृदयसे जो यज्ञ अर्थात् देवपूजन किया जाताहै। जो यज्ञ धर्मध्वजी बननेके लिये न किया जाताहो ऐसे यज्ञको ।

(२) अग्निदेव सबओरसे घेर कर रक्षाकरतेहैं औरवही यज्ञ ।

(३) देवताओं को प्राप्त होता है । धर्मध्वजीका यज्ञ राक्षसों को प्राप्त हो सक्ता है । परन्तु कुटिलतारहित यज्ञ की अग्निदेव रक्षा करते हैं । फिर वह राक्षस अर्थात् पाप की शक्तियों को पुष्ट करने के लिये नहीं जा सक्ता। राक्षस से प्रयोजन हमारे अभीष्ट के विघातक सब प्रकार के विघ्नों से भी है जो अनेक रूप से होते हैं। अग्निदेव उन सबके निवारक हैं (देखो यजुर्वेद, अ० २ मं० ३०)॥

ऋ० मं० १ सू० १ ।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ।८।८।८।८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अ॒ग्निर्होता॑ क॒विक्र॑तुः स॒त्यश्चि॒त्र

श्र॑वस्तमः । दे॒वो दे॒वेभि॒रागमत् ।५।

अ॒ग्निः	अग्निः	अग्नि
१ होता॑	(देवानाम्) आह्वाता	(देवताओं के) बुलाने वाला
१ क॒वि॑ऽक्रतुः	कवीनांक्रतुरिव क्रतुःप्रज्ञानंयस्य	ऋषियों की सी बुद्धिवाला
२ स॒त्यः	अनृतरहितः	सच्चा
३ चि॒त्रश्र॑वःऽतमः	अतिशयेन चित्र कीर्तियुक्तः	बड़ीविचित्रकीर्ति वाला
४ दे॒वः	देवः	देव
४ दे॒वेभि॑ः	देवैः सह	देवताओंके सहित
४ आ	आ+	—
४ ग॒म॒त्	आ+गमत्–अगच्छतु(लोडर्थेलुङ्)	आवे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(देवनाम्)आह्वाता कविसदृशप्रज्ञः अनृतरहितो ऽतिशयेन कीर्तियुक्तःअग्निर्देवः देवैस्सह (अस्मत्समीपम्) आगच्छतु ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

(देवताओंके) बुलाने वाले ऋषियों की सी बुद्धि वाले,सच्चे,बड़ी विचित्र कीर्ति वाले अग्नि देव देवताओं के सहित हमारे समीप आवें ॥ ५ ॥

(१) अग्नि देवताओं के बुलाने वाले हैं और देवताओं में ऐसे बुद्धिमान्हैं जैसे मनुष्यों में ऋषि अर्थात् देवताओं में ऋषितुल्य हैं ।

(२) अग्निदेव अनृत रहित हैं । जैसे सच्चे से सच्चे मनुष्य में कुछ अनृत मिला रहता है, अग्निदेव में ऐसा नहीं है, वह "केवल सत्य" हैं ।

(३) और बड़ी विचित्र कीर्ति वाले हैं । क्योंकि उनका यश घर घरमें विद्यमान है,इसीलिये वह श्रवस्तम हैं ।उन जैसी कीर्ति किसी मनुष्य की नहीं होसक्ती ।

(४) ऐसे अग्निदेव देवताओंको लेकर हमारे पास आवें जिससे देवताओं के सहवासी होनेसे हम भी उन जैसे गुणोंसे सम्पन्न हों ॥

ऋ० मं० १ सू० १ ।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८।।

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यत्	जो
२ अङ्ग	हे	हे
१ दाशुषे	दत्तवते	देनेवाले के लिये
त्वम्	त्वम्	आप
अग्ने	हेअग्ने	हे अग्नि
भद्रम्	कल्याणम्	कल्याण को
करिष्यसि	करिष्यसि	करोगे
तव	तव	आपका
इत्	निश्चयेन	निश्चय करके
तत्	तत्	वह
सत्यम्	सत्यम्	सत्य
३ अङ्गिरः	(अङ्गिरोभिर्ऋषिभिःसम्पादित्वात् अङ्गिरा अग्निः) हे अग्ने	हे अङ्गिरा (नाम वाले अग्निदेव)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्नि यत् (त्वं) हविर्दत्तवते (यजमानाय) कल्याणं करिष्यसि हे अङ्गिरः तत् तव निश्चयेन सत्यम् (अस्ति) ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप जो हवि देने वाले (भक्त) के लिये कल्याण करेंगे हे अङ्गिरः यह बात आपके (विषयमें) अवश्य सत्य है ॥ ६ ॥

(१) अङ्ग शब्द प्यार के साथ सम्बोधन करने में आता है ॥

(२) दाशुष् का अर्थ पितर देव मनुष्य पशु इत्यादि सबको दने वाले त्याग शील आस्तिक यजमान का है जैसे "अरावा" किसी को कुछ न देने वाले स्वार्थी नास्तिक "अयज्वा" का है ॥

(३) अङ्गिरा अग्नि का नाम इसलिये है कि अङ्गिरा ऋषिने सब से पहिले अग्नि को मथन द्वारा उत्पादन करके मनुष्यों को उसका पूजन और प्रयोग सिखाया।।

मंत्र का आशय यह है कि जिस के इष्टदेव अग्नि हैं उस का अमंगल कभी भी नहीं हो सक्ता ॥

ऋ० मं० १ सू० १

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८।

उपत्त्वाग्नेदिवेदिवे दोषावस्तर्धि यावयम् । नमोभरन्तएमसि ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उप	समीपे	पास
त्वा	त्वाम्	आप को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ दिवेऽदिवे	प्रतिदिनम्	प्रतिदिन
१ { दोषा ऽवस्तः	रात्रावहनि	सांझसवेरे
२ धिया	भक्त्या	भक्ति से
२ वयम्	वयम्	हम
२ नमः	नमस्कारम्	नमस्कार को
३ भरन्तः	सम्पादयन्तः	करते हुए
आ	आ +	--
इमसि	आ+इमसि आ- गच्छामः	आते हैं

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने वयं प्रतिदिनं रात्रावहनि तव समीपे भक्त्या नमस्कारं कुर्वन्त आगच्छामः ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे अग्नि हम प्रतिदिन सांझ सवेरे आपके पास भक्तिसे नमस्कार करते हुए आते है ॥ ७ ॥

विनियोग—यह और अगले दो मंत्र अग्निषोम के प्रणयन में पढ़े जाते हैं (ऐ०ब्रा०१।३०) और सायं अग्निहोत्र में गार्हपत्याग्नि के उपस्थान में पढेजाते हैं (यजु०३।२२।२३।२४) ॥

(१) दोषा रात्रि का नाम है, वस्तः दिन का नाम है (निघं० १।९। में वस्तोः शब्द दिन के नाम में पढ़ा है)।

अग्निदेवता के पास सायंकाल में सूर्य्यास्त के पीछे और प्रातःकाल में सूर्य उदय होने से पूर्व वा पीछे प्रतिदिन।

(२) भक्ति से नमस्कार करते हुए जाना चाहिये। धी शब्द का अर्थ बुद्धि कर्म और भक्ति भी है (देखो आपटे कोश)।

इस मंत्र से प्रतिदिन सायं और प्रातःकाल में अग्निहोत्र करने की विधि निकलती है। अग्निहोत्र भक्ति (Devotion) पूर्वक और नमस्कार (Veneration) पूर्वक होना चाहिये; देवताओं की पूजा में यही दो बातें प्रधान हैं ॥

ऋ० मं० १ सू० १।

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः।८।८।८।

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानंस्वेदमे ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजन्तम्	दीप्यमानम्	प्रकाशमान को
१ अध्वराणाम्	यज्ञानाम्	यज्ञों के
१ गोपाम्	रक्षकम्	रक्षा करनेवाले को
२ ऋतस्य	ऋतस्य	सत्य के
२ दीदिविम्	अतिशयेन द्योतकम्	अत्यन्तप्रकाशक को
३ वर्धमानम्	(हविर्भिः) वर्धमानम्	(हवियोंसे) बढ़ते हुए को
१ स्वे	स्वकीये	अपने
१ दमे	गृहे	घर में

संस्कृतार्थः ।

(कीदृशं त्वां) दीप्यमानं यज्ञानां रक्षकं ऋतस्य अतिशयेन द्योतकम्(हविर्भिः)स्वकीये गृहेवर्धमानम् ।८।

भाषार्थः

जो (स्वयं) प्रकाशमान यज्ञों के रक्षक सत्य के अत्यन्त प्रकाशक और (हविसे) अपने घर में बढ़ने वाले (हैं) ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) अग्निदेवता यज्ञों के रक्षक हैं, पूजा कर्म में जैसे सभी उत्तम कर्मों में बहुत विघ्न हुआ करते हैं। अग्नि देव उन सब विघ्नों के निवारण करने वाले हैं।

(२) 'ऋत' सृष्टिनियम और सत्य का भी नाम है, इस की विशेष व्याख्या सू० २ मं० ८ के व्याख्यान में देखो (पृ०७०,७१) अग्निदेव सत्य के अत्यन्त प्रकाशक हैं। इसलिये उनके सच्चे उपासक को सत्य का ज्ञान हो जाता है, क्योंकि अग्नि देव स्वयं प्रकाश स्वरूप हैं। जैसे हरे घास में रहने वाले जीव हरे रंग के और मट्टी में रहने वाले मटियाले रंग के हो जाते हैं, वैसे ही जो प्रकाश स्वरूप अग्नि की उपासना और पूजा करते हैं वे स्वयं भी प्रकाश स्वरूप होजाते हैं,अनृत तम रूप है इसलिये अग्नि के उपासक के चित्त से तम और अज्ञान दूर हो जाते हैं॥

(३) "स्वे दमे" अपने घर में । अग्नि का घर उपासक की पूजा का स्थान वा अग्नि शाला है। उसमें अग्निदेव सायं और प्रातः समिधा से और दुग्धादि हवि से वढाए जाते हैं। और वह स्वयं बढे हुए यजमान को पशु धन पुत्रादि से वढाते हैं (देखो यजु०३।३॥ २।१४)।

ऋ० मं० १ सू० १॥

अग्निर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः। ८। ८। ८॥

सनः पितेव सूनवे ग्नेसूपायनोभव।
सचस्वानः स्वस्तये॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
नः	अस्मदर्थम्	हमारे लिये
१ पिताऽइव	पिता इव	पिता की न्याईं
१ सूनवे	पुत्राय	पुत्र के लिये
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
१ सुऽउपायनः	सुप्रापः	सुखसे प्राप्तहोने वाले
भव	भव	हो
२ सचस्व	सङ्गच्छस्व	मिलो
नः	अस्माकम्	हमारे
२ स्वस्तये	कल्याणाय	कल्याण के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने सः (त्वम्) अस्मदर्थं सुप्रापो भव यथा पिता पुत्रार्थं (भवति) अस्माकं कल्याणाय सङ्गतः (च) भव ॥९॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि वह आप हम को सुख से प्राप्त होने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले हूजिये जैसे पिता पुत्र को (होता है) (और) हमारे कल्याण के लिये (हमसे) मिलिये॥ ९॥

(१) जैसे पिता पुत्र के लिये सुप्राप्य होता है। पुत्र जब चाहे पिता के पास जासक्ता है। वैसे ही अग्निदेव भी हम को सुप्राप्य हों अर्थात् हम जब चाहें अग्नि देवकी महिमा चिन्तन कर सकें। और दूसरे चिन्तन को चित्त से हटा सकें। ऐसा करना बहुत कठिन है, परन्तु अग्निदेवकी कृपासे यह शक्ति मनुष्यको प्राप्त होसक्ती है कि वह जब चाहे अनिष्ट चिंतन को छोड़ कर अग्निदेव के पास जासके॥

(२) हमारा कल्याण तभी होसक्ता है कि अग्निदेव हमारे साथ मिल जावें एक होजावें। हमारे और उनके बीच में कोई न आ सके। जैसे, श० कां० २ अ० २ ब्रा० २ कं० १७ में आया है॥

नह वाऽअस्यैतं कश्चनान्तरेणैति यावज्जीवति योऽस्यैषो
ऽन्तरात्मन्नग्निराहितो भवति तस्मादुतन्ना द्रियेत॥

सचमुच जब तक वह (यजमान)जीता है उसके और उस अग्नि के जो उसके अन्तरात्मा में स्थापित है कोई बीच में नहीं आ सक्ता। इसलिये इस बात का कुछ विचार न करे कि वाह्य (कुण्डस्थ) अग्नि और उसके बीचमें से कोई निकल गया है॥

यही अग्नि देवकी सच्ची उपासना है कि प्रकाशरूप से वह अन्तरात्मा में स्थापित हो जावें और उनके और हमारे बीच में कोई न आसके॥

ऋ० मं०१ सू०२।

वायुर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

वायवायाहिदर्शतेमेसोमाअरंकृताः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेषांपाहिश्रुधीहवम् ॥ १ ॥

१ वायो	हे वायो	हे वायु
२ आ	आ +	–
याहि	आ+याहि आगच्छ	आओ
दर्शत	हे दर्शनीय	हे सुन्दर
इमे	इमे	ये
३ सोमाः	सोमाः	सोम रस
३ { अरम् ऽकृताः	सज्जिताः	सजाये हुए हैं
३ तेषाम्	तान् (द्वितीयार्थेषष्ठी)	उनको
३ पाहि	पिब	पीओ
२ श्रुधि	शृणु	सुनो
२ हवम्	आह्वानम्	बुलावे को

संस्कृतार्थः

हे दर्शनीय वायो (त्वम्) आगच्छ (त्वदर्थम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इमे सोमाः सज्जिताः तान् पिब (अस्मदीयम्) आह्वानम् (च) शृणु ॥ १ ॥

भाषार्थः।

हे सुन्दर वायु आइये ये सोमरस (आपकेलिये) सज्जित किये गये हैं उनको पान कीजिये (और हमारे) बुलावे को सुनिये ॥ १ ॥

विनियोग—यह मंत्र ऐन्द्रवायव ग्रह का पुरोनुवाक्या है। (ऐ० ब्रा० २। २६) और यह और अगले दो मंत्र प्रातः सवन के प्रउग शस्त्र में पढ़े जाते हैं॥ (ऐ० ब्रा० ३। १)

(१) वायु देवता बलकर्म में इन्द्र के सहचारी हैं और प्रायः इन्द्र के साथ इन को बुलाया जाता है यद्यपि यह सर्वत्र विद्यमान हैं जैसे परमात्मा की अन्य शक्तियां सर्व व्यापी हैं, परन्तु देवता रूपमें सहायता करने को बुलाने से ही आते हैं। हम जो अपने निकटवर्ती परम हितैषी और सच्चे मित्र रूप से विद्यमान देवताओं को सहायता के लिये नहीं बुलाते, इस का कारण हमारा मन्दभाग्य ही है। यह तो बुलाने से सुन्दर वायु की तरह

(२) आह्वान को सुनते हैं। आते हैं और

(३) हमारे सजाए हुए सोम रस को भी पान करते हैं। जब कोई लौकिक मित्र जो हमसे उच्च हो हमारे बुलाने से हमारे घरमें आजावे और प्रेम से सजाए हुए हमारे प्रिय खाने पीनेके पदार्थों को अंगीकार करलेवे। तो हमारा कितना उत्साह बढ़ता है। देवता तो हम से बहुत उच्च हैं और उनका मित्रभाव और प्रेम मरण धर्मा मित्रों से कई दर्जे अधिक है। फिर उनके आने से और हमारे प्रियतमपान सोम को अंगीकार करने से हमारा उत्साह बहुत अधिक बढ़ना चाहिये। आज कल दुर्भाग्य से सोम हमारा प्रियपान नहीं रहा और उसका ज्ञान भी हम को नहीं रहा। परन्तु थोड़ा प्रयास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करने से अब भी हम उस को प्राप्त करसक्ते हैं। सुश्रुत चिकि० स्थान० अ०२९ में सोम की २४ जाति लिखी हैं। और यह उस के मिलने के स्थान लिखे हैं "सोम की गायत्र्य, त्रैष्टुभ्, पाङ्क्त, जागत और शाङ्कर यह पांच जातियां कश्मीर के क्षुद्रक नाम सरोवर में मिलती हैं और चन्द्रमा जाति जेहलम नदी के उत्तर में जो पांच पर्वत हैं और जहां सिन्धु नदी उनके बीचमें बहती है वहां सिन्धुमें मिलती है। हिमालय,अर्बुद (आबू) सह्य(पश्चिमघाट) महेन्द्राचल (कलिंगा पटम के पास),मलय (नीलगिरि) पारिपात्र (सिवालिक) और विन्ध्याचल इन पर्वतों में भी सोम होता है"

"सब प्रकारके सोम निम्नलिखित रूपमें होते हैं—१ वल्ली रूप में जैसे गिलो होती हैं—२ प्रतान रूप में जैसे कद्दू की बेल होती है और ३ क्षुपरूप में जैसे कण्टकारी होती है—सब प्रकार के सोम में श्वेत दूध निकलता है और सब की जड़ में कन्द होता है। रस स्वादु नहीं होता। इसीलिये लिखा है कि इसको स्वाद लेकर न पीवे किन्तु सब को एक घूंट पी जावे ॥

अंशुमान जाति का सोम श्वेत रंग का होता है और उस में बकरे जैसा गन्ध होता है॥

मुंजवान जाति के सोम के पत्ते लहसन जैसे होते हैं और उसका कन्द केले के सदृश होता है॥

चन्द्रमा जाति वाला सोम स्वर्ण के रंग का होता है और जल में ही होता है॥

गरुड़ और श्वेताक्ष जाति वाले सोम पाण्डुर (हलके पीले) रंग के होते हैं इन पर सांप की कैंचली जैसी त्वचा होती है। यह वृक्ष और पत्थर पर चढ़ जाते हैं" ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भावप्रकाश में सोम के ये नाम लिखे हैं सोमवल्ली सोमलता, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया और इसके गुण इस प्रकार लिखे हैं "त्रिदोषघ्नीकटुस्तिक्तारसायनी" कि यह तोनों दोष कफ पित्त वात को नाश करती है। स्वादु में कड़वी और चरपरी होती है और रसायन है॥

सोमलता के डंठल में पोरियां भी रहती हैं। जैसे ईख और काने में होती हैं॥

काशी में "पूतीक" को सोम की जगह 'र्तते हैं। यह सोम की जाति से मिलता है परन्तु सोम नहीं है। पारसी लोग भी अबतक सोम से देवताओं का अर्चन करते हैं और वह उसे पारस देशके एल बुर्ज नामी पहाड़ से मंगवाते हैं। औषधि विद्या के बहुत से विद्वानों ने निश्चय किया है। कि असली सोम यही है वह इसको (एफीड्रा पैचिक्लेड) Ephedra Pachyclade वा (एफीड्रा डिस्टैचिया) Ephedra Distachya बतलाते हैं यह अफ्गानिस्तान बिलोचिस्तान कश्मीर और पश्चिमी तिब्बत में भी होता है। वहां उसको "हूम" बूटी कहते हैं। पारसी लोग सोम को होम कहते हैं और इसी शब्द का अपभ्रंश "हूम" है। इन की धर्म पुस्तक "अवस्ता" में सोम के गुण इस प्रकार लिखे हैं॥

"Haoma prepared and drunk in such a state of pious spiritual inspiration is likely to give wisdom, courage, success, health, increase, and greatness. In such a state the devotee becomes as powerful as an independent monarch, and is able to withstand many dangers coming from ill-disposed persons. Heaven, health, long life, power to contend against evils, victory against enemies, and

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

forewarnings against coming dangers from thieves, murderers, and plunderers are the six gifts at the disposal of Haoma when adequately praised and prepared (Há IX 17, 18, 19, 21, English Translation)."

"सोम इस धर्मोत्तेजित अवस्थामें तैयार किया जा कर पीने से बुद्धि, वीरता, समृद्धि, आरोग्य, वृद्धि और महत्त्व को देता है इसके पानसे भक्त ऐसा बलवान् होजाता है जैसे स्वतन्त्र राजा और द्वेषी पुरुषों से आने वाले भयों का सामना करने के योग्य बनजाता है, स्वर्ग, स्वास्थ्य, दीर्घायु, पाप के निराकरण की शक्ति, शत्रुओं पर जय और चोर घातक और लुटेरों से आने वाले भयों की आगामी सूचना का होना यह छः उपहार सोमके अधिकार में हैं, यदि विधि पूर्वक स्तुति किया जाकर तैयार किया जाय ॥"

ऐसे उत्तमगुणों के होने से ही सोम ऋषियों का प्रियतम पान था और वह इतने प्रेमके साथ उसे देवताओं को अर्पण करते थे। वेद मन्त्रों में सोम के इस से भी अधिक गुण कहे हैं जैसा आगे पढ़ने से प्रतीत होगा ॥

ऋ० मं० १ सू० २।

वायुर्देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

वाय॒ उ॒क्थेभि॑र्जरन्ते॒ त्वाम॑च्छा ज॒रि॒तार॑ः। सु॒तसो॑मा अह॒र्विद॑ः ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वायो	हेवायो	हे वायु
२ उक्थेभिः	स्तोत्रैः	स्तोत्रों से
३ जरन्ते	स्तुवन्ति	स्तुति करते हैं
त्वाम्	त्वाम्	आप को
अच्छ	अभिलक्ष्य	लक्ष्य रख कर
१ जरितारः	स्तोतारः	स्तुति करने वाले
४ सुतऽसोमाः	सुताः सोमा यैस्ते	जिन्होंने सोम रस निष्पीडन किये हैं
५ अहःऽविदः	क्रत्वभिज्ञा	यज्ञ को जानने वाल

संस्कृतार्थः।

हे वायो निष्पीडितसोमाः क्रत्वाभज्ञाः स्तोतारः त्वामभिलक्ष्य स्तोत्रैःस्तुवन्ति ॥२॥

भाषार्थः

हे वायु स्तोता लोग जिन्होंने सोमरस निष्पी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन किये हैं (और जो) यज्ञ को जानने वाले हैं स्तोत्रों से आप की स्तुति करते, हैं ॥ २ ॥

(१) सोमादि यज्ञों में बहुत से ऋत्विज् मिलकर

(२) ऋग्वेद के स्तोत्रों से

(३) देवताओं की स्तुति करते हैं। क्योंकि बहुतों की स्तुति से जो अध्यात्म बल उत्पन्न होता है वह एक की स्तुति से कदापि नहीं होसक्ता। ऋषि का आशय यह है कि हे वायु

(४) आप के स्तोता जो यहां पर उपस्थित हैं सभी ऐसे हैं कि जिन्हों ने सोम से देवताओं का अर्चन किया हुआ है, और

(५) "अहर्विदः" अर्थात् एक दो वा अधिक दिनों में समाप्त होने वाले अग्निष्टोमादि यज्ञों को जानने वाले हैं इसलिये आप अवश्य आवें और हमारी स्तुति और पूजा को अंगीकार करें ॥

ऋ० मं० १ सू० २।

वायुर्देवता वैश्वा मित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८।

वायोतवंप्रपृञ्चती धेनाजिगाति दाशुषे। उरूचीसोमपीतये ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वायो	हे वायो	हे वायु
तव	तव	आप की
१ प्रऽपृञ्चती	प्रकर्षेण सम्पर्कं कुर्वती	अत्यन्त स्पर्श करती हुई
१ धेना	वाक्	बाणी
जिगाति	गच्छति (निघं० २।१४)	जाती है
३ दाशुषे	यजमानम्	यजमान को
२ उरूची	उरून् बहून् गच्छन्ती	बहुतों के पास जाने वाली
४ सोमऽपीतये	सोमपानार्थम्	सोमपीनेके लिये

संस्कृतार्थः।

हे वायो तव प्रकर्षेण सम्पर्कं कुर्वती बहून् गच्छन्ती वाक् यजमानम् (प्रति) सोमपानार्थं गच्छति ॥ ३॥

भाषार्थः।

हे वायु आपकी अत्यन्त स्पर्श करती हुई (और)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बहुतों के पास जाने वाली बाणी यजमान के पास सोमपान के लिये जाती है ॥ ३ ॥

(१) वायु की अत्यन्त स्पर्श करती हुई वाणी (जैसे ऋ०मं०१० सू० १६८ मं०४ में वर्णन है "घोषा इदस्य शृण्विरेनरूपम्" " उनके शब्द को ही सुनते हैं रूप को नहीं देखने") से तात्पर्य्य वायु का शब्द है ॥

(२) यह बाणी बहुतों के पास जाती है। अर्थात् सभी को वायु देव का सन्नाटा प्रतीत होता है और किसी को उसका कुछ विशेष ध्यान नहीं होता। परन्तु जब

(३) उपासक वह सन्नाटा स्पर्श करता है

(४) तो वह जानता है कि वायु देवता सोम रस मांगते हैं।

ऋ० मं०१ सू०२।

इन्द्र वायू देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि र्गायत्री छन्दः॥८।८।८॥

इन्द्रवायूइमेसुता उपप्रयोभिरागतम्। इन्दवोवामुशन्तिहि ॥ ४ ॥

१ इन्द्रवायू	हे इन्द्रवायू	हे इन्द्रऔर वायु
इमे	इमे	ये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुताः	निष्पीडिताः (सोमाः)	निष्पीडन किये हुए (सोम)
उप	(तान्) प्रति	(उनके) प्रति
२ प्रयःऽभिः	अन्नैः सह	अन्नों के सहित
आ	आ+	--
गतम्	आ+गतम् आगच्छतम्	आओ
२ इन्दवः	सोम बिन्दवः	(सोम की) बूंदें
वाम्	युवाम्	आप(दोनों) को
उशन्ति	कामयन्ते	कामना करती हैं
हि	यस्मात्	क्योंकि

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्रवायू इमे निष्पडिताः (सोमाःसन्ति) (युवां) अन्नैस्सह (तान्) प्रति आगच्छतम् यस्मात् सोमबिन्दवो युवां कामयन्ते ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र और वायु ये निष्पीडन किये हुए (सोमरस) हैं (आप) अन्नों के सहित (इनके)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रति आवें क्योंकि सोम की बून्दें आपकी कामना कर रही हैं ॥ ४ ॥

विनियोग—यह मंत्र भी इन्द्र वायव ग्रह का पुरोनुवाक्या है (ऐ०ब्रा०२।२६) और यह और अगले दो मंत्र प्रातः सवन के प्रउग शस्त्र में भी पढ़ेजाते हैं (ऐ०ब्रा० ३।१) ॥

(१) इन्द्र देवता परमात्मा की बल शक्ति का नाम है जितने सृष्टि में बल कर्म हैं सब इन्द्र के हैं जैसे निरुक्त ७।१० में यास्क मुनि ने कहा है "याचकाचबलकृतिरिन्द्रकर्मएवतत्" जो कुछ (इस सृष्टि में) बल का काम है वह सब इन्द्र का काम है।

(२) देवता जब आते हैं, खाली हाथ नहीं आते किन्तु अन्नादि धनों को साथ लेकर आते हैं, इस लिये देवताओं को देने से (और उन के निमित्त से अन्य दानपात्रों को दान करने से) धन घटता नहीं किन्तु बढ़ता है ॥

(३) हमारे सोम रस की बून्दें देवताओं के लिये तरसती ह,कि कब देवता आकर हम को पान करें, और हमारा निष्पीडन होकर छानने के वस्त्र में से द्रोण कलश में विन्दुरूप से टपकना सफल हो, ऋषियों के ऐसे प्रेम से ही देवता आकर्षित होते थे ॥

ऋ० मं० १ सू० २ ।

इन्द्रवायू देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

वायविन्द्रश्चचेतथः सुतानांवाजिनी वसू । तावायातमुपद्रवत् ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वायो	हे वायो	हे वायु
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
च	च	और
१ चेतथः	चेतथः	ध्यान करो
१ सुतानाम्	अभिषुतान् (सोमान्) (द्वितीयार्थे षष्ठी)	निष्पीडन किये हुए (सोमरसों) को
२ वाजिनीवसू	वाजिनी अन्नसंततिः सैव वसु धनं ययोः तत् सम्बुद्धौ	हे बहुत अन्न वाले
तौ	तौ	वे दोनों
आ	आ+	–
यातम्	आ+यातम् आगच्छतम्	आओ
उप	(तान्) प्रति	(उनके) प्रति
द्रवत्	क्षिप्रम् (निघं०२।१५)	शीघ्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वायो (त्वम्) इन्द्रश्च बह्वन्नवन्तौ (उभौ) (अस्माभिः) निष्पीडितान् (सोमान्) चेतथः तौ (च) युवाम् (तान्) प्रति क्षिप्रमागच्छतम् ॥५॥

भाषार्थः ।

हे वायु (और) इन्द्र (आप) बहुत अन्न वाले (हमारे) निष्पीडन किये हुए (सोमरस) की ओर ध्यान करो और आप दोनों शीघ्र उनके प्रति आओ ॥५॥

(१) सुतानाम्—सोम को सिल बट्टे से कूट कर रस निचोड़ा जाता है इस प्रकार निष्पीडन किये हुए सोम रस की ओर इन्द्र और वायु देवता ध्यान करें ॥

(२) वाज अन्न और बल का भी नाम है वाजिनी अन्नकी ढेरी वा बल की क्रिया और वसु धन वाजिनीवसू का यह अर्थ हुआ कि अन्न की ढेरी है धन जिनका वा बल क्रिया हैं धन जिन का अर्थात् बहुत अन्नके स्वामी वा समग्र बल की क्रियाओं के स्वामी ॥

(३) ऐसे इन्द्र और वायु हमारे सोम रस पान करने को शीघ्र आवें ॥

ऋ० मं० १ सू० २ ॥

इन्द्रवायू देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

वायविन्द्रश्चसुन्वत आयातमुप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निष्कृतम्। मक्ष्वित्था धिया नरा॥६॥

वायो	हे वायो	हे वायु
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
च	च	और
सुन्वतः	सोमाभिषवं कुर्वतः	सोमनिष्पीडन करने वाले के
आ	आ +	–
यातम्	आ+यातम आगच्छतम्	आओ
उप	प्रति	प्रति
निःऽकृतम्	निःशेषेण सम्पादितम् (सोमम्)	पूर्णरूप से सिद्ध किये हुए (सोम रस) को
१ मक्षु	क्षिप्रम् (निघं०२।१५)	शीघ्र
१ इत्था	सत्यम् (निघं०३।१०)	सचमच
१ धिया	ध्यानेन	ध्यान से
नरा	हे नरौ (पौरुषेणोपेतौ)	हे नरो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वायो (त्वम्) इन्द्रश्च नरौ (युवाम्) सोमाभिषवंकुर्वतः (मम) निःशेषेणसम्पादितम् (सोमम्) प्रति शीघ्रं सत्यं ध्यानेनागच्छतम् ॥६॥

भाषार्थः ।

हे वायु और इन्द्र, हे नरो (आप) (मुझ) सोमनिष्पीडन करने वालेके पूर्ण रूपसे सिद्ध किए हुए (सोमरस) के प्रति शीघ्र सचमुच और ध्यान से आओ ॥६॥

(१) जैसे लोक में किसी मित्र को जिस के साथ अधिक प्रेम हो कहा जाता है कि आप शीघ्र आना सचमुच अवश्य आना ध्यान से आना भूलना नहीं इसी प्रकार देवता विषयमें यह वचन ऋषि के सच्चे प्रेम और साक्षात् किये हुए सम्बन्ध को प्रगट करते हैं ॥

ऋ० मं० १ सू० २ ॥

मित्रावरुणौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

मित्रंहुवेपतदक्षं वरुणंचरिशादसम् ।
धियंघृताचींसाधन्ता ॥ ७ ॥

१ मित्रम्	मित्रम्	मित्र को
हुवे	आह्वयामि	मैं बुलाता हूं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निष्कृतम्। मक्ष्विव१त्त्थाधियानरा॥६॥

वायो	हे वायो	हे वायु
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
च	च	और
सुन्वतः	सोमाभिषवं कुर्वतः	सोमनिष्पीडन करने वाले के
आ	आ +	–
यातम्	आ+यातम आ-गच्छतम्	आओ
उप	प्रति	प्रति
निःऽकृतम्	निःशेषेण सम्पादितम्(सोमम्)	पूर्णरूप से सिद्ध किये हुए (सोम रस) को
१ मक्षु	क्षिप्रम् (निघं०२।१५)	शीघ्र
१ इत्था	सत्यम् (निघं०३।१०)	सचमच
१ धिया	ध्यानेन	ध्यान से
नरा	हे नरौ (पौरुषेणोपेतौ)	हे नरो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वायो (त्वम्) इन्द्रश्च नरौ (युवाम्) सोमाभिषवंकुर्वतः (मम) निःशेषेणसम्पादितम् (सोमम्) प्रति शीघ्रं सत्यं ध्यानेनागच्छतम् ॥६॥

भाषार्थः ।

हे वायु और इन्द्र,हे नरो(आप)(मुझ)सोमनिष्पीडन करने वालेके पूर्ण रूपसे सिद्ध किए हुए(सोमरस) के प्रति शीघ्र सचमुच और ध्यान से आओ ॥६॥

(१) जैसे लोक में किसी मित्र को जिस के साथ अधिक प्रेम हो कहा जाता है कि आप शीघ्र आना सचमुच अवश्य आना ध्यान से आना भूलना नहीं इसी प्रकार देवता विषयमें यह वचन ऋषि के सच्चे प्रेम और साक्षात् किये हुए सम्बन्ध को प्रगट करते हैं ॥

ऋ० मं० १ सू० २ ॥

मित्रावरुणौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि र्गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

मि॒त्रंहु॑वेपू॒तद॑क्षं॒ वरु॑णंच॒रि॒शा

दसम् । धियं॑घृ॒ताचीं॒साध॑न्ता ॥ ७ ॥

१ मि॒त्रम्	मित्रम्	मित्र को
हु॒वे	आह्वयामि	मैं बुलाता हूं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ पूतऽदक्षम्	पवित्रबलम्	पवित्रबलवालेको
१ वरुणम्	वरुणम्	वरुण को
च	च	और
३ रिशादसम्	रिशानांहिंसकानामदसमत्तारम् (अर्थात्नाशयितारम्)	हिंसकों के नाश करने वाले को
४ धियम्	बुद्धिम्	बुद्धि को
५ घृताचीम्	घृतमुदकमञ्चति भूमिंप्रापयतिता-मुदकप्रापिकाम्	जल को प्रेरण करने वाली को
४ साधन्ता	साधयन्तौ	करने वालों को

संस्कृतार्थः।

(अहम्)उदकप्रापिकां बुद्धिं साधयन्तौ पवित्रबलंमित्रं हिंसकानां नाशयितारं वरुणञ्च आह्वायामि॥७॥

भाषार्थः।

मैं जल प्राप्त कराने वाली बुद्धिको करने वाले पवित्र बल वाले मित्र और हिंसकों के नाश करने वाले वरुण को बुलाता हूं॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग—यह और अगले दो मंत्र सत्र के दूसरे दिन में मैत्रा वरुण के शस्त्र में पढ़ेजाते हैं (आ० श्रौ० सू०उ० १।२।२)और होत्रकों के शस्त्र में भी डाल कर पढ़ेजाते हैं (आ०श्रौ०सू०उ।१।५।९)

(१) मित्र सूर्य सहित आकाश और वरुण आकाशमात्र रूप में परमात्मा की सर्वाच्छादक शक्ति को उस के साम्राज्य और अन्तर्यामिता को सूचन करते हैं। ये दोनों सृष्टि को क्रमव्यवस्था पर चलाने वाले हैं। मित्र सूर्य्य सहित आकाश रूप में

(२) पवित्र बल वाले हैं। इन्हीं की पवित्र शक्ति से पृथिवी के सब पदार्थ पवित्र होते हैं।

(३) वरुण देवता अन्तर्यामी और पापियों को दण्ड देने वाले होने से हमारे प्रति हिंसा की बुद्धि रखने वालों को अर्थात् हमारे शत्रुओं को नाश करने वाले हैं।

(४) ये दोनों देवता जलों के प्राप्त कराने वाली अर्थात् वृष्टि को लाने वाली बुद्धि करते हुए आवें अर्थात् जब हमारे आवाहन करने पर आवें तौ वृष्टि को अपने साथ लावें।

ऋ० मं० १ सू० २।

मित्रावरुणौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः।८।८।८॥

ऋतेन॑मित्रावरुणा वृतावृधावृत-

स्पृशा । क्रतु॑म्बृहन्त॑माशाथे ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ ऋतेन	ऋतेन	ऋतसे
मित्रावरुणौ	हे मित्रावरुणौ	हे मित्र और वरुण
१ ऋतऽवृधौ	ऋतस्य वर्धयितारौ	ऋतके बढ़ाने वाले
२ ऋतऽस्पृशा	ऋतं स्पृशन्तौ	ऋतको स्पर्श करने वाले
२ क्रतुम्	बलम्	बल को
२ बृहन्तम्	महान्तम्	बड़े को
२ आशाथे	प्रापथुः	प्राप्त किया ह

संस्कृतार्थः

हे मित्रावरुणौ ऋतस्य वर्धयितारौ ऋतंस्पृशन्तौ (युवाम्) ऋतेन महान्तं बलं प्रापथुः ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

हे मित्र और वरुण (आपजो) ऋत के बढ़ाने वाले और ऋत के स्पर्श करने वाले हो (ऐसे आपने) ऋत से महान् बल को प्राप्त किया है ॥ ८ ॥

(१) सृष्टि के क्रम व्यवस्था का नाम "ऋत" है। यह जगत् अपने सम्पूर्ण अंगों में नियम से बद्ध है । आलोक (Phenomena)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बदलते रहते हैं परन्तु उनकी क्रम व्यवस्था सदा एक रस रहती है शारीरिक मानसिक सामाजिक राष्ट्र सम्बन्धी सब घटनाएं एक अटल नियम के अनुसार होती हैं जिस को ऋत कहते हैं। इसी को साधारण मनुष्य ईश्वरेच्छा भी कहते हैं। अंग्रेजी में इस का अधूरा सा पर्याय वाची शब्द "कौस्मिक ला" (Cosmic law) है। मित्र और वरुण ऋत के बढ़ाने वाले हैं इन के धारण पोषण करने से ही ऋत का कभी क्षय नहीं होता। और मनुष्य इसप्रकारकी सम्भावना कभी चित्त में भी नहीं लाते कि कदाचित् कल सूर्य्य उदय न हो।

(२) "ऋतस्पृशा" ये ऋत के स्पर्श करने वाले हैं। ऋत के साथ इन का सम्पर्क है। ये सदा ऋत में रहते हैं, ऋत को कदापि उल्लंघन नहीं करते। जिस प्रकार सूर्य अपनी मर्य्यादा को नहीं टालता। इसी प्रकार ये देवता भी ऋत के बाहर नहीं जाते। इसी लिये ऋत को स्पर्श किये हुए हैं॥

(३) ऋत से ही इन्होंने महान् बल को पाया है। देवताओं के अद्भुत बल का कारण यही है कि वे "ऋत" को उल्लंघन नहीं करते। यदि मनुष्य भी अपना आचरण ऋत के अनुकूल बना लेवे तो वह देवताओं के से बल को पासक्ता है। ऋतको जाननेके उपाय वेदादि शास्त्र, श्रीरामचन्द्र जैसे महापुरुषों के आचार, सृष्टि के नियम (Laws of nature) और अपनी आत्मा (conscience) का प्रबोधन इत्यादि हैं। यजमानके लिये ऋत के अनुकूल चलने का इन सब से सरल उपाय आगे वेद मंत्रों में आएगा॥

ऋ० मं० १ सू० २।

मित्रावरुणौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कवीनोमित्रावरुणा तुविजाता

उरुक्षया । दक्षंदधातेअपसम् ।९।

कवी	क्रान्तदर्शिनौ	सब कुछ देखने वाले
नः	अस्माकम	हमारे
मित्रावरुणा	मित्रावरुणौ	मित्र और वरुण
१ तुविऽजातौ	बहूनाम् (उपकारकतया) जातौ	बहुतों के लिये उत्पन्न हुए
२ उरुऽक्षया	विस्तृतनिवासौ	बहुत चौड़े स्थान वाले
३ दक्षम्	बलम्	बल को
३ दधाते	धारयतः	सहारते हैं
३ अपसम्	कर्म (निघं० २।९)	कर्म को

संस्कृतार्थः

क्रान्तदर्शिनौ बहूनाम् (उपकारकतया) जातौ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिस्तृतनिवासौ मित्रावरुणावस्माकं बलं कर्म च धारयतः ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

सब कुछ देखने वाले बहुतों के लिये उत्पन्न हुए और बड़े विस्तृत स्थान वाले मित्र और वरुण हमारे बल और कर्म को सहारने वाले हैं ॥ ९ ॥

(१) तुवि शब्द का "बहुत" अर्थ है (निघं० ३।१)—"तुविजातौ" बहुतों के लिये उत्पन्न—मित्र और वरुण बहुतों के लिये उत्पन्न हुए हैं अपने लिये नहीं—(वह मनुष्य भी जिस का जन्म बहुतों के लिये है, केवल अपने लिये नहीं, देव तुल्य है)

(२) उरुक्षयौ—बहुत चौड़े स्थान वालेहैं। उनके रहनेका स्थान संकुचित नहीं है। परन्तु बहुत विस्तृत है—(संकुचित स्थान में रहने से मनुष्य भी शरीर मन और आत्मा तीनों से सुकड़ जाता है)·

(३) मित्र और वरुण हमारे बल और कर्म दोनों के सहारने वाले हैं। हमारा बल उन पर आश्रित है, वह अपना आश्रय हटा लेवें। तो हम तुच्छ और निर्बल हैं । बल ही नहीं किन्तु वे हमारे कर्म को भी सहारते हैं । जो कुछ सुकर्म हम से बन पड़ता है, उसमें हमारी बड़ाई कुछ नहीं । वह उन्हीं के सहारे है—इसमें उन्हीं की बड़ाई है। देवभक्ति शून्य पुरुष कोई प्रशंसनीय कर्म करके अभिमान ग्रस्त हो जाते हैं, वह समझते हैं कि यह सुकर्म हमने किया है इसमें हमारी बड़ाई है। ये लोग इसी लिये गिर जाते हैं और इनके बल और सुकर्म क्षीण होजाते हैं । परन्तु देवभक्त अभिमान नहीं करते और उनके बल और सुकर्म को मित्र और वरुण सहारे रहते हैं, गिरने नहीं देते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू०३ ।

अश्विनौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८।।

अश्विनायज्वरीरिषो द्रवत्पाणी

शुभस्पती । पुरुभुजाचनस्यतम् ।१।

१ अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्वि देवो
२ यज्वरीः	यागनिष्पादिकाः (यज्देवपूजायाम्)	यज्ञ को सिद्ध करने वालों को
२ इषः	अन्नानि	अन्नों को
३ द्रवत्ऽपाणी	द्रवन्तौपाणी ययोः तथोक्तौ	शीघ्र हाथ बढ़ाकर ग्रहण करने वाले
४ शुभः	शोभनस्य	सुन्दर (कर्म) के
४ पती	पालकौ	पालनकरने वाले
५ पुरुऽभुजा	विस्तीर्णभुजौ	विस्तृत भुजा-ओं वाले
६ चनस्यतम्	चनोऽन्नमात्मन इच्छतम् (भुंज्जाथामित्यर्थः)	भोजन करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ द्रवद्भ्यां पाणिभ्यामुपेतौ शोभनस्य कर्मणःपालकौ (युवाम्) यागनिष्पादकान्यन्नानि भुञ्जाथाम् ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे अश्विनी देवताओ आप जो शीघ्र हाथ बढ़ा कर (हवि को) ग्रहण करने वाले हो सुन्दर कर्म के पालन करने वाले और विस्तृत भुजाओं वाले हो ऐसे आप यज्ञ को सिद्ध करने वाले अन्नों को भोजन करें ॥१॥

विनियोग—यह और अगले दो मंत्र प्रातरनुवाकके आश्विन क्रतु में पढे जाते हैं (आ०श्रौ०सू० ४ । १५ । १)

(१) अश्वि प्रातःकाल के प्रकाश के देवता हैं, जिस समय रात्रि का तम प्रातःकाल में होने वाली उषा की लाली से मिलता है वह समय अश्वि देवताओं का है जैसे (ऋ०१०।६१।४) में वर्णन है।

कृष्णायद्रोष्वरुणीषुसीदद्दिवो नपाताश्विनाहुवेवाम् ।

जब लाल किरनों में काला तम होता है उस समय हे द्यौ (प्रकाशमान् आकाश) के पुत्रो मैं आप को बुलाता हूं ॥

यह दोनों देवता उस समय के सब को नये जीवन देनेवाले प्रकाश के वाचो हैं इसी लिये देवभिषक् कहलाते हैं ॥

इसी काल को ब्राह्ममुहूर्त कहते हैं और इस समय उठना आरोग्य और पुण्य को देने वाला माना गया है ॥

(२) "यज्वीरीरिषः" शब्द से प्रतीत होता है कि अन्न यज्ञको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिद्धि के हेतु हैं इसलिये यजमान को बहुत अन्न वाला अर्थात् धन-वान होना चाहिये ॥

(३) द्रवत्पाणी, शीघ्र हाथ बढ़ाकर लेने वाले—यह इनका मनुष्य पर कितना प्रसाद है, यदि कोई ऊंचे दर्जे का मनुष्य ऐसा प्रसाद करे तो हम कैसे उस पर मोहित होजाते हैं इस लिये इन देवताओं के साथ मनुष्य जितनी प्रीति करे थोड़ी है ॥

(४) शुभ कर्मों के पालक अर्थात् शुभ कर्म इन्हीं की रक्षा से मनुष्य में ठहरते हैं बिना देवताओं की रक्षा के मनुष्य से अधिक अशुभ कर्म ही बन पड़ते हैं। इस लिये शुभ कर्मों की रक्षा के लिये सदा देवताओं से प्रार्थना करना चाहिये ॥

(५) पुरुभुजा—लम्बी भुजाओं वाले हैं,इस लिये हम निर्भयता से उन की शरण में रह सक्ते हैं ॥

(६) ऐसे अश्वि देवता हमारे दिये हुए अन्नों को अंगीकार करके अपना मित्रभाव प्रगट करें ॥

ऋ० मं०१ सू० ३।

अश्विनौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ८।८।८॥

अश्विनापुरुदंससा नराशवीर-याधिया। धिष्ण्यावनतंगिरः ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्वि देवो
[1]पुरुदंससा	बहुकर्माणौ (दंसइति कर्मनामनिघं०२.१)	बहुत काम करने वाले
२ नरा	नरौ	नरो
३ शवीरया	गतियुक्तया (शु- गतौ)	पहुंचने वाले से
धिया	ध्यानेन	ध्यान से
४ धिष्ण्या	स्तुत्यौ	स्तुति करनेयोग्य
वनतम्	सेवेताम्	सेवन करो
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को

संस्कृतार्थः।

हे अश्विनौ बहुकर्माणौ नरौ स्तुत्यौ (युवाम्) गतियुक्तेन ध्यानेन (अस्मदीयाः) स्तुतीः सेवेताम् ॥ २ ॥

भाषार्थः।

हे अश्वि देवताओ (आप जो) बहुत काम करने वाले नर और स्तुति के योग्य (हो ऐसे आप) पहुंचने वाले ध्यानसे (हमारी) स्तुतियों को सेवन करो ॥२॥

(१) अश्वि देव बहुत काम करने वाले हैं, मनुष्योंमें भी बहुत काम करने वाला श्रेष्ठ होताहै इस लिये बहुत काम करनेका अभ्यास

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से मनुष्य देव तुल्य होता है॥

(२) "नरा" अश्वि देव नर हैं, नर (मर्दपने) के गुणोंसे जितना कोई अधिक विशिष्ट हो उतना ही उस मनुष्य में देवपन है, बिना नरभाव (Manliness) के दूसरे गुण भी नहीं ठहर सक्ते, इस लिये सबसे अधिक प्रयत्न पुंस्त्वगुण उत्पन्न करनेके लिये करना चाहिये।

(३) "शवीरया धिया"का अर्थ है "पहुंचने वाले ध्यानसे" ऐसा ध्यान (Penetrating thought) जो बातकी तह को पहुंचजाय।

मनुष्य को भी ऐसा अभ्यास करना चाहिये कि जिस काम को हाथ में लेवे उस को तह में पहुंचने वाले ध्यान को लगा कर करे, ऐसा करने से वह काम "शुभ कर्म" होगा और वह मनुष्य प्रतिदिन देवतुल्य होता जायगा॥

(४) "धिष्ण्या" अश्वि देव स्तुति के योग्य हैं मनुष्य को भी ऐसे कर्म करने चाहिये कि वह स्तुति के योग्य हो॥

ऐसे अश्वि देवता हमारी स्तुतियों को बहुत ध्यान के साथ सेवन करें॥

ऋ० मं० १ सू० ३।

अश्विनौ देवते वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ८।८।८॥

दस्रा॑युवाक॑वः सु॒ता नास॑त्या वृ॒क्त

ब॒र्हिषः। आया॑तं रुद्रवर्तनी॥३॥

[1]दस्रा	हे भीषणो (आ० को०)	हे भयानक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५युवाकवः	युवांकामयमानाः (ऋ०३।५८।७)।	आपकी कामना करनेवाले
६सुताः	निष्पीडिताः	निष्पीडन किये हुवे
२नासत्या	अनृतरांहतौ	अनृतरहित
४वृक्तऽबर्हिषः	आस्तृतदर्भ यक्ताः (आ०को) आ +	विछाई हुई कुशाओं से युक्त
७आ यातम्	आ+यातम् आगच्छतम्	आओ
३रुद्रऽवर्तनी	रुद्राणांशत्रुरोदन कारिणांशूराणां वर्तनिर्मार्गोय-योस्ततसम्बुद्धौ	हे शूरबीरों के रस्ते में जाने वालो

संस्कृतार्थः।

हे भीषणौ अनृतरहितौ शूरमार्गगामनौ युवां कामयमाना आस्तृतदर्भयुक्ताः(सोमाः) निष्पीडिताः (सन्ति) (अतः) (युवां) आगच्छतम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

हे भयानक अनृत रहित शूरबीरों के रस्तेमें जाने वाले अश्वि (देवताओ) आप की कामना करने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाले और बिछाई हुई कुशाओं से युक्त (सोमरस) निष्पीडन किये हुए (तैय्यार हैं) आप आइये ॥३॥

(१) अश्विदेव भीषण हैं भीषण होना देवगुण है, मनुष्य को भी भीषण होना चाहिये भीषण पुरुष से सब डरते हैं और कोई उस की अवज्ञा नहीं कर सक्ता देवतुल्य बनाने के लिये गुरु गोबिन्द सिंह ने सिक्खोंको केश और श्मश्रुधारण करवा सिंह बनाकर रूप नाम और गुणों से भीषण बनाया ॥

(२) अश्विदेव असत्य से रहित हैं मनुष्य को भी सदा सच्चा होना चाहिये, और

(३) शत्रुओं के रुलाने वाले शूरबीरों के रस्ते चलना चाहिये शत्रुओं के प्रसन्न करने वाला कदापि नहीं होना चाहिये जैसे कवि ने कहाहै "निरुत्साहं निरानन्दं निर्वीर्य्यमरिनन्दनम्,

मास्मसीमन्तिनोकाचिज्जनयेत्पुत्रमोदृशम्"

"अरिनन्दन" शत्रुको प्रसन्न करने वाले पुत्रको कोई माता न जने। ऐसे भीषण सच्चे और बीरों के रस्ते चलने वाले अश्विदेव हमारे यज्ञ में आवें जहाँ

(४) उनके आसन के लिये जड़ काट कर नरम२ कुशा बिछाई हुई हैं और

(५) उन की कामना करते हुए, सोमरस

(६) निष्पोडन किये हुए तैय्यार हैं ॥

ऋ० मं० १ सू० ३ ।

इन्द्रोदेवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे

त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥४॥

इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
आ	आ+	--
याहि	आ+याहिआगच्छ	आइये
१ चित्रऽभानो	चित्राआश्चर्य्य-वन्तो भानवो दीप्तयो यस्य तत्संबुद्धौ	हे आश्चर्य युक्त दीप्ति वाले
२ सुताः	अभिषुताः(सोमाः)	निष्पीडन किये हुए (सोमरस)
इमे	इमे	ये
२ त्वाऽयवः	त्वांकामयमानाः	आप की कामना करते हुए
अण्वीभिः	अङ्गुलिभिः (निघं०२।५)	अंगुलियों से
तना	अपि (ऋ०३।२७।९)	भी
३ पूतासः	शोधिताः	पवित्र किये हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हे चित्र दीप्तियुक्त इन्द्र(त्वम्)आगच्छ अभिषुता इमे (सोमाः) त्वां कामयमाना अङ्गुलिभिश्च शोधिताः (वर्तन्ते) ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

हे आश्चर्ययुक्त दीप्तिवाले इन्द्र (आप) आवें ये निष्पीडन किये हुए (सोमरस) आपकी कामना करने वाले और अंगुलियों से पवित्र भी किए हुए हैं ॥

(१) इन्द्र की दीप्ति आश्चर्ययुक्त है। दो हाथ की दूरी पर एक लाख दीपक की इतनी दीप्ति नहीं होती जितनी सूर्यरूपी इन्द्र की नौ करोड़ तीसलाख मील की दूरी पर है॥

ऐसे इन्द्र हमारे पास आवें, क्योंकि

(२) हमारे निष्पीडन किये हुए सोमरस उनकी कामना कर रहे हैं, उनके लिये तरस रहे हैं॥

(३) और अंगुलियों द्वारा पवित्र भी किये हुए हैं। अंगुलियोंके अग्रभाग से विद्युत धारा निकलती रहती है। इसलिये जब किसी रस को वस्त्र में डालकर अंगुलियों के अग्रभाग से छाना जाता है, तो विद्युत की पावकशक्ति भी उस रस की पवित्रता को बढ़ातीहै। प्रेम और पवित्रता यह दोनों देवताओं के बुलाने के उत्तम साधन हैं॥

इन्द्रोदेवता वैश्वामित्रोमधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८।

इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुतावतः। उपब्रह्माणि वाघतः॥५॥

इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
आ	आ+	--
याहि	आ+याहिआगच्छ	आइये
१ धिया	ध्यानेन	ध्यान से
१ इषितः	प्राप्तः	प्राप्त
२ विप्रऽजतः	स्तोतृभिः प्रेरितः	स्तोताओंसेप्रेरित
३ सुतऽवतः	अभिषुतसोम युक्तस्य	सोम निष्पीडन करने वाले के
उप	प्रति	प्रति
ब्रह्माणि	मंत्रात्मिकाः स्तुताः	मंत्ररूप स्तुतिओं का
३ वाघतः	ऋत्विजः (निघं०३।१५)	ऋत्विज के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ध्यानेन प्राप्तः (त्वम्) स्तोतृभिः प्रेरितः (सन्) अभिषुतसोमयुक्तस्य ऋत्विजः स्तोत्राणि प्रति आगच्छ ॥५॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ध्यान से प्राप्त होने वाले आप स्तुति करने वालों (की स्तुति से) प्रेरित होकर सोम निष्पीडन करने वाले ऋत्विज के स्तोत्रों की ओर आइये ॥

(१) इन्द्र देवता ध्यानसे ही प्राप्त होते हैं। हमारे ध्यानसेही वह आते हैं। हमारे ध्यान से ही वह सोमपान करते हैं। ध्यान ही देवता की प्राप्ति का मुख्य हेतु है।

(२) स्तोताओं की स्तुति से भी वह प्रेरित होते हैं क्योंकि स्तुति द्वारा उनके गुणोंको मनमें धारण करने से मन उनकी प्राप्ति के योग्य बन जाता है।

(३) ऐसे इन्द्र हमारे सोम निष्पीडन करने वाले ऋत्विक् के स्तोत्रों के प्रति आवें अर्थात् स्तोत्र उच्चारण होते ही आवें।

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
आ	आ+	--
याहि	आ+याहिआगच्छ	आइये
१तूतुजानः	त्वरमाणः	शीघ्रता करता हुआ
उप	प्रति	प्रति
ब्रह्माणि	मंत्रात्मिकाः स्तुती	मंत्ररूप स्तुतियों को
२हरिऽवः	हे अश्वयुक्त	हे घोड़ों वाले
३सुते	सोमाभिषव कर्माण	सोम निष्पड़न कर्म में
३दधिष्व	धारय	धारण कर
नः	अस्माकम्	हमारे
१चनः	हर्षम् (आ०को)	हर्ष को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अश्वयुक्त इन्द्र त्वरमाणः (त्वमस्माकम्) स्तोत्राणि प्रत्यागच्छ (आगत्य च) अस्माकं सोमाभिषवकर्मणि हर्षं धारय ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र घोड़ों वाले (आप हमारे) मन्त्र रूप स्तुतियोंके प्रति शीघ्रता करते हुए आइये और हमारे सोम निष्पीडन कर्म में हर्ष को धारण कीजिये ॥६॥

(१) इन्द्र देवता शीघ्रकारी हैं मनुष्यको भी शीघ्रकारी होना चाहिये। शीघ्रकारी होनेसे ही वह बहुत काम करनेवाला होसक्ता है।

(२) इन्द्रदेव घोड़ों वाले हैं। जब आते हैं घोड़ों से युक्तरथ में बैठ कर आते हैं। इन्द्र के उपासक आर्य्यों को भी सर्वदा घोड़ों से युक्त रहना चाहियें॥

(३) इन्द्र हमारी स्तुतिओं के प्रति आवें और हमारे सोम निष्पीडन् कर्म में हर्ष को धारण करें अर्थात् आनंदित हों ॥

विश्वेदेवादेवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ८।८।८॥

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवास आगत। दाश्वांसोदाशुषःसुतम् ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ओमासः	रक्षकाः (अव रक्षणे कर्तरि मन्)	रक्षक
३ चर्षणी ऽधृतः	मनुष्याणांधारकाः	मनुष्योंकेधारण पोषण करनेवाले
१विश्वे	हे सर्वे	हे सब
१देवासः	देवाः	देवताओ
आ	आ+	---
गत	आ+गत,आगच्छत	आओ
४दाश्वांसः	दत्तवन्तः (दाश् दाने भूते क्वसुः)	देनेवाले
५दाशुषः	हविर्दत्तवतः	भक्त के
५सुतम्	सोमाभिषवकर्म (प्रति)	सोमनिष्पीडन कर्म (केप्रति)

संस्कृतार्थः ।

हे सर्वे देवा रक्षकाः मनुष्याणां धारका दातारः (च यूयम्) हविर्दत्त वतः सोमाभिषव कर्म प्रत्यागच्छत ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे सब देवताओ (आप सब के) रक्षक हो मनुष्यों के धारण पोषण करने वाले हो और दाता हो ऐसे आप भक्त के सोम निष्पीडन कर्म्म के प्रति आइये ॥ ७ ॥

विनियोग के लिये देखो (यजु०अ०७ मं०३३)

(१) सब देवता अर्थात् परमात्मा की नाना शक्तियां

(२) निरन्तर मनुष्य की रक्षा करते हैं। नहीं तो इस का यहां ठिकाना न लगे क्षणभरमें नष्ट होजावे। शरीर में देवगुण वाले सूक्ष्म जीव निरन्तर राक्षस रूपी सूक्ष्म जीवों से युद्ध करते हैं और मनुष्य की रक्षा के लिये कटिबद्ध रहते हैं मानसिक जीवन में सरस्वती देवी सदा सुमति द्वारा हमारे कुमति जन्य चिन्तनाओं को हटाती रहती हैं (देखो मं० ११) नहीं तो हम तत्काल अपना घात करलेवें। इसी तरह अनेक प्रकार से देवता हमारे जाने वा न जाने विना भी हमारी रक्षा करते रहते हैं। इसीलिये वह

(३) मनुष्यों के धारक हैं। मनुष्य का जीवन और उसका पोषण देवताओं के हाथ में है ॥

(४) देवता ही अन्नादि के देने वाले हैं। जल,वायु,सूर्य इत्यादि देवता अपना दान बन्द कर देवें तो अन्नादिक कुछ न हो। इस लिये जो कुछ हमारे पास है उन्हीं का दिया हुआ है।

(५)ऐसे सब देवता मुझ हवि देने वाले भक्तके सोम निष्पीडन कर्ममें आवें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वे देवा देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

विश्वे॑दे॒वासो॑ अ॒प्तुरः॑ सु॒तमाग॑न्त॒ तूर्ण॑यः । उ॒स्राइ॑व॒ स्वस॑राणि ॥८॥

१ विश्वे	हे सर्वे	हे सब
१ दे॒वासः॑	देवाः	देवताओ
१ अ॒प्ऽतुरः॑	अनलसाः	आलस्य रहित
सु॒तम्	सोमाभिषवम् (प्रति)	सोम निष्पीडन कर्म (के प्रति)
आ	आ +	--
ग॒न्त॒	आ + गन्त आगच्छत	आइये
तूर्ण॑यः	त्वरायुक्ताः	शीघ्रतायुक्त
२ उ॒स्राःऽइ॑व	गावइव (उस्राऽति गोनाम निघं०२।११)	गौओं की न्याईं
२ स्वस॑राणि	गृहान् (प्रति) (निघं०३।१४)	घरों (की ओर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे सर्वेदेवा अनलसाः त्वरायुक्ताः (यूयं) गृहान् (प्रति) गाव इव (मम) सोमाभिषवकर्म प्रति आगच्छत ॥८॥

भावार्थः ।

हे सब देवताओ (आप) जो आलस्य रहित हैं शीघ्रता से (मेरे) सोम निष्पीडनकर्म में आवें जैसे गौएं घरकी ओर आती हैं ॥ ८ ॥

(१) सब देवता आलस्य रहित हैं । मनुष्य भी आलस्य छोड़ कर ही देवतुल्य होसक्ता है । विचार करके देखें तो हम पाएंगे कि आलस्य ही हम को उन्नत होने से रोकने वाला एक बड़ा शत्रु है । हम आलस्य से रोगी इसी से दरिद्री इसी के कारण विद्या हीन रहते हैं । इसलिये आलस्य को जीतने का निरन्तर ध्यान रखना चाहिये ॥

(२) आलस्य रहित सब देवता शीघ्रता से हमारे सोमनिष्पीडन कर्म में आवें जैसे गौएं जब सायं काल के समय जंगल से चर कर चलती हैं तो बड़ी शीघ्रता से घरकी ओर आती हैं ॥

विश्वेदेवा देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

विश्वेदेवासोअस्रिध एहिमायासो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अद्रुहः। मेधं जुषन्त वह्नयः ॥९॥

विश्वे	सर्वे	सब
देवासः	देवाः	देवता
अस्रिधः	क्षयरहिताः	क्षय रहित
२ एहिऽमा-यासः	आ समन्तादीहते चेष्ठते एहिः सा-माया प्रज्ञा येषां ते, सर्वतश्चेष्ठित प्रज्ञा इत्यर्थः	सब ओर चेष्टा करती है बुद्धि जिन की
३ अद्रुहः	द्रोह रहिताः	द्रोह से रहित
मेधम्	यज्ञम् (निघं०३।१७)	यज्ञ को
जुषन्त	स्वीकुर्वन्तु	स्वीकार करें
४ वह्नयः	(धनानां सुखानां वा) वोढारः	(धन वा सुखों के) प्राप्त कराने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

क्षयरहिताःसर्वतश्चेष्ठितप्रज्ञा द्रोह रहिता(धनानां सुखानां वा) वोढारः सर्वे देवाः (अस्मदीयम्) यज्ञं स्वीकुर्वन्तु ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

क्षय से रहित सब ओर चेष्टा करने वाली प्रज्ञा वाले द्रोह रहित (धन वा सुखों के) प्राप्त कराने वाले सब देवता हमारे यज्ञ को स्वीकार करें ॥ ९ ॥

(१) सब देवता क्षय से रहित हैं, मनुष्य की तरह बार बार मरते जन्मते नहीं हमारा उद्देश्य भी यह होना चाहिये कि हम क्षय से रहित हो जावें ॥

(२) देवताओं की बुद्धि सब ओर चेष्टा करती है, मनुष्य भी वही श्रेष्ठ होता है जिस की बुद्धि सब ओर चेष्टा करे जो सब कामों में बुद्धिको लगावे, यदि हम सब ओर बुद्धिको लगावें औरसब कामों को बुद्धिकी चेष्टा से करें, तौ बहुत शीघ्र उन्नत हो सकते हैं ॥

(३) देवता द्रोह से रहित हैं कभी मनुष्यों के प्रति अनिष्ट चिन्तन नहीं करते हमें भी आत्मीय वर्गों के साथ द्रोह नहीं करना चाहिये ॥

(४) देवता धन वा सुखों के प्राप्त कराने वाले हैं हमें भी अपने आत्मीय वर्गों के लिये धन और सुखों के प्राप्त कराने वाले होना चाहिये ॥

सरस्वती देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि-र्गायत्री छन्दः। ८। ८। ८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥१०॥

३ पावका	पावनी	पवित्र करनेवाली
नः	अस्माकम्	हमारे
१ सरस्वती	सरस्वती	सरस्वती
५ वाजेभिः	अन्नैः सह	अन्नों के साथ
४ वाजिनीऽवती	वाजिनी अन्नसंततिस्तद्वती (अन्न बहुला इत्यर्थः)	बहुत अन्न वाली
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
वष्टु	कामयताम्	कामना करे
२ धियाऽवसुः	प्रज्ञया सर्वेषु वसति सा	प्रज्ञा रूप से सब में रहने वाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

पावनी अन्नबहुला प्रज्ञया सर्वेषु विद्यमाना सरस्वती अन्नैस्सह अस्मदीयं यज्ञं कामयताम्॥१०॥

भावार्थः।

पवित्र करने वाली बहुत अन्न वाली और प्रज्ञा रूप से (सब में) रहने वाली सरस्वती देवी अन्नों के साथ हमारे यज्ञ की कामना करें॥ १०॥

विनियोग- यह मन्त्र अन्वारम्भणीयेष्टिमें सरस्वती का पुरोनुवाक्या है (आ०श्रौ० सू०२।८।३)

(१) सरस्वती परमात्मा की वह शक्ति है जो।

(२) प्रज्ञा रूप से सब में रहने वाली है सब की बुद्धियों को प्रदीपन करती है॥

नदीके प्रवाह की तरह चिन्तन की अटूट धारा हमारे चित्त में सञ्चार करती रहती है और नदी के वेगकी तरह इसके वेग को भी कोई रोक नहीं सकता, परन्तु जैसे बुद्धिमान् सरिन्नियामक (Engineer)नदी के प्रवाहको बन्द द्वारा दूसरे मार्गमें फेर देता है, वैसे ही मनुष्य प्रज्ञा द्वारा चित्त के वेग को कुत्सित चिन्तन से शुभ चिन्तनमें बदल सक्ता है, इस पुरुषार्थ में सरस्वती देवी सहायता करती हैं यह देवी

(३) चित्त की शोधक हैं और

(४) बहुत अन्न वाली हैं, अन्न की चिन्ता से निवृत्त होने पर ही मनुष्य चित्तको शुद्ध करने के उपाय में पुरुषार्थ कर सकता है। सरस्वती के उपासक को अन्न की कमी नहीं होती, क्योंकि वह

(५) जब हमारी पूजा को ग्रहण करनेकी कामना करती हैं तो विपुल अन्न के साथ आती हैं॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सरस्वती देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि-
र्निचृद्गायत्री छन्दः ८।७।८॥

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुम-
तीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती ॥११॥

१ चोदयित्री	प्रेरयित्री	प्रेरणा करने वाली
१ सूनृतानाम्	प्रियाणां मंगलानां सत्यवाक्यानां च	प्रिय मंगल और सत्य वाक्यों के
२ चेतन्ती	चेतन्ती	चिताने वाली
२ सुऽमतीनाम्	सुमतीनाम्	सुमतियों की
३ यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
३ दधे	धृतवती	धारण किये हुए हैं
सरस्वती	सरस्वती	सरस्वती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

प्रियाणां मङ्गलानां-सत्यवाक्यानां च प्रेरयित्री शोभनमतीनां चेतन्ती सरस्वती(देवी)यज्ञं धृतवती।११

भाषार्थः ।

प्रिय मंगल और सत्य वाक्यों की प्रेरणा करने वाली और सुमतियों की चिताने वाली सरस्वती देवी ने यज्ञ को धारण किया हुआ है ॥११॥

(१) सरस्वती देवी प्रिय मंगल और सत्य वाक्यों की प्रेरणा करने वाली हैं और।

(२) सुमतियों की चिताने वाली हैं । बहुत काम दुर्मति और अतिमति से बिगड़ते हैं सरस्वती देवी इनको निवृत्त करके सुमति प्रदान करती हैं।

(३) उन्हीं की कृपा से मनुष्य की बुद्धि देव यजन की ओर प्रवृत्त होती है। इसलिये वही यज्ञ को धारण करने वाली हैं।

सरस्वती देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि-र्गायत्री छन्दः ८।८।८ ॥

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना धियो विश्वा वि राजति ॥१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ मह:	महत्	महान्
१ अर्णः	आकाशम् (ऋ०७।६०।४)	आकाश को
सरस्वती	सरस्वती	सरस्वती
प्र	प्र+	—
३ चेतयति	प्र+चेतयति प्रबोधयति	बोध कराती है
२ केतुना	प्रज्ञानेन	प्रज्ञा द्वारा
४ धियः	बुद्धीः	बुद्धियों को
४ विश्वाः	सर्वाः	सब को
वि	वि +	--
४ राजति	वि+राजति दीपयति	दीप्त करती है

संस्कृतार्थः ।

सरस्वती प्रज्ञानेन महदाकाशं प्रबोधयति सर्वा बुद्धीश्च दीपयति ॥१२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

सरस्वती देवी प्रज्ञा द्वारा महान् आकाश का ज्ञान कराती हैं और सब बुद्धियोंको प्रकाशित करती हैं॥१२॥

(१) महान् आकाश जिसमें अनेक ब्रह्माण्ड विद्यमान हैं नए बन रहे हैं और पुराने नष्ट होरहे हैं उनको भी

(२) प्रज्ञा द्वारा सरस्वती देवी

(३) बोध कराती हैं। यह परमात्मा की सरस्वती शक्ति ही है जो इस मरण धर्मा अल्पबुद्धि मनुष्य को इतनी महान् सृष्टि रचना का बोध कराती हैं।

(४) और बुद्धिमात्र को ज्ञान के प्रकाश से प्रदीपन करती है नहीं तो मनुष्य की छोटी सी बुद्धि में इतने महान् विषय कदापि नहीं समा सक्ते थे।

इति तृतीयं सूक्तम्

ऋ० मं १ सू० ४

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८ ॥

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिवगोदुहे।
जुहूमसिद्यविद्यवि ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ सुरूपऽकृत्नुम्	शोभन कर्म कर्तारम्	सुन्दर कर्म करने वाले को
२ ऊतये	रक्षार्थै	रक्षाके लिये
३ सुदुघाम्ऽइव	सुदोग्ध्रीं गामिव	सहज से दोही जाने वाली गौ की न्याईं
३ गोऽदुहे	गोदोग्ध्रे	गो दोहने वाले के लिये
२ जुहूमसि	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
२ द्यविऽद्यवि	प्रतिदिनम् (निघं०१।९)	प्रतिदिन

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) शोभनकर्मकर्तारम् (इन्द्रम्) रक्षार्थै गोदोग्ध्रे सुदोग्ध्रींगामिव प्रतिदिनमाह्वयामः ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हम सुन्दर कर्म करने वाले (इन्द्र को) रक्षा के लिये प्रतिदिन बुलाते हैं जैसे गौदोहन करने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के लिये सहजसे दोही जाने वाली गौ को (बुलाते हैं)॥१॥

विनियोग—यह और अगले छः सूक्त अभिप्लवषडहमें ब्राह्मणाच्छंसि के शस्त्र में डाल कर पढ़ेजाते हैं (आ०श्रौ०सू० उ०१।५।१५)

(१) इन्द्र देवता सुन्दर कर्म के करने वाले हैं, मनुष्य को भी सुन्दर कर्म करने वाला होना चाहिये। श्री रामचन्द्र जी का पिता की आज्ञा से राज्य के भोग छोड़ कर बन में चले जाना सुन्दर कर्म था, कर्ण का भरी सभा में सिंहासन से उठ कर शत्रुओं के उपहास पर ध्यान न देकर अपने पालक पिता सूत के चरणों में अभिषिक्त सीस को रख देना सुन्दर कर्म था। श्रीकृष्णजी का दरिद्री सुदामा को प्रेम से आलिंगन करके अपनी स्त्रियों के मुसकराते उस के लाए हुए कच्चे चावलों को चवाना सुन्दर कर्म था, हमारे इतिहास सुन्दर कर्मों से भरे हुए हैं सुन्दर कर्म करने के अवसर प्रतिदिन मनुष्य को मिलते हैं यदि उसका इधर ध्यान हो तो वह सारे जीवन को सुन्दर कर्मों की लड़ी बना सक्ता है। सुन्दर कर्मा इन्द्रको हम

(२) रक्षा के लिये प्रतिदिन बुलावें, इन्द्र की सहायता होने से ही हम प्रतिदिन सुन्दर कर्म के करने वाले हो सकते हैं और बुलाने से वह आकर सहायता करते हैं यद्यपि वह राजाओं के महाराज हैं परन्तु साधारण मनुष्य के पास भी बुलाने से तुरन्त चले आते हैं

(३) जैसे गौ दोहने वाले के पास सूधी गौ, जिस प्रकार सूधी गौ अपने को दोह लेने देती है, इसी प्रकार सूधे इन्द्र देव भी सुदुघा हैं उन को बुलाकर धनादि ऐश्वर्य्य को हर कोई दोहन कर सकता है। मनुष्य और सैंकड़ों उपाय करता है परन्तु सहायता के लिये इन्द्र को नहीं बुलाता यदि भक्ति पूर्वक इन्द्र को बुलाया जाय तो लौकिक पुरुषार्थ भी निर्विघ्नता से सफल हों॥

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः।८।८।८॥

R 23053

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपनः सवनागहि सोमस्य सोमपाः
पिब । गोदाइद्रेवतोमदः ॥ २ ॥

उप	प्रति	प्रति
नः	अस्माकम्	हमारे
१ सवना	सवनानि	(सोमके) सवनों को
आ	आ+	--
गहि	आ+गाहि॥आ गच्छ	आओ
सोमस्य	सोमम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	सोमरस को
सोमऽपाः	हे सोमपान कर्त्तः	हे सोमपान करने वाले
पिब	पिब	पीओ
२ गोऽदाः	गोप्रदाः	गौओं को देने वाला
इत्	पूरणः (निरु१।९)	--
२ रेवतः	धनवत (रयि-विद्यमान मतुप्)	धनी का
२ मदः	मदः	हर्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे सोमपानकर्तः (इन्द्र) अस्माकं सवनानि प्रति आगच्छ (आगत्य च) सोमंपिब, धनवतों मदो गोप्रदः (भवति) ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे सोम पान करने वाले (इन्द्र) हमारे (सोमके) सवनों के प्रति आओ (और आकर) सोमरस को पान करो, धनी का हर्ष गोओं के देने वाला (होता है) ॥ २ ॥

(१) सोमयज्ञ में सोमनिष्पीडन के दिन तीनवार सोम से पूजन और उसका पान होता है प्रातःकाल में प्रातः सवन, मध्यान्ह में माध्यन्दिन सवन और सायंकाल में तृतीय सवन ॥

(२) जैसे धनी मनुष्य का मन हर्ष युक्त होने से बढ़ा हुआ होता है और वह उदारता से दान करता है, इसी प्रकार इन्द्रदेव हर्ष युक्त होकर गौओं को देने वाले होते हैं इन्द्र को हर्ष युक्त करने से अवश्य धन समृद्धि होती है ॥

इन्द्रोदेवता वैश्वामित्रोमधुच्छन्दाऋषि निंचृद् गायत्री छन्दः ७।८।९॥

अथा॑ ते॒ अन्त॑मानां वि॒द्याम॑ सुमती॒नाम्

मा नो॒ अति॑ ख्य॒ आग॑हि ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ	कात्स्न्येंन	संपूर्ण रूप से
ते	तव	आपकी
[2] अन्तमानाम्	अभ्यन्तरतमाः (द्वितीयार्थं षष्ठी)	अत्यन्त भीतरकी
विद्याम	जानीयाम	हम जानें
[1] सुऽमती नाम्	सुमतीः (द्वितीयार्थं षष्ठी)	कल्याण करने वाली बुद्धियों को
मा	मा	मत
नः	अस्मान्	हम को
अति	अति+	--
ख्यः	अति+ख्यः तिरस्कुरु	तिरस्कार करो
आ	आ +	--
गहि	आ+गहि आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ॥

(हे इन्द्र) कात्स्न्येंन तव अभ्यन्तरतमाः शोभनबुद्धीः (वयम्) जानीयाम अस्मान् मा तिरस्कुरु, आगच्छ ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(हे इन्द्र) हम आप की अत्यन्त भीतर की कल्याण करने वाली बुद्धियों को सम्पूर्ण रूप से जानें (आप) हमारा तिरस्कार न करें। (और हमारे पास) आवें ॥ ३ ॥

इन्द्र देव जो कुछ करते हैं मनुष्यों के कल्याण के लिये करते हैं परन्तु उनकी कल्याण बुद्धि को न जानकर मनुष्य दुःखित होता है जो इन्द्र की सुमतियों को जान लेते हैं उन को प्रत्येक अप्रिय अनुभव का प्रयोजन प्रतीत होजाता है वह जान लेते हैं कि रोग इष्ट वर्ग की मृत्यु, अपनी इच्छा के विपरीत घटनाओं का होना इत्यादि अनुभव अमुक त्रुटि के पूर्ण करने को, अमुक धैर्य्यादि गुण दृढ़ करने के लिये हैं और वह किसी अवस्था में शोक और भय को नहीं प्राप्त होते इसी लिये प्रार्थना है

(१) कि हम इन्द्र की अत्यन्त भीतर की कल्याण करने वाली बुद्धियों को सम्पूर्ण रूप से जान लेवें। ऐसा होने से सब घटनाएं सुख और दुःख जन्य होने की जगह हमारी उन्नति के साधन में शिक्षारूप बन जांयगी ॥

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः। ८। ८। ८ ॥

परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा वि-
पश्चितम्। यस्ते सखिभ्य आ वरम् ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ परा	परा+	-
१ इहि	परा+इहि, गच्छ	जा
१ विग्रम्	मेधाविनम् (निघं० ।३।१५)	बुद्धिमान् को
२ अस्तृतम्	अनाछादितम्	जिस को कोई आच्छादननहीं कर सकता
१ इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
१ पृच्छ	पृच्छ	पूछ
३ विपःऽचितम्	विद्वांसम्	विद्वान् को
यः	यः	जो
ते	तव	तेरे
४ सखिऽभ्यः	मित्रेभ्यः	मित्रोंसे
४ आ	सर्वतः	सब प्रकार
४ वरम्	श्रेष्ठः	श्रेष्ठ (है)

संस्कृतार्थः ।

गच्छ मेधाविनमानाच्छादितं विद्वांसमिन्द्रंपृच्छ यस्तव मित्रेभ्यः सर्वतः श्रेष्ठः (आस्त) ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

जा बुद्धिवाले (और) जिन को कोई आच्छादन नहीं कर सकता ऐसे विद्वान् इन्द्र को पूछ जो तेरे मित्रों से सब प्रकार श्रेष्ठ (हैं)॥

जब मनुष्य को कोई कठिनाई आकर प्राप्त होती है तो वह अपने कुटुम्बी वा अन्य मित्रों से सम्मति करने जाता है ऋषि कहते हैं कि

(१) जा इन्द्र से पूछ वह बडे बुद्धिमान् हैं और

(२) अनाच्छादित हैं—अर्थात् किसी के दबाव में आने वाले नहीं हैं यह स्वतन्त्रता से सम्मति देंगे।

(३) और विद्वान् भी हैं सम्मति देने की पूर्ण योग्यता उसी में होती है जिस में ये तीनों गुण हों अर्थात् बुद्धिमान् हो विद्वान् हो और स्वतन्त्र हो, इन्द्र में यह तीनों गुण पूर्ण रूप से विद्यमान् हैं, इसी लिये वह

(४) लौकिक मित्रों की अपेक्षा सब प्रकार से श्रेष्ठ हैं परमात्मा में श्रद्धा न होने से ही लोग मित्रों की सहायता ढूंडते हुऐ इधर उधर भटकते फिरते हैं यदि पूर्ण श्रद्धा हो कि वह समीप वर्ती हैं हमारी बात को सुन सक्ते हैं और हमारा कष्ट निवारण कर सक्ते हैं तो लौकिक मित्र की तरह उनके सामने मनुष्य अपने हृदय को खोल दे ऐसा करने से उस को अवश्य सहायता मिलेगी और कष्ट की निवृति का उपाय किसी न किसी रीति से अवश्य बन पडेगा॥

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रोमधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिच-
दारत । दधाना इन्द्र इद्दुवः ॥५॥

उत	अपिच	चाहे
ब्रुवन्तु	कथयन्तु	कहें
नः	अस्मान्	हम को
निदः	निन्दितारः	निन्दक
निः	निः+	--
अन्यतः	अन्यदेशे (आपटे० को०)	दूसरे देशमें
चित्	चित्	किसी
आरत	निः+आरत निर्गच्छत (ऋगतौ--लोडर्थेलुङ्)	चले जाओ
दधानाः	कुर्वाणाः	करते हुए
इन्द्रे	इन्द्रे	इन्द्र में
इत्	पूरणः (निरु०१।९)	--
दुवः	परिचर्याम्	पूजा को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

अपिच निन्दितारो ऽस्मान् कथयन्तु (यत्) इन्द्रस्यपरिचर्यां कुर्वाणाः(यूयम्)अन्यचिद्देशे निर्गच्छत ॥

भाषार्थः।

चाहे निन्दक हमको कहें (कि) इन्द्र की पूजा करने वाले (तुम लोग) किसी दूसरे देश में चले जाओ ॥

इस मंत्र का अगले के साथ सम्बन्ध है,निन्दक उन लोगों से तात्पर्य्य है जो आस्तिक बुद्धि न रखते हुए देवोपासकों को मूर्ख और मूढ़ विश्वासी समझते हैं और उनके देशमें रहने को जाति की अवनति का कारण मानते हैं।

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः।८।८८॥

उतनः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्मकृष्टयः। स्यामेदिन्द्रस्यशर्म्मणि ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत	अपिच	और चाहे
नः	अस्मान्	हम को
सुऽभगान्	सुष्ठु भग ऐश्वर्यं येषांतान् शोभनै श्वर्यवत इत्यर्थः	अच्छे भागों वालों को
अरिः	देवोपासकाः बहुवचनार्थे एकवचनम् (ऋ०१।१५०।१)	देवभक्त
वोचेयुः	कथयेयुः	कहें
दस्म	हे अद्भुतकर्मन्	हे अद्भुत् कर्मवाले
कृष्टयः	मनुष्याः (निघं०१।३)	मनुष्य
स्याम	स्याम	होवें
इत्	एव	ही
इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र के
शर्मणि	शरणे (ऋ०१।१५०।१)	शरण में

संस्कृतार्थः ।

हे अद्भुतकर्मन् (इन्द्र) अपिच देवोपासका मनुष्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मान् शोभनैश्वर्यवतः कथयेयुः (अत्रस्थाद्वयेऽपि) वयमिन्द्रस्यैव शरणे स्याम ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

हे अद्भुत कर्म वाले (इन्द्र) चाहे देवभक्त मनुष्य हम को अच्छे भागोंवाले कहें (दोनों अवस्थाओं में) (हम) इन्द्र के ही शरण में रहेंगे ॥६॥

आस्तिक मनुष्य कहते हैं। कि ये जो इन्द्र के उपासक हैं बड़े सौभाग्यवाले हैं—परन्तु हम न तो निन्दकों के डर से इन्द्र की पूजा छोड़ेंगे-और न इसलिये हम इन्द्र के सेवक बने हैं कि आस्तिक लोग हमें अच्छा कहते हैं—हमने तो इसलिये इन्द्र की शरण ली है-कि वह हमारे परम हितकारी ओर आश्रय दाता हैं। और हम किसी अवस्था में उनको शरण को नहीं छोड़सक्ते।

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८ ॥

एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियंनृमादनम।
पतयन्मन्दयत्सखम् ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ +	--
ईम्	पूरणः (निरु०१।८)	
२ आशुम्	वेगवन्तम्	वेगवालेको
१ आशवे	वेगवते	वेग वाले के लिये
भर	आ + भर आहर	(तू) ले आ
३ यज्ञऽश्रियम्	यज्ञस्यसम्पद्रूपम्	यज्ञ के सम्पद् रूप को
४ नृऽमादनम्	नराणां मादकम्	पुरुषों को हर्ष के देने वाले को
५ पतयत्	पतिकारकम्	स्वामी बनाने वाले को
६ मन्दयत्-ऽसखम्	आनन्ददायकस्य (इन्द्रस्य) मित्रम्	आनन्द देनेवाले (इन्द्रके) मित्रको

संस्कृतार्थः।

वेगवन्तं यज्ञस्य सम्पद्रूपं नृमादकं पतिकारकं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानन्ददायकस्य (इन्द्रस्य) मित्रम् (सोमम्) वेगवते (इन्द्राय) आहर ॥७॥

भाषार्थः।

वेग वाले, यज्ञ के सम्पद्रूप, पुरुषों को हर्ष के देने वाले, स्वामी बनाने वाले और आनन्द को देने वाले (इन्द्र) के मित्र (सोमरस) को वेगवान् (इन्द्र) के लिये ले आओ ॥७॥

(१) वेगवान् अर्थात् शीघ्रकारी इन्द्र के लिये सोमरस तैयार करो। जो सोमरस

(२) वेगवाला है अर्थात् शीघ्रकारी होनेकी सामर्थ्यको देता है।

(३) यज्ञ का सम्पद्रूप है देवपूजा में सोम के होने से ही यज्ञ की शोभा बढ़ती है।

(४) सोम के पान से मनुष्य मोद को प्राप्त होता है और सब चिन्ता और क्लेशों को भूल जाता है।

(५) सोम स्वामी बनाने वाला है अर्थात् सोम के पीने वाला किसी का दास बनकर नहीं रहसक्ता है वह स्वामी बनने के योग्य हो जाता है और स्वामी बन जाता है।

(६) सोम सारे आनन्दों के निधि इन्द्र का सखा है इन्द्र का प्रियपान होने से उनका मित्र है।

ऐसे सोम को ढूंढने का उपाय अवश्य करना चाहिये अन्य जातियां उत्तर मेरु की ढूंढ में अनेक वीरों को बलि देचुकी हैं जिसके मिलजाने पर भी कोई बड़ी कार्य्य की सिद्धि नहीं दीख पड़ती, सोम तो हमारी जाति के वीर इन्द्र देव का प्रियपान है और उनको प्रसन्न करने से इस जाति का उद्धार शीघ्र होसक्ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता वैश्वामित्रोमधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

अस्यपीत्वाशतक्रतो घनोवृत्राणां

मभवः । प्रावोवाजेषुवाजिनम् ॥ ८ ॥

१ अस्य	इमम् (सोमम) (द्वितीयार्थे षष्ठी)	इस (सोम) को
१ पीत्वा	पीत्वा	पीकर
१ शतऽक्रतो	हेबहुबलयुक्तइन्द्र	हेबहुत बल वाले इन्द्र
३ घनः	वज्ररूपः	वज्ररूप
२ वृत्राणाम्	शत्रुणाम्	शत्रुओं का
४ अभवः	अभूः	तू हुआ है
प्र	प्र+	--
४ आवः	प्र+आवःअत्यन्तं रक्षितवानास	अत्यन्त रक्षा की है
४ वाजेषु	संग्रामेष (निघं०२।१७।)	संग्रामों में
४ वाजिनम्	योद्धारं	योधा को.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबलयुक्त(इन्द्र)(त्वम्) इमम्(सोमम्) पीत्वा शत्रूणां वज्ररूपोऽभूः,संग्रामेषुच योद्धारमत्यन्तं रक्षितवानसि ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे बहुत बल वाले(इन्द्रआप) इस (सोमरस) को पीकर शत्रुओं के लिये बज्ररूप हुए हो और संग्रामों में योधा (बीर) की अत्यन्त रक्षा की है ॥ ८ ॥

(१) सोम को पीकर इन्द्रदेव जो बहुत बल वाले हैं

(२) बृत्रों के लिये (बृत्र शब्द सब प्रकार के शत्रुओं को द्योतन करता है,मनुष्यादि भौतिक शत्रु जो हम से द्वेष, करते हैं। काम क्रोधादि अध्यात्मिक शत्रु जो हम को दुःखी करना चाहते हैं, तम धूलि इत्यादि अधिदैविक शत्रु जो देवताओंके ज्योति और जल रूपी दान को हम से रोकते हैं)

(३) बज्ररूप हुए हैं सोमपान करके ही इन्द्र देव ने पूर्वकाल में आर्य्य जाति के मनुष्य शत्रुओं का नाश किया है॥

सोमपान करके ही इस जाति के मनुष्यों को काम क्रोधादि शत्रुओं के जीतने वाले, धीर और जितेन्द्रिय बनाया है ॥

सोमपान करके ही आर्य भूमि को यथेष्ठ प्रकाश और बृष्टि देकर सर्वोत्तम अखण्ड बनाया है ॥

(४) और प्रत्येक संग्राम में आर्य्य बीर की रक्षा की है, इसी लिये हमारे पूर्वज सर्वगुण सम्पन्न और सुखी थे ॥

ऋग्वेदमें अनेक मन्त्र आगे आवेंगे जिन में इन्द्र को आर्य्य जाति का बीर नेता और रक्षक देव वर्णन किया गया है ॥

वेद के यूरोपियन टीकाकार तो सभी इन्द्र को (Tutelary God of the Aryas)आर्य्यजाति का इष्ट कुल-देवता लिखते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ॥८।८।८॥

तंत्वावाजेषुवाजिनं वाजयामः

शतक्रतो। धनानामिन्द्रसातये ॥९॥

तम्	तम्	उस
त्वा	त्वाम्	तुझ को
१ वाजेषु	संग्रामेषु	संग्रामों में
१ वाजिनम्	बलवन्तम्	बलवाले को
२ वाजयामः	बलोपेतं कर्मः	बलयुक्त करते हैं
शतऽक्रतो	हे बहुबल युक्त	हेसैंकड़ोंबलवाले
३ धनानाम्	धनानाम्	धनों की
इन्द्र	हे इन्द्र	हेइन्द्र
३ सातये	प्राप्तये	प्राप्ति के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे बहु बलयुक्त इन्द्र संग्रामेषु बलवन्तं तं त्वां धनानां प्राप्तये (वयम्) बलोपेतं कुर्मः ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

हे सैंकड़ों बल वाले इन्द्र संग्रामों में बलवाले आप को (हम) धनों की प्राप्ति के लिये बलयुक्त करते हैं ॥ ९ ॥

(१) यद्यपि इन्द्र देव संग्रामों में स्वयं बल वाले हैं ।

(२) परन्तु उनको सोम पान कराके हम अधिक बल वाला बनाते हैं ॥

(३) जिस से वह शत्रुओं का धन जीत कर हमें दें ॥

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रोमधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

योरायोऽवनिर्महान्त्सुपारःसुन्वतः

सखा तस्मादिन्द्रायगायत ।१०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
१ रायः	धनस्य	धन का
१ अवनिः	नदः (आपटे० को०)	नद
१ महान्	महान्	महान्
२ सुऽपारः	कामानांसुष्ठुपूरयिता	कामानाओं का भली प्रकार से पूरण करनेवाला
३ सुन्वतः	सोमाभिषवं कुर्वंतः	सोम निष्पीडन करने वाले का
३ सखा	सखा	मित्र
४ तस्मै	तस्मै	उस
४ इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
४ गायत	गायत	गान करो

संस्कृतार्थः ।

यो धनस्य महान्नदः कामानां सुष्ठु पूरयिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमाभिषवं कुर्वतः सखा (चास्ति) तस्मै इन्द्राय गायत ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

जो धनका बड़ा नद है (सब कामनाओं का) भली प्रकार पूर्ण करने वाला है और सोम निष्पीडन करने वाले का मित्र है, उस इन्द्र के लिये गान करो ॥१०॥

(१) इन्द्रदेव धन के बडे नद हैं जैसे सिन्धु आदि बडे नदों का जल कभी नहीं सूकता इसी प्रकार इन्द्र का धन कभी नष्ट नहीं होता ॥

(२) इन्द्रदेव कामनाओं के भली प्रकार से पूरण करनेवाले हैं

(३) और सोम निष्पीडन करने वाले के तो सखा हैं ।

(४) ऐसे इन्द्रके गुण गाओ जिससे यथेष्ट धन मिले और सब कामनाएं पूर्ण हों ॥

इति चतुर्थं सूक्तम् ।

ऋ० मं०१ सू०५ ।

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत ।

सखायः स्तोमवाहसः ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ(इत)आगच्छत	आओ
तु	क्षिप्रम्	शीघ्र
आ	आ+	--
इत	आ+इत,आगच्छत	आओ
नि	नि+	—
सीदत	नि+सीदत, उपविशत	बैठो
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
अभि	अभि-लक्ष्य	लक्ष रखकर
प्र	प्र+	--
गायत	प्र+गायत,प्रकर्षेण गायत	खूब गाओ
सखायः	हे सखायः	हे मित्रो
स्तोमऽवाहसः	स्तोत्राणांप्रापकाः (स्तोतारः इत्यर्थः)	स्तुतिकरनेवालो

संस्कृतार्थः ।

हे सखायः स्तोतारः (यूयं) आगच्छत क्षिप्रमागच्छत उपविशत (उपविश्यच) इन्द्रमभिलक्ष्य प्रकर्षेण गायत ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे मित्रो स्तुति करने वालो आओ शीघ्र आओ बैठो और इन्द्र की स्तुति खूब गाओ ॥१॥

विनियोग—यह और अगले दो मंत्र अतिरात्र के तृतीय पर्याय में मैत्रावरुण के शस्त्र में पढे जाते हैं (आ० श्रौ०सू० ६।४।१०)

ऋषि अपने मित्र स्तोतागण को यज्ञ भूमि में बुलाते हैं, जहां पर स्तुति गान भी होता है और साथ ही अत्यन्त पवित्रता और सावधानी से हवि तैय्यार की जाकर देवताओं को अर्पण की जाती है यहां पर वह हवि सोम रस है जैसे अगले मन्त्र से प्रतीत होता है। मिल कर स्तुति और पूजा करने से जो प्रभाव उत्पन्न होता है और शीघ्र फल की सिद्धि होती है वह अकेले करने से कदापि नहीं हो सकती इसलिए यज्ञ में ४ से १६ तक ऋत्विजों की आवश्यकता होती है—इससे अधिक मनुष्यों का मिलकर किसी कर्म को एक मन होकर करना कठिन है॥

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्विराड् गायत्री छन्दः।७।७।८॥

पुरूतमंपुरूणामीशानंवार्याणाम्।

इन्द्रंसोमेसचासते ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ पुरूऽतमम्	अधिकतमम्	सबसे अधिकको
१ पुरूणाम्	बहूनांमध्ये	बहुतों में
२ ईशानम्	स्वामिनम्	स्वामी को
२ वार्याणाम्	वरणीयानां धनानाम्	वरने योग्य धनों के
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
३ सोमे	सोमे	सोम में
३ सचा	(स्तुत्या) सह	(स्तुति के), साथ
३ सुते	अभिषुते	निष्पीडन किये जाने पर

संस्कृतार्थः ।

बहूनां मध्ये अधिकतमम् वरणीयानां धनानाम्(च) स्वामिनमिन्द्रम् (हे सखायः ! स्तुत्या) सह सोमे सुते सति (प्रगायत) ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

जो बहुतों में सब से अधिक है (और) बरने योग्य धनोंका स्वामी है (हे ऋत्विजो, स्तुतिके) साथ सोमरसके निचोडे जाने पर उस इन्द्र (की महिमा) को गाओ ॥२॥

(१) जो इन्द्र आकाश पृथिवी मनुष्य इत्यादि बहुत पदार्थों में सब से अधिक हैं।

(२) बरने योग्य धन अर्थात् ऐसे धन जिन को श्रेष्ठ पुरुष भी इच्छा करते हैं उन धनों के जो स्वामो हैं।

(३) ऐसे इन्द्र की महिमा सोम निष्पोडन के साथ गान करो। देवपूजा में स्तुति के साथ तन से (सोम कूटना निष्पीडन करना इत्यादि) श्रम, धन से सोमादि पदार्थ का सम्पादन करना और मन से कर्म में निश्चल ध्यान, जिससे कोई कर्माङ्ग अयुक्त और विधि से विपरीत न हो ये सब वातें होती हैं, स्तुति से हम केवल बाणी को देवता के अर्पण करते हैं और पूजा से तन मन बाणी धन सर्वस्व देवता को भेट किया जाता है, जिससे यजमान (पूजा करने वाला) देवमय होकर अन्त में देवभाव को प्राप्त होता है।

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः। ८। ८। ८॥

सघानोयोगआभुव त्सरायेसपुरं-
ध्याम्। गमद्वाजेभिरासनः। ३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
घ	एव	ही
नः	अस्माकम्	हमारे
१ योगे	अप्राप्तस्य प्राप्तौ	अप्राप्त का प्राप्ति में
२ आ	समन्तात्	चारों ओर
२ भुवत्	भवतु	हो
सः	सः	वह
१ राये	धनार्थम्	धन के लिये
सः	सः	वह
४ पुरम्ऽध्याम्	बहुविधायांचिन्तनायाम्	बहुत प्रकार के चिन्तन में
५ गमत्	आ+गमत् आगच्छतु	आवे
५ वाजेभिः	बलैः	बलों के सहित
आ	आ+	--
सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हम को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

स एव (इन्द्रः) अप्राप्तस्य प्राप्तौ अस्मानभितो भवतु सः (एव) धनार्थं सः (एव) बहुविधायां चिन्तनायाम् (अस्मानभितो भवतु) सः (एव) बलैस्सह अस्मान् (प्रति) आगच्छतु ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

वह ही (इन्द्र) अप्राप्त की प्राप्ति में, धन और बहुत प्रकारके चिन्तनमें, हमारे चारों ओर हों वह ही हमारे पास बलों के सहित आवें ॥ ३ ॥

(१) जो वस्त हमारे पास नहीं है उसकी प्राप्ति को योग कहते हैं जब हम ऐसी वस्तु की प्राप्ति का साधन करें उस समय।

(२) इन्द्र देव हमारे सब ओर हों आगे, पीछे, दांएं, बांएं नीचे और ऊपर से हम इन्द्र की सुरक्षा मे हों, जिस से हमें उस वस्तु की प्राप्ति में ऐसी रुकावटें न पडें जिनको हम जीत न सकें।

(३) धन प्राप्त करने के समय इन्द्र हमारे चारों ओर हों॥

(४) अनेक प्रकार के चिन्तन में इन्द्र हमारे चारों ओर हों जिस से हमारे विचार सुन्दर हों।

(५) वह बलों के सहित हमारे पास आवें जिससे उनके बल की ओट में निर्भय होकर हम सब कामों को कर सकें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः ।

तस्मा इन्द्राय गायत ॥ ४ ॥

यस्य	यस्य	जिस के
सम्ऽस्थे	सम्यक्स्थानमिति संस्थः तस्मिन्	सम्यक् डटजाने पर
न	न	नहीं
वृण्वते	प्रतिरुन्धन्ति	रोक सक्ते
हरी	अश्वौ	दोनों घोड़ों को
समत्ऽसु	युद्धेषु (निघं २।११)	लड़ाइयों में
शत्रवः	शत्रवः	शत्रु लोग
तस्मै	तस्मै	उसके लिये
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
गायत	गायत	गाओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

युद्धेषु (यस्मिन्निन्द्रे) सम्यक् स्थिते (सति) यस्याश्वौ शत्रवो न प्रतिरुन्धन्ति, तस्मै इन्द्राय गायत ॥ ४ ॥

भावार्थः ।

युद्ध में सम्यक् डटजाने पर जिन के घोड़ों को शत्रु नहीं रोक सक्के, ऐसे इन्द्र के लिये गाओ ॥ ४ ॥

इन्द्र के उपासक भी इन्द्र की तरह अजेय होते हैं, उनके घोड़ों के सामने भी शत्रु नहीं ठहर सक्के ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।।

सुतपाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये । सोमासो दध्याशिरः ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुतऽपाव्ने	सुतंपिबतीति सुत पावा तस्मै	सोम पीनेवाले के लिये
सुताः	अभिषुताः	निष्पीडन किये हुए
इमे	इमे	ये
शुचयः	शुद्धाः	पवित्र
यन्ति	प्राप्नुवन्ति	प्राप्त होते हैं
वीतये	भोगार्थम्	भोग के लिये
सोमासः	सोमरसाः	सोमरस
१ दधिऽआशिरः	आश्रृणाति(दोषा निति) आशीः, दधि आशीर्येषान्तं	दही मिलाकर (जिनकादोष)दूर किया गया है

संस्कृतार्थः ।

दध्नानिवृत्तदोषाः शुद्धा अभिषुता इमे सोमरसाः सोमपानकर्त्तुरिन्द्रस्य भोगार्थं प्राप्नुवन्ति ॥५॥

भाषार्थः ।

दहीसे मिलेहुए, पवित्र, निष्पीडनकियेहुए सोमरस सोमपीने वाले इन्द्रके भोग के लिये प्राप्त होते हैं ॥५॥

(१) सोम रस का मादक दोष दूर करने के लिये दही मिलाया जाता है (देखो ऐ०ब्रा०८।४।२२) "आसुरी वैदीर्घ जिह्वी" इत्यादि ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

त्वंसुतस्यपीतये सद्योवृद्धोअजा

यथाः । इन्द्रज्यैष्ठ्यायसुक्रतो ॥६॥

त्वम्	त्वम्	तूने
२ सुतस्य	अभिषुतस्य (सोमस्य)	सोम के
२ पीतये	पानार्थम्	पीने के लिये
१ सद्यः	सद्यः	तत्काल
१ वृद्धः	वृद्धः	बड़ा हुआ
१ अजायथाः	अजायथाः	जन्म लिया है
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
२ ज्यैष्ठ्याय	ज्यैष्ठत्वार्थम्	(देवताओंमें)बड़-प्पन के लिये
सुऽक्रतो	हे सुबल	हेसुन्दरबलवाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे सुबलेन्द्र त्वमभिषुतस्य सोमस्य पानार्थं ज्यैष्ठ्याय (च) सद्यो वृद्धो ऽजायथाः ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे सुन्दरबलवाले इन्द्र आपने सोम पीनेके लिये और बडप्पन के लिये तत्काल बडे होकर जन्म लिया है ॥ ६ ॥

(१) इन्द्र देव तत्काल बड़े होकर उत्पन्न हुए हैं । मनुष्यों की तरह उनकी बाल्यावस्था नहीं हुई । वह जन्म से ही पूर्ण बल युक्त हैं । अदितिः (Infinite nature as represented by the Earth) इनकी माता और द्यौः (The starry heavens) इनके पिता हैं । इनके अद्भुत जन्म का ऋ० मं० ४ सू० १८ में वर्णन है । हजारों मास यह माता के गर्भ में रहे और उत्पन्न होते ही पृथिवी और आकाश को अपने बड़े विस्तार से भर पूर कर दिया ऐसे इन्द्र का जन्म ।

(२) सोम पान और ।

(३) बडप्पन के लिये हुआ है ।

यह देवताओं में सब से बड़े हैं और यजमान के घर में आकर सोमपान के अत्यन्त रसिक हैं ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

आ त्वा॑ विशन्त्वा॒शवः॒ सोमा॑स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रगिर्वणः । शन्तेसन्तप्रचेतसे॥७॥

आ	आ+	--
त्वा	त्वाम्	तुझ को
२ विशन्तु	आ+विशन्तु	प्रवेश करें
१ आशवः	वेगवन्तः	वेग वाले
१ सोमासः	सोमरसाः	सोमरस
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
२ गिर्वणः	गीर्भिःस्तुतिभिर्वन्यते सेव्यत इति तत्सम्बुद्धौ	हे स्तुतियों से सेवन करने योग्य
३ शम्	सुख रूपाः	सुखरूप
ते	तुभ्यम्	तेरे लिये
सन्तु	सन्तु	होवें
३ प्रऽचेतसे	प्रकृष्ट-ज्ञानाय	बढेहुए ज्ञान वाले के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे स्तुतिभिःसेव्य इन्द्र वेगवन्तः सोमरसाः त्वामाविशन्तु प्रकृष्टज्ञानाय तुभ्यं सुखरूपाः (च) भवन्तु ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे स्तुतियों से सेवन करने योग्य इन्द्र वेग वाले सोमरस आप में प्रवेश करें और बढ़े हुए ज्ञान वाले आप को सुखदाई हों ॥ ७ ॥

(१) वेग वाले (तेज़) सोमरस ।

(२) स्तुतियों से सेवन करने योग्य इन्द्रदेव के उदर में प्रवेश करें ।

(३) और उन बढे हुए ज्ञान वाले को सुख रूप हों ।आज कल हमारी प्रार्थना एकपक्षी होती है । ईश्वर से, वा देवता से मांगते ही हैं, कभी कुछ देने का संकल्प भी नहीं करते । और जो कोई पूजा देते भी हैं । वे यह चिन्ता नहीं करते कि उनका दिया हुआ देवता को पहुंचा है वा नहीं । और पहुंचा है तो देवता ने स्वीकार कर लिया है वा नहीं । और स्वीकार किया है तो उस पूजा से देवता को तुष्टि प्राप्त हुई वा नहीं जैसे लोक में कहावत है कि विना दोनों हाथ मिलाए नहीं धुलते । ऐसे ही अदृश्य लोक में भी है । बिनाश्रम किये बिना पदार्थ दिये बिना मनमें संकल्प किये कि यह हमारा पदार्थ देवता भोग करें और इस से उनको आनन्द हो, हमारी एकपक्षी प्रार्थना निष्फल है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

त्वांस्तोमाअवीवृधन्त्वामुक्थाशत-
क्रतो। त्वांवर्धन्तुनोगिरः ॥ ८ ॥

त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
स्तोमाः	सामगानां स्तोत्राण	साम के स्तोत्रों ने
अवीवृधन्	अवीवृधन्	बढ़ाया है
त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
उक्था	बह्वृचानां स्तोत्राणि	ऋग्वेदके स्तोत्रोंने
शतऽक्रतो	हे बहुबल	हेसैंकड़ोंबलवाले
त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
वर्धन्तु	वर्धयन्तु	बढ़ावें
नः	अस्माकम्	हमारी
गिरः	स्तुतयः	स्तुतियां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबल (इन्द्र) त्वां सामस्तोत्राणि तथा ऋक् स्तोत्राणि अवीवृधन् अस्माकं स्तुतयः (अपि) त्वां वर्धयन्तु ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे सैंकड़ों बल वाले (इन्द्र) आपको साम और ऋक् के स्तोत्रों ने बढ़ाया है हमारी स्तुतियां (भी) आपको बढ़ावें ॥ ८ ॥

(१) ऋक् और साम के स्तोत्रों से इन्द्र देव पूर्वकाल में ऋषियों से बढ़ाए गए हैं ।

(२) वैसे ही हमारी स्तुतियों से बढ़ें । जैसे इन्द्र धन और बलादि के दान से हमको बढ़ाते हैं वैसे ही स्तुतियों द्वारा हम इन्द्र देव को बढाते हैं ।

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम् । यस्मिन्विश्वानि पौंस्या ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अक्षित ऽऊतिः	अक्षिता ऊती रक्षणंयस्य	(जिस की) रक्षा कभी क्षय नहीं होती
सनेत्	संभजेत्	सेवन करे
इमम्	इमम्	इसको
वाजम्	(सोमरूपम्) अन्नम्	(सोमरूप) अन्न को
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
सहस्रिणम्	सहस्रधा वर्तमानम्	अनेक प्रकार से वर्तमान को
यस्मिन्	यस्मिन्	जिस में
विश्वानि	सर्वाणि	सब
पौंस्या	पुंसः कर्माणि पौंस्यानि	पुरुष सम्बन्धी बल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अक्षितरक्षण इन्द्रः सहस्रधावर्तमानमिमं (सोम रूपम्) अन्नं संभजेत् यस्मिन् सर्वाणि पुंस्त्वानि (वर्तन्ते) ॥ ९ ॥

भाषार्थः

(जिस इन्द्र की) रक्षा कभी क्षय नहीं होती (वह) अनेक रूप से होने वाले इस सोमरूप अन्न को स्वीकार करें, जिस अन्न में सब बल विद्यमान हैं ॥९॥

सोम भी अन्न है, जिस अन्न के घृत दुग्ध व्रीहि यवादि सहस्रों रूप हैं, और जो सब प्रकार के बलों का एक मात्र कारण है, वही सोम रूप से दिया हुआ अन्न इन्द्र को बढ़ावे।

बलवान् की रक्षा ही न चूकनेवाली हो सकती है, इसलिये हम बलवान् इन्द्र के बल को सोम द्वारा और भी अधिक बढ़ाते हैं ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

मानोमर्ताअभिद्रुहन्तनूनामिन्द्र

गिर्वणः । ईशानोयवयावधम् ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मा	मा	नहीं
नः	अस्मदीयानाम्	हमारे
मर्ताः	मनुष्याः	मनुष्य
अभि	अभितः	सब ओर से
द्रुहन्	द्रोहंकुर्युः	द्रोह करें
तनूनाम्	तनूनाम्	शरीरों के (साथ)
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
गिर्वणः	स्तुतिसेव्य	स्तुति से सेवने योग्य
ईशानः	समर्थः	समर्थ
यवय	पृथक्कुरु	हटाओ
वधम्	वधम्	वध को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे स्तुतिसेव्य इन्द्र मनुष्या अस्मदीयानां तनूनामभितो द्रोहं मा कुर्युः । समर्थः (त्वम्) वधम् (अस्मत्तः) पृथक्कुरु ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

हे स्तुति से सेवने योग्य इन्द्र हमारे शरीरों के (साथ) मनुष्य द्रोह न करें । आप हमसे वधको दूर करें (क्योंकि) आप समर्थ हैं ॥ १० ॥

"हमारे शरीरों" के कहने से प्रतीत होता है कि इस प्रकार की प्रार्थनाएं अपने आत्मीय वर्ग वा जाति के सब मनुष्यों के लिये हैं केवल अपने लिये नहीं ॥

इति पञ्चमं सूक्तम् ।

ऋ० मं० १ सू० ६ ।

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषि गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

युञ्जन्तिब्रध्नमरुषं चरन्तंपरि-
तस्थुषः । रोचन्तेरोचनादिवि ॥ १॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ युञ्जन्ति	योजयन्ति (अन्तर्भावितण्यर्थः)	जोड़ते हैं
१ ब्रध्नम्	आदित्यम् (श०ब्रा० १३।१।१५।१)	सूर्य को
१ अरुषम्	रोषरहितम्	क्रोध रहित को
२ चरन्तम्	चरन्तम्	चलने वाले को
२ परि	परितः	चारों ओर
२ तस्थुषः	स्थितवतः	स्थित के
३ रोचन्ते	प्रकाशयन्ति (अन्तर्भावितण्यर्थः)	प्रकाश करते हैं
३ रोचना	नक्षत्राणि	नक्षत्र
३ दिवि	दिवि	आकाश में

संस्कृतार्थः ।

रोषरहितं स्थितवतः परितश्चरन्तम् (इन्द्ररूपम्) आदित्यम्(देवाःस्वकर्मणि) योजयन्ति नक्षत्राणि (च) दिवि प्रकाशयन्ति ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भावार्थः ।

क्रोध रहित (और) स्थित के चारों ओर चलने वाले (इन्द्ररूप) आदित्य को (देवता अपने कर्म में) नियुक्त करते हैं (और) नक्षत्रों को आकाश में प्रकाशित करते हैं ॥ १ ॥

(१) यद्यपि देवता सूर्य को नित्य प्रति काम के लिये जोड़ते हैं—परन्तु वह कदापि क्रोध नहीं करता ॥

मनुष्य को भी काम में जोडे जाने पर सूर्य की न्याईं क्रोध रहित होना चाहिये।

(२) "स्थित के चारों ओर चलते हुए को" इसी काम के लिये देवता सूर्य्य को जोड़ते हैं कि वह स्थित के चारों ओर प्रकाश और जीवन दान करता हुआ चले।

यह उस आलोक का वर्णन है—जैसा सब को दीखता है, न कि गणक (Astronomer) को ॥

(३) वही देवता नक्षत्रों को रात्रि के समय आकाश में चमकाते हैं ॥

इस मंत्र में आदित्य रूप में इन्द्र का वर्णन है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥२॥

१ युञ्जन्ति	योजयन्ति	जोड़ते हैं
अस्य	अस्य	इस के
२ काम्या	कामयितव्यौ	मनोहरों को
१ हरी	अश्वौ	घोड़ों को
१ विऽपक्षसा	द्वयोःपार्श्वयोः वर्तमानौ	दोनोंतरफ जुड़ने वालों को
१ रथे	रथे	रथ में
२ शोणा	रक्तवर्णौ	लालरंगवालों को
३ धृष्णू	प्रगल्भौ	प्रगल्भों को
नृऽवाहसा	नरस्य वोढारौ	नर के लेजाने वालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अस्येन्द्रस्य रथे कामयितव्यौ द्वयोः पार्श्वयोः (वर्तमानौ) रक्तवर्णौ प्रगल्भौ नरस्य वोढारौ अश्वौ (देवाः) योजयन्ति ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

इस (इन्द्र) के रथ में मनोहर दोनों तरफ जुड़ने वाले लालरंग वाले प्रगल्भ और नर के लेजाने वाले घोड़ों को देवता जोड़ते हैं ॥ २ ॥

(१) देवता इन्द्र के रथ में दोनों तरफ घोड़ों को जोड़ते हैं

(२) जो घोड़े इन्द्र को प्यारे हैं लाल रंग वाले हैं ।

(३) प्रगल्भ हैं अर्थात् किसी से न डरने वाले और दूसरों को डराने वाले हैं ॥

(४) और नर (इन्द्र) के लेजाने वाले हैं ॥

सूर्य्य रूप में इन्द्र देव के लाल घोड़ों को हम रथ में जोड़ते वा रथ से खोलते समय (सूर्योदय और अस्त के समय) ही देखते हैं, अति प्रगल्भ और शीघ्रगामी होने से बीच में नहीं देख सकते ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे ।

समुषद्भिरजायथाः ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१	केतुम्	प्रज्ञानम् (निघं०३।९)	प्रज्ञान को
	कृण्वन्	कुर्वन्	करता हुआ
१	अकेतवे	प्रज्ञान रहिताय	प्रज्ञान रहित के लिये
२	पेशः	रूपम् (निघं०३।७)	रूप को
	मर्याः	हे मनुष्याः (निघं०२।३)	हे मनुष्यो
२	अपेशसे	रूप रहिताय	रूप रहित के लिये
	सम्	सम् (भूय)	साथ
३	उषत्ऽभिः	उषोभिः	उषाओं से
३	अजायथाः	उदपद्यत (पुरुष व्यत्ययः)	उत्पन्न हुआ है

संस्कृतार्थः ।

हे मनुष्याः (आदित्य रूपोऽयमिन्द्रः) प्रज्ञान रहिताय प्रज्ञानं कुर्वन् रूपरहिताय रूपं कुर्वन् उषोभिः सम् (भूय) उदपद्यत ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे मनुष्यो आदित्य रूप यह इन्द्र प्रज्ञानरहित के लिये प्रज्ञान को करता हुआ (और) रूप रहित के लिये रूप को करता हुआ उषाओं के साथ उत्पन्न हुआ है ॥ ३ ॥

(१) सूर्य्य के न रहने से और जब कोई और प्रकाश भी न हो मनुष्य को दिशा आदि का कुछ ज्ञान नहीं होता ॥

(२) और रूप का ज्ञान भी नहीं होता इस लिये जब देवता सूर्य्य को अपने कर्म में जोडते हैं, और वह।

(३) उषाओं के साथ उत्पन्न होता है, तभी मनुष्य को दिक् और रूप का ज्ञान होता है।

यह मरण धर्मा मनुष्य पर इन्द्र देव का परम उपकार है; कि वह स्वयं सूर्य्य रूप में उत्पन्न हुए हैं ॥

मरुतो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे।

दधाना नाम यज्ञियम् ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्	अनन्तरम्	इस से पीछे
अह	तु	तो
२ स्वधाम्	स्वप्रकृतिम्	अपनी प्रकृति को
२ अनु	अनुसृत्य	अनुसार
३ पुनः	पुनः	फिर
३ गर्भऽत्वम्	गर्भत्वम्	गर्भ पने को
३ आऽईरिरे	समन्तात् कम्पितवन्तःअर्थात् त्यक्तवन्तः	त्याग किया
१ दधानाः	धारयन्तः	धारण करते हुए
१ नाम	नाम	नाम को
१ यज्ञियम्	यज्ञार्हम्	यज्ञ योग्य को

संस्कृतार्थः।

अनन्तरन्तु यज्ञार्हं नाम धारयन्तः (मरुतः) स्वप्रकृतिमनुसृत्य पुनः गर्भत्वं त्यक्तवन्तः ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

इसके पीछे पूजने के योग्य (अर्थात् देवता के) नाम को धारण करते हुए मरुद्गणने अपनी प्रकृति के अनुसार फिर गर्भ पने की अवस्था को छोड़ा ॥४॥

जब इन्द्र देव प्रकाश और वृष्टिरूप गौओं के जीतने के लिये वृत्र पर चढ़ाई करते हैं, जो इन गौओं को दृढ़ दुर्ग और गुफाओं में छिपाये रखता है, तो मरुद्गण अर्थात् काली पीली घटाओं वाले प्रचंड वायु के दल इन्द्र के साथ चढ़ाई करते हैं और जैसे वह यहां बड़े २ वृक्षों को तोड़ते घरों को फोड़ते हुए दिखाई देते हैं वैसे ही वृत्र के दुर्गों को तोड़ फोड़ कर गौओं के निकालने में इन्द्र के सहायक होते हैं। ज्योति और वृष्टि की प्राप्ति के लिये इन्द्र के साथी होने से इन्होंने ॥

(१) यज्ञिय नाम को धारण किया अर्थात् देवता कहलाए। यह मरुद्गण आकाश के गर्भ में छिपे रहते हैं और कोई जानता नहीं कि यह भी कोई देवता हैं क्योंकि सदा दीखने में नहीं आते। परन्तु जब इन्द्र की सहायता के लिये चढ़ाई करते हैं तब–

(२) अपनी प्रकृति के अनुसार।

(३) फिर गर्भ को छोड़ते हैं और प्रचण्ड वायु के रूपमें अचानक आकाश में से निकल आते हैं ॥

इन्द्रामरुतो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

वीळुचिदारुजत्नुभि गुहाचिदिन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह्निभिः । अविन्द उस्रिया अनु ॥५॥

१ वीळु	दृढम्	दृढ
चित्	अपि	भी
२ { आरुजत्नु ऽभिः	भञ्जद्भिः	तोड़ने वालों के साथ
३ गुहा	गुहायाम्	गुफा में
३ चित्	अपि	भी
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
२ वह्निऽभिः	वोढृभिः	प्राप्त करनेवालोंसे
५ अविन्दः	अनु+अविन्दः अन्विष्य लब्धवानसि	ढूंढ़कर प्राप्त किया
४ उस्रियाः	गाः	गौओं को
अनु	अनु	--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(हे इन्द्र) दृढमपि (दुर्गस्थानम्) भञ्जद्भिः (तत्रस्थ धनानि) वोढृभिः (मरुद्भिस्सहितस्त्वम्) गुहायामपि (स्थापिताः) गा अन्विष्य लब्धवानसि ॥५॥

भाषार्थः ।

दृढ भी (दुर्ग को) तोड़ने वाले (और वहां के धनों को) प्राप्त करने वाले मरुद्गण के साथ गुहा में छिपाई हुई भी गौओं को हे इन्द्र आपने ढूंढ कर निकाला ॥ ५ ॥

(१) मरुद्गण दृढ भी दुर्ग (किले) को तोड़ने वाले हैं । प्रचण्ड योधा की तरह जो इन के आगे आवे उस को तोड़ फोड़ डालते हैं और ।

(२) शत्रु के धन को हरण कर लेते हैं । इन्हीं की सहायता से :—

(३) इन्द्र देव ने गुहा में छिपी हुई

(४) प्रकाश रूप अथवा वृष्टिरूप गौओं को

(५) ढूंढ कर प्राप्त किया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

देवयन्तोयथामतिमच्छाविदद्व-

सुङ्गिरः महामनूषत श्रुतम् ॥ ६ ॥

देवऽयन्तः	देवान्कामयमानाः	देवताओं की कामना करनेवालोंने
यथा	यथा+मतिम् यथा मति	बुद्धिके अनुसार
मतिम्	+ मतिम्	--
अच्छ	अभिलक्ष्य	लक्ष रख कर
विदत्ऽवसुम्	विन्दन्ति प्राप्नुवन्ति धनानि यस्मात् तम्	जिस से धनों की प्राप्ति होती है उसको
गिरः	स्तोतारः (सा०भा)	स्तुति करने वालोंने
महाम्	प्रौढम्	बडे को
अनूषत	अस्ताविषुः	स्तुति की है
श्रुतम्	विख्यातम्	विख्यात को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

देवान्कामयमानास्स्तोतारो धनप्रदं प्रौढं विख्यातम्मरुद्गणमभिलक्ष्य यथा मत्यस्ताविषुः ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

देवताओं की कामना करने वाले स्तोताओं ने धन के देने वाले बड़े और विख्यात मरुद्गणकी बुद्धि के अनुसारस्तुति गाई है ॥ ६ ॥

स्तोता लोग बड़े और विख्यात मरुद्गण को " यथा योग्य " स्तुति गानेमें असमर्थ हैं उन्होंने "यथामति" उनकी स्तुति गाई है ।

इन्द्रामरुतो देवता गायत्री छन्दः ८।८।८।

इन्द्रेणसंहिदृक्षसे संजग्मानोअबिभ्युषा । मन्दूसमानवर्चसा ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ इन्द्रे॑ण	इन्द्रेण	इन्द्रके साथ
१ सम्	सम्यक्	सम्यक्
हि	खलु	ही
१ दृक्ष॑से	दृश्यसे	देखे जाते हो
१ सम्ऽज-ग्मा॒नः	सङ्गच्छमानः	साथ चलताहुआ
२ अबि॑भ्युषा	भीति रहितेन	भीति रहित से
३ मन्दू	प्रमुदितौ	दोनों आनन्द करने वाले
समा॒नऽव॑र्चसा	तुल्यदीप्ती	तुल्यदीप्ति वाले

संस्कृतार्थः ।

हे मरुद्गण (त्वम्) भीतिरहितेन इन्द्रेण सङ्गच्छमानः संदृश्यसे खलु (युवामुभौ) प्रमुदितौ तुल्यदीप्ती (चस्थः) ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भापार्थः ॥

हे मरुद्गण (आप) निडर इन्द्र के साथ चलते हुए देखे जाते हो (आप दोनों) आनन्द में रहने वाले और तुल्यदीप्तिवाले हो ॥ ७ ॥

(१) मरुद्गण तभी देखे जाते हैं, जब इन्द्र की सहायता के लिए उनके साथ चलते हैं।

(२) जो इन्द्र भय से रहित हैं।

(भय से रहित होनें पर ही युद्ध में जय की प्राप्ति होती है)

(३) इन्द्र और मरुद्गण दोनों मोदयुक्त हैं (मोदयुक्त होना भो विजय के लिये अत्यावश्यक है)

(४) तुल्य दीप्ति वाले।

युद्ध में भी जब राजा और सेना दोनों बराबर दीप्ति वाले हों, तभी विजय होती है। किसी के मुख पर म्लान नहीं होना चाहिये। वास्तव में "जीवन" आरम्भ से अन्त तक एक युद्ध है, इसलिये भय से रहित होना, प्रमुदित और दीप्ति युक्त होना, जीवन के प्रत्येक संग्राम में उपयोगी है, और विजयी होने के लिये इन गुणों का धारण करना अत्यावश्यक है ॥

मरुतो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ८।८।७॥

अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति। गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ अनवद्यैः	दोषरहितैः	दोष रहितों से
३ अभिद्युऽभिः	अभितःप्रकाश-मानैः	सब ओर से प्रकाश मानों से
१ मखः	यज्ञः	यज्ञ
१ सहस्वत्	बलोपेतं यथा भवति तथा	बलविशिष्ट
१ अर्चति	दीप्यते	चमकता है
गणैः	(मरुद्) गणैः	(मरुद्) गणों से
४ इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र के
४ काम्यैः	प्रियैः	प्यारों से

संस्कृतार्थः ।

यज्ञो दोष रहितै रभितः प्रकाशमानै रिन्द्रस्य प्रियै र्मरुद्गणै र्बलोपेतं यथा भवति तथा दीप्यते ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

यज्ञ दोषरहित (और) सब और से प्रकाशमान इन्द्र के प्यारे मरुद्गणों से बलविशिष्ट होकर चमकता है ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) मरुद्गण के यज्ञ में भागी होने से यज्ञ भी शोभायमान होता है और उस की दीप्ति बढ़ती है जैसे बल होने से मनुष्य की दीप्ति बढ़ती है । कारण यह है कि मरुद्गण बड़े बल वाले हैं।

(२) दोष रहित हैं, उन पर कोई कलंक नहीं हैं ॥

कलंक रहित मनुष्य भी मरुद्गण की तरह इन्द्र के सहचारी होने के योग्य है।

(३) सब और से प्रकाशमान हैं।

मनुष्य सब ओर से प्रकाशमान तभी हो सक्ता है, जब उसके किसी तरफ भी दाग न हो। सारा जीवन ऐसा हो कि उसे सब ओर से सब के सामने दिखला सके, कोई छिपाने के योग्य जगह न हो ॥

(४) और इन्द्र के प्यारे हैं।

मनुष्य में भी ऊपर कहे हुये गुण हों, तो इन्द्र का प्यारा बन सक्ता है।

मरुतो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

अतः॑ परिज्मन्ना ग॑हि दि॒वो वा॑ रोच॒नादधि॑ । सम॑स्मिन्नृञ्जते॒ गिरः॑ ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ अतः	अस्मात् (अन्त-रिक्षात्	इस(अन्तरिक्ष)से
१ परिऽज्मन्	हे सर्वतोगच्छन्-(मरुद्गण)	हे सब ओर फिरने वाले (मरुद्गण)
१ आ	आ +	--
१ गहि	आ+गहि आगच्छ	आओ
३ दिवः	द्युलोकात्	द्युलोक से
वा	अथवा	या
३ रोचनात्	रोचनात् + अधि प्रकाशमानात्	प्रकाशमान से
३ अधि	अधि +	--
सम्	सम्यक्	पूर्ण रीतिसे
अस्मिन्	अस्मिन् (मरुद्गणे)	इस (मरुद्गण) में
४ ऋञ्जते	स्पृहयन्ति (आ०को)	कामना करते हैं
४ गिरः	स्तोतारः (ऋ०।६३।१०)	स्तुति गाने वाले

संस्कृतार्थः।

हे सर्वतो गच्छन् (मरुद्गण) अस्मात् (अन्तरिक्षात्) आगच्छ अथवा रोचमानाद्द्युलोकात् (आगच्छ)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मिन् (मरुद्गणे) स्तोतारः सम्यक् स्पृहयन्ति ॥९॥

भाषार्थः ।

हे सब ओर जानेवाले (मरुद्गण) (आप) इस (अन्तरिक्ष) से अथवा प्रकाशवाले द्युलोक से आइये, इस (मरुद्गण) में स्तुति गाने वाले पूर्ण रीति से कामना करते हैं ॥

(१) सब ओर जाने वाले मरुद्गण हमारे यज्ञ में अवश्य आवें।

(२) चाहे इस दृष्ट अन्तिरिक्ष से निकल कर ।

(३) चाहे जो प्रकाशमान् द्युलोक है वहां से निकल कर आवें क्योंकि ।

हम स्तुति गानेवाले उनमें पूर्णरीतिसे कामना करते हैं, हमारा पूरा प्रेम उनमें है । जब ऐसे प्रेम से बुलाए जाएं तो देवता क्यों न आवें ।

इन्द्रोदेवता गायत्री छन्दः ।८।८।८॥

इतोवासातिमीमहे दिवोवापार्थिवादधि । इन्द्रंमहोवारजसः ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इ॒तः	अस्मात्(लोकात्)	इस लोकसे
वा॒	वा	वा
सा॒तिम्	धनम्(अं०को०)	धनको
ई॒म॑हे	याचामहे	हम मांगते हैं
दि॒वः	द्युलोकात्	द्युलोक से
वा॒	वा	वा
पार्थि॑वात्	पार्थिवात्+अधि.	भूलोक से
अधि॑	+अधि	--
इन्द्र॑म्	इन्द्रात्(अपादानस्य कर्मसंज्ञा)	इन्द्र से
म॒हः	महतः	महान् से
वा॒	अथवा	वा
रज॑सः	अन्तरिक्षात्	अन्तारक्ष से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) इन्द्रात् धनं याचामहे (सचइन्द्रःतद्धनं) अस्मात् (लोकात्) द्युलोकाद्वा महतोऽन्तरिक्षलोकाद्वा (आनीय) प्रयच्छतु ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

हम इन्द्र से धन मांगते हैं वह इन्द्र इस लोक से वा (इससे) उपरिस्थित द्युलोक से वा महान् अन्तरिक्ष से धन को लाकर हमें दें ।

(१) पृथिवी अन्तरिक्ष और द्यौ यह सब लोक इन्द्र के आधीन हैं इन में विपुल धन है इन्द्र देव कहीं से लाकर हमें धन दे सक्ते हैं। आकाश में अत्यन्त बल का विद्यमान होना पदार्थ विद्या को रेडियम (Radium) के विचित्र गुणों के ज्ञान होने के पश्चात् थोड़े ही काल से प्रतीत हुआ है इस का नाम उन्हों ने Inter-atomic energy (परमाणु अन्तर्गत बल) रक्खा है, यह बल इतना अनन्त है, कि थोड़े से परमाणुओं के अन्तर्गत बल की प्राप्ति हो जाने से ही सारी पृथिवी का धन जीता जा सकता है, इस बल की प्राप्ति का उपाय इन्द्र ने अपने ही हाथ में रक्खा है, और वह उसमें से जितना जिसको देना चाहते हैं देते हैं ॥

इतिषष्ठं सूक्तम्

ऋ० मं० १ सू० ७

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः ८।८।८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ ॥

इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
इत्	एव	ही
गाथिनः	उद्गातारः	साम गाने वाले
बृहत	महान्तम्	महान् को
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
अर्केभिः	ऋङ्मन्त्रैः	ऋक् मंत्रों से
अर्किणः	स्तोतारः	स्तोता
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
१ वाणीः	वाण्यः	वाणियों ने
अनूषत	अस्ताविषुः	स्तुति की है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

उद्गातारो महान्त मिन्द्रमेव स्तोतार ऋङ्मत्रैरि-न्द्रम् (एव) अस्ताविषुः (अस्माकम्) वाण्यइन्द्रमेव स्तुवन्ति ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

महान् इन्द्र को ही साम गाने वालों ने, इन्द्र को ही ऋक् मंत्रों से स्तुति करने वालों ने अर्चन किया है । इन्द्र को ही (हमारी) वाणियें स्तुति करती हैं ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त महाव्रत के निश्केवल्य शस्त्र में पढ़ा जाता है (ऐ० आ० ५।२।१।६)

यह और अगले दो मंत्र सत्रके दूसरे दिन में ब्राह्मणाच्छंसिके शस्त्र में पढ़े जाते हैं(आ०श्रो०सू०उ०१।२।३)और अति रात्रके प्रथम पर्य्याय में अच्छावाक के शस्त्र में भी ये तीन मंत्र पढ़े जाते हैं (आ० श्रो० सू०६।४।१०) ॥

जिस महान् इन्द्र को साम गान द्वारा और जिस को ऋक् स्तोत्रों द्वारा ऋषियों ने स्तुति से अर्चन किया है—

उसी इन्द्र की स्तुति हमारी वाणी करती है जैसे हमारे पूर्वज ऋषियों के इष्टदेव इन्द्र थे, ऐसे ही हमारे भी वही हैं ।

इन्द्रो देवता निचृद्गायत्री छन्दः ।७।८।८।

इन्द्रइद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आवचो-युजा । इन्द्रोवज्रीहिरण्ययः ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
इत्	(पूरणः)	--
१ हर्योः	अश्वयोः	दोनों घोड़ों के
१ सचा	युगपत्	एक साथ
१ सम्मिश्लः	संयोजयिता	जोड़ने वाला
आ	(पादपूरणः)	--
१ वचःऽयुजा	वचनमात्रेण-युजोः	वचनमात्र से जुड़ने वालों के
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
२ वज्री	वज्रयुक्तः	वज्र से युक्त
३ हिरण्ययः	हिरण्मयः	सुवर्णमय

[संस्कृतार्थः ।

इन्द्रो वचन मात्रेण युजोरश्वयोर्युगपत्संयोजयिता (अस्ति) इन्द्रो वज्रयुक्तो हिरण्मयः (चास्ति) ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भावार्थः ॥

इन्द्र ही वचनमात्र से जुड़नेवाले दोनों घोड़ों के एक साथ जोड़नेवाले (हैं) इन्द्र, वज्रयुक्त और सुवर्णमय हैं ॥ २ ॥

(१) इन्द्र के घोड़े उन की आज्ञा पाते ही एक साथ उन के रथ में जुड़ जाते हैं। मनुष्य को भी ऐसे आज्ञाकारी घोड़े रखने चाहियें ॥

(२) इन्द्र सदा वज्रयुक्त रहते हैं।
मनुष्य को भी सदा वज्रयुक्त रहना चाहिये, ऐसा होने से ही उसके शत्रु डरते हैं और भृत्यवर्ग भी अपना काम ठीक करते हैं।

(३) इन्द्र सुवर्णमय हैं अर्थात् सुवर्ण से युक्त रहते हैं। मनुष्य को भी सुवर्ण से युक्त रहना चाहिये। सुवर्ण धारण करने से कान्ति और आयु बढ़ती है ॥

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।।

इन्द्रो॒ दी॒र्घाय॒ चक्ष॑स॒ आ सूर्यं॑ रोहयद्दि॒वि ।
वि गोभि॒रद्रि॒मैरयत् ॥ ३ ॥

इन्द्रः॑	इन्द्रः	इन्द्र ने
१ दी॒र्घाय॑	दीर्घाय	दूर के लिए
१ चक्ष॑से	दर्शनाय	देखने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ +	—
१ सूर्यम्	सूर्यम्	सूर्यको
१ रोहयत्	आ + रोहयत्	चढ़ाया
१ दिवि	द्युलोके	द्युलोक में
वि	वि +	—
गोभिः	किरणैः निघं० १।५	किरणों से
अद्रिम्	वृत्रम् निघं० १।१०	वृत्र को
ऐरयत्	वि + ऐरयत् विगमितवान् (विनाशितवानित्यर्थः)	छिन्न भिन्न किया ।

संस्कृतार्थः ।

इन्द्रो दीर्घाय दर्शनाय द्युलोके सूर्य्यमारोहयत् (तत्-) किरणैः (च तमोरूपम्) वृत्रं विनाशितवान् ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

इन्द्र ने दूर तक देखने के लिये द्युलोक में सूर्यको स्थापन किया (और उसकी) किरणों से (तमरूप) वृत्र को छिन्न भिन्न किया ॥ ३ ॥

(१) इन्द्र ने सूर्य को दीर्घ दर्शन के लिये इतनी दूर आकाश में स्थापन किया है, क्योंकि दूर होने से ही वह इतने बड़े पृथि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ञ्यादि लोकों को दर्शन देने में समर्थ होता है। सूर्य्य पृथिवी से नौ करौड़ तीस लाख मील अर्थात् एक करोड़ पचपन लाख योजन की दूरी पर है—इसीलिये देश देशान्तरों में युगपत् दिखाई देता है ॥ और

(२) तम रूपी वृत्रको किरणों द्वारा छिन्न भिन्न करता है इस देश में इन्द्रकी कृपासे ज्योतिके अभाव का दुःख प्रतीत नहीं होता, परन्तु बहुत ऐसे देश हैं जहां मनुष्य सूर्य के दर्शन को तरसते हैं। यह इन्द्र का बड़ा उपकार है कि सूर्य द्वारा नित्य अन्धकार को छिन्न भिन्न करते हैं।

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः ८। ८। ८।

इन्द्र॒वाजे॑षुनोऽव स॒हस्र॑प्रधनेषुच। उ॒ग्र उ॒ग्राभि॑रू॒तिभिः॑ ॥ ४ ॥

इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
वाजेषु	युद्धेषु	युद्धों में
नः	अस्मान्	हम को
अव	रक्ष	रक्षा करो
सहस्रप्रधनेषु	सहस्रसंख्याक गवाश्वादिलाभयुक्तेषु	जिनमें सहस्रों प्रकार के धन मिलते हों
च	च	और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ उग्रः	उग्रः	प्रचण्ड
३ उग्राभिः	उग्राभिः	प्रचण्डों से
३ ऊतिऽभिः	रक्षाभिः	रक्षाओं से

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र उग्रः (त्वम्) उग्राभीरक्षाभिर्युद्धेष्वस्मान् रक्ष, सहस्रसंख्याकगवाश्वादिलाभयुक्तेषु महायुद्धेषु च रक्ष ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे प्रचण्ड इन्द्र आप युद्धों में, और जहां सहस्रों प्रकारके धन मिलते हैं ऐसे महा युद्धों में प्रचण्ड रक्षाओं से हमारी रक्षा करो ॥ ४ ॥

(१) इन्द्र उग्र अर्थात् किसी से न दबनेवाले और आप सब को डरानेवाले हैं ।

उग्र मनुष्य भी देव तुल्य होता है ।

(२) "सहस्रप्रधनेषु" ऐसे संग्रामों में जहां शत्रुओं को जीतकर गौ घोड़े आादि अनेक प्रकार के धन मिलते हों ।

(३) इन्द्रकी उग्र रक्षा के होनेसे कोई शत्रु हमको नहीं दबा सकता, इस लिये वह अपनी उग्र रक्षाओं से हमारी रक्षा करें ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

इन्द्रंवयंमहाधन इन्द्रमर्भेहवामहे ।
युजंवृत्रेषुं वज्रिणम् ॥ ५ ॥

इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
वयम्	वयम्	हम
३ महाऽधने	महच्च तद्धनंचेति प्रभूतधननिमित्ते	बहुत धन के अवसर पर
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
४ अर्भे	स्वल्पे (अपि धने निमित्तभूते)	थोड़े (धनके अवसर) पर
हवामहे	आह्वयामः	बुलाते हैं
१ युजम्	सहकारिणम्	साथी को
२ वृत्रेषुं	शत्रुषु	शत्रुओं पर
२ वज्रिणम्	वज्रोपेतम्	वज्र वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

वयं सहकारिणं शत्रुषु वज्रोपेतमिन्द्रं महाधन-निमित्त आह्वयामः स्वल्पेऽपि धननिमित्त इन्द्रम् (आह्वयामः) ॥ ५ ॥

भाषार्थः

हम इन्द्र को (ही) बहुत धन के अवसर पर (और) थोड़े (धन के अवसर पर) बुलाते हैं (जो हमारे) साथी हैं (और) शत्रुओं के ऊपर वज्र को उठाए हुए हैं ॥ ५ ॥

(१) 'युजम्' से तात्पर्य यह है कि इन्द्र हमारी ओर हैं।
(२) और हमारे शत्रुओं के ऊपर वज्र उठाए हुए हैं।
(३) बहुत धन की प्राप्ति का अवसर युद्ध में होता है॥
(४) थोड़े धन की प्राप्ति का अवसर व्यवहारादि में होता है।

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८

सनो॑वृषन्नमुंच॒रुं सत्रा॑दावन्नपा॑वृधि ।
अ॒स्मभ्य॒मप्रा॑तिष्कुतः ॥६॥

सः	सः	वह
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
वृषन्	हे वीर	हे बीर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमुम्	असुम्	उसको (ऊपरदीखते हुए को)
चरुम्	मेघम् (निघं०१।१०)	बादल को
सत्रांऽदावन्	हे यथार्थदातः (सत्रेतिसत्यनाम) (निघ०३।१०)	हे सच्चे दानी
अप	अप+	
वृधि	अप+वृधिउत्पाटय	भेदन करो
अस्मभ्यंम्	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
अप्रतिस्कुतः	प्रतिशब्दरहितः	नांह न करनेवाला

संस्कृतार्थः ।

हे वीर ! हे यथार्थदातः !(इन्द्र) सः (त्वम्) अस्मभ्य ममुं मेघमुत्पाटय अस्मभ्यं (त्वम्) प्रतिशब्दरहितः (असि) ॥६॥

भाषार्थः ।

हे वीर सच्चेदानी (इन्द्र) वह (आप) हमारे लिये उस [ऊपर दीखने वाले] बादलको भेदन करो। आप हमारे लिये (कभी) नांह नहीं करते ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बादल को भेदन करने से यह प्रयोजन है, कि हमारे खेतों में मेंह बरसे । इन्द्र कभी हमको नांह नहीं करते । हमारे दरिद्र होने और दुर्भिक्ष से पीड़ित होने का कारण यही है, कि हम इन्द्र से प्रार्थना नहीं करते ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ॥ ८ । ८ । ८ ॥

तुञ्जेतुंञ्जेयउत्तरे स्तोमा–इन्द्रस्य
वज्रिणः । नविन्धेअस्यसुष्टुतिम् ॥७॥

तुञ्जेऽतुञ्जे	दाने दाने (तुञ्जतिर्दानकर्मा निघं० ३ । २०)	प्रत्येक दान में
ये	यानि	जो
उत्ऽतरे	उत्कृष्टानि	एकदूसरेसेबढ़कर
स्तोमाः	स्तोत्राणि	स्तुति के राग
इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र के
वज्रिणः	वज्रोपेतस्य	वज्रधारी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

न	न	नहीं
वि॒न्धे॒	लभे	पाता हूं
अ॒स्य॒	अस्य	इस की
सु॒ऽस्तु॒तिम्	योग्यां स्तुतिम्	योग्य स्तुति को

संस्कृतार्थः।

वज्रोपेतस्येन्द्रस्य दाने दाने यान्युत्कृष्टानि स्तोत्राणि (सन्ति तेषु) अस्य योग्यां स्तुतिम् (अहं) न लभे॥ ७॥

भाषार्थः।

वज्रधारी इन्द्रके प्रत्येक दान (की महिमा) में जो एक दूसरे से बढ़ कर स्तुतियों के राग (हैं उनमें) मैं उन के योग्य स्तुति को नहीं पाता हूं॥ ७॥

इन्द्र के दान अगणित हैं, उनकी महिमा अपार है। पूर्व ऋषियों ने एक से एक बाढिया स्तोत्र उनकी महिमा में गाया है परन्तु इन्द्र के योग्य उनमें से भी नहीं है। उनके दानों की असली महिमा बाणी की पहूंच से परे है॥

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८।

वृषा॑यू॒थेव॒वंस॑गः कृ॒ष्टीरि॑त्योज॑सा।
ईशा॑नो॒अप्र॑तिष्कुतः॥ ८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृषा	सेचनसमर्थः	सांढ
यूथाइव	(गो–) यूथानीव	जिस तरह गौ-ओं के झुंड को
(वंसग) :	बलीवर्दः(आ०को०)	बैल
कृष्टीः	मनुष्यान्(निघ०२।३)	मनुष्यों को
इयर्त्ति	प्रेरयति	चलाता है
ओजसा	बलेन	बल से
ईशानः	ईशानः	स्वामी
अप्रति-ऽस्कुत	प्रतिशब्दरहितः (कु शब्दे)	जिसकावचनकोई पलट नहीं सक्त

संस्कृतार्थः ।

यथा सेचनसमर्थो बलीवर्दो गोयूथानि (गमयति तथा) ईशानः प्रतिशब्दरहित (इन्द्रः) बलेन मनुष्यान् प्रेरयति ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

जिस तरह सांढबैल गौओंके झुंड को चलाता है (इसी तरह इन्द्र)जो (सब के) स्वामी हैं (और)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिन का वचन कोई पलट नहीं सक्ता मनुष्यों को (अपने) बलसे प्रेरणा करते हैं ॥ ८ ॥

मनुष्य समझते हैं कि हम अमुक कर्म अपनी निज की शक्ति से कर रहे हैं, वास्तव में उन को परमात्मा अपनी इच्छा अर्थात् ऋत के अनुसार प्रेरण करता है और जो उसको अभीष्ट है उसी काम को मनुष्य अपनी इच्छा से प्रेरित हुए समझ कर करते हैं।

इन्द्रो देवता पादनिचृच्छन्दः । ७ । ७ ॥

यऐकश्चर्षणीनां वसूनामिज्यति ।
इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ ९ ॥

यः	यः	जो
१ एकः	एकः	अकेला
१ चर्षणीनाम्	मनुष्याणाम् (निघं. २ । ३)	मनुष्यों के
१ वसूनाम्	धनानाम्	धनों का
इज्याति	ईश्वरोऽस्ति (निघं० २ । २१)	राजा है
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
२ पञ्च	पञ्चानाम्	पांचों का
क्षितीनाम्	मनुष्याणाम् निघं० २ । ३)	मनुष्य (जातियों) का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ॥

य एको मनुष्याणां धनानां राजा (सएव)
इन्द्रः पञ्चानां मनुष्य (जातीनाम् राजाऽस्ति)॥६॥

भाषार्थः ।

जो अकेला मनुष्यों के धनों का राजा (है)
(वही) इन्द्र पांचों मनुष्यजातियों का (राजाहै)॥६॥

(१) मनुष्यों के धनों के एकमात्र राजा इन्द्र हैं । मनुष्य समझता है यह धन मेरा है । वास्तव में वह धन इन्द्र का है । उनकी इच्छा से वह मनुष्य उस धन की रक्षा करता है न जाने अपने भोगने के लिये, न जाने दूसरे के भोग के लिये, यह सब इन्द्र के अधीन है जिस को चाहे उस धन को भुगावे ।

(२)पांचों मनुष्यजातियों के राजा इन्द्र हैं जातियां समझती हैं कि हमारा अमुक मनुष्य राजा है । वास्तव में सब के राजा इन्द्र हैं लौकिक राजा का अधिकार तभी तक है जब तक इन्द्र को अभीष्ट है, वह जब चाहें उसको अपनी पदवी से गिरा सक्ते हैं । इसलिये लौकिक राजा से न डरे, किन्तु असली राजा इन्द्र से डरे ॥

पांच मुख्य जातियां जो इस पृथिवी पर आज कल भी पाई जाती हैं ये हैं ।

१–इन्डो यूरोपियन(Indo-European)वा आर्य्यजाति जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दुस्तान, फारस, यूरोप, यूनाइटेडस्टेट्स्अमेरिका, और आइसलैण्ड में रहती है ॥

२–मंगोलियन (Mongolean) जो चीन, जापान, रूस, ग्रीनलैण्ड और उत्तर अमेरिका में रहती है।

३–नीग्रो (Negro) जो मध्य और दक्षिण ऐफ्रिका में रहती है।

४–अमेरिकन (American) जो नौर्थ अमेरिका के मध्य-भाग में और साउथ अमेरिका में रहती है।

५–मले (Malay) जो मले, सुमात्रा, बोर्निऊ, सेलिबीज़, फिलिपाइन, फोर्मोज़ा इत्यादि टापुओं में रहती है।

अन्य जातियां जो आजकल इस पृथिवी पर पाई जाती हैं इन ऊपर की मुख्य जातियों के मेल से बनी हैं, जैसे–मेक्सिको, पीरू, ब्राज़ील इन देशों में इण्डो यूरोपियन मिक्स्ड (Indo-European mixed); अरब, ईजिप्ट, ट्रिपोली, ऐल्जीर्या, मराको इन देशों में साईरो ऐरेबियन (Syro-Arabian) यह संकर जातियां पाई जाती हैं इनका निकास इण्डो यूरोपियन जाति से है। नीग्रो जाति में से एक संकरजाति पैपुअन नीग्रो (Papuan Negro) निकली है जो आस्ट्रेलिया के उत्तरवर्ती टापुओं में रहती है और मले जाति में से एक संकर जाति आस्ट्रेलियन (Australian) निकली है जो आस्ट्रेलिया में रहती है।

इन्द्रो देवता निचृद्गायत्रीछन्दः ॥ ८ ॥

इन्द्रंवोविश्वतस्परि हवामहेजनेभ्यः।
अस्माकमस्तुकेवलः ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रंम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
२ वः	युष्मदर्थम्	तुम्हारे लिये
१ विश्वतः	सर्वेभ्यः	सब से
१ परिं	उपरि	ऊपर
२ हवांमहे	आह्वयामः	बुलाते हैं
१ जनेभ्यः	जनेभ्यः	जातियों से
३ अस्माकंम्	अस्माकम्	हमारा
३ अस्तु	अस्तु	हो
३ केवंलः	केवलः	केवल

संस्कृतार्थः ।

(हे आर्यगण) सर्वेभ्यो जनेभ्य उपरि (अवस्थितम्) इन्द्रं युष्मदर्थमाह्वयामः स केवल अस्माकमस्तु ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

(हे आर्यगण) हम तुम्हारे लिये सब जातियों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊपर (स्थित) इन्द्र को बुलाते हैं वह केवल हमारे ही हों ॥ १० ॥

यद्यपि इन्द्र पाचों मनुष्य जातियों के राजा हैं ।

(१) और सब जातियों के ऊपर राज्य करते हैं—परंतु ।

(२) हम तुम्हारे लिये अर्थात् आर्य्यजाति के लिये ही उनको बुलाते हैं ।

(३) वह केवल हमारे ही हों

इति सप्तमं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० ८।

इन्द्रो देवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दः। ८। ८। ८ ॥

एन्द्रंसा॒न॒सिंर॒यिं स॒जित्वा॑नंसदा॒सह॑म् ।
वर्षि॑ष्ठमू॒तये॑भर ॥ १ ॥

आ	आ ×	—
इ॒न्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
सा॒न॒सिम्	सम्भजनीयम्	सेवन करने योग्य
	[सन् सम्भक्तौ]	को
र॒यिम्	धनम्	धन को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽजित्वांनम्	समानानां जयशीलम्	बराबर वालों से जितानेवालेको
सदाऽसहंम्	सर्वदा(शत्रूणाम्) अभिभवहेतुम्	सदा(शत्रुओंको) दबानेके हेतुको
वर्षिष्ठम्	अतिशयेनवृद्धम् (प्रभूतमित्यर्थः)	बहुत बढ़े हुएको
ऊतये	(अस्मद्) सहायताऽर्थम्	(हमारी)सहायता के लिये
भर	आ+भर, आहर	लाकर दो

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र (त्वम्) सम्भजनीयं समानानां जयशीलं सर्वदा (शत्रूणाम्) अभिभवहेतुमातिशयेन वृद्धं धनमस्मत्साहाय्यार्थमाहर ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र (आप हमारी) सहायता के लिये ऐसे धनको लाकर दो, जो सेवन करनेके योग्यहो बराबर वालों से जितानेवाला हो, सदा (शत्रुओंको) दबानेका हेतु हो, और बहुत बढ़ा हुआ हो ॥१॥

विनियोग, महाव्रत के निष्केवल्य शस्त्र में यह सूक्त पढ़ा जाता है (ऐ० आ० २।५।२) और अतिरात्र यज्ञ के प्रथम पर्य्याय में अच्छा वाक के शस्त्र में भी पढा जाता है (आ०श्रौ० सू०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६।४।१०) पहिला मंत्र दर्शेष्टि में इन्द्र के लिये सान्नाय हवि में अनुवाक्या है (आ० श्रौ० सू० २।६।१ ॥

भोगनेके लिये, बराबरवालोंको जीतनेके लिये, और शत्रुओंको दबाने के लिये, बहुत धन की इच्छाकरना वेदविहित होनेसे धर्म है

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ॥

नियेनंमुष्टिहत्यया निवृत्रारुणधामहै । त्वोतासोन्यर्वता ॥ २ ॥

नि	नि+	—
येनं	येन	जिस से
मुष्टिऽहत्यया	मुष्टिप्रहारेण	मुक्के के प्रहार से
नि	नि+	—
वृत्रा	शत्रून्	शत्रुओं को
रुणधामहै	नि+रुणधामहै	रोकें
त्वाऽऊतासः	त्वया रक्षिताः	तुझसेरक्षितहुए२
नि	नि+(रुणधामहै)	रोकें
अर्वता	अश्वेन	घोड़े द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

येन (धनेन) मुष्टिप्रहारेण (वयम्) शत्रून् निरुणधामहै त्वया रक्षिताः (च) अश्वेन शत्रून् (निरुणधामहै) ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

जिस (धन) द्वारा मुक्केके प्रहार से (हम) शत्रुओं को रोकें और आप से रक्षित हुए २ घोड़े द्वारा शत्रुओं को (रोकें) ॥ २ ॥

प्रायः धन होने से मनुष्य विषय भोग में पड़ कर निर्बल हो जाता है उसकी मुष्टि (मुक्के) में बल नहीं रहता । हम ऐसे धन को मांगते हैं, कि धन भी हो और मुष्टि में बल भी हो । शत्रु को युद्ध में रोकने के लिये घोड़ा बहुत उपयोगी है इसलिये घोड़ा रखना भी आर्य्य का धर्म है ॥

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

इन्द्र॒त्वोता॑स॒आव॒यं वज्रं॑घ॒नाद॑दीमहि । जये॑म॒सं यु॒धिस्पृधः॑ ॥ ३ ॥

इन्द्रं	हे इन्द्र	हे इन्द्र
त्वाऽऊंतासः	त्वया रक्षिताः	आप से रक्षित हुए २
आ	आ+	—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वयम्	वयम्	हम
वज्रम्	वज्रम्	वज्रको
घना	घनम्, अत्यन्त-दृढम्	अत्यन्त दृढ़ को
ददीमहि	आ+ददीमहि गृह्णीमहि	ग्रहण करें
जयेम	सम्+जयेम सम्यग् जयेम	अच्छी तरह जीतें
सम्	सम्+	—
युधि	युद्धे	युद्ध में
स्पृधः	स्पर्धमानान् (शत्रून्)	स्पर्धा करनेवाले (शत्रुओंको)

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! त्वया रक्षिता वयमत्यन्तदृढं वज्रं गृह्णीमहि स्पर्धमानान् (शत्रूंश्च) युद्धे सम्यग् जयेम॥३॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र आपसे रक्षित हुए २ हम अत्यन्त दृढ वज्र को लेवें और स्पर्धा करनेवाले (शत्रुओं को) युद्ध में अच्छी तरह जीतें ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दृढ वज्र उत्तम शस्त्रोंको सूचन करताहै, जो युद्धमें कार्य्यक्षम हों। स्पर्धा करनेवाले अर्थात् युद्ध में ललकारकर बुलानेवाले ॥

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

वयंशूरेभिरस्तृभि रिन्द्रत्वया।
युजावयम्।सासह्यामंपृतन्यतः ॥ ४ ॥

वयम्	वयम्	हम
शूरेभिः	शूरैः	शूरबीरों से
अस्तृभिः	(आयुधानाम्) प्रक्षेप्तृभिः	(अस्त्रों के) चलानेवालों से
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
त्वया	त्वया	तुझ से
युजा	युक्तवता सहायकेन	सहायक से
वयम्	वयम्	हम
ससह्याम	अतिशयेनाभिभवेम	अत्यन्त दबावें
पृतन्यतः	पृतनामात्मन इच्छतः, तान् सेनायुक्ताञ्छत्रूनित्यर्थः	सेना से युक्त शत्रुओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र (वयमायुधानाम्) प्रक्षेप्तृभिः शूरैः सहायभूतेन त्वया (च युक्ताः) सेनायुक्तान् (शत्रून्) अतिशयेनाभिभवेम ॥ ४॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र हम (अस्त्र) चलानेवाले शूरवीरों और सहायभूत आपसे (युक्त हुए २) सेनासेयुक्त शत्रुओं को अत्यन्त दबावें ॥ ४ ॥

सेनायुक्तशत्रुको दबानेके लिये अस्त्र कुशल शूरवीरों की आवश्यकता है, वैसेही इन्द्रकी सहायताकी भी आवश्यकताहै, विना इन्द्र की सहायताके अस्त्र कुशल शूरवीर होनेपर भी विजय नहीं होती।

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

महाँइन्द्रःपरश्चनु महित्वमस्तु-
वज्रिणे । द्यौर्नप्रथिनाशवः ॥ ५ ॥

महान्	महान्	बड़ा
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
परः	सर्वोत्कृष्टः	सब से अच्छा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और
नु	निश्चयेन	निश्चय करके
महि॒ऽत्वम्	महत्त्वम्	महिमा
अस्तु	अस्तु	हो
वज्रिणे	वज्रयुक्ताय	वज्रधारीकेलिये
द्यौः	आकाशम्	आकाश की
न	इव	न्याईं
प्रथिना	प्रथिम्ना	विस्तृत होने से
शवः	बलम्	बल

संस्कृतार्थः ।

इन्द्रो महान् (अस्ति) निश्चयेन सर्वोत्कृष्टश्च (अस्ति तस्मै) वज्रयुक्ताय महत्त्वमस्तु (अस्य) बलं प्रथिम्नाऽऽकाशमिव (अस्ति)॥५॥

भाषार्थः ।

इन्द्र बड़े (हैं) और निश्चय करके सबसे अच्छे हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(उस) वज्रधारीकीमहिमाहो इन का बल आ-
काश की न्याईं विस्तृत है ॥ ५ ॥

इन्द्र का बल आकाश की तरह फैला हुआ होने से जो कुछ बल का कर्म इस लोक में देखा जाता है, वह इन्द्रही की महिमा को प्रकट करता है—इस का उदाहरण अगले मन्त्र में है ॥

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

समोहेवायआशंत नरंस्तोकस्यस-
नितौ । विप्रासोवाधियायवंः । ६ ।

[१]सम्ऽओहे	सङ्ग्रामे(निघं०२।१७)	युद्ध में
वा	वा	वा
ये	ये	जो
[१]आशंत	व्याप्तवन्तः	लगे हुए हैं
नरः	नरः	नर
[२]तोकस्यं	अपत्यस्य(निघं०२।२)	सन्तान की
[२]सनितौ	प्राप्तौ	प्राप्ति में
[३]विप्रासः	मेधाविनः	बुद्धिमान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वा	वा	वा
३धियाऽयवः	ध्यानंकामयमानाः	चिन्तनके प्रेमी

संस्कृतार्थः ।

ये नरः संग्रामे व्याप्तवन्तः, अपत्यस्य प्राप्तौ वा (संलग्नाः) ये वा मेधाविनो ध्यानं कामयमानाः (विद्यन्ते ते सर्वे इन्द्रस्यैव महत्त्वं प्रख्यापयन्ति) ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

जो नर युद्ध में लगे हुए हैं वा सन्तान की प्राप्ति में (लगे हुए हैं) वा जो बुद्धिमान् चिन्तन में प्रेम करने वाले हैं.

(वे सब इन्द्र की माहिमा को प्रकट करते हैं) ॥६॥

मनुष्यों में तीन प्रकार का जो बल देखा जाता है अर्थात्—

(१) बाहु वा क्षत्रबल जिससे मनुष्य संग्राममें व्याप्त होता है और अपने राष्ट्र को शत्रुओं से रक्षित करता है ।

(२) दूसरा उरु वा विड् बल जिससे वह—सन्तानकी प्राप्ति द्वारा अपनी जाति की संख्या बढ़ाता है ।

(३) तीसरा मास्तिष्क वा ब्रह्मबल जिससे वह चिन्तन द्वारा अपने आत्मीय वर्गों की उन्नति के उपाय सोच कर बतलाता है। जिस जाति में यह तीनों बल बढे हुए हैं वह जाति स्वतन्त्र और श्रेष्ठ है और इन्द्र की महिमा को प्रकट करती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

यःकुक्षिःसोमपातमः समुद्रइवपिन्वते ।

उर्वीरापोनकाकुदः ॥ ७ ॥

यः	यः	जो
कुक्षिः	उदरप्रदेशः	उदर प्रदेश
सोमऽपातमः	अतिशयेन सोमस्यपाता	अतिशय करके सोमपान करनेवाला
समुद्रःऽइव	समुद्र इव	समुद्र की न्याईं
पिन्वते	वर्धते	बढ़ता है
उर्वीः	उर्व्यः	बहुत
आपः	आपः	जलोंकी
न	इव	न्याईं
काकुदः	जिह्वासम्बधिन्यः (निघं० ४।२)	जिह्वा सम्बन्धी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

योऽतिशयेन सोमस्य पाता (इन्द्रस्य) उदरप्रदेशः समुद्र इव वर्धते स जिह्वासम्बन्धि प्रभूतं जलमिव (अस्ति) ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

जो अतिशय करके सोमपान करनेवाला (इन्द्रका) उदरप्रदेश समुद्र की न्याईं बढ़ता है, वह जिह्वासम्बन्धि बहुत जल की न्याईं है ॥ ७ ॥

(१) इन्द्र का उदर जो अत्यन्त सोम को पीने वाला है ।

(२) सोम पीने से इस प्रकार बढ़ता है जैसे चन्द्रकिरण रूपी सोम को पीने से समुद्र बढ़ता है, ज्यूं २ चन्द्रकला बढ़ती हैं त्यों २ समुद्र बढ़ता है, वैसे ही ज्यूं २ यजमान का अर्पण किया हुआ सोम इन्द्र के उदर में जाता है त्यों २ वह बढ़ता है और ।

(३) जिस प्रकार जिह्वा का जल कभी नहीं सूखता, इसी प्रकार सोमपान से बढ़ा हुआ इन्द्र का वह उदरप्रदेश, जो सोम अर्पण करनेवाले की जाति का निवासस्थान है, कभी नहीं सूखता और उस देश में दुर्भिक्षादि विपत्ति नहीं पड़ती ।

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही ।
पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एव	यथार्थम्	यथार्थ
हि	एव	ही
अस्य	अस्य	इस की
१ सूनृता	प्रियसत्यरूपा वाक्	मधुर सत्य वाणी
१ विऽरप्शी	बहुवक्त्री (रप् व्यक्तायां वाचि)	बहुतबोलनेवाली
२ गोऽमती	गोभिरुपेता	गौओं से युक्त
३ मही	पूज्या	पूजनीय
४ पक्वा	पक्वैःफलैरुपेता	पकेहुए फलोंसे युक्त
४ शाखां	शाखा	शाखा
न	इव	न्याईं
४ दाशुषे	(हविः)दत्तवते	भक्त के लिये

संस्कृतार्थः।

यथार्थमेव अस्य (इन्द्रस्य) वहुवक्त्री गोभिरुपेता पूज्या प्रियसत्यरूपा वाक् (हविः) दत्तवते पक्वैःफलैरुपेता शाखा इव (अस्ति) ॥ ८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

यथार्थ में बहुत बोलनेवाली गौओं को देने वाली और पूज्य इस इन्द्र की मधुर सत्यवाणी भक्त के लिये पक्के फल वाली शाखा की न्याईं (है) ॥८॥

(१) इन्द्रदेव की प्रिय सत्यवाणी बहुत बोलने वाली है, इन्द्र हमारी आत्मा में प्रिय सत्यरूप से बहुत बोलते हैं, और यदि हम ध्यान दें तो उनकी वाणी को सुन सक्ते हैं व्यर्थ चिन्तन में लगे रहने से हम इन्द्र की प्रिय सत्यवाणी को नहीं सुनते। यदि हम इस वाणी को ध्यान देकर सुना करें तो प्रत्येक कार्य में हमें सच्ची शिक्षा मिल सक्ती है।

(२) इन्द्र की वाणी केवल उपदेश ही देने वाली नहीं है किन्तु गौओं के देने वाली भी है। उस वाणी पर ध्यान देने से और उसके अनुकूल चलने से हम इतना ही नहीं कि अनिष्ट से बच सकें, किन्तु लौकिक ऐश्वर्य्य वाले भी होसक्ते हैं

(३) वह वाणी पूजने के योग्य है, जितना हम उसका आदर करेंगे उतना ही हम दुःख से बचेंगे।

(४) भक्त के लिये तो वह वाणी ऐसी है जैसे पक्के फलों से लदी हुई शाखा अर्थात् तुरन्त फल देने वाली है। प्रत्येक अवसर पर भक्त उस वाणी को सुन कर सब प्रकार की दुर्घटनाओं को तुरन्त तरसक्ता है।

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः। ८।८।८।

एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते।
सद्यश्चित्सन्ति दाशुषे ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ एव	यथार्थम्	यथार्थ
हि	एव	ही
ते	तव	आप के
१ विऽभूतयः	विभूतयः	ऐश्वर्य्य
२ ऊतयः	रक्षारूपाः	रक्षारूप
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
२ माऽवते	मत्सदृशाय	मुझ जैसे के लिये
सद्यः	सद्यः	तत्काल
चित्	एव	ही
सन्ति	सान्ति	हैं
दाशुषे	(हविः) दत्तवते	भक्त के लिये

संस्कृतार्थः ।

यथार्थमेव हे इन्द्र तव विभूतयो मत्सदृशाय भक्ताय सद्य एव रक्षा रूपास्सन्ति ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

यथार्थ में हे इन्द्र आपके ऐश्वर्य मुझ जैसे भक्त के लिये तत्काल ही रक्षारूपी हैं ॥ ९ ॥

(१) इन्द्र की विभूतियां, उनका ऐश्वर्य और प्रताप, जो हम इस लोक में देखते हैं—जैसे अतिशीत और वृष्टि का होना, सूर्य के प्रकाश की अधिकता, वायु का वेग से चलना इत्यादि आलोक यद्यपि किसी को घात भी करनेवाले हों परन्तु ।

(२) मुझ जैसे भक्तके लिये तत्काल रक्षारूपी हैं।

मुझे तो सारे आलोक सुख के देनेवाले हैं।

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८। ८। ८॥

एवाह्यस्यकाम्या स्तोमउक्थं चशंस्यां । इन्द्रांयसोमंपीतये ॥ १० ॥

एव	यथार्थम्	यथार्थ
हि	एव	ही
अस्य	अस्य	इस का
काम्यां	कामयितव्ये (विभक्तेर्डा)	कामना करनेके योग्य
स्तोमः	सामसाध्यंस्तोत्रम्	कीर्तन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्थम्	ऋक्साध्यंशस्त्रम्	स्तुति
च	च	और
शंस्यां	शंसनीये	कथन करने के योग्य
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
सोमऽपीतये	सोमपानार्थम्	सोमपान करने के लिये

संस्कृतार्थः ।

यथार्थमेवास्येन्द्रस्य सामसाध्यं स्तोत्रमृक्साध्यं शस्त्रञ्च तस्य सोमपानार्थं कामयितव्ये शंसनीये च (स्तः) ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

यथार्थ ही इस इन्द्रका कीर्तन और स्तुति उनके सोमपान के लिये कामना करने के योग्य और कथन करने के योग्य हैं ॥ १० ॥

इसीलिये शस्त्र अर्थात् ऋग्वेद के मन्त्रों का क्रमविशेष से पाठ और सामवेद के मन्त्रों से गान सोमयज्ञ का बड़ा अङ्ग है ॥ ॥ इत्यष्टमं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० ९ ॥

इन्द्रोदेवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः।
महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ १ ॥

इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
आ	आ+	
इहि	आ+इहि आगच्छ	आओ
मत्सि	माद्यस्व	मोद करो
अन्धसः	अन्नेन (तृतीयार्थे षष्ठी) (निघं. २।७)	अन्न से
विश्वेभिः	सर्वैः	सब से
सोमपर्वऽभिः	सोमपर्वैः	सोमके उत्सवों से
महान्	महान्	महान्
अभिष्टिः	अभियष्टव्यः (आ० को०)	पूजने के योग्य
ओजसा	बलेन	बल से

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! आगच्छ, अन्नेन सर्वैस्सोमपर्वैः (च) माद्यस्व (त्वम्) बलेन महान् पूजनीयः (चाऽसि) ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे इन्द्र! आइये अन्न से (और) सब सोम के उत्सवों से मोद कीजिये (आप) महान् (और) अपने बलके कारण पूजने के योग्य हैं ॥

विनियोग-अतिरात्र के द्वितीय पर्याय में अच्छावाक शस्त्र में यह सूक्त पढ़ा जाता है (आ० श्रौ० सू० ६।४।१०)

सब सोमके उत्सवों से मोदयुक्त होने से तात्पर्य्य प्रातःसवन माध्यन्दिन सवन और तृतीय सवन में सोमरस और स्तोत्रादि गान से मोद युक्त होने का है। अन्न, सोमपान और स्तोत्र गान, यह तीनों मद को देनेवाले हैं ॥

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः। ८। ८। ८।

एमेनंसृजतासुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने। चक्रिंविश्वानिचक्रये ॥ २ ॥

आ	समन्तात्	सम्यक् प्रकार से
ईम्	पादपूरणार्थः	—
एनम्	एनम् (सोमम्)	इस [सोम] को
सृजत	सिञ्चत	सींचो
सुते	अभिषुते(सोमे)	(सोमके) निष्पीडन कियेजानेपर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन्दिम्	हर्षहेतुम् (मन्देरार्यन्तादिः)	हर्ष के देनेवाले को
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
मन्दिने	हर्षयुक्ताय	हर्ष युक्तके लिये
चक्रिम्	करणशीलम् (कृ-तच्छीले किन्)	करनेवाले को
विश्वानि	सर्वाणि [कर्माणि]	सब (कर्मों)को
चक्रये	करण शीलाय	करनेवाले के लिये

संस्कृतार्थः ।

अभिषुते (सोमे) हर्षहेतुं (कर्म-)निष्पादन शील-मेनं (सोमं) हर्षयुक्तायाऽखिल (कर्म)निष्पादन-शीलायेन्द्राय समन्तात् सिञ्चत ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(सोमके)निष्पीड़न किये जाने पर हर्ष के देने-वाले और (काम) करने (के स्वभाव) वाले इस (सोमरस) को हर्षयुक्त (और) सब कर्मों के करने-वाले इन्द्र के लिये खूब सींचो ॥ २ ॥

सोम, हर्षको और काम करने की शक्तिको देता है इसी-लिये सोम पीनेवाले इन्द्र सदा हर्षयुक्त और सब कामोंके करने-वाले हैं। हम को भी सदा हर्षयुक्त और सब कामोंके करने में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्पर होने के लिये सोम का अन्वेषण करके यज्ञ में सोम पान करना चाहिये।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।।

मत्स्वासुशिप्रमन्दिभिः स्तोमेभि-
र्विश्वचर्षणे । सचैषुसवनेष्वा ॥ ३ ॥

मत्स्व	हृष्टोभव	मोद करो
१ सुऽशिप्र	हे शोभनहनो!	हे सुन्दर जबड़े वाले
१ मन्दिऽभिः	हर्षहेतुभिः	हर्षदेनेवालों से
३ स्तोमेभिः	स्तोत्रैः	स्तोत्रों से
२ विश्वऽचर्षणे	हे सर्वदृक्	हे सबके देखने-वाले
४ सचा	सह	साथ
एषु	एषु	इन में
५ सवनेषु	सोमोत्सवेषु	सोमके उत्सवोंमें
आ	समन्तात्	सम्यक् प्रकारसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे शोभनहनो सर्वदृक् [इन्द्र] एषु सोमोत्सवेषु हर्षहेतुभिः स्तोत्रैः (अस्माभिः) सह (भूत्वा) सम्यग्हृष्टोभव ॥३॥

भाषार्थः ।

हे सुन्दर जबड़ेवाले (और) सब को देखनेवाले (इन्द्र) इन सोमके उत्सवों में हर्ष के देनेवाले स्तोत्रों से (हमारे) साथ (होकर) सम्यक् प्रकार से मोद करो ॥ ३ ॥

(१) वीर पुरुष का जबड़ा बड़ा और सुन्दर होता है इसलिये इन्द्र को सुन्दर जबड़ेवाला कहा है ।

(२) इन्द्र सब को देखनेवाले हैं, मनुष्य में भी जहां तक उसकी पहुंच है सर्वदर्शी होना बड़ा गुण है। सब भृत्यों को देखनेवाला होनेसे घरका काम ठीक चलता है। सब स्त्री पुत्र मित्र वर्गको देखने वाला होने से सब के साथ प्रेम बना रहता है। शत्रुओं पर दृष्टि रखने से कोई उसको हानि नहीं पहुंचा सकता इत्यादि।

(३) स्तोत्रों से भी हर्ष उत्पन्न होता है। जैसे सोम हर्ष का साधन है वैसे ही देवताओं की स्तुति भी आनन्द को उत्पन्न करती है ।

(४) जैसे उत्सव के समय मित्र मित्र के साथ मिलकर हर्ष करता है, वैसे ही इन्द्र देव सोम के उत्सवों में हमारे साथ मिल कर हर्ष करें। देवता का हमारे साथ मिलकर आनन्द करने का भाव ऋ०मं० १ सू० १० मं० ४ मे अधिक स्पष्ट है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत ।
अजोषा वृषभं पतिम् ॥४॥

असृग्रम्	अस्रृज्यन्त (ऋ० १।८।२)	सींची गई हैं
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
ते	तुभ्यम्	आप के लिये
गिरः	स्तुतयः	स्तुतियां
प्रति	प्रति	प्रति
त्वाम्	त्वाम्	आप को
उत्	उत्+	—
अहासत	उत्+अहासत उद्गताः	पहुंची हैं
१ अजोषाः	असन्तुष्टाः	असन्तुष्ट हुई २
वृषभम्	सेचनसर्थम्	नर को
पतिम्	स्वामिनम्	स्वामि को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र तुभ्यम् (याः) स्तुतयोऽसृज्यन्त (ताः) असन्तुष्टाः (सत्यः) वृषभं स्वामिनं त्वां प्रत्युद्गताः ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र! आपके लिये (जो) स्तुतियां सिंचन की गई हैं, (वे स्तुतियां) नर (और सब के) स्वामी आप के प्रति असन्तुष्ट हुई २ पहुंची हैं ॥ ४ ॥

(१) जिस प्रकार हम सोमरस सिंचन करते हैं, इसी तरह स्तुति भी इन्द्र को अर्पण करते हैं। हमारी अर्पण की हुई स्तुतियां इन्द्र के गुण पूरी तरह से नहीं कह सकीं। इसी लिये अपनेको उनके योग्य न समझ कर अपनेसे असन्तुष्ट हुई २ उनके पास पहुंची हैं।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

संचोदयचित्रमर्वाग्राधंइन्द्रवरेण्यम् ।
असदित्तेविभुप्रभु ॥५॥

सम्	सम्यक्	भली प्रकार
चोदय	प्रेरय	प्रेरण करो
चित्रम्	बहुविधम्	नाना प्रकार के
अर्वाक्	अर्वाक्	उरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राधः	धनम् (निघं० २।१०)	धन को
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
वरेण्यम्	श्रेष्ठम्	श्रेष्ठ को
असत्	अस्ति	है
इत्	एव	ही
ते	तव	आप के
विऽभु	पर्याप्तम्	पर्य्याप्त
प्रऽभु	अधिकम्	अधिक

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! बहुविधं श्रेष्ठं धनम् अस्मदाभिमुखं सम्यक् प्रेरय [यस्मात्] पर्य्याप्तं धनं [ततोऽपि] अधिकं (च) तवैवास्ति ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हे ! इन्द्र आप नाना प्रकारके श्रेष्ठ धनको (हमारी) ओर भली प्रकार से प्रेरण करो, क्योंकि आप ही के पास पर्याप्त (और उस से भी) अधिक धन है॥५॥

जिस इन्द्र के पास पर्याप्त (काफी) और उस से भी अधिक धन है। उन्हीं से मांगना चाहिये वही नाना प्रकार के और उत्तम २ धन हमें दे सकते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ८ । ८ । ८ ॥

अस्मान्त्सुतत्रं चोदयेन्द्र रायेरभस्वतः । तुविद्युम्न यशस्वतः ॥ ६ ॥

अस्मान्	अस्मान्	हम को
सु	सुष्ठु	भलीप्रकार
४ तत्रं	तस्मिन् (अर्थाद्यथोचितकर्मणि)	यथोचित कर्म में
४ चोदय	प्रेरय	प्रेरण करो
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
५ राये	धनार्थम्	धन के लिये
१ रभस्वतः	उद्योगवतः	उद्योग करनेवालों को
१ तुविऽद्युम्न	हे प्रभूतधन (तुवीति बहुनाम (निघं०३।१।)	हे बहुत धनवाले
२ यशस्वतः	कीर्तिमतः	कीर्तिवालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे प्रभूतधनेन्द्र उद्योगवतः कीर्त्तिमतः (च) अस्मान् धनार्थं यथोचितकर्मणि सुष्ठु प्रेरय ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे बहुत धन वाले इन्द्र उद्योगवाले (और) कीर्तिवाले जो हम हैं उनको आप धन के लिये यथोचित कर्म में प्रेरण करो ॥ ६ ॥

(१) "हम जो उद्योग करनेवाले हैं" आलसी नहीं हैं हम उद्योग करके इन्द्र से धन मांगते हैं यह नहीं कहते कि हम हाथ पैर न हिलावें और वह हमें धन से पूर्ण करदें ।

(२) हम सुयशवाले हैं हमारा अपयश कहीं भी नहीं है । दूसरों पर अत्याचार करके घूंस लेकर छल करके व्यवहार में धोखा देकर इत्यादि अपयश वाले होकर हम इन्द्र से धन नहीं मांगते किन्तु निर्मल यशवाले रहकर ।

(३) हम बहुत धन वाले इन्द्र से ।

(४) यह मांगते हैं कि वह हमें ऐसे कर्म में प्रेरण करें कि—

(५) जिस कर्म के करनेसे हमें धन मिले, हमारा आशय इन्द्र से धन मांगने का यह भी नहीं है कि हमें पड़ा हुआ खजाना (निधि) कहीं से मिल जाय किन्तु यह मांगते हैं कि वह हमें ऐसे कर्म की ओर प्रेरण करें जहां हम उद्योग करके और निर्मल यश के साथ बहुत धन कमासकें ।

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संगोमंदिन्द्रवाजंवद॒स्मेपृथुश्रवो
बृ॒हत्। वि॒श्वायुर्धेह्यक्षितम्॥ ७॥

सम्	सम्यक्	खूब
२ गोऽमंत्	गोभिरुपेतम्	गौओंसे युक्त को
इन्द्र॒	हे इन्द्र	हे इन्द्र
३ वाजंऽवत	बलविशिष्टम्	बल वाले को
अ॒स्मे॰	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
४ पृथु	विस्तीर्णम्	विस्तृत को
१ श्रवः	यशः	यश को
४ बृहत्	महत्	बड़े को
५ वि॒श्वऽआ॑युः	सर्वायुर्युक्तम्	पूर्ण आयु से युक्त को
धे॒हि॒	प्रयच्छ	दीजिये
६ अक्षितम्	विनाशरहितम्	विनाशरहित को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र (त्वम्) अस्मभ्यं गोभिरुपेतं बलविशिष्टं सर्वायुर्युक्तं विनाशरहितं विस्तीर्णं महद्यशः सम्यक् प्रयच्छ ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र (आप) हम को गौएं बल और पूर्ण आयु से युक्त विनाश रहित विस्तीर्ण और बड़े यश को खूब दीजिये ॥ ७ ॥

(१) इन्द्र देव हमें यश को देवें जो ।

(२) गौओं से युक्त हो यश भी हो और गौऐं भी हों। दरिद्री मनुष्य भी यशस्वी हो सक्ता है परन्तु हम मांगते हैं, कि हम धनी रह कर यशस्वी हों ।

(३) यश के साथ बल भी हो निर्बल मनुष्य भी यशस्वी हो सक्ता है परन्तु हम बलवान् होकर यशस्वी होना चाहते हैं ।

(४) जो यश बड़ा और दूर तक अर्थात् सब देश देशान्तर में फैलनेवाला हो ॥

(५) पूर्णायुसे युक्त हो । यश के लिये हमें जान न देनी पड़े हमारा यश पूर्णायु से युक्त हो ।

(६) और विनाश रहित हो थोड़े काल रह कर नाश न होजावे परन्तु सदा रहे ।

उक्त प्रकार के यश के एक उदाहरण श्रीरामचन्द्र जी हैं। हमारा यश भी उन जैसा हो ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्र
सातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥८॥

अस्मे०	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
धेहि	प्रयच्छ	दो
श्रवः	कीर्तिम्	कीर्ति को
बृहत्	महतीम्	बड़ी को
द्युम्नम्	धनम् (निघं० २।१०)	धन को
सहस्रसातमम्	अतिशयेन सहस्र लाभजनकम्	अतिशय करके सहस्रों लाभ देने वाले को
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
ताः	प्रसिद्धाः	प्रसिद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२रथिनीः	रथोपेताः	रथों से युक्त को
२इषः	अन्नानि (निघं० २।७)	अन्नों को

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र महतीं कीर्तिम्, अतिशयेन सहस्रलाभजनकं धनम्, बहुरथोपेतानि (व्रीहियवादिरूपेण) प्रसिद्धान्यन्नानि (च) अस्मभ्यं प्रयच्छ ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र हमें बड़ी कीर्ति को अतिशय करके सहस्रों लाभ देनेवाले धन को (और) रथों से युक्त अन्नों को दीजिये ॥ ८ ॥

(१) हम इन्द्र से ऐसा धन मांगते हैं जो अत्यन्त घने लाभों के देनेवाला हो, जिस धन से न अपने को न दूसरों को लाभ पहूंचे ऐसा धन हम नहीं मांगते ।

(२) चावल और यवादि अन्न रथों में भरे हुए हमारे घर में आवें ।

अन्न के लिये बारम्बार प्रार्थना का होना यह सिद्ध करता है कि मनुष्य की वा जाति की उन्नति के लिये पहिले पर्याप्त अन्न की आवश्यकता है, बुद्धि बल और धार्मिक उन्नति भूखी जाति वा भूखे मनुष्य में होनी असम्भव है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः ॥ ८ । ८ । ८ ।

वसोरिन्द्रंवसुपतिं गीर्भिर्गृणन्तंऋ-
ग्मियंम् । होमगन्तारमूतयें ॥ ९ ॥

१वसोः	धनस्य	धन के
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
१वसुऽपतिम्	धनस्य स्वामिनम्	धन के स्वामी को
गीःऽभिः	वाणीभिः	वाणियों से
गृणन्तः	स्तुवन्तः	स्तुति करते हुए
ऋग्मियम्	स्तुत्यर्हम्	स्तुति के योग्यको
होम	आह्वयामः	बुलाते हैं
२गन्तारम्	गमनशीलम्	चलने के स्वभाव वाले को
१ऊतये	रक्षार्थम्	रक्षा के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

वयं धनस्वामिनं स्तुत्यर्हं गमनशीलमिन्द्रं वाणीभिः स्तुवन्तो धनस्य रक्षार्थमाह्वयामः ।।६।।

भाषार्थः ।

हम धन के स्वामी स्तुति के योग्य और गमन शील इन्द्र को वाणियों से स्तुति करतेहुए धन की रक्षा के लिये बुलाते हैं ॥ ९ ॥

(१) धन की प्राप्ति के लिये ही नहीं, धन की रक्षा के लिये भी हम धन के स्वामी इन्द्र को बुलाते हैं ॥

(२) इन्द्र देव गमनशील हैं एक स्थानपर रहने वाले नहीं हैं जैसे हम सूर्य और विद्युत् रूप में तो प्रत्यक्ष ही देखते हैं। मनुष्य के लिये भी गमन शील होना उन्नति का हेतुहै जिस जाति के मनुष्य गमन शील होते हैं वही जाति जय शील और महान् होती है। ऐतरेय ब्राह्मणमें भी कहा है "आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः। शेते निपद्यमानस्य चराति चरतोभगः"

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

सुतेसुतेन्योकसे बृहद्बृहत

एदरिः । इन्द्रायशूषमर्चति॥ १० ॥

१ सुतेऽसुते	अभिषुते अभिषुते	सोम सोम के निष्पीड़न में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ नि॒ऽओ॑कसे	नियतमोकःस्थानं यस्य तस्मै नियतस्थानाय	नियतस्थान वाले के लिये
बृ॒ह॒त्	प्रौढम्	बढ़े हुए को
बृ॒ह॒ते	प्रौढाय	बढ़े हुए के लिये
आ	आ-।-	—
इ॒त्	पूरणः	
अ॒रिः	देवोपासकः (ऋ० ६।४।६)	देव भक्त
इन्द्रा॑य	इंद्राय	इन्द्र के लिये
शू॒षम्	बलम् (निघ० २।३)	बल को
अ॒र्च॑ति	आ-।-अर्चति समर्पयाति	भेट करता है

संस्कृतार्थः ।

देवोपासकोऽभिषुते तत्तत्सोमे नियतस्थानाय प्रौढायेद्रांय (स्वकीयम्) प्रौढं बलं समर्पयाति ॥१०॥

भाषार्थः ।

देवभक्त महान् इंद्र के लिये जिनका नियत स्थान वही है जहां सोम निष्पीड़न किया जाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[अपने] बढ़े हुए बलको भेट करता है ॥ १० ॥

(१) इन्द्र का नियत स्थान वही है जहां २ सोम का निष्पीडन होता है अर्थात् भक्त का घर ही इन्द्र का नियत स्थान है।
(२) ऐसे महान् इन्द्र को उनका भक्त अपना बढ़ा हुआ बल भेट करता है अर्थात् इन्द्र के प्रिय कार्य्यों में ही अपने बल को (जो इन्द्र की कृपा से ही बढ़ा है) लगाता है।

इति नवमं सूक्तम्।

ऋ० मं० १ सू० १०।

इन्द्रोदेवता वैश्वामित्रो मधुच्छन्दाऋषिरनुष्टुप्छन्दः ८। ८। ८। ८।

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ १ ॥

गायन्ति	गायन्ति	गान करते हैं
त्वा	त्वाम्	आप को
१ गायत्रिणः	उद्गातारः	साम गान करने वाले
अर्चन्ति	स्तुवन्ति	स्तवन करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्कम्	अर्चनीयम्	पूजने योग्य को
२ अर्किणः	स्तोतारः	स्तोता
३ ब्रह्माणः	ब्राह्मणाः	ब्राह्मण
त्वा	त्वाम्	तुझ को
शतऽक्रतो	हे बहुबल	हे बहुत बल वाले
उत्	उत् +	—
३ वंशम्ऽइव	यथा वंशम्	जैसे बांस को
येमिरे	उत्+येमिरे उन्नतं चक्रुः	उन्नत किया है

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबल (इन्द्र) अर्चनीयं त्वामुद्गातारो गायन्ति स्तोतारः (च) स्तुवान्ति (अपिच) ब्राह्मणास्त्वां यथा (नटाः)वंशम् (उन्नतं कुर्वन्ति तथा) उन्नतं चक्रुः ॥१॥

भाषार्थः ।

हे बहुत बलवाले(इन्द्रदेव)पूजने योग्य आपका उद्-गाता गान करतेहैं और स्तोता स्तुति करतेहैं।(और)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्राह्मणोंने आपको इस प्रकार उन्नत किया है जैसे (नट) बांस को (उन्नत करते हैं) ॥ १ ॥

विनियोग--यह मन्त्र अभिप्लव षडह में उक्थ्य यागों के तृतीय सवन में अच्छावाक के स्तोत्रिय तृच में है अर्थात् अच्छावाक के शस्त्र में डालकर पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० उ० १।८।३)

(१) गायत्रिणः=साम गान से स्तुति करने वाले ॥

(२) अर्किणः=ऋक् के स्तोत्रों से स्तुति करने वाले, यह दोनों ही इन्द्र की स्तुति करते हैं ।

(३) "ब्रह्माणः" ब्रह्म अर्थात् वेद के जाननेवालों ने इन्द्र को ही उन्नत किया है। जैसे नट बांस को ऊंचा करते हैं और सब देखने वालों की दृष्टि उस उन्नत बांस की ओर होती है इसी प्रकार ब्राह्मणों ने ही इन्द्र को उन्नत किया है और उन के ऐसा करने से सब की दृष्टि इन्द्र की ओर रही है ।

अब भी ब्राह्मण वेद के स्तोत्रों से इन्द्र को उन्नत करें तौ सब की दृष्टि इन्द्र की ओर फिर हो सक्ती है ।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः । ८ । ८।८। ८॥

यत्सानोः सानुमारुहद्भूर्यस्पष्ट-
कर्त्वम् । तदिन्द्रोऽअर्थंचेतति यूथेन-
वृष्णिरेजति ॥ २ ॥

यत्	यदा	जब
१ सानोः	शिखरात्	शिखर से
१ सानुम्	शिखरम्	शिखर को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	—
१ अरुहत्	आ+अरुहत् आरूढवान्	चढ़ चुका है
२ भूरि	बहुवारम् (आ० को०)	बहुत वार
२ अस्पष्ट	स्पृष्टवान्	छू चुका है
२ कर्त्वम्	कर्तुं योग्यं(कर्म)	कर्तव्य(कर्म)को
तत	तदा	तब
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
२ अर्थम्	(मनुष्यस्य) प्रयोजनम्	(मनुष्य के) प्रयोजन को
१ चेतति	चिन्तति	चिन्तन करता है
४ यूथेन	यूथेन (सह)	यूथ के (साहित)
वृष्णिः	सेचनसमर्थः	बीर
एजति	(स्वस्थानात्) चलति	(अपने स्थान से) चलता है

संस्कृतार्थः ।

(मनुष्यः)यदा शिखराच्छिखरमारूढवान् (आ-रुह्य च)बहुवारं कर्तव्यं[कर्म]स्पृष्टवांस्तदानीमिन्द्रः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(तस्य) प्रयोजनं चिन्तति यूथेन (च,) सहितः (सः) वीरः (स्वस्थानात्) चलति ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

जब मनुष्य शिखर से शिखर पर चढ़ चुका है (और) बहुत वार कर्तव्य को छू चुका है तब इन्द्र उस के प्रयोजन को चिन्तन करते हैं और यूथके (साथ वह वीर अपने स्थान) से चलते हैं ॥ २॥

यहां पर कर्तव्य (वह उन्नतिकारक कर्म जो करने के योग्य है) को एक ऐसे ऊंचे स्थान पर होने वाली वस्तु से उपमादी है जिसको मनुष्य शिखर से शिखर पर चढ़ कर उचक कर छूलेता है और फिर नीचे गिर जाता है। फिर उचक कर दूसरी बार छू लेता है और फिर गिर जाता है, इसी प्रकार बारवार छूता है और गिर जाता है । ऐसा करने से वह हताश होजाता है और उस कर्तव्य को अपनी शक्ति से बाहर समझ कर पुरुषार्थ और श्रद्धा से हीन होजाता है। वेद का उपदेश है कि उन्नति का यही नियम है कि बहुत वार उचको और बहुत वार गिरो, ऐसा बार बार करने से एक दिन इन्द्र तुम्हारे प्रयोजन का चिन्तन करेंगे और तुम्हारी पूर्णरूप से सहायता करने के लिये अपने सहायक (मरुदादि) गणों के साथ अपने स्थान से चलेंगे। उस वीरके आते ही वह कर्त्तव्य जिस को तुम अपनी शक्ति से हस्तगत नहीं कर सकते थे, उनकी गुप्त सहायता के होने से तुम्हारे लिये सुसाध्य होजायगा और तुम फिर नहीं गिरोगे इसलिये पुरुषार्थ और श्रद्धा को न छोड़ो।

इन्द्रोदेवता निचृदनुष्टुप्छन्दः ८।७।८।८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यु॒क्ष्वा हि के॒शिना॒ हरी॒ वृष॑णा कक्ष्य॒प्रा।
अथा॑न इन्द्र सोमपा गि॒रामुप॑श्रुतिं चर
॥ ३ ॥

यु॒क्ष्व	संयोजय	जोड़ो
हि	(पादपूरणार्थः)	——
१ के॒शिना॑	लम्बमान केशयुक्तौ	लम्बे बालों वालों को
हरी॑०	अश्वौ	घोड़ों को
१ वृष॑णा	सेचनसमर्थौ	नरों को
१ क॒क्ष्य॒ऽप्रा	अश्वकक्षबद्धारज्जुः कक्ष्या, तस्याः पूरकौ पुष्टाङ्गावित्यर्थः	पुष्टअङ्गोंवालों को
अथ॑	अनन्तरम्	पीछे
न॒ः	अस्मदीयानाम्	हमारी
इन्द्र॒	हे इन्द्र	हे इन्द्र
२ सो॒म॒ऽपा॒ः	हे सोमपाः	हे सोम पीनेवाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ गिराम्	स्तुतीनाम्	स्तुतियों के
१ उपंऽश्रुतिम्	श्रवणम् (आ०को०	श्रवण को
चर	प्राप्नुहि	प्राप्त हो

संस्कृतार्थः ।

हे सोमपा इन्द्र ! (त्वम्) लम्बमानकेशयुक्तौ सेचनसमर्थौ पुष्टाङ्गावश्वौ संयोजय, अनन्तरमस्मदीयानां स्तुतीनां श्रवणं प्राप्नुहि ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हे सोमपीनेवाले इन्द्र अपने लम्बे बालोंवाले पुष्ट नर घोड़े जोतो (और) हमारी स्तुतियों को सुनो ॥ ३ ॥

(१) इन्द्र लम्बे बालोंवाले पुष्ट और नर घोड़े, रखते हैं और उन को रथ में जोड़कर यजमान के घर आते हैं, इन्द्र के भक्तोंको भी लम्बे बालोंवाले पुष्टाङ्ग और नर घोड़े रखने चाहियें।

(२) सोमपा इन्द्र इस लिये रथपर चढ कर आवें कि हमारी स्तुति को सुनें।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः । ८। ८। ८। ८ ॥

एहिस्तोमाँअभिस्वरा ऽभिगृणीह्यारुव ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मंचनोवसोसचे न्द्रंयज्ञंचंवर्धय ॥४॥

आ	आ+	—
इहि	आ+इहि; आगच्छ	आओ
स्तोमान्	स्तोत्राणि	स्तोत्रों को
१ अभि	अभि+	—
६ स्वर	अभि+स्वर, अनु-मोदय[आ०को०]	अनुमोदन करो
२ अभि	अभि+	—
२ गृणीहि	अभि+ गृणीहि, अनुब्रूहि	पीछे कहो वा साथ गाओ
३ आ	आ+	
३ रुव	आ+रुव (प्रशंसा) शब्दं कुरु	(प्रशंसा) शब्द को करो
४ ब्रह्म	स्तुतिम्	स्तुति को
च	च	और
नः	अस्माकम्	हमारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ वसो॥०	हेश्रेष्ठ (आ०को०;	हे श्रेष्ठ
४ सचा	सह (भूत्वा)	साथ (होकर)
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
४ यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
च	च	और
४ वर्धय	वर्धय	बढ़ाओ

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! आगच्छ (अस्मदीयानि) स्तोत्राण्य नुमोदय, अनुब्रूहि (प्रशंसा) शब्दञ्चकुरु हेश्रेष्ठेन्द्र! अस्माकं स्तुतिं यज्ञञ्च सह (भूत्वा) वर्धय ॥४॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र ! आइये (हमारे) स्तोत्रों को अनुमोदन कीजिये (हमारे) साथ गाइये और (प्रशंसा) शब्द कीजिये हमारी स्तुति और पूजा को साथ (होकर) बढ़ाइये ४ ॥

इन्द्र का आवाहन जो पिछले मंत्र में है, इसी लिये नहीं कि वह हमारी स्तुति को सुनें किन्तु वह हमारे कीर्तन में सम्मिलित (शामिल) हों, हमारे स्तोत्रों को सुनकर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) हमारा अनुमोदन करें।
(२) हमारे स्तोत्रों के साथ २ गावें।
(३) और "वाहवाह" इत्यादि प्रशंसा के शब्द कहें (देखो व्याख्यान पृ० २२०)
(४) श्रेष्ठ इन्द्र हमारे साथ मिलकर हमारी स्तुति और पूजा को बढ़ावें।

आर्य्यों के इष्टदेव दूर आकाशमें बैठे हुए स्तुति नहीं सुनते किन्तु उन के साथ मिलकर उन की स्तुति और पूजा को बढ़ाते हैं।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८।

उक्थमिन्द्रांयशंस्यं वर्धनंपुरुनिष्षिधे।
शक्रोयथांसुतेषुंणो रारणंत्सख्येषुंच ॥५॥

उक्थम्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
शंस्यम्	कथनीयम्	गाना चाहिये
वर्धनम्	वृद्धिसाधनम्	बढ़ानेवाले को
पुरुनिःऽसिधे	बहूनां निषेधकारिणे	बहुतों को मार हटानेवालेको लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शक्रः	शक्तः	समर्थ
यथा	यथा	जैसे
सुतेषु	सुतेषु	सोमाभिषवों में
नः	अस्माकम्	हमारे
रारणत्	हर्षध्वनिं कुर्यात् (रण शब्दे)	हर्षका शब्द करे
सख्येषु	सखित्वेषु	मित्रताओं में
च	च	और

संस्कृतार्थ ।

बहूनां निषेधकारिण इन्द्राय वृद्धिसाधनं स्तोत्रं कथनीयम्, यथा शक्तः (सः) अस्मदीयेषु सुतेषु सखित्वेषु च हर्षध्वनिं कुर्यात् ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

बहुतों को मार हटाने वाले इन्द्र के लिये बढाने वाले स्तोत्र गाने चाहियें, जिससे(वह)समर्थ हमारे सोमाभिषवों में और हमारी मित्रताओंमें हर्षध्वनि करें ॥ ५ ॥

विनियोग–यह मन्त्र अभिप्लव षडह में उक्थ्य यागों के तृतीय सवन में अच्छावाक के अनुरूप तृच में है अर्थात् स्तोत्रिय तृच के पश्चात् पढ़ा जाता है(आ०श्रौ०सू०उ०१।८।२!)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्तुति, जिस प्रकार देवता की वृद्धि का साधन है इसी प्रकार मनुष्य की भी, यह एक ईश्वरीय नियम है और जैसे सब नियम देव सृष्टि और मनुष्य सृष्टिके एक ही हैं वैसे यह भी। इसलिये यदि तुम अपने प्रिय शिष्य पुत्र स्त्री मित्र आदि का हित चाहते हो तो कभी उन पर आक्षेप वा अनादर न करो ऐसा करने से तुम उनको घटाते हो। किन्तु सर्वदा उनके उत्तम गुणोंकी स्तुति करो ऐसा करने से वह बढ़ते हैं। जिस गुणमें वे हीन हैं उसके लिये उत्साह दिलाओ कि ऐसे वीरोंके लिये अमुक त्रुटि को पूर्ण करना कौन बड़ी बात है। अब शीघ्र ही अमुक अवगुण दूर होजायगा। राजाओं का बन्दीगणों से स्तुति किये जाना इसी नियम पर आश्रित था।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८।

तमित्सखित्वईमहे तंराये तंसुवीर्यें ।
सशक्रउतनः शकदिन्द्रोवसुदयमानः ॥६॥

तम्	तम्	उस को
इत्	एव	ही
१ सखिऽत्वे	मित्रतायै (चतुर्थ्यर्थेसप्तमी)	मित्रता के लिये
१ ईमहे	याचामहे	हम मांगते हैं
तम्	तम्	उस को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ रा॒ये	धनार्थम्	धनके लिये
तम्	तम्	उस को
१ सु॒ऽवी॒र्यैं	शोभनसामर्थ्य-निमित्तम्	सुन्दर सामर्थ्य के लिये
सः	सः	वह
श॒क्रः	शक्तिमान्	शक्तिमान्
उ॒त	अपि	भी
२ नः॒	अस्मान्	हम को
२ श॒क॒त्	शक्तानकरोत् (ऋ० ८। ३२। १२)	शक्तिमान् किया है
इन्द्रः॑	इन्द्रः	इन्द्र ने
२ वसु॑	धनम्	धन को
२ दय॑मानः	प्रयच्छन्	देते हुए

संस्कृतार्थः।

(वयम्) तमेव मित्रतायै याचामहे तम् (एव) धनार्थम् तम् (एव) शोभनसामर्थ्यनिमित्तम्, शक्तिमान् स इन्द्रो धनं प्रयच्छन्नस्माञ्छक्तानप्यकरोत् ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हम उन्हीं को मित्रता के लिये मांगते हैं, उन्हीं को धनके लिये, (और) उन्हीं को सुन्दर सामर्थ्य के लिये, धन देते हुए उन्हीं शक्तिमान् इन्द्र ने हम को शक्तिवाले भी बनाया है ॥ ६ ॥

(१) धन मित्रता और सामर्थ्य सबके लिये हम इन्द्रको ही मांगते हैं वही हमारे मित्र हों वही हमारे धन और वही हमारे पौरुष बनें।

(२) क्योंकि उन्हींही ने हमको सब धनादि पदार्थ दिये हैं उन्हींने ही सब प्रकार की शक्ति हमको दी है फिर हम दूसरे की आशा कैसे कर सक्ते हैं हमारे तो सर्वस्व इन्द्र ही हैं।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः ॥८।८।८।८॥

सुविवृतंसुनिरज मिन्द्रत्वादांतमिद्यशः।
गवामपंव्रजंवृधि कृणुष्वराधोअद्रिवः॥७॥

सुऽविवृतम्	सुप्रकाशितम्	अच्छी तरह प्रकाशित
सुनिःऽअजम्	अनायासेन निखिलंप्राप्तुंशक्यम् (अज-गतौ)	सहज से पूर्ण रूप से प्राप्त होने के योग्य
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वाऽदांतम्	त्वयादत्तम् (ऋ०५।३१।१।)	आपकादियाहुआ
इत्	एव	ही
यशः	यशः	यश
गवाम्	गवाम्	गौओं के
अपं	अप+	----
व्रजम्	व्रजम्	गोष्ठ को
वृधि	अप+वृधि, उद्घाटय	खोलो
कृणुष्व	सम्पादय	सम्पादन करो
राधः	धनम् (निघं० २।३)	धनको
अद्रिऽवः	हे वज्रिन् (निरु०)	हे वज्री

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! त्वयादत्तं यशः सुप्रकाशितं अनायासेन प्राप्यं (चाऽस्ति) हे वज्रिन् [त्वम्] गवां व्रजमुद्घाटय धनम् (चाऽस्मभ्यम्) सम्पादय ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र आप का दिया हुआ यश अच्छी तरह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशित है (और)सहज से पूर्णरूप से प्राप्त होने योग्य है, हे वज्री गौओं के गोष्ठ को खोलो (और हमारे लिये) धन को सम्पादन करो ॥ ७ ॥

(१) इन्द्र जब किसी को यशस्वी बनाने लगते हैं तो बिना अधिक परिश्रम के ही उस मनुष्य को पूर्णतया यश की प्राप्ति हो जाती है और वह यश सुप्रकाशित होता है सूर्य के प्रकाश की न्याईं सब जगह फैल जाता है ।

(२) इन्द्र के गोष्ठ में बहुत गौएं हैं उस गोष्ठ को वह हमारे लिये खोलदेवें जिस से हम बहुत धन वाले हो जावें ।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः८।८।८।८।

नहित्वारोदसीउभे ऋघायमाणमिन्वतः । जेषःस्वर्वतीरपः संगाअस्मभ्यंधूनुहि ॥८॥

नहि	न	नहीं
त्वा	त्वाम्	तुझ को
१ रोदसी०	द्यावापृथिव्यौ	द्युलोक और पृथिवी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उभे०	उभे	दोनों
१ ऋघायमाणम्	क्रुध्यन्तम् (भा०को०)	क्रुद्ध होते हुएको
१ इन्वतः	व्याप्तुं समर्थेस्तः	धारण करने को समर्थ हैं
२ जेषः	विजयस्व	जीतो
२ स्वःऽवतीः	दिव्याः	आकाश में होने वालों को
२ अपः	जलानि	जलों को
सम्	सम्यक्	अच्छी प्रकार
१ गाः	गाः	गौओं को
अस्मभ्यम्	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
१ धूनुहि	विसृज	छोड़ो

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र! क्रुध्यन्तं त्वामुभेद्यावापृथिव्यौ (अपि) न व्याप्तुं समर्थे (त्वम्) दिव्यानि जलानि विजयस्व अस्मभ्यं गाश्च सम्यग् विसृज ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे इन्द्र जब आप क्रुद्ध होते हो उस समय द्युलोक और पृथिवी (भी) आप को धारण करने में समर्थ नहीं होतीं आप आकाश के जलों को जीतिये [और] हमारे लिये गौओं को छोड़िये ॥८॥

(१) इन्द्र जब क्रोध से गर्जन करते हैं तो द्यावा पृथिवी उनको नहीं धारण कर सक्ते वह उनकी सीमा से बढ़ जाते हैं।

(२) यह इन्द्रका गर्जन करना उनका आकाश के जलों को जीतना द्योतन करता है।

(३) और जैसे युद्ध में जीतने से शत्रु की गौएं मिलती हैं इसी प्रकार इन्द्र के जलों को जीतने से वृष्टिधारारूपी गौएं हम को मिलती हैं।

इन्द्रोदेवता, अनुष्टुप्छन्दः । ८ । ८ । ८। ८॥

आश्रुत्कर्णश्रुधीहवं नूचिंद्दधिष्वमेगिरः । इन्द्रस्तोमामिमंमम कृष्वायुजश्चिदन्तरम् ॥ ९ ॥

आश्रुत्ऽकर्ण	सवर्तःश्रोतारौकर्णौ यस्य तत्सम्बुद्धौ	हे सब ओर से सुननेवाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रुधि	शृणु	सुनो
हवम्	आह्वानम्	पुकार को
नु	क्षिप्रम्	शीघ्र
चित्	अपि	भी
दधिष्व	धारय	धारण करो
मे	मम	मेरी
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
स्तोमम्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
इमम्	इमम्	इस को
मम	मे	मेरे
कृष्व	कुरु	करो
युजः	सख्युः	मित्र से
चित्	अपि	भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तरम्	समीपम्	समीप

संस्कृतार्थः ।

हे आश्रुत्कर्ण (मम) आह्वानं शृणु, अपि च मम स्तुतीः क्षिप्रं (चित्ते) धारय हे इन्द्र इमं मे स्तोत्रं (स्वकीयात्) सख्युरपि समीपं कुरु॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

हे सब ओर से सुननेवाले ! मेरी पुकार को सुनो (और) मेरी स्तुतियों को शीघ्र (चित्त में) धारण करो हे इन्द्र इस मेरे स्तोत्र को अपने मित्र से भी समीप करो ॥ ९ ॥

विनियोग—यह मन्त्र अभिप्लवषडह में उक्थ्यों के तृतीय सवन में अच्छावाक का अनुरूप तृच है (आ० श्रौ० सू० उ० । १।८।३)

इन्द्र देव हमारी स्तुतिको मित्र से भी समीप करें अर्थात् अपने हृदय में धारण करें ।

ऋषि अपनी स्तुति को इन्द्र के चित्त तक पहुंचाने के लिये कितनी आकुलता प्रकट करते हैं प्रथम तो मुखसेही स्तुतिका निकलना कठिन है और निकले भी तो यह चिन्ता कम होती है कि वह स्तुति देवता के समीप पहुंची वा नहीं यह प्रमाद ही मनुष्यको देवताओं से दूर रखता है सच्ची देव भक्ति के लिये अत्यन्त स्पृहा का होना आवश्यक है ।

इन्द्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः ।८।८।८।८॥

वि॒द्मा हि त्वा॒ वृष॑न्तमं॒ वाजे॑षु हव॒न॒श्रुत॑म् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृषंन्तमस्यहूमह ऊतिंसंहस्रसातं-

मामू ॥ १० ॥

विद्म	जानीमः	हम जानते हैं
हि	यतः	जिससे
त्वा	त्वाम्	तुझ को
वृषंन्ऽतमम्	अतिपौरुषोपेतम्	अतिपौरुष से युक्त को
वाजेषु	सङ्ग्रामेषु	युद्धों में
हवन्ऽश्रुतम्	(अस्मदीयस्य) आऽह्वानस्य श्रोतारम्	(हमारी) पुकार सुनने वाले को
वृषंन्ऽतमस्य	अतिपौरुषोपेतस्य	सबसे अधिक पौरुष वाले की
हूमहे	याचामहे	हम मांगते हैं।
ऊतिम्	रक्षाम्	रक्षा को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहस्रऽसा-तंमाम्	अतिशयेनधनस-हस्त्राणांदात्रीम्	सहस्रों धन देने वाली को

संस्कृतार्थः

(हे इन्द्र)यतः (वयं त्वाम्) अतिपौरुषोपेतं संग्रामेषु (अस्मदीयस्य) आह्वानस्य श्रोतारम् (च) जानीमः (अतोवयम्)अतिपौरुषोपेतस्य(तव)धनसहस्त्राणां-दातृतमां रक्षां याचामहे ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

(हे इन्द्र) जिससे हम जानते हैं कि आप अतिपौरुष से युक्त (हो और) युद्धों में (हमारी) पुकारको सुनते हो (इसलिये) हम सबसे अधिक पौरुषवाले(आप) की सहस्रों धन देनेवाली रक्षा को मांगते हैं ॥१०॥

जो इस बात को जानते हैं कि इन्द्र भीड़ में उन की पुकार को सुनते हैं और सहायता करने में समर्थ हैं वह किसी अवस्था में भी मनुष्य का सहारा कैसे ढूंढ सक्ते हैं ऐसे पुरुष तो दूसरों के आश्रयदाता होते हैं ।

इन्द्रोदेवता अनुष्टुपूछन्दः ८ । ८ । ८ । ८ ।

आतूनंइन्द्रकौशिक मन्दसानः

सुतंपिब । नव्यमायुःप्रसूतिरं कृधी-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स॒हस्र॒सामृषि॑म् ॥ ११ ॥

आ	समन्तात्	खूब
तु	क्षिप्रम्	शीघ्र
न॒:	अस्माकम्	हमारे
इ॒न्द्र॒	हे इन्द्र	हे इन्द्र
क॒ौशि॒क॒	हे कुशिकस्य पुत्र	हे कुशिकके पुत्र
म॒न्द॒सा॒नः	हृष्यन् (सन्)	प्रसन्न होते हुए
सु॒तम्	अभिषुतम् (सोमम्)	निचोड़े हुए (सोम) को
पि॒ब॒	पिब	पीओ
२नव्यं॑म्	स्तुत्यम्	स्तुतिके योग्यको
२आयु॑ः	आयुः	आयु को
प्र	प्रकर्षेण	बहुत
२सु	सुष्ठु	सुन्दर रीति से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२तिर	वर्धय	बढ़ाओ
३कृधि	कुरु	करो
३सहस्रऽसाम्	सहस्रधनोपेतम्	सहस्रों धनों से युक्त को
३ऋषिम्	ऋषिम्	ऋषि को

संस्कृतार्थः ।

हे कौशिकेन्द्र (त्वम्) हृष्यन् (सन्) क्षिप्रमस्माकमभिषुतम् (सोमम्) पिब स्तुत्यम् (मम) आयुः प्रकर्षेण सुष्ठु वर्धय (माञ्च) ऋषिं सहस्रधनोपेतं कुरु ॥ ११ ॥

भाषार्थः ।

हे कौशिक इन्द्र आप प्रसन्न होते हुए शीघ्र हमारे निचोड़े हुए सोम को पीवें (और) स्तुति के योग्य मेरी आयु को बहुत सुन्दर रूप से बढावें (और मुझ) ऋषिको सहस्रों धनों से युक्त करें ॥ ११ ॥

(१) इस मन्त्र के द्रष्टा कुशिक गोत्रवाले विश्वामित्र के पुत्र हैं अतएव इन्द्र को अपना समझ कर कौशिक कहा है ।

वास्तव में आर्य्यों का सम्बन्ध इन्द्र से ऐसाही है जैसा अपने सजातीय, सगोत्र, सकुटुम्बी बन्धु के साथ होता है वह हमारे हैं और हम उनके हैं उनको हमारी लाज है, और यद्यपि हम उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपासक नहीं रहे परन्तु वह हमारा त्याग नहीं करेंगे हमें पूर्ण आशा है कि—

(२) वह हमारी आयु को प्रशंसा के योग्य बनाएंगे और दीर्घ करेंगे।

(३) और हमारे ऋषियों की सन्तान अर्थात् ब्राह्मणों को सहस्रों धनों से युक्त करेंगे पहले ब्राह्मण धन धान्य से समृद्ध होते थे अब भी इन्द्र की कृपा से उनका दारिद्रय शीघ्र छूटेगा।

इन्द्रोदेवता अनुष्टुपूछन्दः ८।८।८।८॥

परित्वागिर्वणोगिरं इमाभंवन्तुविश्वतः
वृद्धायुमनुवृद्धंयो जुष्टाभंवन्तुजुष्टयः॥१२॥

परि	परित	सब ओर से
त्वा	त्वाम्	तुझ को
गिर्वणः	गीर्भिर्वन्यतेसंसेव्य त इति गिर्वणास्त-त्सम्बुद्धौ, हेस्तुति संसेव्य	हेस्तुतियों सें सेवने योग्य
गिरः	स्तुतयः	स्तुतियां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इमाः	इमाः	ये
भवन्तु	भवन्तु	हों
विश्वतः	विश्वतः	सब ओर से
वृद्धऽआयुम्	प्रवृद्धेनायुषोपेतम्	बढी हुई आयु वाले को
अनु	अनु (स्तुत्य)	पीछे
वृद्धयः	वर्धमानाः	बढनेवालीं
जुष्टाः	सेविताः	सेवन की हुईं
भवन्तु	भवन्तु	हों
जुष्टयः	प्रीतिहेतवः	प्रीति की हेतु

संस्कृतार्थः ॥

हे स्तुति संसेव्य इमाःस्तुतयस्त्वां परितो भवन्तु प्रवृद्धेनायुषोपेतम् (त्वाम्--) अनुवर्धमानाः(च) भवन्तु (त्वया) सेविताः (च तव) प्रीति हेतवः (भवन्तु) ॥ १२ ॥

भाषार्थः ॥

हे स्तुतियों से सेवा किये जाने वाले ! ये हमारी स्तुतियां आप को सब ओर से घेर लेवें (और) बढ़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुई आयुवाले आपके पीछे बढ़ने वाला हों (और आपसे) सेवित होकर आपकी प्रीतिको बढ़ावें॥ १२॥

विनियोग-यह मन्त्र सोम की प्रवर्ग्य इष्टि में पढ़ा जाता है (आ० औ० सू० ४ । ६ । ३) और हविर्धान को चटाई से घेरते समय भी पढ़ा जाता है (आ० औ० सू० ४ । ९ । ९)

(१) इन्द्र की सेवा का मुख्य साधन स्तुति है इस लिये प्रार्थना है कि --

(२) हमारी स्तुतियां उनको सब ओरसे घेर लेवें यह तभी सम्भव है कि हम बहुत स्तुति करें।

(३) इन्द्र बहुत बढ़ी हुई आयु वाले हैं वह कल्प के अन्त तक जीनेवाले हैं इसलिये हमारी स्तुतियां भी उनके अत्यन्त समीप होने से उनके सदृश आयुवाली हों।

(४) और इन्द्र से सेवन की जाकर उनकी प्रीति का हेतु बनें। हम अपनी स्तुति को तभी सफल मानते हैं कि वह इन्द्र की प्रीति का हेतु बनें।

इति दशमं सूक्तम्।

ऋ० मं० १ सू० ११ मं० १

इन्द्रोदेवता माधुच्छन्दसो जेता ऋषिर्निचृदनुष्टुप्छन्दः॥ ८॥ ८॥ ७॥ ८।

इन्द्रंविश्वाअवीवृधन्त्समुद्रव्यचसंगिरः॥ रथीतमंरथीनांवाजानांसत्पतिंपतिम्॥ १॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
२ विश्वाः	सर्वाः	सब
२ अवीवृधन्	वर्धितवत्यः	बढाया है
१ { समुद्रऽव्यं चसम्	अन्तरिक्षवद्व्याप्तम् (समुद्र इति अन्तरिक्षनाम निघं० । ३)	अन्तरिक्षकीन्याईव्याप्त को
२ गिरः	वाण्यः	वाणियों ने
रथिऽतमम्	रथितमम्	सबसेउत्तमरथीको
रथिनाम्	रथयुक्तानाम् (मध्ये)	रथवालों के (बीच में)
वाजानाम्	बलानाम्	बलों के
सतऽपतिम्	सत्यपतिम्	सच्चे स्वामी की
पतिम्	पालकम्	पालनेवाले को

संस्कृतार्थः ।

सर्वा वाण्योऽन्तरिक्षवद्व्याप्तं रथयुक्तानां (योद्धॄणां मध्ये) रथितमं बलानां सत्यपतिम् (भक्तानाम्) पालकमिन्द्रं वर्धितवत्यः ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

सब स्तुतियोंने अन्तरिक्ष की न्याईं व्यापक इन्द्र को बढ़ाया है (जो) रथियों में सब से श्रेष्ठ रथी हैं सम्पूर्ण बलों के सच्चे स्वामी हैं(और भक्तों के) पालनेवाले हैं ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त महाव्रत के निष्केवल्य शस्त्र में पढा जाता है (ऐ० आ० १।५।२।१०)- प्रथम मन्त्र का अग्नि चयन में भी विनियोग है (यजु० वे० १५। ६१. १७।६१)- और अभिप्लव षडह में उकथ्यों के तृतीय सवन में यह मन्त्र अच्छावाक के स्तोत्रिय तृच में (आ० श्रौ० सू०उ० १।८।३ । और पृष्ठय षडह के पांचवें दिन निष्केवल्य शस्त्र के अनुरूप तृच में पढा जाता है (आ० श्रौ० सू० उ० ७।१२।१५)

(१) इन्द्र अन्तरिक्ष की तरह सर्वव्यापी हैं परमाणु के भीतर हैं और बाहर भी उनसे भिन्न और भी कोई वस्तु परमाणु के भीतर वा बाहर है वा नहीं इसमें तो सन्देह है परन्तु इन्द्र के होने में तो कोई सन्देह नहीं (देखो वैदिक जीवन पृ० २७–३०)

(२) ऐसे इन्द्र को ही सब स्तुतियों ने बढ़ाया है साएंस भी आज कल उन्हीं को बढ़ा रहा है यदि इन्द्र से भिन्न कोई पदार्थ है तो वह प्रत्येक अन्वेषण से घटताही जाता है और इन्द्र बढते जाते हैं

इन्द्रोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ८ । ८ । ८ । ८ ।

सख्येतइन्द्रवाजिनो माभेमशवसस्पते । त्वमभिप्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥

१सख्ये	सखित्वे	मित्रता में
ते	तव	तेरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
३वाजिनः	बलयुक्ताः	बलवाले
१मा	मा	नहीं
१भेम	भीतिं प्राप्नुमः	भय को प्राप्त हो
२शवसः	बलस्य (निघं०२।६)	बल के
२पते	पते	स्वामी
६त्वाम्	त्वाम्	तुझको
६अभि	सर्वतः	सब ओर से
६प्र	प्रकृष्टम्	उत्तम भाव से
६नोनुमः	अतिशयेन स्तुमः	अतिशय करके स्तुति करते हैं
४जेतारम्	जयशीलम्	जीतने वाले को
५अपराऽजितम्	पराजयरहितम्	न पराजय होने वाले को

संस्कृतार्थः ।

हे बलस्य स्वामिन्! इन्द्र! तव सखित्वे बलयुक्ताः (वयम्) भीतिं न प्राप्नुमः जयशीलं पराजयरहितं (च) त्वां सर्वतः प्रकृष्टमातिशयेन स्तुमः ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे बल के स्वामी इन्द्र ! आप की मित्रता में बल-
ाले हम किसी से नहीं डरते आप जयशील की
(जो कभी) पराजित नहीं होते हम सब ओर उत्तम
भाव से अतिशय करके स्तुति करते हैं ॥ २ ॥

१)इन्द्रकी मित्रता होने पर भयनष्ट होजाता है क्योंकि वह सम्पूर्ण

(२) बलों के स्वामी हैं ।

(३)उनका दिया हुआ बल हम में भी है इसलिये हम सबल हैं

(४)वह सदा जय शील हैं इस लिये उनके उपासक भी सदा
ीतनेवालों में से होते हैं ।

(५) वह पराजय रहित हैं इसलिये उनके उपासक को भी
ोइ नहीं जीत सकता ।

(६) हम उन्हीं की अतिशय कर के स्तुति करते हैं क्योंकि
समित्रसे अन्य कौन पुरुष हमारी स्तुतिके योग्य होसक्ता है ॥

इन्द्रोदेवता। अनुष्टुपूछन्दः ८।८।८।८॥

पूर्वीरिन्द्रस्यरातयो नविदस्यन्त्यूत-
यः । यदीवाजस्यगोमतः स्तोतृभ्योमंहते
मघम् ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पू॒र्वीः	पौर्वकालिकानि	पूर्वकाल में हो[ने] वा[ले]
इन्द्र॑स्य	इन्द्रस्य	इन्द्र के
रा॒तयः॑	दानानि	दान
न	न	नहीं
वि	वि+	—
द॒स्य॒न्ति॒	वि+दस्यन्ति, उपक्षयन्ति	क्षय होते
ऊ॒तयः॑	रक्षणानि	रक्षाएं
यदि॑	यदा	जब
वाज॑स्य	अन्नस्य	अन्न के
गोऽम॑तः	गोसहितस्य	गौओं से युक्त
स्तो॒तृऽभ्यः॑	स्तोतृभ्यः	स्तोताओं के लिये
मंह॑ते	ददाति (मंहतिर्दानकर्मा निघं० ३।२०)	दान करता
म॒घम्	धनम् (निघं०२।१०)	धन को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

यदा (इन्द्रः) स्तोतृभ्यो गोसहितस्यान्नस्य (सम्बन्धि) धनं ददाति (तदा) इन्द्रस्य पौर्वकालिकानि धनदानानि रक्षणानि (च) नैवोपक्षयन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

जब (इन्द्र) स्तोताओं को गौओं सहित अन्नआदि धन देते हैं (उस समय) उनके पुरातन दान (और) रक्षाएं क्षीण नहीं होतीं ॥ ३ ॥

इन्द्रदेव अपने स्तोताओं को धन के होते भी और अधिक गौएं और अन्नआदि धन दिए जाते हैं।

इन्द्रोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ८।८।८।८।

पुरांभिन्दुर्युवाकवि रमितौजाअजायत ।
इन्द्रोविश्वस्यकर्मणो धर्तावज्रीपुरुष्टुतः॥४॥

१ पुराम्	पुराणाम्	गढ़ों के
१ भिन्दुः	भेत्ता	तोड़ने वाला
२ युवा	युवा	जवान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ कविः	मेधावी	मेधावी
४ { अमित-ऽओजाः	अमितबलः	अपरिमित बल वाला
८ अजायत	अजायत	प्रकट हुआ
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
५ विश्वस्य	सर्वस्य	सब के
५ कर्मणः	कर्मणः	कर्म के
५ धर्ता	धर्ता	धारण करने वाला
६ वज्री	वज्रयुक्तः	वज्रयुक्त
पुरुऽस्तुतः	बहुषु स्तुतः	बहुतों में स्तुति किया गया

संस्कृतार्थः ।

इन्द्रः पुराणां भेत्ता, युवा, मेधावी, अमितबलः, सर्वस्य कर्मणो धर्ता, वज्रयुक्तो बहुषु स्तुतः (च) अजायत ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

इन्द्र गढ़ों के तोड़ने वाले, युवा, मेधावी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपरिमित बल वाले, सम्पूर्ण कर्मों के धारण करने वाले वज्रयुक्त (और) बहुतों में स्तुति किए गए उत्पन्न हुए हैं ॥ ४ ॥

विनियोग–यह और अगले दो मन्त्र अभिप्लव षडह सम्बन्धी उक्थ्यों के तृतीय सवन में अच्छावाक के शस्त्र में डाल कर पढ़े जाते हैं (आ० श्रौ० सू० उ० १।८।३)

(१) इन्द्र गढों के तोड़ने वाले हैं उनका उपासक भी शत्रु के गढों को तोड़ने में समर्थ होता है।

(२) इन्द्र कभी बूढ़े नहीं होते उनका भक्त भी सारी आयु जवान के सदृश रहता है।

(३) इन्द्र मेधावी हैं उनका सेवक भी निर्बुद्धि नहीं रह सक्ता।

(४) इन्द्र का बल अमित है तोलने में नहीं आता उनका मित्र भी अमित बल वाला हो जाता है।

(५) इन्द्र सब कर्मों के धारण करने वाले हैं उनका भक्त ऐसा जान कर किसी कर्म को अपनी सामर्थ्य से बाहर नहीं समझता।

(६) इन्द्र वज्रधारी हैं इसलिये उनका मित्र उनके आश्रय में निर्भय रहता है।

(७) इन्द्र बहु स्तुत हैं यह नहीं कि सखा होने से हम आर्य ही उनकी स्तुति करते हैं किन्तु उन्हीं का सब देशों में नामांतर से गुण गाया जाता है।

(८) ऐसे इन्द्र हमारे कल्याण के लिये जन्मे हैं।

इन्द्रोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ८।८।८।८।

त्वंवलस्यगोमतो पावरद्रिवोबिलम्।

त्वांदेवाअबिभ्युष स्तुज्यमानासआविषुः ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
वलस्य	वृत्रस्य (निघं० १।१०)	वृत्र के
गोऽमतः	गोभिर्युक्तस्य	गौओं वाले के
१ अप	अप+	—
१ अवः	अप+अवः, अपावृतवान्	खोला है
१ अद्रिऽवः	हे वज्रिन्!	हे वज्र धारी
१ बिलम्	गुहाम्	गुफा को
त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
२ देवाः	देवाः	देवता
३ अबिभ्युषः	अभीताः	निर्भय
२ तुज्यमानासः	पीड्यमानाः (जसोऽसुगागमः)	पीड़ित होते हुए
३ आविषुः	प्राप्तवन्तः (अवगतौ)	प्राप्त हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे वज्रिन्! इन्द्र! (यदा) त्वं गोभिर्युक्तस्य वृत्रस्य गुहा मपावृतवान् (तदानीं तेन) पीड्यमाना देवा अभीताः (सन्तः) त्वां प्राप्तवन्तः ॥५॥

भाषार्थः ।

हे वज्र धारिइन्द्र! (जब) आप ने गौओं वाले वृत्र की गुफा को खोला (तब उससे) पीड़ित होते हुए देवता निर्भय होकर आप को प्राप्त हुए ॥ ५ ॥

जब सूर्य दक्षिणायन में होते हैं तो वृत्र देवताओं की गौएं अर्थात् सूर्य्य की किरणों को चुराकर गुफा में लेजाता है इसीलिये उत्तर मेरु के समीप महीनों तक सूर्य्य का प्रकाश नहीं होता, जब मेष के विषुमण्डल में पात होने पर—

(१) वज्रधारी इन्द्र वृत्र की गुफा को खोल कर गौओं को बाहर निकालते हैं—

(२) तब देवता अर्थात् सूर्य्य की किरणें जिनको वृत्र ने रोक कर पीड़ित किया हुआ था—

(३) निर्भय होकर सूर्य्यरूपी इन्द्र को प्राप्त होती हैं, श० ब्रा० १.३।४।४।७ में लिखा है "एतेवैरश्मयो विश्वेदेवाः" और ऋ० १।१.४।९ से भी प्रतीत होता है कि सूर्य्य की किरणें ही देवता हैं ॥

इन्द्रोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ८।८।८।८।

तवा॒हंशू॑ररा॒तिभि॒: प्रत्या॑यं॒सिन्धु॑मा॒व-दन् । उपा॑तिष्ठन्तगिर्वणो वि॒दुष्टे॒तस्य॑का॒-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रवः ॥ ६ ॥

तव	तव	तेरे
अहम्	अहम्	मैं
१ शूर	हे शूर !	हे वीर
१ रातिऽभिः	(धन) दानैः	(धन) दानों से
१ प्रति	प्रति+	—
१ आयम्	प्रति+आयम् प्रत्यागतोऽस्मि	फिर आया हूं
१ सिन्धुम्	समुद्ररूपम्	समुद्र रूप को
१ आऽवदन्	समन्ताद् ब्रुवन्	चारों ओर पुकारता हुआ
२ उप	उप+	—
२ अतिष्ठन्त	उप+अतिष्ठन्त, उपस्थितवन्तः	उपस्थित हुए हैं
गिर्वणः	हे गीर्भिस्सेवनीय!	हे स्तुतियोंसे सेवने योग्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ विदुः	जानन्ति	जानते हैं
३ ते	त्वाम्(कर्मणिषष्ठी)	तुझ को
३ तस्य	तम् (,,)	उस को
२ कारवः	(स्तुति–) कर्तारः	(स्तुति-)करनेवाले

संस्कृतार्थः ।

हे शूर! तव (धन-) दानैरहं समुद्ररूपं (त्वां) समन्ताद्ब्रुवन् प्रत्यागतोऽस्मि हे गीर्भिस्सेवनीय (स्तुति-) कर्त्तारः (त्वाम्) उपस्थितवन्तः (उपस्थाय च) तं त्वां जानन्ति ॥६॥

भाषार्थः ।

हे वीर आप के धन दान के कारण मैं समुद्र रूप आप को पुकारता हुआ फिर आया हूं। हे स्तुतियों से सेवने योग्य ! स्तुति करने वाले आपके पास आए हैं, वह आपको ऐसा जानते हैं ।६।

(१) शूरवीर और धन के समुद्र इन्द्र के पुराने दानों को स्मरण करता हुआ इन्द्र का भक्त फिर उनके पास पुकारता हुआ जाता है वहां से खाली हाथ नहीं लौटता ।

(२) स्तुति करने वाले इन्द्र का उपस्थान करके—

(३) उन धन के समुद्र को जानते हैं,बिना पास आए और बैठे इस लोक में भी कोई किसी को भली प्रकार नहीं जान सक्ता देवता को जानने का भी यही उपाय है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ८।८।८।८

मायाभिरिन्द्रमायिनं त्वंशुष्णमवा-
तिरः। विदुष्टेतस्यमेधिरा स्तेषांश्रवांस्यु-
त्तिर ॥ ७॥

२ मायाभिः	मायाभिः	अनेक माया से
इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
१ मायिनम्	मायोपेतम्	मायावी को
त्वम्	त्वम्	तू ने
१ शुष्णम्	शुष्णम्	शुष्ण को
२ अव	अव+	——
२ अतिरः	अव+अतिरः, जितवानसि	जीता है
३ विदुः	जानन्ति	जानते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ ते	त्वाम् (द्वितीयार्थेषष्ठी)	तुझ को
३ तस्यं	तादृशम् (,, ,,)	ऐसे को
३ मेधिरा:	मेधाविनः	बुद्धिमान्
४ तेषाम्	तेषाम्	उनके
४ श्रवांसि	यशांसि	यशों को
४ उत्	उत्+	—
४ तिर	उत्+तिर,वर्धय	बढ़ाओ

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्र ! (यः) त्वं मायोपेतं शुष्णं मायाभिर्जितवानसि तादृशं त्वां मेधाविनो जानन्ति तेषां यशांसि वर्धय ॥ ७ ॥

हे इन्द्र! (जिस) आपने मायावी शुष्ण को अनेक माया से जीता है ऐसे आपको बुद्धिमान् जानते हैं उन के यशों को बढ़ाओ ॥ ७ ॥

(१) जब मायावी वृत्र शोषण द्वारा प्रजाको पीड़ित करता है तब-

(२) उसको इन्द्र अनेक माया द्वारा जीत कर हटाते हैं।

(३) ऐसे इन्द्र के कर्म को बुद्धिमान् जानते हैं सम्भव है कि शोषण (अनावृष्टि) दीर्घ काल तक निरन्तर रहकर सब प्रजा को नष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर देती उस के हटाने में बुद्धिमान् इन्द्र का हाथ देखते हैं।

(४) जो ऐसे बुद्धिमान् हैं उनका यश सदा बढ़ता है मूर्ख नास्तिक लोग जो प्रत्येक कल्याणकारक कर्म में इन्द्र का हाथ नहीं देखते कभी यश को नहीं प्राप्त होते।

इस से यह भी शिक्षा मिलती है कि मायावी शत्रु को माया द्वारा जीतना धर्म है।

इन्द्रोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ८।८।८।८।

इन्द्रमीशानमोजसाऽभिस्तोमा अनूषत । सहस्रंयस्यरातय उतवा-सन्तिभूयसीः ॥ ८ ॥

१ इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
१ ईशानम्	शासकम्	शासन करने वाले को
१ ओजसा	बलेन	बल से
२ अभि	सर्वतः	सब ओर से
२ स्तोमाः	स्तोत्राणि	स्तोत्रों ने
२ अनूषत	अस्ताविषुः (णुस्तुतौ)	स्तुति की है
३ सहस्रम्	सहस्राणि	सहस्रों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ यस्यं	यस्य	जिस के
रातयः	धनदानानि	धन दान
३ उत	उत+	—
वा	उत+वा, अथवा	अथवा
सन्ति	सन्ति	हैं
३ भूयसीः	अधिकानि	अधिक

संस्कृतार्थः।

बलेन शासकमिन्द्रं स्तोत्राण्यरताविषुर्यस्य धनदानानि सहस्राणि,अथवा (ततोऽपि)अधिकानि सन्ति ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

बलसे शासन करने वाले इन्द्र का (वेदके) स्तोत्रों ने यश गाया है जो सहस्रों अथवा उस से भी अधिक धनों के देने वाले हैं ॥ ८ ॥

(१) इन्द्र अपने बल के कारण राज्य करते हैं।

(२) उन्हीं की महिमा वेद मन्त्रों में गाई है।

(३) उनके दान सहस्रों लाखों बरण इससे भी अधिक हैं हम कहां तक उनका धन्यवाद कर सकते हैं।

॥ इत्येकादशं सूक्तम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं०१सू०१२

अग्निर्देवता काण्वोमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अ॒ग्निंदू॒तंवृ॑णीमहे होता॑रंवि॒श्ववे॑दसम् ।
अ॒स्यय॒ज्ञस्य॑सु॒क्रतु॑म् ॥ १ ॥

अ॒ग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
२ दू॒तम्	दूतम्	दूत को
वृ॒णी॒म॒हे॒	वृणीमहे	हम बरते हैं
२ होता॑रम्	आह्वातारम्	बुलाने वाले को
वि॒श्वऽवे॑दसम्	विश्वानि सर्वाणि वेदांसि धनानि यस्य तं कृत्स्नधन-स्वामिनम्	सबधन के स्वामी को
अ॒स्य	अस्य	इस के
य॒ज्ञस्य॑	यज्ञस्य	यज्ञ के
४ सु॒ऽक्रतु॑म्	शोभनकर्त्तारम्	सुन्दर करने वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(वयं देवानाम्) दूतम् (तथा) आह्वातारं कृत्स्न-धनस्वामिनमस्य यज्ञस्य शोभनकर्त्तारमग्निं वृणीमहे ॥ १

भाषार्थः ।

हम (देवताओं के) दूत (और) बुलाने वाले, सब धनों के स्वामी, इस यज्ञ को सुन्दर करने वाले अग्नि को बरते हैं ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त प्रातरनुवाक के आग्नेय ऋतु में पढ़ा जाता है (आ०श्रौ०सू० ४।१.३।७)।

और पृष्ठ्य षडह के द्वितीय दिन में यह सूक्त आज्यशस्त्र है (आ०श्रौ०सू०उ० १।१.०।३)।

(१) जिस प्रकार ऋत्विजों को यज्ञ कराने के लिये बरते हैं इसी प्रकार सब से पहिले अग्नि को वरते हैं क्योंकि—

(२) वही देवताओं के दूत और उनको बुलाने वाले हैं .

(३) और सब धनों के स्वामी होने से यज्ञ के लिये धन भी देने वाले वही हैं कि बहुना—

(४) वही हमारे यज्ञ को सुन्दर रीति से सिद्ध कराने वाले हैं उनके विना जैसे समष्टि यज्ञ असम्भव है वैसेही हमारा भी।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अ॒ग्निम॑ग्निं॒ हवी॑मभिः॒ सदा॑ हवन्त वि॒श्पति॑म्।

ह॒व्य॒वा॒हं पु॑रुप्रि॒यम् ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निम् ऽअग्निम्	प्रत्येकमग्निम् (स्वस्वगृहेवर्तमानमितिभावः)	प्रत्येक अग्नि को
वींमऽभिः	आह्वानकरणैर्मन्त्रैः	बुलाने के मन्त्रों से
दा	सदा	सदा
वन्त	आह्वयन्ति (ह्वेञोलटिटेरेत्वाभावश्छान्दसः)	बुलाते हैं
वेश्पतिम्	प्रजानां पालकम्	प्रजाओं के पालने वाले को
हव्यऽवाहम्	हविषो वोढारम्	हवि पहुंचाने वाले को
पुरुऽप्रियम्	बहुनांप्रियम्	बहुतों के प्यारे को

संस्कृतार्थः ।

(यजमानाः)आह्वानकरणैर्मन्त्रैःप्रजानां पालकं हविषो वोढारं बहूनांप्रियमग्निं स्वस्वगृहे सदाऽऽह्वयन्ति ॥ १ ॥

भापार्थः ।

(यजमान) बुलाने के मन्त्रों से प्रजाके पालक, हवि के पहुंचाने वाले, बहुत्तों के प्यारे अग्नि को अपने २ घर में सदा बुलाते हैं ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निदेव प्रजा के पालक हैं हमारे और हमारी सन्तान रक्षक हैं देवताओं को हमारी हवि पहुंचाते हैं और हम सब के प्य हैं इसलिये अपने २ घर में सब आर्य्य उनको सदा बुलाते हैं

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

अग्ने॑ दे॒वाँ इ॒हा व॑ह जज्ञा॒नो वृ॒क्तब॑र्हिषे ।
असि॒ होता॑ न॒ ईड्यः॑ ॥ २ ॥

अग्ने॑	हे अग्ने !	हे अग्नि
२ दे॒वान्	देवान्	देवताओं को
इ॒ह	इह	यहां
२ आ	आ+	—
२ व॒ह	आ+वह	लाओ
२ ज॒ज्ञा॒नः	उत्पन्नः	उत्पन्न हुआ २
१ वृ॒क्तऽब॑र्हिषे	आस्तृतं बर्हिर्येन तस्मै (आ०को०)	जिसने कुशा बिछाई है उसके लिये
असि	असि	तू है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता	आह्वाता	बुलाने वाला
नः	अस्माकम्	हमारा
ईड्यः	पूज्यः	पूजने के योग्य

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने ! आस्तृतबर्हिषे (यजमानाय) उत्पन्नः [त्वम्] अस्मिन् (यज्ञे) देवानावह (यतस्त्वं तेषाम्) आह्वाता, अस्माकं पूज्यः [च] असि ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

हे अग्नि ! कुशा बिछानेवाले (यजमान) के लिये प्रकट हुए २ आप इस (यज्ञ) में देवताओं को लावें (क्योंकि उनके) बुलाने वाले (और) हमारे पूजनीय आप हैं ॥ ३ ॥

(१) जो पूजा कर्मके लिये कुशा बिछाकर तैयार करता है और-

(२) अरणी द्वारा मन्थन करके अग्नि को उत्पन्न करता है उसके घर में अग्नि देवताओं को लाते हैं।

देवताओं के साथ हमारा सम्बन्ध तभी हो सक्ता है कि हम अपने २ घरों में अग्नि का आधान करें।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

ताँउशतोविबोधय यदग्नेयासिदूत्यम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूत्यम् । देवैरासत्सि बर्हिषि ॥४॥

तान्	तान्	उन को
उशतः	कामयमानान्	कामना करने वालों को
वि	वि+	—
बोधय	वि+बोधय	बोधन करो
यत्	यतः	जिस से
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
यासि	गच्छसि	तू जाता है
दूत्यम्	दूत कर्मणे (कर्म्मणियत्, चतुर्थ्यर्थे द्वितीया)	दूत कर्म के लिये
देवैः	देवैः	देवताओं के साथ
आ	आ+	—
सत्सि	आ+सत्सि निषीदसि	तू बैठता है
बर्हिषि	बर्हिषि	कुशा पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! यतः(त्वम्)दूतकर्मणे गच्छसि देवैः(च सह) बर्हिषि निषीदासि (अतः) कामयमानाँस्तान् (देवानिदं कर्म) विबोधय ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! आप जो दूत कर्म के लिये जाते हैं (और) देवताओं के साथ कुशा पर बैठते हैं ऐसे आप कामना करने वाले देवताओं के प्रति (इस कर्म को) सूचन करो ॥४॥

हम जब कोई देव कर्म करते हैं उसमें अग्नि का होना अत्यावश्यक है क्योंकि वही हमारे कर्म को देवताओं के प्रति सूचन करते हैं विना अग्नि के देवता हमारे कर्म की ओर ध्यान भी नहीं करते ।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

घृताहवनदीदिवः प्रतिष्मरिषतोदह ।
अग्नेत्वंरक्षस्विनः ॥५॥

१घृतऽआहवन	घृतेन समन्ताद्धूयतेऽस्मिन्, तत्सम्बुद्धौ	हे घृतसे होम किये जाने वाले
१दीदिऽवः	हे दीप्यमान !	हे दीप्ति वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रति	प्रति+	—
स्म	(पूरणः)	—
रिषतः	शत्रून्	शत्रुओं को
दह	प्रति+दह,दग्ध्वा निवारय	जलाकर हटा दे
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
त्वम्	त्वम्	तू
१ रक्षस्विनः	रक्षोयुक्तान्	राक्षसों से युक्तोंको

संस्कृतार्थः ।

हे घृताहवन ! दीप्यमानाऽग्ने ! (त्वम्) रक्षोयुक्तान् (अस्मदीयान्) शत्रून् दग्ध्वा निवारय ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हे घृत से होम किये जाने वाले दीप्यमान अग्नि ! आप राक्षसों सहित (हमारे) शत्रुओं को जलाकर हटाओ ॥ ५ ॥

अग्नि देव यज्ञ में अवश्य इसी लिये नहीं हैं कि वह देवताओं को लाते हैं किन्तु इस लिये भी हैं कि वह—

(१) घृतसे होम किये जाकर और दीप्यमान होकर हमारे शत्रुओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को और यज्ञ में विघ्न डालने वाली अदृष्ट शक्तियों को जला कर हटाते हैं इसलिये प्रज्वलित अग्नि के पास बैठ कर ही हम निर्विघ्नता से देवपूजन कर सक्ते हैं।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अ॒ग्निना॒ग्निः समि॑ध्यते क॒विर्गृ॒हप॑ति॒र्युवा॑ ।
ह॒व्य॒वाड्जु॒ह्वा॑स्यः ॥ ६ ॥

४ अ॒ग्निना॑	अग्निना	अग्नि से
४ अ॒ग्निः	अग्निः	अग्नि
४ सम्	सम्+	—
४ इ॒ध्य॒ते॒	सम्+इध्यते सम्यक् दीप्यते	प्रदीप्त किया जाता है
१ क॒विः	मेधावी	मेधावी
२ गृ॒हऽप॑तिः	गृहस्य पालकः	घर के पालने वाला
२ युवा॑	तरुणः	जवान
३ ह॒व्य॒ऽवाट्	हविषो वोढा	हवि के पहुंचाने वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३जुहुऽआस्यः	जुहूरास्यं यस्येति तथोक्तः	जुहूरूप मुख से युक्त

संस्कृतार्थः।

मेधावी (यजमानस्य) गृहस्यपालकस्तरुणो हविषोवोढा जुहूरूपेण मुखेन युक्तः (अहवनीयः) अग्निः [निर्मथितेन] अग्निना सम्यगुद्दीप्यते ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

जो मेधावी हैं (यजमानके) घरके स्वामी हैं युवा हैं हवि को पहुंचाने वाले हैं और जुहू जिन का मुख है ऐसे (आहवनीय) अग्नि(मथन की हुई)अग्नि से प्रदीप्त किये जाते हैं ॥ ६ ॥

विनियोग—यह मन्त्र वैश्वदेव पर्व में निर्मथित अग्नि को आहवनीय की ओर लेजाते समय पढ़ा जाता है (आ०श्रौ०सू०२।१६।७)

आग्नेयी इष्टि में भी यह मन्त्र अनुवाक्या है(आ०श्रौ०सू०३।१३।१२)

(१) अग्नि देव मेधावी हैं जड़ नहीं है जैसे स्थूलबुद्धि वालों को दिखाई देते हैं।

(२) घर के पालने वाले हैं युवा हैं घर में और लोग सब बूढे हो जाते हैं परन्तु अग्नि सदा जवान रहते हैं।

(३) जुहू (होम करने के पात्र) से हवि को ग्रहण करके देवताओं को पहुंचाते हैं।

(४) ऐसे आहवनीय अग्नि (मथन की हुई) अग्नि से प्रदीप्त किये जाते हैं (चातुर्मास्यआदि इष्टियों और अग्निष्टोमआदि यज्ञों में अरणी द्वारा अग्नि को मथन करके आहवनीय अग्नि में मिलाते हैं)।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कविमग्निमुपस्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे ।
देवममीवचातनम् ॥ ७ ॥

कविम्	मेधाविनम्	मेधावी को
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
उप	उप+	—
स्तुहि	उप+स्तुहि	समीप से स्तुति कर
सत्यऽधर्माणम्	सत्यव्रतम्	सच्चे नियमों-वाले को
अध्वरे	यज्ञे	यज्ञ में
देवम्	देवम्	देव को
अमीवऽचातनम्	रोगाणां नाशकम् (अमीवेतिरोगनाम) (निघं०४।३।)	रोगों के नाश करने वाले को

संस्कृतार्थः ।

(हे आर्य्य गण !) यज्ञे मेधाविनं सत्यव्रतं रोगाणां नाशकमग्निं देव मुपस्तुहि ॥७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(हे आर्य्य गण !) यज्ञ में मेधावी, सच्चेनियम वाले, रोगों के नाशक अग्नि देव की समीप से स्तुति करो ॥ ॥

अग्नि देव बुद्धिमान हैं सच्चे नियम वाले हैं और रोगों के नाश करने वाले हैं उन के समीप जाकर स्तुति करने से यजमान भी बुद्धिमान सत्यव्रत स्वयं रोगरहित और दूसरों के रोग दूर करने की शक्ति वाला बन सकता है ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

यस्त्वामग्ने हविष्पतिं दूतं देव सपर्यति ।
तस्य स्म प्राविता भव ॥ ८ ॥

यः	यः	जो
त्वाम्	त्वाम्	तुझ को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
हविःऽपतिः	यजमानः	यजमान
दूतम्	दूतम्	दूत को
देव	हे देव !	हे देव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सपर्यति	परिचरति	सेवा करता है
तस्य	तस्य	उसके
स्म	(पूरणः)	—
प्रऽअविता	संरक्षकः	भली प्रकार से रक्षा करने वाला
भव	भव	तू हो

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! देव ! यो यजमानः (देवानाम्) दूतं त्वां परिचरतिं (त्वम्) तस्य संरक्षको भव ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि देव ! जों यजमान (देवताओं के) दूत आप की सेवा करता है आप उस के भली प्रकार से रक्षक हों ॥ ८ ॥

भली प्रकार से रक्षा चाहने वालो अग्नि के उपासक बनो ।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

योअग्निंदेववीतये हविष्माँआविवासति । तस्मैपावकमृळय ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
अ॒ग्निम्	अग्निम्	अग्नि को
दे॒वऽवी॑तये	देवनांभोगार्थम्	देवताओं के भोग के लिये
ह॒विष्मा॑न्	हविर्युक्तः(यजमानः)	यजमान
आ॒ऽवि॒वा॑सति	समीपेगत्वा परिचरति	पास जाकर सेवा करता है
तस्मै॑	तस्मै	उस के लिये
पा॒व॒क॒	हे पावक !	हे पवित्र करने वाले
मृ॒ळ॒य॒	कृपांकुरु	कृपाकरो

संस्कृतार्थः।

हविर्युक्तोयः (यजमानः) देवानां भोगार्थं समीपेगत्वाऽग्निं परिचरति हे पावक ! (त्वम्) तस्मै कृपां कुरु ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

जो यजमान देवताओं के भोग के लिये पास जाकर अग्नि की सेवा करता है हे पवित्र करने वाले (अग्निदेव) आप उस पर कृपा करो ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग—यह मंत्र आग्नेयी इष्टि में याज्या है (आ० श्रौ०सू० २।१३।१२।

देवताओं को हवि खिलाने के लिये जो अग्नि के पास जाकर उनकी सेवा करता है पवित्र करने वाले अग्निदेव उस पर अवश्य कृपा करते हैं विना अग्नि के देवता हवि नहीं खाते ॥

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८

सनः॑पावकदीदि॒वो॒ऽग्ने॑दे॒वाँइ॒हाव॑ह ।
उप॑य॒ज्ञंह॒विश्च॑नः ॥ १० ॥

सः	सः	वह
न॒ः	अस्मदर्थम्	हमारे लिये
पा॒व॒क॒	हे पावक !	हे पवित्र करने वाले
दी॒दि॒ऽव॒ः	हे दीप्यमान !	हे दीप्यमान
अग्ने॑	हे अग्ने !	हे अग्नि
देवान्	देवान्	देवताओं को
इह	इह	यहां
आ	आ+	—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह	आ+वह	लाओ
उप	प्रति	प्रति
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
हविः	हविः	हवि को
च	च	और
नः	अस्मदीयम्	हमारे

संस्कृतार्थः ।

हे पावक दीप्यमानाग्ने ! सः (त्वम्) अस्मदर्थमिहाऽस्मदीयं यज्ञं हविश्च प्रति देवानाऽऽवह ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

हे पवित्र करने वाले दीप्यमान अग्नि ! वह आप यहां हमारे यज्ञ और हवि के प्रति देवताओं को लाओ ॥ १० ॥

विनियोग—यह मन्त्र पत्रमानेष्टि में अग्निपावक की अनुवाक्या है (आ० श्रौ० सू० २।१।२५।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः । ८।८।८।

सनः स्तवानआभर गायत्रेणनवीयसा।

रयिंवीरवतीमिषम् ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
नः	अस्मदर्थम्	हमारे लिये
स्तवानः	स्तूयमानः	स्तुत होते हुए
आ	आ+	—
भर	आ+भर, आहर	लाओ
१ गायत्रेण	स्तोत्रेण(आ० को०)	स्तोत्र से
१ नवीयसा	नवतरेण	अति नवीन से
रयिम्	धनम्	धन को
वीरऽवतीम्	शूरपुत्रयुक्तम्	शूर पुत्रों से युक्त को
इषम्	अन्नम्	अन्न को

संस्कृतार्थः ।

नवतरेण स्तोत्रेण स्तूयमानः सः (त्वम्) अस्मदर्थं धनं शूरपुत्रयुक्तमन्नम् (च) आहर ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

अत्यन्त नवीन स्तोत्र से स्तुत होते हुए वह आप हमारे लिये धन और शूर बीर पुत्रों से युक्त अन्न को लाओ ॥ १ ॥

(१.) मेधातिथि नए ऋषियों में से हैं (देखो व्याख्या ऋ० १।१।२ पृ० ३८) यद्यपि सूक्त के शब्द नये हैं परन्तु भाव पुराने और नित्य हैं जैसे महाभष्य में पतञ्जलि मुनि कहते हैं ॥

"ननु चोक्तं 'नहि छन्दांसि क्रियन्ते नित्यानि छन्दांसि' इति यद्यप्यर्थो नित्यः यात्वसौवर्णानुपूर्वीसाऽनित्या" ॥

इसलिये ऋषि सूक्तों के द्रष्टा कहे जाते हैं क्योंकि उन्होंने समष्टि मन में विद्यमान भावार्थ को देखा है वेदों का समष्टि मन में नित्य रहना शतपथ में लिखा है देखो श० ब्रा० ७।५।२।५२

अग्निर्देवता गायत्रीछन्द ८।८।८॥

अग्ने॑ शु॒क्रेण॑ शो॒चिषा॒ विश्वा॑भिर्दे॒वहू॑तिभिः । इ॒मं स्तोमं॑ जुषस्व नः ॥१२॥

अग्ने॑	हे अग्ने !	हे अग्नि
शु॒क्रेण॑	शुभ्रया	उज्ज्वल से
शो॒चिषा॑	दीप्त्या	दीप्तिसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वाभिः	सर्वैः	सब से
देवहूतिऽभिः	देवानामाह्वानैः	देवताओं के बु- लावों से
इमम्	इमम्	इस को
स्तोमम्	स्तोमम्	स्तोत्र को
जुषस्व	सेवस्व	सेवन करो
नः	अस्मदीयम्	हमारे

संस्कृतार्थः।

हे अग्ने!शुभ्रदीप्त्या (युक्तस्त्वम्) सर्वदेवाह्वानैरिमं स्तोमं सेवस्व ॥१२॥

भाषार्थः।

हे अग्नि ! उज्ज्वल दीप्ति से युक्त आप सब देवताओं को बुलाकर इस स्तोत्र को सेवन करो ॥ १२ ॥

॥ इति द्वादशं सूक्तम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समिधो देवता मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्द ॥ ८।८।८॥

सुसंमिद्धोनआवह देवाँअग्ने हविष्मते ।

होतःपावकयक्षिच ॥१॥

सुऽसंमिद्धः	सुसमिद्युक्तः	सुन्दर समिधा से युक्त
नः	अस्माकम्	हमारे
आ	आ+	—
वह	आ+वह	लाओ
देवान्	देवान्	देवताओं को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
हविष्मते	हविर्युक्ताय (यजमानाय)	यजमान के लिये
होतः	हे होतः !	हे होता
पावक	हे पावक !	हे पवित्र करने वाले
यक्षि	यज	पूजन करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! सुसमिद्युक्तः(त्वम्)अस्मदीयाय यजमानाय देवानावह हे पावक ! हे होतः ! (तान्) यज च ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! सुन्दर समिधा से युक्त (आप) हमारे यजमान के लिये देवताओं को लाओ और हे पवित्र कारक हे होता (उनका) पूजन करो ॥ १ ॥

यह आप्रीसूक्त है । आप्री (प्रीञ-तर्पणे) का अर्थ तृप्त करने का है । इन मन्त्रों के द्वारा पशुइष्टि में समिधाआदि यज्ञावयवों को घृत की आहुतियों से तृप्त किया जाता है । और वह तृप्त होकर यजमान को प्राण वाणी प्रजा पशु और वृष्टि आदि से तृप्त करते हैं (देखो ऐ०ब्रा०अ०६ खं४) । आप्री सूक्त ११, १२ वा १३ मंत्रों का होता है और ऋग्वेद में १० वार आया है (देखो मं० १। सू० १३, मं० १ । सू० १४२, मं० १ । सू० १८८, मं२ सू० ३, मं० ३ । सू० ४, मं० ५ । सू० ५, मं० ७ सू० २, मं० ९ । सू० ५, मं०१० । सू० ७०, मं० १० । सू०११०) प्रत्येक सूक्त में मन्त्र भिन्न २ हैं परन्तु देवता इसी क्रम से हैं अर्थात् १ समिधः २ तनूनपात् वा नराशंसः ३ इडः ४ बर्हिः ५ देवी द्वारः ६ उषासानक्ते ७ दैव्यौहोतारौ ८ तिस्रोदेव्यः सरस्वतीळाभारती ९ त्वष्टा १० वनस्पति ११ स्वाहाकृतयः ॥ ये पशु इष्टि के ११ प्रयाजों के ११ देवता हैं (आ० श्रौ० सू० ३।२।१)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) "समिध" अग्नि को प्रदीप्त करने के लिये यज्ञीय काष्ठ को कहते हैं "सुसमिद्ध" अग्नि का विशेषण है परन्तु आप्रीसूक्त ९।५ में यही शब्द सोम का विशेषण पढ़ा है। क्योंकि सोम भी बुद्धि और सब इन्द्रियों को (इन्ध् दीप्तौ) प्रकाशित करने से 'सुसमिद्ध' अर्थात् सुप्रदीप्त कहा जासक्ता है।

इसलिये यज्ञांग होने से समिध की और समष्टि पक्ष में दीप्ति का हेतु होने से अग्नि की स्तुति इस मन्त्र में है।

इस मन्त्र से यह भी प्रतीत होता है कि सुप्रदीप्त होकर ही अग्नि देवताओं को लाते हैं और उनका पूजन करते हैं इसलिये सुप्रदीप्त अग्नि में आहुति देनी चाहिये। धूम्र युक्त में नहीं॥

तनूनपाद्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

मधुमन्तंतनूनपा द्यज्ञंदेवेषुनःकवे ।

अद्याकृणुहिवीतये ॥ २ ॥

मधुऽमन्तम्	मधुररसोपेतम्	मीठे रस वाले को
१ तनूऽनपात्	तनूर्नपातयतिरक्षतीति, हे तनूनां रक्षक	हे शरीरों के रक्षक
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
देवेषु	देवेषु	देवताओं में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्माकम्	हमारे
कवे	हे मेधाविन्!	हे मेधावी
अद्य	अद्य	आज
कृणुहि	कुरु	करो
वीतये	भोगाय	भोग के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे मेधाविन्! तनूनांरक्षक! (अग्ने!त्वम्) अद्य मधुर-रसोपेतमस्मदीयं यज्ञं देवेषु भोगार्थं प्रापय ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे मेधावी शरीरों के रक्षक (अग्नि आप)आज मीठे रस वाले हमारे यज्ञ को देवताओं में भोग के लिये पहुंचाओ ॥ २ ॥

(१.) तनूनपात् । शाकपूणि के मत में आग्नि का नाम है वह कहते हैं "आपोऽत्र तन्व उच्यन्ते तता अन्तरिक्षे ताभ्य ओषधी-वनस्पतयो जायन्ते ओषधिवनस्पतिभ्य एष जायते"

अन्तारिक्ष में फैले हुए होने से (तनु-विस्तारे) " तन्वः " जलों का नाम है। उन से ओषधि वनस्पाति उत्पन्न होती हैं और ओषधि वनस्पतिओं से (अरणिमन्थन द्वारा) आग्नि उत्पन्न होती है । नपात् पोते को कहते हैं। उक्त प्रकार से जलों का पोता होने से तनून

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पात्, अग्नि का नाम है । यह समष्टि पक्ष में अर्थ हुआ यज्ञावयव पक्ष में तनूनपात् घृत का नाम है। जैसे कात्थक्यमुनि मानते हैं।

"गौरत्र तनूरुच्यते तता अस्यां भोगास्तस्याः पयोजायते पयस आज्यं जायते" अश्वमेधसम्बन्धी द्वितीय आप्रीमन्त्र में घृत शब्द ही पढ़ा है। वहां तनूनपात् शब्द नहीं आता (देखो यजु० २९ । २)

घृत ही यज्ञ को मधुर रस वाला करता है ।

घृत को कवि कहना भी असंगत नहीं है जब कि उसमें देवता की भावना की जाय ।

नराशंसोदेवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

नराशंसमिहप्रिय मस्मिन्यज्ञउपह्वये ।

मधुजिह्वंहविष्कृतम् ॥ ३ ॥

	नरैःप्रशंसनीय	नरों से प्रशंसा
१ नराशंसम्	मग्निम्	किये जाने वाले अग्नि को
इह	इह	यहां
२ प्रियम्	प्रियम्	प्यारे को
अस्मिन्	अस्मिन्	इस में
यज्ञे	यज्ञे	यज्ञ में
उप	उप+	—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह्वये	उप+ह्वये, समीपमाह्वयामि	पास बुलाता हूं
२मधुंऽजिह्वम्	मधुरजिह्वोपेतम्	मीठी जिह्वा वाले को
हविःऽकृतंम्	हविषोनिष्पादकम्	हवि के तैय्यार करने वाले को

संस्कृतार्थः।

(अहम्) इह (स्थाने) नरैः प्रशंसनीयं,प्रियं, मधुरजिह्वोपेतं हविषोनिष्पादकम् (अग्निम्) अस्मिन् यज्ञे समीपमाह्वयामि ॥ ३ ॥

भाषार्थः।

मैं इस (स्थान) में मनुष्यों से प्रशंसा किये जाने वाले प्यारे (अग्नि देव को) पास बुलाता हूं जो इस यज्ञ में मीठी जिह्वा वाले और हवि के तैय्यार करने वाले हैं ॥ ३ ॥

(१) समष्टि पक्ष में नराशंस अग्नि वा सूर्य्य का नाम है क्योंकि सब मनुष्य उन की प्रशंसा करते हैं।

(२) अग्नि और सूर्य्य दोनों हमारे प्रिय हैं क्योंकि सदा हमारा उपकार करते हैं।

(३) अग्नि और सूर्य्य की जिह्वारूपी ज्वाला के अत्यन्त प्रिय होने से हम उनको मधुजिह्व कहते हैं। और इसलिये भी कि प्रिय मित्र की वाणी बहुत मीठी लगती है।

(४) हमारी अन्न घृत वा सोमरूपी हवि के निष्पादक सूर्य्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही हैं। और पुरोडाशआदि हवि के पकाने वाले अग्नि हैं। यज्ञावयत्र पक्ष में नराशंस यज्ञ का नाम है जैसे कात्थक्यमुनि मानते हैं।

" नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्ति "

मनुष्य इस में बैठ कर स्तुति करते हैं।

यज्ञ भी सर्वाङ्ग सहित समाप्त किये जाने पर एक व्यक्ति-विशेष बन जाता है। इसी व्यक्ति को विष्णु और प्रजापति के नाम से श०प० ब्रा० में कई जगह वर्णन किया है। यज्ञ को बुलाने का प्रयोजन यह होसकता है कि हमारा यज्ञ सर्वाङ्ग सिद्ध हो और उसका आकाश में त्रुटि रहित पूर्ण रूप बने।

इडोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अग्नेसुखतमेरथे देवाँईळितआवह।

आसिहोतामनुर्हितः ॥ ४ ॥

अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
सुखऽतमे	अतिशयेन सुख हेतौ	बहुत सुखवाले में
रथे	रथे	रथ में
देवान्	देवान्	देवताओं को
ईळितः	(अस्माभिः)स्तुतः	(हम से) स्तुत हुआ २
आ	आ+	—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व॒ह॒	आ+वह	लाओ
असि॑	असि	तू है
होता॑	होता	होता
मनुः॑ऽहितः	मनुष्येणस्थापितः	मनुष्य से स्थापित

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वमस्माभिः) स्तुतः (सन्) सुख तमे रथे देवानावह मनुष्येण स्थापितः (त्वं यज्ञे) होताऽसि ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि (हम से) स्तुति किये गये आप बहुत सुख के देने वाले रथ में देवताओं को लाओ, मनुष्य से स्थापित हुए २ आप (यज्ञ में) होता हैं ॥ ४ ॥

इळाका अर्थ हवि है जो पुरोडाश आदि रूप में यज्ञ का अङ्ग है ऐसा कात्थक्यमुनि मानते हैं ।

"इळित" का अर्थ यह है जो हवि के सहित स्तुति किया जाय । अग्नि का विशेषण होने से इस मंत्र में अग्नि की स्तुति है । यह समष्टि पक्ष हुआ, मनुष्य से स्थापन किये जाकर अग्निदेव उस के होता ऋत्विज हैं ।

बर्हिर्देवता गायत्रीछन्दः ॥ ८।८।८।

स्तृ॒णी॒तब॒र्हिरा॑नु॒ष ग्घृ॒तपृ॑ष्ठं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम् ॥५॥

स्तृणीत	स्तृणीत	बिछाओ
१ बर्हिः	दर्भम्	कुशा को
२ आनुषक्	अनुक्रमेणसंसक्तम्	क्रम से आपस में मिली हुई को
३ घृतऽपृष्ठम्	घृतं पृष्ठयस्यतत् (घृतपूर्णानांस्रुचां बर्हिष्यासादितत्वात्)	घृत से युक्त पीठ वाली को
मनीषिणः	हे बुद्धिमन्तः !	हे बुद्धिमानो
यत्र	यत्र	जहां
४ अमृतस्य	अमृतस्य	अमृत का
चक्षणम्	दर्शनम्	दर्शन

संस्कृतार्थः ।

हे बुद्धिमन्तः ! अनुक्रमेण संसक्तं घृताधारं बर्हिः स्तृणीत यत्रामृतस्य दर्शनम् (भवति) ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

हे बुद्धिमानो क्रम पूर्वक मिली हुई कुशा को जिस पर घृतपात्र रक्खे जाते हैं और जहां अमृत का दर्शन होता है बिछाओ ॥ ५ ॥

(१) बर्हि भी यज्ञ का अंग है कुशा को पत्ते अलग होने की जगहसे काट कर अग्र भाग वेदि पर आस्तरण के लिये तैय्यार किया जाता है।

(२) बर्हि इस तरह विछाई जाती है कि नीचे की कुशा का मूल भाग ऊपर की कुशा के अग्र भाग से ढक जावे।

(३) वेदि पर बर्हि बिछा कर उसके ऊपर स्रुचादि घृतपात्र रक्खे जाते हैं ॥

(४) इसी बर्हि पर अमृत रूपी घृत का दर्शन होता है ऋषि घृत को देवता बुद्धि से देखते थे [देखो पृ० २७९]

आप्री सूक्त १०।७०।४ में बर्हि को चेतन जानकर ऋषि इस प्रकार सम्बोधन करते हैं।

"हे देव बर्हि! कामना करने वाले देवताओं का जिन में इन्द्र ज्येष्ठ हैं मित्र भाव से पूजन करो"

समष्टि पक्ष में "बर्हि" शब्द समस्त ओषधियों का वाची है जैसे श० ब्रा० १।३।३।९ में पढ़ा है "ओषधयो बर्हिः"। ओषधियां वे हैं जो फल पकने पर सूख जाती हैं जैसे ब्रीहि, यवआदि। जीवन का आधार होने से ओषधि स्तुति के योग्य है।

देवीर्द्वारोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८॥

विश्रयन्तामृतावृधो द्वारोदेवीर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सश्चतः । अद्यानूनंचयष्टवे ॥ ६ ॥

वि	वि+	—
श्रयन्ताम्	वि+श्रयन्तां विवृता भवन्तु (आ०को०)	खुले रहें
४ ऋतऽवृधः	यज्ञस्य वर्धयित्र्यः	यज्ञके बढ़ाने वाले
१ द्वारः	द्वारः	द्वार
१ देवीः	द्योतमानाः	प्रकाशमान
२ असश्चतः	परस्परंविप्रकृष्टाः (षच समवाये)	आपसमें न मिले हुए
३ अद्य	अद्य	आज
३ नूनम्	नूनम्	अवश्य
च	च	और
३ यष्टवे	यज्ञसम्पादनाय	यज्ञ करने के लिये

संस्कृतार्थः ।

अस्मिन्दिवसे (दिनान्तरेषु)च नूनंयज्ञसम्पादनाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यज्ञस्य वर्धयित्र्यो द्योतमानाः परस्परंविप्रकृष्टा द्वारो विवृतास्सन्तु ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

यज्ञके बढ़ाने वाले प्रकाशमान आपस में न जुड़े हुए द्वार आज और (आगामी दिनोंमें भी) यज्ञ करने के लिये अवश्य खुले रहें ॥ ६ ॥

(१) "द्वारोदेवी"से तात्पर्य्य यज्ञाङ्ग पक्षमें यज्ञशालाके द्वार हैं॥

(२) वे द्वार आपसमें मिले हुए न रहें किन्तु अलग २ रहें अर्थात् सदा खुले रहें ॥

(३) जिस से हम सदा यज्ञ करते रहें ॥

समष्टि पक्षमें "द्वारोदेवी" पूर्वदिशावर्ती सूर्य की ज्योति के आने से आकाश के द्वारों से तात्पर्य्य है जिनको उषा नित्य खोलती है (देखो ऋ० १।११३। ४) और जिनमें से देवता आते हैं जैसे ऋ० १० ११०।५ में कहा है:—

हे सबको प्रेरण करने वाले (जब उषा देवी इन द्वारों को खोलती हैं तब सब मनुष्य पशु आदि जागृत होकर अपने २ कर्म में प्रवृत्त होते हैं) हे महान् और दिव्यद्वारो ! देवताओं के लिये सुप्रयाण हो अर्थात् (इतने चौड़े खुलो कि देवता सुख से निकल सकें)।

(४) यह सभी द्वार ऋत के बढ़ाने वाले हैं यज्ञपक्षमें यज्ञशाला के द्वार "ऋत" अर्थात् यज्ञ को बढ़ाने वाले हैं ॥

आकाश के द्वार "ऋत" अर्थात् सृष्टि नियम को बढ़ाने वाले हैं ॥

उषासानक्तेदेवते गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

नक्तोषासासुपेशसाऽस्मिन्यज्ञउपह्वये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इदंनोबर्हिरासदे ॥ ७ ॥

१ नक्तोषसा	रात्रिदिने	रात्रि(और)दिनको
२ सुऽपेशसा	शोभनरूपयुक्ते	सुन्दर रूप वालों को
अस्मिन्	अस्मिन्	इस में
यज्ञे	यज्ञे	यज्ञ में
उप	उप+	—
ह्वये	उप+ह्वये, आह्वयामि	मैं बुलाता हूं
इदम्	इदम्	इसको
नः	अस्मदीयम्	हमारी
३ बर्हिः	दर्भम्	कुशा को
आऽसदे	निषदनाय	बैठने के लिये

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) शोभनरूपयुक्ते रात्रिदिनेऽस्मिन्यज्ञे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऽस्मिन्नस्मदीये बर्हिषि निषदनायाऽऽह्वयामि ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

मैं सुन्दररूपवाले रात्रि(और)दिन को इस यज्ञ में हमारी इस कुशा पर बैठने के लिये बुलाता हूं ॥७॥

(१)"नक्तोषासा" यज्ञांग पक्ष में सायं और प्रातः के अग्निहोत्र सम्बन्धी दो काल हैं ॥

पक्षान्तर में यह मनुष्यों के समय को नापने वाली तन्तुवाय की न्याई कालरूपी वस्त्र को बुनने वाली देवियां हैं (देखो ऋ० २।३।६)

(२) यह देवियां सुन्दर रूप वाली हैं—एक श्यामा दूसरी शुभ्रा इन दोनों में से पहिली तारामंडल रूपी अनेक मणिमुक्ताआदि आभूषण पहने रहती है और दूसरी सूर्य रूपी एकही सुवर्ण का चक्र पहनतीहै ॥

(३) "दिन रात्रि" भी सदा नियम पर चलने से और मृत्यु रहित होने से देव गुणवाली हैं, और इसलिये अग्नि वायु, और इन्द्र की न्याई देवता हैं, और यजमान की भावना से उस के यज्ञ में आ कर कुशा पर वैठती हैं और उस की पूजा को स्वीकार करती हैं ॥

दिन रात्रि की पूजा का फल यही है कि यजमान उनके साथ एकता को प्राप्त होकर अर्थात् उनके नियम पर चलने आदि गुणों को धारण करके उनकी न्याई संवत्सर अर्थात् प्रजापति वा समष्टि को प्राप्त होता है ॥

दैव्यौहोतारौ प्रचेतसौ देवते गायत्रीछन्दः।८।८।८।

ता॒सु॒जि॒ह्वाउप॑ह्वये॒ होता॑रा॒दैव्या॑क॒वी ।

य॒ज्ञंनो॑यक्षता॒मि॒मम् ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ता	तौ	उन दोनों को
२ सुऽजिह्वौ	शोभनजिह्वोपेतौ	सुन्दर जिह्वा वालों को
उप	उप+	—
ह्वये	उप+ह्वये, आह्वयामि	बुलाता हूं
१ होतारा	होतारौ (सुपामितिविभक्तेरात्वम्)	होताओं को
१ दैव्या	दैव्यौ (,,)	दैव्यों को
कवी	मेधाविनौ	मेधावियों को
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
नः	अस्मदीयम्	हमारे
यक्षताम्	यजताम्	यजन करें
इमम्	इमम्	इस को

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) शोभनजिह्वोपेतौ मेधाविनौ तौ दैव्यौ होतारौ (सूर्याग्नी देवौ) आह्वयामि (तावुभौ)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मदीयमिमं यज्ञं यजताम् ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

मैं सुन्दर जिह्वावाले उन दोनों मेधावी दैव्य होता (अग्नि और सूर्य) को बुलाता हूं (वे दोनों) हमारे इस यज्ञ को यजन करें ॥ ८ ॥

(१) "दैव्यौ होतारौ" अग्नि और सूर्य हैं क्योंकि जैसे पृथिवी पर अग्नि होता है वैसे ही आकाश में सूर्य होता है ॥

(२) अग्नि की सुन्दर जिह्वा अग्नि की ज्वाला हैं जिनको हम प्रत्यक्ष देखते हैं —

सूर्य्य की सुन्दर जिह्वा सूर्य्यमण्डल से निकलने वाली प्रचण्ड ज्वाला (Solar Protuberances) हैं जिन को हम सदा नहीं देखते परन्तु सूर्य ग्रहण के समय सूर्यज्योति के मन्द होने के कारण देखते हैं यह ज्वाला सूर्य की परिधि से लाखों योजन ऊंची जाती हुई दिखाई देती हैं ।

यज्ञ पक्ष में दो प्रकार के मनुष्य होताओं से तात्पर्य है एक शस्त्र पढ़ने वाले दूसरे वे जो शस्त्र पाठ नहीं करते (देखो ऐ० ब्रा० ६ । ३ । १३)

तिस्रोदेव्यः सरस्वतीळाभारत्योदेवता गायत्री-छन्दः । ८ । ८ । ८ ॥

इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ इळा॑	इळा	इळा
२ सर॑स्वती	सरस्वती	सहस्वती
३ म॒ही	मही	मही
ति॒स्रः	तिस्रः	तीनों
दे॒वीः	देव्यः (प्रथमार्थे द्वितीया)	देवियां
४ म॒य॒ःऽभुव॑ः	सुखंभावयन्त्यः (मयइतिसुखनाम (निघं०३।६)	सुख के देने वालीं
ब॒र्हिः	बर्हिषि (सुपामिति सप्तम्याःसुः)	कुशा पर
सी॒द॒न्तु॒	निषीदन्तु	बैठें
४ अ॒स्रिधः	हिंसारहिताः(स्रिधू हिंसायाम्)	हिंसा से रहित

संस्कृतार्थः ।

सुखं भावयन्त्यो हिंसारहिताः (च) इळा सरस्वती महीत्येतास्तिस्रो देव्यो बर्हिषि निषीदन्तु ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

इळा सरस्वती (और) मही ये तीनों देवियां जो सुख देने वालीं (और) हिंसा से रहित हैं कुशा पर बैठें ॥ ९ ॥

(१) 'इळा' परमात्मा की वह शक्ति है जो हमारे हृदय में स्तुतिभाव को उत्पन्न करती है. स्तुतिभाव रहने से मनुष्य बहुत शीघ्र सर्वगुणसम्पन्न होजाता है जैसे निन्दाभाव रहने से मनुष्य सब उत्तम गुणों से रहित हो जाता है ॥

(२) 'सरस्वती' हमारे चिन्तन की धारा को प्रेरणा करने वाली देवी हैं उन्हीं की प्रेरणा से हमारा चिन्तन शुभ होसक्ता है ॥

(३) हमारी वाणी को प्रेरण करने वाली देवी 'मही' हैं उन्हीं की प्रेरणा से हम प्रिय सत्यवाणी से युक्त होसक्ते हैं ॥

(४) यह तीनों देवियां सुख के देने वाली हैं और हिंसा से रहित हैं। स्तुतिशील, शुभचिन्तक, और प्रियसत्यवाणी वाला मनुष्य सदा सुखी रहता है और उसको कभी कोई हिंसा(दुःख) नहीं पहुंचासक्ता यह समष्टि पक्ष हुआ और यज्ञ पक्ष में स्तुति, देवता का ध्यान और मन्त्र रूप वाणी ये यज्ञ के अंग हैं ॥

त्वष्टादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८॥

इ॒ह त्वष्टा॑रमग्रि॒यं वि॒श्वरू॑पमु॒प ह्व॑ये ।
अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः ॥१०॥

इ॒ह	इह	यहां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ त्वष्टा॑रम्	त्वष्टारम्	त्वष्टा को
२ अ॒ग्रि॒य॒म्	अग्रेभवम्	(सब से) पहले होने वाले को
३ वि॒श्वऽरू॑पम्	सर्वरूपोपेतम्	सब रूपों वाले को
उप॑	उप+	—
ह्वये	उप+ह्वये, आह्वयामि	मैं बुलाता हूं
४ अ॒स्माक॑म्	अस्माकम्	हमारा
अ॒स्तु	अस्तु	हो
केव॑लः	केवल :	केवल

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) अग्रेभवं सर्वरूपोपेतम् (च) त्वष्टारम् (देवम्) अस्मिन्(यज्ञे) आह्वयामि (सः)केवलोऽस्माकमस्तु ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

मैं सब से पहले होने वाले (और) सब रूपों वाले त्वष्टा (देव) को इस (यज्ञ) में बुलाता हूं (वह) केवल हमारे हों ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विनियोग—यह मन्त्र पत्नी संयाज में त्वष्टा की पुरोनुवाक्या है (आ० श्रौ० सू० १।१०।८)

(१) 'त्वष्टा' परमात्मा की रचनाशक्ति का नाम है जिसने जगत् में यह नाना रूप रचे हैं।

(२) वह शक्ति सब से पहले इस जगत् में प्रकट हुई है इन्द्र, वरुण, सूर्य, वायु, अग्नि इत्यादि रूप वाले देवता पीछे प्रकट हुए हैं क्योंकि इन सब को रूप देने वाले त्वष्टा देव ही हैं।

(३) त्वष्टा देव सब रूपों वाले हैं, जैसे अग्नि वा सूर्य का एक विशिष्ट रूप हम देखते हैं वैसा त्वष्टा का नहीं है क्योंकि सृष्टि में जितने देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी वृक्ष, पर्वत नदी आदि के रूप हैं वह सब त्वष्टा देवता के रूप हैं।

(४) ऐसे त्वष्टा देवता केवल हमारे हों।

यज्ञांग पक्ष में यज्ञसम्बन्धी पात्र आदि के बनाने वाले शिल्पी से तात्पर्य्य होसक्ता है। बिना शिल्प विद्या जानने वालों के भी यज्ञ सिद्ध नहीं होसक्ता। यजमान और ऋत्विजों को यज्ञ में बहुत सा काम अपने हाथ से ऐसा करना पड़ता है जो बिना शिल्पी के काम सीखे नहीं होसक्ता।

बनस्पतिर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अवसृजावनस्पते देवदेवेभ्योहविः।
प्रदातुरस्तुचेतनम् ॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ अव॑	अव+	—
२ सृ॒ज॒	अव+सृज,समर्पय	अर्पण करो
१ व॒न॒स्प॒ते॒	हे वनस्पते !	हे वनस्पति
२ देव॑	हे देव !	हे देव
२ दे॒वेभ्य॑ः	देवेभ्यः	देवताओं के लिये
२ ह॒विः	हविः	हवि को
प्र	प्र+	—
३ दा॒तुः	प्र+दातुः	देने वाले के
३ अ॒स्तु॒	अस्तु	हो
३ चेत॑नम्	विज्ञानम्	विज्ञान

संस्कृतार्थः ।

हे वनस्पते ! देव ! (त्वम्) देवेभ्यो हविः समर्पय प्रदातुः (यजमानस्य) विज्ञानमस्तु ॥११॥

भाषार्थः ।

हे वनस्पति देव ! आप देवताओं के निमित्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हवि समर्पण करो, (हवि) देने वाले (यजमान) को ज्ञान की प्राप्ति हो ॥ ११ ॥

यज्ञांग पक्ष में वनस्पति शब्द से स्रुचआदि पात्र वा यूप समझना चाहिये जिनके बिना यज्ञ सिद्ध नहीं होसक्ता। समष्टि पक्ष में वनस्पति शब्द प्रसिद्ध है।

वनस्पति वह है जिस में फूल नहीं होता केवल फल होता है परन्तु यह शब्द साधारणतः सब वृक्षों का वाची भी है।

स्वाहाकृतयोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८८।

स्वाहायज्ञंकृणोतने न्द्रांययज्वनोगृहे ।
तत्रदेवाँउपह्वये ॥१२॥

स्वाहा	स्वाहा (इति)	स्वाहा (बोलकर)
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
कृणोतन	कुरुत	करो
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
यज्वनः	यजमानस्य	यजमान के
गृहे	गृहे	घर में
तत्र	तत्र	वहां
देवान्	देवान्	देवताओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उप	उप	—
ह्वये	उप+ह्वये, आह्वयामि	बुलाता हूं

संस्कृतार्थः ।

(हे ऋत्विजः!)यजमानस्य गृह इन्द्राय स्वाहा(इति) यज्ञं कुरुत तत्र (अहम्) देवानाह्वयामि ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

(हे ऋत्विजो) यजमान के घर में इन्द्र के लिये स्वाहा (बोल कर) यज्ञ को करो वहां मैं देवताओं को बुलाता हूं ॥ १२ ॥

स्वाहा उपविष्ट होम के अन्त में बोला जाता है इसलिये यज्ञांग है बिना स्वाहा के यज्ञ नहीं होता ।

समष्टिपक्ष में 'स्वाहा' प्रजापति की अपनी महिमा है जिसकी प्रेरणा से समष्टि हवन द्वारा सूर्य और वायु की उत्पत्ति हुई (देखो० श० ब्रा०२।२।४।६)।

अश्वमेध सम्बन्धी ११ वें आप्रीमन्त्र में प्रजापति शब्द ही आता है (देखो यजु० २९।११) इसलिये समष्टि पक्ष में 'स्वाहा' शब्द से प्रजापति समझना चाहिये ।

॥ इति त्रयोदशं सूक्तम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० १४

विश्वेदेवादेवता मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः ८। ८।८।

ऐभिरग्नेदुवोगिरो विश्वेभिःसोमपीतये।
देवेभिर्याहियक्षिच ॥ १ ॥

आ	आ+	—
एभिः	एभिः	इन के साथ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
दुवः	परिचर्याम्	सेवा को
गिरः	स्तुतीः	स्तुतियों को
विश्वेभिः	विश्वेभिः	सब के साथ
सोमऽपीतये	सोमपानार्थम्	सोमपीने के लिये
देवेभिः	देवैः	देवताओं के साथ
याहि	आ+याहि	आओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यक्षिं	यज	पूजन करो
च	च	और

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वम्) एभिर्विश्वेभिर्देवैः (सह) सोमपानार्थम् (अस्मदीयाम्) परिचर्यां स्तुतीः (च प्रति) आगच्छ यज च ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! आप इन सब देवताओं के साथ सोमपान के लिये (हमारी) पूजा (और) स्तुति (के प्रति) आओ और देवताओं का पूजन करो ॥ १ ॥

विनियोग—यह सूक्त व्यूढद्वादशाह के प्रथमछन्दोम में तृतीय सवन के वैश्वदेव शस्त्र में पढ़ाजाता है (आ० श्रौ० सू० उ०२।९।५)।

जब अग्निदेव सब देवताओं के साथ हमारी पूजा और स्तुति करने पर आते हैं और हमारे होता बन कर देवताओं; को पूजते हैं तभी यज्ञ सिद्ध होता है।

विश्वेदेवा देवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

आत्वाकण्वांअहूषत गृणन्तिंविप्रतेधियः ।
देवेभिरग्नआगहि ॥ २ ॥

आ	आ+	—
त्वा	त्वाम्	तुझ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कण्वा॑ः	कण्ववंशीयाः	कण्व वंशियों ने
अ॒हू॒ष॒त	आ+अहूषत, आहूतवन्तः	बुलाया हैं
गृ॒णन्ति॑	कथयन्ति	कहते हैं
वि॒प्र॒	हे मेधाविन्!	हे मेधावी
ते॒	तव	तेरे
धिय॑ः	कर्माणि (निघं२।१.)	कर्मों को
दे॒वेभिः	देवैः	देवताओं के साथ
अ॒ग्ने॒	हे अग्ने !	हे अग्नि
आ	आ+	—
ग॒हि॒	आ+गहि,आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

हे मेधाविन् ! त्वां कण्ववंशीया आहूतवन्तः (इदानीमपिते) तव कर्माणि कथयन्ति हे अग्ने ! (त्वम्) देवैः (सह) आगच्छ ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे मेधावी ! आपको कण्व वंशियों ने बुलाया है (और अब भी वे) आपके कर्मों को कथन करते हैं हे अग्नि ! आप देवताओं के साथ आओ ॥२॥

इस सूक्त के द्रष्टा कण्व वंशी हैं इसलिये वे कहते हैं कि हे अग्नि पूर्व काल में कण्वों ने आप को बुलाया है और अब भी उस वंश वाले हम आपकी महिमा को गाते हैं हमारा सम्बन्ध आपके साथ पूर्व काल से है इसलिये आप देवताओं को साथ लेकर हमारे यज्ञ में अवश्य आवें ।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

इन्द्रवायूबृहस्पतिं मित्राग्निंपूषणंभगम् ।

आदित्यान्मारुतंगणम् ॥ ३ ॥

इन्द्रवायू०	इन्द्रवायू	इन्द्र(और)वायुको
बृहस्पतिम्	बृहस्पतिम्	बृहस्पति को
मित्रा	मित्रम्	मित्र को
अग्निम्	अग्निम्	अग्नि को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूषणम्	पूषणम्	पूषा को
भगम्	भगम्	भग देवता को
आदित्यान्	आदित्यान्	आदित्यों को
मारुतम्	मारुतम्+	—
गणम्	मारुतम्+गणम्, मरुद्गणम्	मरुद् गण को

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वम्) इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्रमग्निं पूषणं भगमादित्यान् मरुद् गणम् (चाऽऽवह) ॥३॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप इन्द्र, वायु, बृहस्पति, मित्र, अग्नि, पूषा, भग, आदित्य (और) मरुद् गण को (साथलाओ) ३।

अग्नि इन देवताओं को साथ लेकर हमारे पास आवें ।

(१) इन्द्र और वायु को-जो विद्युत और पवन रूप में प्रसिद्ध देवता हैं और परमात्मा की बल शक्ति के द्योतक हैं (देखो पृ० ६३)

(२) बृहस्पति को-जो नास्तिक बुद्धि को हटाने वाली और आस्तिक भाव को उत्पन्न करने वाली परमात्मा की शक्ति है ।

(३) मित्र देवता को—जो दिन के प्रकाश सहित आकाश रूप में सब प्राणियों को कल्याण द्वारा शासन करते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) अग्नि देवता को—जो हमारी स्थापित की हुई अग्नि से अन्य रूप से वर्त्तमान हैं जैसे सूर्य में मनुष्य में पशु और वनस्पति में।

(५) पूषा को—जो रस्ते में हिंसक जीवों से रक्षा करने वाले और पशुओं के पालक परमात्मा की रक्षण शक्ति के अभिमानी देवता हैं।

(६) भग को—जो सौभाग्य और ऐश्वर्य्य को देने वाली परमात्मा की शक्ति है।

(७) आदित्यों को—जो अनादि काल और प्रकाशसे सम्बन्ध रखने वाले देवता हैं।

(८) मरुद्गण को—जो बल कर्म में इन्द्र के सहचारी देवता हैं (देखो पृ० १४५)।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

प्रवो॑भ्रियन्तइन्द॑वो मत्सरामा॑दयि॒ष्णवः॑।

द्र॒प्सामध्व॑श्चमूषदः॑ ॥४॥

प्र	प्रकर्षेण	खूब
वः	युष्मदर्थम्	आपके लिये
भ्रियन्ते	दीयन्ते(आ०को०	दिये जाते हैं
इन्दवः	सोमाः	सोम
मत्सराः	तृप्तिकराः (मन्दतिस्तृप्तिकर्म्मेति यास्कः,निरु०११।२७)	तृप्ति करने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मादयिष्णवः	हर्षहेतवः	हर्ष के हेतु
द्रप्साः	बिन्दु रूपाः	बिन्दुरूप
मध्वः	मधुराः	मीठे
चमूऽसदः	चम्यते भक्ष्यते येषु ते चम्वः, तेषु सीदन्तीति, चमसेषुस्थापिताः	चमस पात्रों में रक्खे हुए

संस्कृतार्थः ।

(हे देवाः!) युष्मदर्थं तृप्तिकरा हर्षहेतवो बिन्दुरूपा मधुरा श्चमसेषुस्थापिताः सोमाः प्रकर्षेण दीयन्ते॥४॥

भाषार्थः ।

(हे देवताओ) आपके लिये तृप्ति करने वाले हर्ष के हेतु मीठे (और) चमस पात्रों में रक्खे हुए बिन्दू रूप सोम खूब दिये जाते हैं ॥ ४ ॥

सोमरस तृप्ति जनक हर्ष को उत्पन्न करने वाला और मीठा होता है और काष्ठ के पात्रों में रखा जाता है ।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

ईळतेत्वामवस्यवः कण्वासोवृक्त-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बर्हिषः । हविष्मन्तोअरङ्कृतः ॥ ५ ॥

ईळते	स्तुवन्ति	स्तुति करते हैं
त्वाम्	त्वाम्	तुझको
अवस्यवः	रक्षामिच्छन्तः	रक्षाकी इच्छा करने वाले
कण्वासः	कण्ववंशीयाः	कण्ववंशी
वृक्तऽबर्हिषः	आस्तृतदर्भाः	जिन्हों ने कुशा बिछाई हैं
हविष्मन्तः	हविर्युक्ताः	हवि से युक्त
अरम्ऽकृतः	भूषयितारः (क्विप्प्रत्ययः)	सजाने वाले

संस्कृतार्थः ।

(हेअग्ने !) रक्षामिच्छन्त आस्तृतदर्भा हविर्युक्ताः (पूजनसामग्र्याः) भूषयितारः काण्वास्त्वां स्तुवन्ति ५।

भाषार्थः ।

(हेअग्नि) रक्षा को चाहते हुए कण्ववंशी कुशा बिछा कर हवि से युक्त होकर और (पूजा की सब सामग्री) सजा कर आपकी स्तुति करते हैं ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषि का आशय यह है कि कण्व वंश वाले हम, पूर्व ऋषियों की मर्य्यादा पर स्थित हैं।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

घृतपृष्ठामनोयुजो येत्वावहन्ति वह्नयः।
आदेवान्त्सोमपीतये ॥ ६ ॥

घृतऽपृष्ठाः	घृतम्पृष्ठं येषांते	घीकी पीठ वाले
मनःऽयुजः	सङ्कल्पेन (रथे) युज्यमानाः	सङ्कल्प से (रथमें) जुड़ने वाले
ये	ये	जो
त्वा	त्वाम्	तुझ को
वहन्ति	वहन्ति	ले चलते हैं
वह्नयः	अश्वाः (आ०को०)	घोड़े
आ	आ-(वहन्तु)	लावें
देवान्	देवान्	देवताओं को
सोमऽपीतये	सोमपानार्थम्	सोमपीने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने !)घृतपृष्ठाः सङ्कल्पेन (रथे) युज्यमाना-येऽश्वास्त्वां वहन्ति (तेऽत्र) सोमपीतये देवान् आ-(वहन्तु) ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) घी की पीठ वाले संकल्प से (रथ में) जुड़ने वाले जो घोड़े आप को ले चलते हैं (वे यहां) देवताओं को सोमपीने के लिये लावें ॥ ६ ॥

अग्नि के ज्वाला रूपी घोड़े घी की पीठ वाले हैं और होता के संकल्प से रथ में जुड़ कर देवताओं को लाते हैं इसी लिये सुप्रदीप्त अग्नि में होम करना कहा है ऐसी अग्नि में घृत डालने से घोड़ों की पीठ बनती है और वह तुरन्त रथ में जुड़ कर देवताओं को हवि ग्रहण करने के लिये ले आते हैं इसघृत की पीठ बनाने के लिये ही सब इष्टियों में पुरोडाश वा चरु की आहुति से पहिले आघार और आज्यभाग घृत की आहुति दी जाती हैं।

विश्वेदेवा देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८॥

तान्यजंत्राँऋतावृधो ऽग्नेपत्नीवतस्कृधि ।
मध्वंःसुजिह्वपायय ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तान्	तान्	उनको
१ यजत्रान्	यजनीयान्	पूज्यों को
१ ऋतऽवृधः	ऋतस्यवर्धकान्	ऋतके बढ़ाने वालों को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
२ पत्नीऽवतः	पत्नीयुक्तान्	पत्नी युक्तों को
कृधि	कुरु	करो
मध्वः	मधुरम् (सोमम्) (द्वितीयार्थे षष्ठी)	मीठे (सोम) को
सुऽजिह्व	हे शोभनजिह्वोपेत !	हे सुन्दर जिह्वा वाले
पायय	पायय	पिलाओ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! यजनीयानृतस्यवर्धकान् (देवान्)पत्नी युक्तान् कुरु हे शोभनजिह्वोपेत ! (तान्) मधुरम् (सोमञ्च) पायय ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! उन पूजने योग्य ऋत के बढ़ाने वाले (देवताओं को) पत्नी युक्त करो (और) हे सुन्दर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिह्वा वाले (उनको) मीठा (सोमरस) पिलाओ ।

(१) देवता पूजनीय और ऋत अर्थात् परमात्मा की इच्छा वा सृष्टिनियम को बढ़ाने वाले हैं परमात्मा की इच्छा को पालन करने वाला मनुष्य भी ऋत को बढाता है और पूजनीय होता है।

(२) अग्नि, देवताओं को पत्नी युक्त करें अर्थात् देवपत्नियों को भी यहां पर ले आवें जिससे देवता जो हमारे यज्ञ में विराजमान हैं पत्नी युक्त होजावें ! सृष्टि में सब पदार्थ पुरुषत्व अथवा स्त्रीत्व से युक्त हैं । यद्यपि शुद्धरूप में परमात्मा इस पुरुष और स्त्री भेद से रहित हैं परन्तु प्रजापति रूप में अपने दो विभाग कर एक से पुरुष और एक से स्त्री रूप होकर सारी सृष्टि को इन भेदों से युक्त करते हैं इसी लिये सब सृष्टि और देवता भी पत्नी युक्त हैं ।

(३) अग्नि की सुन्दर जिह्वा, प्रदीप्त अग्नि की ज्वाला है ऐसे सुजिह्वअग्नि हमारे मीठे सोमरस को देवता और देवपत्नियों को पिलावें ।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

येयजत्रायईड्या स्तेतेंपिबन्तु

जिह्वयां । मधोरग्नेवषट्कृति ॥८॥

ये	ये	जो
यजत्राः	यष्टव्याः	पूजने के योग्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये	ये	जो
ईड्याः	स्तुत्याः	स्तुति के योग्य
ते	ते	वे
ते	तव	तेरी
पिबन्तु	पिबन्तु	पीवें
जिह्वया	जिह्वया	जिह्वा से
मधोः	मधुरम् (सोमम्) (कर्मणि षष्ठी)	मीठे (सोम) को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
१ वषट्ऽकृति	वषट्कार काले	वषट्कार के समय

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! ये यष्टव्या ये (च) स्तुत्याः (देवाः) ते तव जिह्वया वषट्कार काले मधुरम् (सोमम्) पिबन्तु ।८

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) जो पूजने के योग्य (और) जो स्तुति करने के योग्य हैं वे (देवता) आप की जिह्वा द्वारा मीठे (सोमरस) को वषटकार के समय पीवें ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जब देवताओं के लिये अग्नि में आहुति डाली जाती है उससे पहिले आहुति का मंत्र जिसे याज्या कहते हैं पढ़ा जाता है और उस याज्या के अन्त में वौषट् शब्द बोला जाता है जिस का यह अर्थ है कि अग्नि इस आहुति को देवता तक पहुंचावे। वौषट् (वह प्रापणे) के उच्चारण के साथ ही हवि डाली जाती है।

मंत्र में यह प्रार्थना है कि जब वषट्कार किया जाय उस समय पूज्य देवता अग्नि की ज्वाला द्वारा सोमरूप हवि को पीवें।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

आकींसूर्यस्यरोचनाद् विश्वान्दे-
वाँउषर्बुधः । विप्रोहोतेहवक्षति । ९

आकीम्	पृथक्कृत्य (आ.को.)	अलग करके
२ सूर्यस्य	सूर्यस्य	सूर्य के
२ रोचनात्	तेजोमण्डलात्	तेजमण्डल से
विश्वान्	विश्वान्+	—
देवान्	विश्वान्+देवान्	विश्वेदेवताओं को
उषःऽबुधः	उषःकाले प्रबुध्यमानान्	उषःकाल में जागने वालों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

³ विप्रः	मेधावी	मेधावाला
³ होता	होता	होता
इह	इह	यहां
वक्षति	आवहतु	लावे

संस्कृतार्थः।

मेधावी होता (अग्निः) उषःकाले प्रबुध्यमानान् विश्वान्देवान् सूर्यस्य तेजोमण्डलात् पृथक्कृत्येहाऽऽवहतु ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

मेधावाले, होता (अग्निदेव) उषःकाल में जागने वाले विश्वेदेवताओं को सूर्य के तेजमण्डल से अलग करके यहां लावें ॥ ९ ॥

(१) विश्वे देवता, उषःकाल में जागने वाले हैं ऐसा करने से वह ऋत के बढ़ाने वाले होते हैं मनुष्य भी उषःकाल में जागने से ऋत का अनुगामी होता है।

(२) विश्वे देवता, सूर्य्य के प्रकाश मण्डल में रहते हैं सूर्य्य के प्रकाश से ही हमको अन्न वस्त्र और प्राण तक मिलते हैं सूर्य्य ही स्थावर और जंगम के आत्मा है (देखो-ऋ० १।११५।१) वही ब्रह्म हैं (देखो ऐ०ब्रा० ३।२।३।१२) और सब देवता उसी की विभूति हैं (का० सर्वानुक्रमणी० २।१८)।

(३) देवताओं के होता और मेधावाले अग्नि उन किरण रूप विश्वे देवताओं को हमारे पास लावें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।।

विश्वेभिःसोम्यंमध्व ग्नइन्द्रेणवायुना ।
पिबामित्रस्यधामभिः ॥ १० ॥

१ विश्वेभिः	विश्वेभिः	सब के साथ
सोम्यम्	सोमरसम्	सोम रस को
मधु	मधुरम्	मीठे को
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
इन्द्रेण	इन्द्रेण	इन्द्र के साथ
वायुना	वायुना	वायु के साथ
पिब	पिब	पीओ
१ मित्रस्य	मित्रस्य	मित्र के
१ धामऽभिः	किरणैः(आ०को०)	किरणों के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वम्) विश्वेभिर्मित्रस्य किरणैरिन्द्रेण वायुना (च सह) मधुरं सोमरसं पिब ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि! आप मित्र के सब किरणों इन्द्र (और) वायु के साथ मीठे सोमरस को पीओ ॥ १० ॥

विनियोग—यह मन्त्र अग्निष्टोम के प्रउग शस्त्र की याज्या है (आ० श्रौ० सू० ५ । १० । १०)

(१) विश्वेदेव सूर्य्य की किरणें हैं जैसे श्रुति है ।

एषवै शुक्रो यएष तपति तस्य ये रश्मयस्ते विश्वेदेवाः" (श० ब्रा० ४ । ३।१।२६)

यही तेजोमय है जो यह चमकता है उसकी जो किरणें हैं वे विश्वेदेव हैं ।

यही विश्वेदेव तेजोमय दिन के आकाश को पूर्ण करने वाले मित्र के धाम हैं ॥

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

त्वंहोतामनुर्हितो ऽग्नेयज्ञेषुसीदसि ।

सेमंनोअध्वरंयज ॥११॥

त्वम्	त्वम्	तू
होता	होता	होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुः॒ऽहितः	मनुष्येणस्थापितः	मनुष्य से स्थापन किया हुआ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
यज्ञेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
सीदसि	निषीदसि	बैठते हो
सः	सः	वह
इमम्	इमम्	इस को
नः	अस्मदीयम्	हमारे
अध्वरम्	यज्ञम्	यज्ञ को
यज	यज	यजन करो

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! मनुष्येण स्थापितः(यः) त्वं होतृ-(रूपेण) यज्ञेषु निषीदसि सः (त्वम्) अस्मदीयमिमं यज्ञं यज ॥ ११ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! मनुष्य से स्थापन किये हुए (जो)आप होता (बन कर) यज्ञों में बैठते हैं वह आप हमारे इस यज्ञ को यजन करें ॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आग्नि स्थापन करके देवपूजा करने वाले के लिये स्वयं अग्नि देव होता बनकर देवताओं को पूजते हैं।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

युक्ष्वाह्यरुषीरथे हरितोदेवरोहितः ।
ताभिर्देवाँइहावह ॥१२॥

युक्ष्व	योजय	जोड़ो
हि	(पूरणः)	—
१अरुषीः	वड़वाः (अरुष इत्यश्वनाम निघं १।१४)	घोड़ियों को
२रथे	रथे	रथ में
१हरितः	हरिद्वर्णाः	सुनहरी रंग वालियों को
देव	हे देव !	हे देव
१रोहितः	रक्तवर्णाः	लाल रंग वालियों को
ताभिः	ताभिः	उनके साथ
२देवान्	देवान्	देवताओं को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इह	इह	यहां
२ आ	आ+	—
२ वह	आ+वह	लाओ

संस्कृतार्थः ।

हे देव ! (अग्ने ! त्वम्) हरिद्वर्णारक्तवर्णाः (च) वडवा रथे योजय ताभिर्देवानिहाऽऽवह ॥१२॥

भाषार्थः ।

हे (अग्नि) आप सुनहरी (और) लाल रंग की घोड़ियों को रथ में जोड़ो (और) उनसे देवताओं को यहां लाओ ॥ १२ ॥

१ अग्नि की सुनहरी और लाल घोड़ियां इस रंग की ज्वाला हैं। जब तक इस रंग की ज्वाला न उठें तब तक हवि को अग्नि में नहीं डालना चाहिये। क्योंकि देवता तो बिना घोड़े वा घोड़ियों से युक्त रथ में सवार हुए नहीं आते, फिर हवि कौन लेवे।

इति चतुर्दशं सूक्तम्

ऋ० मं० १ सू० १५

इन्द्रर्तूदेवते मेधातिथिर्ऋषिर्भुरिग्गायत्रीछन्दः ९।८।८।

इन्द्रसोमंपिबऋतुनाऽऽत्वांविशन्त्वि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न्दवः । मत्सरासस्तदोकसः ॥१॥

इन्द्र	हे इन्द्र !	हे इन्द्र
सोमम्	सोमम्	सोम को
पिब	पिब	पीओ
१ ऋतुना	ऋतुना	ऋतु के साथ
आ	आ+	—
त्वा	त्वाम्	तुझ को
विशन्तु	आ+ विशन्तु	प्रवेश करें
इन्दवः	सोमाः	सोम
मत्सरासः	तृप्तिकराः (जसोऽसुगागमः)	तृप्तिके करनेवाले
तत्ऽओकसः	तदेव-ओकःस्थानं येषां ते,तत्र स्थायिनः	वहां ठहरने वाले

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! (त्वम्) ऋतुना(सह) सोमं पिब(ते)सोमा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्वामाविशन्तु तृप्तिकराः (सन्तः) तत्र स्थायिनः (च भवन्तु)

भाषार्थः।

हे इन्द्र! ऋतु के सहित सोम को पीओ (वे) सोम आप में प्रवेश करें (और) तृप्ति करने वाले (हो कर) वहां ठहरें ॥ १ ॥

ऋतु प्रायः ६ मानी गई हैं (देखो श०ब्रा० ४।३।१।१४-से १९ तक) अर्थात्—

वसन्त—चैत्र वैशाख (मधु और माधव)

ग्रीष्म—ज्येष्ठ आषाढ (शुक्र और शुचि)

वर्षा—श्रावण भाद्रपद (नभस और नभस्य)

शरत्—आश्विन कार्तिक (इष और ऊर्ज्)

हेमन्त—मार्गशीर्ष पौष (सहस् और सहस्य)

शिशिर—माघ फाल्गुण (तपस् और तपस्य)

ऋतु भी क्रम पूर्वक नियम पर चलने से और सब प्राणियों का हित करने से देव गुण वाली हैं और देवताओं की न्याईं इन के लिये भी सोम के ग्रह (सोम के भरे हुए पात्र) द्रोण कलश में से लिये जाते हैं (देखो श०ब्रा० ४।३।१।६) और इन को अर्पण किये जाते हैं।

प्रथम मन्त्र से होता ऋतु के सहित इन्द्र के लिये सोम अर्पण करता है।

ऋतु की पूजा का फल भी 'अहोरात्र की पूजा की न्याईं सँव्वत्सर वा प्रजापति तक पहुंचने का है। ऋतु के साथ एकता का तात्पर्य्य यह है कि ऋतु के अनुकूल आहार विहार का होजाना, ऋतुओं की न्याईं नियम को उल्लंघन न करना, सब कार्य्य प्रजा के हित के लिये करना इत्यादि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतऋतुर्देवता भुरिग्गायत्रीछन्दः ९।८।८।

मरुतः पिबतऋतुना पोत्राद्यज्ञंपुनी-
तन। यूयंहिष्ठासुदानवः॥ २॥

मरुतः	हे मरुतः!	हे मरुतो
पिबत	पिबत	पीओ
ऋतुना	ऋतुना	ऋतु के साथ
पोत्रात्	पोतुः पात्रात्	पोता के पात्र से
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
पुनीतन	पावयत (तनादेशः)	पवित्र करो
यूयम्	यूयम्	तुम सब
हि	खलु	सच मुच
स्थ	स्थ	हो
सुऽदानवः	कल्याणदानाः (यास्कैः)	कल्याण के देने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे मरुतः ! (यूयम्) ऋतुना (सह) पोतुः पात्रात् (सोमम्) पिबत यज्ञम् (च) पावयत यूयं खलु कल्याणदानाः स्थ ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे मरुतो ! आप ऋतुके सहित पोता के पात्र से (सोम को) पीओ, (और) यज्ञ को पवित्र करो आप सचमुच कल्याण के देने वाले हो ॥ २ ॥

पोता—ब्रह्माका द्वितीय सहकारी ऋत्विज् होता है। सोमआदि यज्ञों में १६ ऋत्विज् इस प्रकार होते हैं।

मुख्य ऋत्विज्	प्रथम सहकारी ऋत्विज्	द्वितीयसहकारी ऋत्विज्	तृतीय सहकारी ऋत्विज्
१ ब्रह्मा	५ ब्राह्मणाच्छंसी	९ पोता	१३ आग्नीध्रः ।
२ उद्गाता,	६ प्रस्तोता	१० प्रतिहर्त्ता	१४ सुब्रह्मण्यः ।
३ होता,	७ मैत्रावरुणः	११ अच्छावाक्	१५ ग्रावस्तुत् ।
४ अध्वर्युः,	८ प्रतिप्रस्थाता	१२ नेष्टा	१६ उन्नेता

ऋतु सहित मरुतों के लिये पोता के पात्र से सोम अर्पण किया जाता है।

त्वष्टर्तूदेवते भुरिग्गायत्रीछन्दः ८।९।८॥

अभियज्ञंगृणीहिनो ग्नावोनेष्टः-
पिबऋतुना । त्वंहिरत्नधाअसि । ३ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	अभि+	—
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
गृणीहि	अभि+गृणीहि, अभिष्टुहि	अच्छी प्रकार से स्तुति करो
नः	अस्मदीयम्	हमारे
ग्नावः	ग्ना देवपत्न्यः, ताभिर्युक्तो ग्नावान् तत्सम्बुद्धौ	हे देवपत्नियों से युक्त
नेष्टः०	हे त्वष्टः !	हे त्वष्टा
पिब	पिब	पीओ
ऋतुना	ऋतुना	ऋतु के साथ
त्वम्	त्वम्	तू
हि	खलु	सचमुच
रत्नऽधाः	रत्नानां दाता	रत्नोंके देनेवाला
असि	असि	हो

संस्कृतार्थः ।

हे देवपत्नीयुक्त ! त्वष्टः ! (त्वम्) अस्मदीयं यज्ञं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(देवानां समीपे) अभिष्टुहि, ऋतुना (सह सोमं च) पिब, त्वं खलु रत्नानां दाताऽसि ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

हे देवपत्नियों से युक्त त्वष्टा ! आप हमारे यज्ञ को देवताओं में अच्छी प्रकार से सराहो (और) ऋतु के सहित सोम को पीओ सचमुच आप रत्नों के देने वाले हैं ॥ ३ ॥

नेष्टा, यजमानकी पत्नी को यज्ञ में इधर उधर ले जाने का काम करता है। इसी प्रकार त्वष्टा देवपत्नियों के सहित होने से देवताओं के नेष्टा ऋत्विज हैं। ऋतु सहित त्वष्टा और देवपत्नियों को नेष्टा के पात्र से सोम अर्पण किया जाता है।

अग्न्यर्तुदेवते भुरिग्गायत्रीछन्दः ८।८।९

अग्ने॑दे॒वाँइ॒हाव॑ह सा॒द॒याया॑-

निं॑षुत्रि॒षु । परि॑भू॒षपिब॑ऋ॒तुना॑ ॥ ४ ॥

अग्ने॑	हे अग्ने !	हे अग्नि
दे॒वान्	देवान्	देवताओं को
इ॒ह	इह	यहां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	—
वह	आ+वह	लाओ
सादय	उपवेशय	बिठाओ
योनिषु	स्थानेषु	स्थानों में
त्रिषु	त्रिषु	तीनों में
परि	परि+	—
भूष	परि+भूष,अलङ्कुरु	भूषित करो
पिब	पिब	पीओ
ऋतुना	ऋतुना	ऋतु के साथ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (त्वम्) देवानिहाऽऽवह (आहूय च) त्रिषु स्थानेषूपवेशय, अलङ्कुरु (ततः) ऋतुना (सह सोमम्) पिब ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि ! आप देवताओं को यहां लाओ,(और) तीनों स्थानों में बिठाओ, भूषित करो (फिर) ऋतु के साथ (सोम को) पीओ ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नि को ऋतु के सहित आग्नीध्र के पात्र से सोम अर्पण किया जाता है।

"त्रियोनि" से सोमयज्ञ में उत्तर वेदिस्थ आहवनीय, आग्नीध्रीय और मार्जालीय अग्नियों के स्थानों का आशय होसक्ता है।

इन्द्रर्तूदेवते गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

ब्राह्मणादिन्द्रराधसः पिबासोममृतूँरनु ।

तवेद्धिसख्यमस्तृतम् ॥ ५ ॥

ब्राह्मणात्	ब्राह्मणाच्छंसिनः	ब्राह्मणाच्छंसि से
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
राधसः	धनभूतात् (पात्रात्)	धनरूप (पात्र) से
पिब	पिब	पीओ
सोमम्	सोमम्	सोम को
ऋतून्	ऋतून्	ऋतुओं को
अनु	अनु (सृत्य)	अनुसरण करके
तव	तव	आप की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्	एव	ही
हि	यतः	क्योंकि
सख्यम्	सख्यम्	मित्रता
अस्तृतम्	अविच्छिन्नम्	न टूटने वाली

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ब्राह्मणाच्छंसिपात्रादृतूननु (सृत्य) सोमं पिब यतस्तवैव सख्यमविच्छिन्नम् (अस्ति) ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र! ब्राह्मणाच्छंसि के पात्र से ऋतुओं को अनुसरण करके सोम को पीओ क्योंकि आप की ही मित्रता कभी टूटने वाली नहीं है ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाच्छंसि के पात्र से इन्द्र को ऋतु के साहित सोमरस अर्पण किया जाता है ।

इन्द्र की मित्रता कभी भी टूटने वाली नहीं है । इसलिये उन्हीं से गाढ़ मित्रभाव सम्पादन करना चाहिये ।

ऋतुमित्रावरुणा देवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

युवंदक्षंधृतव्रत मित्रावरुणदूळभम् ।

ऋतुनायज्ञमाशाथे ॥ ६ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युवम्	युवाम्	आप दोनों
दक्षम्	कर्मक्षमम्	कर्म साधन के योग्य को
धृतऽव्रता	धृतनियमौ	नियम के धारने वाले
मित्रावरुणा	हे मित्रावरुणौ	हे मित्र और वरुण
दुःऽदभम्	वञ्चनरहितम्	वञ्चना से रहित को
ऋतुना	ऋतुना (सह)	ऋतु के (साथ)
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
आशाथे	व्याप्नुथः	प्राप्त होते हो

संस्कृतार्थः ।

हे मित्रावरुणौ! धृतनियमौ युवां कर्मक्षमं वञ्चनरहितं यज्ञमृतुना (सह) व्याप्नुथः ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे मित्र और वरुण, नियम के धारण करने वाले आप कर्मसाधन के योग्य और वञ्चना से रहित यज्ञ को ऋतु के (साथ) प्राप्त होते हो ॥ ६ ॥

मैत्रावरुण के पात्र से मित्र-वरुण को सोम दिया जाता है।

"दक्षम्" और "दूळभम्" से यह प्रयोजन है कि यज्ञ देवपूजन में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समर्थ है और वञ्चन रहित है यज्ञ में देवताओं की पूजा करने से यजमान पूजा के फल से कदापि वञ्चित नहीं होसक्ता।

ऋताद्रविणोदसौ देवते गायत्रीछन्दः ८। ८। ८।

द्रविणोदाद्रविणसो ग्रावहस्तासोअध्वरे।

यज्ञेषुदेवमीळते ॥ ७ ॥

द्रविणःऽदाः	धनप्रदम् (अग्निम्) (अमस्सुरादेशः)	धन के देने वाले (अग्नि) को
द्रविणसः	धनार्थिनः	धनार्थी
ग्रावऽह-स्तासः	(अभिषवसाधन-) पाषाणहस्ताः	(अभिषव करनेके) पाषाणों को हाथ में लिये हुए
अध्वरे	यज्ञे	यज्ञ में
यज्ञेषु	यज्ञेषु	यज्ञों में
देवम्	देवम्	देव को
ईळते	स्तुवन्ति	स्तुति करते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

धनार्थिनो यज्ञे (अभिषवसाधन) पाषाणहस्ताः (सन्तः) धनप्रदम् (अग्निम्) देवं यज्ञेषु स्तुवन्ति॥७॥

भाषार्थः।

धनार्थी (पुरुष) यज्ञ में (अभिषव करने के) पाषाणों को हाथ में लिये हुए धनके देने वाले(अग्नि) देव की यज्ञों में स्तुति करते हैं॥ ७॥

धन के देने वाले अग्नि को ऋतुओं के साथ होता के पात्र से सोम अर्पण किया जाता है "ग्राव हस्तासः" सोमनिष्पीडन करने के लिये पत्थर के लोढे (शिलबट्टे) हाथ में लिये हुए ऋत्विक् और यजमान अग्नि की स्तुति करते हैं। "अध्वरे" और "यज्ञेषु" कहने का यह तात्पर्य्य है–कि यद्यपि "सोमयज्ञ" में ही ऋत्विक् और यजमान लोढे हाथ में लेकर अग्नि की स्तुति करते हैं परन्तु ऐसा कौनसा यज्ञ है जिस में धन के देने वाले अग्नि की स्तुति नहीं की जाती दूसरे यज्ञों में समिधा घृत वा अन्न हाथ में लेकर स्तुति की जाती है–अग्नि की स्तुति सब यज्ञों में अवश्य होती है क्योंकि धन के देने वाले वही हैं और सब यज्ञों के लिये धन की आवश्यकता है (देखो पृ० ३२७)

ऋताद्द्रविणोदसौ दवते गायत्रीछन्दः ८।८।८

द्रविणोदाददातुनो वसूनियानिश्टृण्विरे।

देवेषुतावनामहे॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्र॒वि॒ण॒ःऽदाः	धनप्रदः	धन के देने वाला
द॒दा॒तु॒	ददातु	देवे
न॒ः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
वसूँनि	धनानि	धनों को
यानिँ	यानि	जो
शृ॒ण्वि॒रे	शुश्रुविरे	सुने गए हैं
दे॒वेँषु	देवेषु	देवताओं में
ता	तानि	उनको
व॒ना॒म॒हे॒	समर्पयामः	हम समर्पण करते हैं

संस्कृतार्थः।

धनप्रदः (अग्निः) अस्मभ्यं धनानि ददातु यानि (धनान्यस्माभिः) शुश्रुविरे, तानि (वयम्) देवेषु समर्पयामः ॥ ८ ॥

भाषार्थः।

धन के देने वाले (अग्नि) हमको (उन सब) धनों को दें जो(हम से)सुने गए हैं उन (धनों) को हम देव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताओं में समर्पण करते हैं ॥ ८ ॥

इस मन्त्र से पोता के पात्र से सोम अर्पण किया जाता है।

हम धन की कामना इसलिये करते हैं कि हमें देवता प्यारे हैं और हम उनके निमित्त धन को लगाना चाहते हैं इसी आशय से विश्वामित्र ऋषि कहते हैं कि जिस जाति के मनुष्य गौओं के दूध को देवकर्म में नहीं लगाते वह गौओं के अधिकारी नहीं हैं देखो ऋ०मं०३सू०५मं०१४ ॥ जो मनुष्य केवल अपने सुख के लिये धन चाहते हैं वे धन के अधिकारी नहीं हैं।

ऋताद्रविणोदसौ देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८

द्रविणोदाःपिपीषति जुहोतप्रचतिष्ठत।

नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥ ९ ॥

द्रविणःऽदाः	धनप्रदः	धन के देने वाला
पिपीषति	(सोमम्) पिपासति	(सोम) पीने की इच्छा करता है
जुहोत	जुहुत	आहुति डालो
प्र	प्र+	—
च	च	और
तिष्ठत	प्र+तिष्ठत प्रस्थान कुरुत	प्रस्थान करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नेष्टात्	नेष्टृपात्रात्	नेष्टा के पात्र से
ऋतुऽभिः	ऋतुभिः (सह)	ऋतुओं के(सहित)
इष्यत	त्वरध्वम्	जल्दी करो

संस्कृतार्थः ।

धनप्रदः (अग्निः) (सोमम्) पातुमिच्छति (अतः गच्छत) जुहुत (हुत्वा) च प्रस्थानं कुरुत (सः) नेष्टृ पात्रात् ऋतुभिः (सह सोमंपातुमिच्छति, अतः) त्वरध्वम् ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

धनके देने वाले (अग्निदेव) सोम पीने की इच्छा करते हैं (इसलिये जाओ) आहूति दो और (आहूति देकर) अपने स्थान को जाओ-(वह) नेष्टा के पात्र से ऋतुओं के (साथ सोम पीना चाहते हैं-इसलिये) जल्दी करो ॥ ९ ॥

इस मन्त्र से नेष्टा के पात्र से सोम अर्पण किया जाता है।

ऋताद्रविणोदसौ देवते गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

यत्त्वातुरीयमृतुभि र्द्रविणोदोयजामहे ।

अधस्मानोददिर्भव ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यत्	यस्मात्	जिस कारण से
त्वा	त्वाम्	तुझ को
तुरीयम्	चतुर्थम् (पात्रम्)	चौथे (पात्र) को
ऋतुऽभिः	ऋतुभिः (सह)	ऋतुओं के (सहित)
द्रविणःऽदः	हे धनप्रद !	हे धन के देनेवाले
यजामहे	अर्पयामः	हम भेट करते हैं
अध	तस्मात्	इस लिये
स्म	(पादपूरणः)	
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
ददिः	(धनस्य) दाता	(धनके) देने वाले
भव	भव	हो

संस्कृतार्थः ।

हे धनप्रद (देव) यस्माच्चतुर्थम् (पात्रम्) ऋतुभिः(सह)त्वा मर्पयामस्तस्मादस्मभ्यम् (धनस्य) दाता भव ॥ १० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे धनके देने वाले (देव) जिस कारण हम चौथे पात्र को ऋतुओं के(साथ)आपको भेट करते हैं इसलिये (आप) हम को (धन के) देने वाले हों ॥ १० ॥

इस मन्त्र मे ऋतुओं के सहित द्रविणोदा अग्नि के लिये अमर्त्यम् (अर्थात् मनुष्य के हाथ से न निकले हुए) नाम वाले चौथे पात्र से सोम अर्पण किया जाता है पिछले तीन मन्त्रों से होता पोता और नेष्टा इन तीनों के पात्रों से सोम अर्पण किया गया था। इस से चौथा ग्रह दिया जाता है। ऋ०मं०२सू०३७मं०४ में "तुरीयम्" का यह अर्थ स्पष्ट प्रतीत होता है।

अपाद्धोत्रादुतपोत्रादमत्तोत नेष्ट्रादजुषतप्रयोहितम् ।

तुरीयंपात्रममृक्तममर्त्यं द्रविणोदाःपिबतुद्राविणोदसः ॥

"होता के पात्र से और पोता के पात्रसे धनके देने वाले अग्नि ने (सोमको) पीया है और मद युक्त हुए हैं, नेष्टा के पात्र से भी समर्पण किया हुआ (सोम रूपी) अन्न उन्होंने स्वीकार किया है (अब वह) चौथा निर्विघ्न अमर्त्य पात्र स्वयं अपने हाथ से निकाला हुआ पान करें" ॥

ऋत्वश्विनो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अश्विनापिबतंमधु दीद्यग्नीशुचिव्रता ।

ऋतुनायज्ञवाहसा ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विदेवो
पिबतम्	पिबतम्	पीओ
मधु	माधुर्योपेतम् (सोमम्)	मीठे (सोम) को
दीदिऽअग्नी०	दीदिर्दीप्तिहेतुरग्नि-र्ययोस्तत्सम्बुद्धौ, हे अग्निनाद्योतमानौ	हे अग्नि करके प्रकाशित
शुचिऽव्रता	हे पवित्रव्रतौ	हे पवित्र नियमों वालो
ऋतुना	ऋतुना (सह)	ऋतु के (साथ)
यज्ञऽवाहसा	हे यज्ञस्य प्रापयितारौ	हे यज्ञके पहुंचाने वालो

संस्कृतार्थः।

हे अग्निना द्योतमानौ पवित्रव्रतौ ऋतुना (सह) यज्ञस्य प्रापयितारावश्विनौ (युवाम्) माधुर्योपेतम् (सोमम्) पिबतम् ॥ ११ ॥

भाषार्थः।

हे अग्नि करके प्रकाशित पवित्र नियमों वाले (और) ऋतु के (साथ) यज्ञ को पहुंचाने वाले अश्विदेवो (आप दोनों) मीठे (सोम) को पीओ ॥ ११ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निदेव, देवताओं के अध्वर्यु हैं इसलिये इस मंत्र से होता ऋतुओं के सहित उनको आध्वर्यव पात्र से सोम अर्पण करता है।

इन देवताओं की दीप्ति का हेतु सूर्य्य की किरणों के रूप में अग्नि देव हैं—रात्रि की कालस में कुछ किरणों का प्रकाश मिलता है तभी इन देवताओं का प्रादुर्भाव और दर्शन होता है।

अग्न्यर्तू देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

गार्हपत्येनसन्त्य ऋतुनायज्ञनीरसि ।

देवान्देवयतेयज ॥ १२ ॥

गार्हऽपत्येन	गार्हपत्यरूपेण	गार्हपत्य रूप से
१ सन्त्य	हे दानसाधो—(सन् दाने)	हे दानी
ऋतुना	ऋतुना (सह)	ऋतु के (साथ)
यज्ञऽनीः	यज्ञस्य नेता	यज्ञ के लेजाने—वाला
असि	असि	तू है
देवान्	देवान्	देवताओं को
देवऽयते	देवकामाय	देवभक्त के लिये
यज	यज	पूजन करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे दानसाधो (अग्ने त्वम्) ऋतुना(सह) गार्हपत्य-रूपेण यज्ञस्य नेताऽसि (स त्वम्) देवकामाय देवान् यज ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

हे दानी (अग्निदेव आप) ऋतु के(साथ)गार्हपत्य रूप से यज्ञ के ले जाने वाले हो देवभक्त के लिये देवताओं का पूजन करो ॥ १२ ॥

इस मन्त्र से अग्नि गृहपति को ऋतुओं के सहित होता गार्हपत्य पात्र से सोम अर्पण करता है ॥

॥ इति पञ्चदशं सूक्तम् ॥

—:-०-:—

ऋ० मं० १ सू० १६

इन्द्रोदेवता मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः। ८।८।८

आत्वावहन्तुहरयो वृषणंसोमपीतये ।

इन्द्रत्वासूरचक्षसः ॥ १ ॥

आ	आ+	
त्वा	त्वाम्	तुझ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वहन्तु	आ+वहन्तु आनयन्तु	लावें
हरयः	अश्वाः	घोड़े
वृषणम्	सेचनसमर्थम्	नर को
सोमऽपीतये	सोमपानाय	सोमपीने के लिये
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
त्वा	त्वाम्	तुझ को
१सूरऽचक्षसः	सूर्यदर्शनाः	सूर्य जैसे रूपवाले

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र! वृषणं त्वां सूर्यदर्शना अश्वाः सोमपानार्थमानयन्तु ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र आप नर को सूर्य जैसे रूपवाले घोड़े सोमपीने के लिये लावें ॥ १ ॥

विनियोग—सोमयज्ञ के प्रातः सवन में मैत्रावरुण के चमस को उठाते समय यह सूक्त पढ़ा जाता है (आ०श्रौ०सू०५।५।१४)

पहले तीन मंत्र षोडशी यज्ञ के तृतीय सवन में षोडशी शस्त्र में पढ़े जाते हैं (आ० श्रौ० सू० ६ । २ । ३)

(१) इन्द्र के घोड़े और रथ सभी सूर्य जैसे दर्शन वाले हैं ॥

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इमाधानाघृतस्नुवो हरीइहोपवक्षतः ।

इन्द्रंसुखतमेरथे ॥ २ ॥

इमाः	इमाः	ये
धानाः	धानाः	भुने हुए जौं
घृतऽस्नुवः	घृतस्नाविण्यः	घी में तर
हरी०	अश्वौ	दोनों घोड़े
इह	इह	यहां
उप	उप+	—
वक्षतः	उप+वक्षत, उपवहताम्	लावें
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
सुखऽतमे	सुखतमे	अत्यन्त सुखवाले में
रथे	रथे	रथ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

इमा घृतस्नाविण्यो धानाः (सन्ति) (इन्द्रस्य)अश्वा-विन्द्रं सुखतमे रथे (उपवेश्य) इहाऽऽनयताम् ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

ये घी में तर धानियां (रक्खी हैं) यहां इन्द्र को (उन के) दोनों घोडे अत्यन्त सुखवाले रथ में (बिठा कर) लावें ॥ २ ॥

घी में भीगी हुई धानियां (भुने जौ) इन्द्र के घोड़ों के लिये हैं जो अत्यन्त सुखके देने वाले रथ में बिठा कर हमारे प्यारे को हमारे पास लाते हैं ॥

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

इन्द्रंप्रातर्हवामह इन्द्रंप्रयत्यध्वरे । इन्द्रं-सोमस्यपीतये ॥ ३ ॥

इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
प्रातः	प्रातःकाले	प्रातः काल में
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
प्रऽयति	प्रवर्तमाने सति	प्रवर्तमान होने पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्वरे	यज्ञे	यज्ञ में
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
सोमस्य	सोमस्य	सोम के
पीतये	पीतये	पीने के लिये

संस्कृतार्थः ।

वयंप्रातरिन्द्रमाह्वयामः, यज्ञे प्रवर्तमानेसतीन्द्रम् (आह्वयामस्तथा) सोमपानार्थमिन्द्रम् (आह्वयामः) ॥ ३ ॥

भापार्थः ।

हम इन्द्र को प्रातःकाल में बुलाते हैं इन्द्र को यज्ञके प्रवर्तमान होने पर (और) इन्द्र को सोम-पान के लिये बुलाते हैं ॥ ३ ॥

सोम याग में प्रातःकाल में प्रायः सोम निचोड़ने मध्याह्न में सोम की आहूति देने और सायंकाल में सोम पीने का कर्म होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः ।

सुते हि त्वा हवामहे ॥ ४ ॥

उप	प्रति	प्रति
नः	अस्मदीयम्	हमारे
सुतम्	अभिषुतम् (सोमम्)	सोम को
आ	आ+	—
गहि	आ+गहि, आगच्छ	आओ
हरिऽभिः	अश्वैः	घोड़ों से
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
केशिऽभिः	केसरयुक्तैः	(लम्बे) वालों-वालों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुते	अभिषुते (सोमे)	सोम के निष्पीडन होने पर
हि	यस्मात्	क्योंकि
त्वा	त्वाम्	तुझ को
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं

संस्कृतार्थः ॥

हे इन्द्र ! केसरयुक्तैरश्वैरस्मदीयमभिषुतम् (सोमम्) प्रत्यागच्छ वयमभिषुते (सोमे) त्वामाह्वयामः ॥ ४ ॥

भाषार्थः ॥

हे इन्द्र लम्बे बालों वाले घोडों से हमारे सोम के प्रति आओ (हम) सोमरस के निष्पीडन होने पर आपको बुलाते हैं ॥ ४ ॥

लम्बे बालों वाले घोड़ों से युक्त रथ में चढ़ कर हमारे सखा इन्द्र हमारे घर सोम पीने को आवें ।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

सेमंनः स्तोममागह्युपेदंसवनंसुतम् ।

गौरोनतृषितःपिब ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः	वह
इमम्	इमम्	इस को
नः	अस्मदीयम्	हमारे
स्तोमम्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
आ	आ+	—
गहि	आ+गहि,आगच्छ	आओ
उप	प्रति	प्रति
इदम्	इदम्	इसको
सवनम्	सवनम्	सवन को
सुतम्	अभिषुतसोमयुक्तम्	निचोड़े हुए सोम से युक्त को
गौरः	गौरः (मृगः)	गौर (मृग)
न	इव	की न्याईं
तृषितः	तृषितः	प्यासा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पिब	पिब	पीओ

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र! स त्वमस्मदीयमिदं स्त्रोत्रम् (प्रति, तथा) अभिषुतसोमयुक्तमिदं सवनं प्रत्यागच्छ (आगत्य च) तृषितो मृग इव सोमं पिब ॥ ५ ॥

भाषार्थः

हे इन्द्र इस हमारे स्तोत्र के प्रति (और) सोम युक्त सवन के प्रति (आओ) और प्यासे मृग की न्याईं सोम को पीओ ॥ ५ ॥

हम कामना करते हैं कि हमारे सवन में आकर इन्द्रदेव सोम को ऐसे प्रेम से पीवें जैसे प्यासा मृग जल को पीता है ॥

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

इमेसोमासइन्दवः सुतासोअधिबर्हिषि ।
ताँइन्द्रसहसेपिब ॥ ६ ॥

इमे	इमे	ये
सोमासः	सोमाः	सोम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्दवः	परमशक्तियुक्ताः (इदिपरमैश्वर्ये)	परमशक्ति वाले
सुतासः	अभिषुताः	निचोडे हुए
अधि	उपरि	ऊपर
बर्हिषि	दर्भे	कुशा पर
तान्	तान्	उनको
इन्द्र	हे इन्द्र	हे इन्द्र
सहसे	बलार्थम्	बल के लिये
पिब	पिब	पीओ

संस्कृतार्थः ।

परमशक्तियुक्ता अभिषुता इमे सोमा बर्हिषउपरि (वर्तन्ते) हे इन्द्र तान् बलार्थं पिब ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

ये परमशक्ति वाले ! निचोड़े हुए सोम रस कुशा पर (रक्खे हैं) हे इन्द्र उन को बल के लिये पीओ ॥६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोम रस परम शक्तिजनक हैं। इसलिये हमारी कामना है कि हमारे मित्र इन्द्रदेव इनको पीकर बल युक्त हों।

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः। ८। ८। ८।

अयंतेस्तोमोअग्रियो हृदिस्पृगस्तु
शन्तमः। अथासोमंसुतंपिब ॥ ७ ॥

अयम्	अयम्	यह
ते	तव	तेरा
स्तोमः	स्तोमः	स्तोत्र
अग्रियः	श्रेष्ठः	श्रेष्ठ
हृदिऽस्पृक्	हृदयं स्पृशतीति-तथोक्तः	हृदय को स्पर्श करने वाला
अस्तु	अस्तु	हो
शम्ऽतमः	सुखतमः	अतिशय करके सुख का हेतु
अथ	अनन्तरम्	इस के अनन्तर
सोमम्	सोमम्	सोम को
सुतम्	अभिषुतम्	निचोडे हुए को
पिब	पिब	पीओ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्र ! अयं श्रेष्ठस्स्तोमस्तव हृदिस्पृक् सुखतमः (च) अस्तु,अनन्तरमभिषुतं सोमंपिब ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र यह श्रेष्ठ स्तोत्र आप के हृदय को स्पर्श करने वाला (और) अतिशय करके सुख का हेतु हो इस के अनन्तर आप निचोडे हुए सोम को पीओ ॥७॥

हमारा स्तोत्र इन्द्र के हृदय को छूने वाला और उनको सुख देने वाला तभी होसकता है कि हमारे हृदय में इस बात की परम उत्कण्ठा हो ॥

इन्द्रोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

विश्व॒मित्सव॑नंसु॒त मिन्द्रो॒मदा॑यगच्छति ।

वृ॒त्र॒हासोम॑पीतये ॥ ८ ॥

विश्वम्	सर्वम्	सब को
इत्	अपि	भी
सवनम्	सवनम्	सवन को
सुतम्	अभिषुत- सोमयुक्तम्	निचोडे हुए सोम से युक्त को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
मदाय	(सोमपान-जन्याय) हर्षाय	हर्ष के लिये
गच्छति	गच्छति	जाता है
वृत्रऽहा	शत्रुनाशकः	शत्रु को नाश-करने वाला
सोम-ऽपीतये	सोमपानाय	सोमपान के लिये

संस्कृतार्थः ।

शत्रुनाशक इन्द्रः सर्वमपि अभिषुतसोमयुक्तं सवनं (प्रति) सोमपानार्थं (तत्पानजन्य) हर्षाय (च) गच्छति ॥ ८ ॥

भाषार्थः ।

जहां कहीं सोमयुक्त सवन होता है वहां सर्वत्र सोमपीने के लिये और उस से उत्पन्न हर्ष के लिये शत्रुनाशक इन्द्र जाते हैं ॥ ८ ॥

जहां २ सोम निष्पीडन होता है वहां २ इन्द्र जाते हैं और अपने भक्तों के शत्रुओं का नाश करते हैं ॥

इन्द्रो देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

सेमन्नः काममापृण गोभिरश्वैः शत क्रतो स्तवामत्वास्वाध्यः ॥ ९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सः	सः (त्वम्)	वह (आप)
इमम्	इमम्	इस को
नः	अस्मदीयम्	हमारी
कामम्	कामम्	कामना को
आ	आ+	–
पृण	आ+पृण पूरय	– पूर्ण करो
गोभिः	गोभिः	गौओं से
अश्वैः	अश्वैः	घोड़ों से
शतऽक्रतो॰	हे बहुबल	हे बहुत बल वाले
स्तवाम	स्तवाम	हम स्तुति करें
त्वा	त्वाम्	आप को
सुऽआध्यः	सुष्ठु- ध्यान युक्ताः	अच्छी तरह ध्यान से युक्त

संस्कृतार्थः ।

हे बहुबल सः (त्वम्) अस्मदीयमिमं कामं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोभिरश्वैः (च) पूरय सुष्ठुध्यानयुक्ताः (वयम्) त्वां स्तवाम ॥ ९ ॥

भाषार्थः

हे बहुत बल वाले वह आप इस हमारी कामना को गौ और घोड़ों से पूर्ण करो (जिससे) हम अच्छी तरह ध्यान से युक्त हुए २ आप की स्तुति करें ॥ ९ ॥

इन्द्र हमें इतने गौ और घोड़े प्रदान करें कि हमारी तृष्णा की पूर्ति हो जावे, और हमारा ध्यान गौ और घोड़ों से निवृत होकर इन्द्र में लगे ॥

॥ इति षोड़शं सूक्तम् ॥

ऋ० मं० १ सू० १७ ।

इन्द्रावरुणौ देवते मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः ८ । ८ । ८ ।

इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरवआवृणे ।
तानोमृळातईदृशे ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रावरुण योः	इन्द्रावरुणयोः	इन्द्र और वरुण की
अहम्	अहम्	मैं
सम्ऽराजोः	सम्यग्राज्योपेतयोः	पूर्ण रूप से राज्य वालों की
अवः	रक्षणम्	रक्षा को
आ	आ+	—
वृणे	आ+वृणे प्रार्थये	प्रार्थना करता हूं
ता	तौ	वे
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
मृळातः	कृपां कुरुताम्	कृपा करें
ईदृशे	ईदृशे (अवसरे)	(ऐसे अवसर) पर

संस्कृतार्थः ।

अहं सम्यग्राज्योपेतयोरिन्द्रावरुणयोरक्षणं प्रार्थये तौ (देवौ) ईदृशे (अवसरे)अस्मभ्यं कृपां कुरुताम् ॥१॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः।

मैं पूर्ण रूप से राजा इन्द्र और वरुण से रक्षा की प्रार्थना करता हूं वे ऐसे (अवसर) पर हम पर कृपा करें।

इन्द्र और वरुण दोनों मिल कर परमात्मा के साम्राज्य और बलके द्योतक हैं यह देवता महान् हैं, दोनों मिल कर असन्त महान् हैं दोनों वे ऐसे संकट के अवसर पर हम पर कृपा करें।

संकट में प्रार्थना करने से अवश्य सहायता मिलती है।

इन्द्रावरुणौ देवतेविराड्गायत्रीछन्दः। ७।८।७।

गन्तारा॒हि॒स्थोवसे॒ हव॒विप्र॑स्यमावतः।

ध॒र्तारा॑चर्षणी॒नाम्॥ २॥

गन्तारा	गन्तारौ	जाने वाले
हि	खलु	अवश्य
स्थः	भवथः	हो
अवसे	रक्षार्थम्	रक्षा के लिये
हवम्	आह्वानम्	आह्वान को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विप्रस्य	ब्राह्मणस्य	ब्राह्मण के
माऽवतः	मद्विधस्य	मेरे जैसे के
धतारा	धर्तारौ	धारण करने वाले
चर्षणी-नाम्	मनुष्याणाम्	मनुष्यों के

संस्कृतार्थः ।

मनुष्याणां धर्तारौ (युवां) मद्विधस्य ब्राह्मणस्याह्वानं (प्रति) रक्षार्थं गन्तारौ भवथः खलु ॥ २ ॥

भाषार्थः

मनुष्यों के धारण करने वाले (आप) मेरे जैसे ब्राह्मणके बुलाने पर रक्षाके लिये अवश्य जाते हो ॥२॥

इस में तनिक भी सन्देह नहीं है कि हर किसी के बुलाने से देवता चले आते हैं चाहे बुलाने वाला भूखा ब्राह्मण हो चाहे चक्रवर्ती राजा इसलिये देवताओं को सहायता के लिये हर समय बुलाना चाहिये संकट में और विना संकट के भी, सुख में भी जो देवता को नहीं भूलते उनको संकट ही नहीं प्राप्त होता ॥

इन्द्रावरुणौ देवते गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

अनुकामंतर्पयेथा मिन्द्रावरुणरायआ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तावांनेदिंष्ठमीमहे ॥ ३ ॥

अनुऽकामम्	इच्छानुसारम्	इच्छापूर्वक
तर्पयेथाम्	तर्पयेथाम्	तृप्तकरो
इन्द्रांवरुणा	हे इन्द्रावरुणौ	हे इन्द्र और वरुण
रायः	धनेन (तृतीयार्थेषष्ठी)	धन से
आ	(पूरणः)	—
ता	तौ	उनको
वाम्	युवाम्	आप दोनों को
नेदिंष्ठम्	अत्यन्तसमीपे (वर्तमानौ)	अत्यन्तनिकट वर्तियों को
ईमहे	कामयामहे	हम चाहते हैं

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्रावरुणौ (अस्मान्) इच्छानुसारं धनेन तर्पयेथां तौ युवामत्यन्तसमीपे (वर्तमानौ) कामयामहे ।३।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे इन्द्र और वरुण (हमको) इच्छापूर्वक धन से तृप्त करो (हम) आप दोनों को अत्यन्त निकटवर्ती चाहते हैं ॥ ३ ॥

इस समय तो धन की अभिलाषा हमारे अत्यन्त निकटवर्ति हो रही है इस को इन्द्र और वरुण पूर्ण तरह से तृप्त कर देवें। इस आशा की तृप्ति हम इसलिये चाहते हैं कि हम अपने हृदय में धनकी जगह इन्द्र और वरुण को देना चाहते हैं यह तभी हो सकता है कि धन से हमारी पूर्ण रीति से तृप्ति हो जावे ॥

इन्द्रावरुणौ देवतं पादनिचृच्छन्दः ७।७।७।

यु॒वाकु॒ हि शची॑नां यु॒वाकु॑ सुम॒ती॒नाम् ।
भू॒याम॑ वाज॒दाव्ना॑म् ॥ ४ ॥

यु॒वाकु॑	युवां कामयमानाः (ऋ०३। ५८।७)	आपकी कामना करने वाले
हि	खलु	निश्चय करके
शची॑नाम्	बलानाम् (अर्थम्)	बलों के लिये
यु॒वाकु॑	युवांकामयमानाः	आपकी कामना करने वाले
सु॒ऽम॒ती॒नाम्	सुमती नाम् (अर्थम्)	सुमतीयों के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाम्		
भूयाम	भवेम	हम हों
वा॒ज॒ऽदाव्- नाम्	अन्नप्रदानाम् (मध्ये)	अन्न देनेवालों की (गणना में)

मंस्कृतार्थः ।

बलानामर्थ युवां कामयमानाः सुमतीनाम् (च) अर्थ युवा कामयमानाः (वयम्) अन्नप्रदानाम (मध्ये) भवेम ॥ ४ ॥

भापार्थः

बलोंके लिये आपकी कामना करने वाले (और) सुमतियों के लिये आपकी कामना करने वाले हम अन्न देने वालों की (गणना में) हों ॥ ४ ॥

इन्द्र और वरुण की कृपा से वल, सुमति (Right thought) और दान शक्ति यह तीनों हम में हों।

इन्द्रावरुणौदेवते पादनिचृच्छन्दः । ७ । ७ । ७ ।

इन्द्रः॑ सहस्र॒दाव्नां॒ वरु॑ण॒ः शंस्या॑नाम् ।
क्रतु॑र्भवत्यु॒क्थ्यः॑ ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
सहस्र- दाव्नाम्	सहस्रसंख्याकधन प्रदानाम्	सहस्रों धन देने वालों के
वरुणः	वरुणः	वरुण
शंस्यानाम्	स्तुत्यानाम् (मध्ये)	स्तुतियोग्यों के (बीच में)
क्रतुः	बल-(रूपः)	बल (रूप)
भवति	भवति	है
उक्थ्यः	स्तुत्यः	स्तुति के योग्य

संस्कृतार्थः।

सहस्रसंख्याकधनप्रदानाम् (मध्ये) इन्द्रः (एव) बलरूपः स्तुत्यानाम् (च मध्ये) वरुणः (एव) स्तुत्योभवति ॥ ५ ॥

भापार्थः।

सहस्रों धन देने वालों के (बीच में) इन्द्र ही बल (रूप) है और स्तुति के योग्यों में वरुण (ही) स्तुत्य है ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहस्रों धन देनेवाले जो बलवान् राजा महाराजा हैं। उनके बल रूप इन्द्र ही हैं उनमें अपना कुछ नहीं है। धन भी इन्द्र का है और दान शक्ति भी इन्द्र की है।

स्तुति के योग्य जो पुरुष हैं उनमें जो स्तुति की योग्यता है वह वरुण की है। उन पुरुषों की स्वयं योग्यता कुछ नहीं है इस लिये सारी महिमा इन्द्र और वरुण की ही है।

इन्द्रावरुणौदेवते गायत्रीछन्दः। ८। ८। ८।

तयोरिदवसावयं सनेमनिचधीमहि ।
स्यादुतप्ररेचनम् ॥ ६ ॥

तयोः	तयोः	उन दोनों की
इत्	एव	निश्चय करके
अवसा	रक्षणेन	रक्षा से
वयम्	वयम्	हम
सनेम	लभेम	प्राप्त करें
नि	नि+	—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और
धीमहि	नि+धीमहि निधि रूपेणस्थापयामः	निधिरूप से स्थापन करें
स्यात्	स्यात्	हो
उत	अपिच	और
प्ररेचनम्	अतिरेकः	बहुतायत (जो निधि में न समा सके)

संस्कृतार्थः ।

तयोरेव रक्षणेन वयं (धनम्) लभेम निधिरूपेण (च) स्थापयामः, अपिच (धनस्य) अतिरेकःस्यात्॥६॥

संस्कृतार्थः ।

उन्हीं की रक्षा से हम धनको पावें (और) निधि रूप से रक्खें और (उस धन की इतनी) बहुतायत हो (कि निधि में भी न समावे) ॥ ६ ॥

जो धन हम इन्द्र और वरुण की रक्षा से प्राप्त करें वह इतना हो कि हम निधि को भर लेवें और फिर भी बचा रहे। वह धन हमारी आवश्यकताओं से बहुत अधिक हो ॥

इन्द्रावरुणौदेवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

इन्द्रावरुणवामहं हुवेचित्रायराधसे ।

पुस्तकालय NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मान्त्सुजिग्युषंस्कृतम् ॥ ७ ॥

इन्द्रा-वरुणा	हे इन्द्रावरुणौ	हे इन्द्र (और) वरुण
वाम्	युवाम्	आप दोनों को
अहम्	अहम्	मैं
हुवे	आह्वयामि	बुलाता हूं
चित्राय	विविधाय	नाना प्रकार के लिये
राधसे	धनाय	धन के लिये
अस्मान्	अस्मान्	हम को
सु	सु+	—
जिग्युषः	सु+जिग्युषः, सुष्ठु जययुक्तान्	भली प्रकार जय युक्तों को
कृतम्	कुरुतम्	करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

च	च	और
धीमहि	नि+धीमहि निधि रूपेणस्थापयामः	निधिरूप से स्थापन करें
स्यात्	स्यात्	हो
उत	अपिच	और
...रेचनम्	अतिरेकः	बहुतायत (जोनिधि में न समा सके)

संस्कृतार्थः ।

तयोरेव रक्षणेन वयं (धनम्) लभेम निधिरूपेण (च) स्थापयामः, अपिच (धनस्य) अतिरेकःस्यात्॥६॥

संस्कृतार्थः ।

उन्हीं की रक्षा से हम धनको पावें (और) निधि रूप से रक्खें और (उस धन की इतनी) बहुतायत हो (कि निधि में भी न समावे) ॥ ६ ॥

जो धन हम इन्द्र और वरुण की रक्षा से प्राप्त करें वह इतना हो कि हम निधि को भर लेवें और फिर भी बचा रहे। वह धन हमारी आवश्यकताओं से बहुत अधिक हो ॥

इन्द्रावरुणौदेवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

इन्द्रावरुणवामहं हुवेचित्रायराधसे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्मान्त्सुजिग्युषंस्कृतम् ॥ ७ ॥

इन्द्रावरुणा	हे इन्द्रावरुणौ	हे इन्द्र (और) वरुण
वाम्	युवाम्	आप दोनों को
अहम्	अहम्	मैं
हुवे	आह्वयामि	बुलाता हूं
चित्राय	विविधाय	नाना प्रकार के लिये
राधसे	धनाय	धन के लिये
अस्मान्	अस्मान्	हम को
सु	सु+	–
जिग्युषः	सु+जिग्युषः, सुष्ठु जययुक्तान्	भली प्रकार जय युक्तों को
कृतम्	कुरुतम्	करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्रावरुणौ ! युवामहं विविधाय धनायाऽऽह्वा यामि युवामस्मान् सुष्ठुजययुक्तान् कुरुतम् ॥ ७ ॥

भाषार्थः

हे इन्द्र(और)वरुण मैं आप को नानाप्रकार के धन के लिये बुलाता हूं (आप) हमको भली प्रकार जय युक्त करो ॥ ७ ॥

नाना प्रकार के धन होने से ही हम विजयशाली होसक्ते हैं। इसलिये धन के लिये प्रार्थना और उद्योग करना अत्यावश्यक है।

इन्द्रावरुणौदेवते गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८

इन्द्रावरुणनूनुवां सिषासन्तीषुधीष्वा ।
अस्मभ्यंशर्मयच्छतम् ॥ ८ ॥

इन्द्रावरुणा	हे इन्द्रावरुणौ	हे इन्द्र(और)वरुण
नु	शीघ्रम्	शीघ्र
नु	शीघ्रम्	शीघ्र
वाम्	युवाम्	आप दोनों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिसांसन्तीषु	सनितुं कामयितुमिच्छन्तीषु	प्रेम की इच्छावालियों पर
धीषु	बुद्धिषु	बुद्धियों पर
आ	आ+	—
अस्मभ्यंम्	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
शर्म	शरणम्	शरण को
यच्छतम्	आ+यच्छतम् समन्ताद्दत्तम्	पूरी तरह से दो

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्रा वरुणौ ! युवां कामयितु मिच्छन्तीषु बुद्धिषु (सतीषु) अस्मभ्यमतिशीघ्रं शरणं समन्ताद्दत्तम् ॥८॥

भाषार्थः ।

हे इन्द्र (और) वरुण आप दोनों प्रेम करने की इच्छा वाली बुद्धियों के होने पर हमको बहुत शीघ्र पूरी तरह से शरण दो ॥ ८ ॥

जब हम देवताओं के प्रति कामना करने वाली बुद्धियों (Loving thoughts) वाले होजाते हैं तौ वे हमें बहुत शीघ्र पूरी तरह से शरण प्रदान करते हैं ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रावरुणौदेवते गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८

प्रवामश्नोतुसुष्टुति रिन्द्रावरुणयांहुवे ।

यामृधाथेसधस्तुतिम् ॥ ९ ॥

प्र	प्रकर्षेण	अच्छी प्रकार
वाम्	युवाम्	आप दोनों को
अश्नोतु	प्राप्नोतु	प्राप्त हो
सुऽस्तुतिः	शोभनस्तुतिः	सुन्दर स्तुति
इन्द्रावरुणा	हे इन्द्रावरुणौ	हे इन्द्र(और)वरुण
याम्	याम्	जिसको
हुवे	अर्पयामि	अर्पण करता हूं
याम्	याम्	जिसको
ऋधाथे०	चरितार्थं कुरुथः	चरितार्थ करते हो
सधऽ स्तुतिम्	साहित्येन क्रियमाणस्तुतिम्	एक साथ की हुई स्तुति को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हे इन्द्रावरुणौ ! यां शोभनस्तुतिम् (अहम्)अर्पयामि यां साहित्येन क्रियमाणाम् (च) स्तुतिम् (युवाम्) चरितार्थां कुरुथः सा स्तुतिः युवां प्रकर्षेण प्राप्नोतु ॥ ९ ॥

भाषार्थः।

हे इन्द्र (और) वरुण ! जिस सुन्दर स्तुति को मैं आप के लिये अर्पण करता हूं और जिस एक साथ की हुई स्तुति को (आप) चरितार्थ करते हो वह स्तुति आप को अच्छी प्रकार प्राप्त हो ॥ ९ ॥

इन्द्र और वरुण दोनों की एक साथ की हुई स्तुति को जिस को वह चरितार्थ (Successful) करते हैं। और जो सुन्दर स्तुति मैं उनके लिये अर्पण करता हूं। ऐसी स्तुति उनको अवश्य प्राप्त हो "हुवे" शब्द कहने का यह प्रयोजन है कि जिस प्रकार हम द्रव्य का होम करते हैं उसी प्रकार स्तुति की भी भेट देवता को चढ़ा सक्ते हैं ॥

इति सप्तदशं सूक्तम्।

ऋ०मं० ०१ सू० १८।

ब्रह्मणस्पतिर्देवता मेधातिथिर्ऋषिर्निचृद्गायत्री-छन्दः ७।८।८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमानंस्वरंणं कृणुहिब्रंह्मणस्पते । कक्षी-वन्तंयऔशिजः ॥ १ ॥

सोमानम्	(सोमस्य) अभिषोतारम्	(सोमके) निचोडने वाले को
स्वरणम्	प्रकाशमानम्	प्रकाशमान को
कृणुहि	कुरु	करो
ब्रह्मणः	हे ब्रह्मणः+पते	हे ब्रह्मणस्पति
पते	+पते	—
कक्षीवन्तम्	कक्षीवन्तम् (इव) (यास्कः)	कक्षीवान् की न्याईं
यः	यः	जो
औशिजः	उशिजः पुत्रः	उशिज् का पुत्र है

संस्कृतार्थः ।

हे ब्रह्मणस्पते ! (सोमस्य)अभिषोतारम्(यजमानम्) कक्षीवन्तम् (ऋषिमिव) प्रकाशमानं कुरु यः (कक्षीवान्) उशिजः पुत्रः (अस्ति) ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे ब्रह्मणस्पति ! (सोम) निचोड़ने वाले (यजमान) को प्रकाशमान करो जिस प्रकार (आपने) उशिज के पुत्र कक्षीवान् ऋषि को (किया था) ॥ १ ॥

विनियोग—पहले तीन मंत्र सायं अग्निहोत्र के उपस्थान में पढ़े जाते हैं (श० ब्रा० २ । ३ । ४ । ३५) यजु० ३ । २८, २९, ३० ।

कक्षीवान् ऋषि आङ्गिरा गोती पज्रके वंशमें हुए हैं—यह उशिज नामा दासी के पुत्रथे और कई सूक्तों के द्रष्टा हुए (देखो मं० १ सू० ११६ से १२६ तक मं०९ । सू०७४) यह बड़े सोम के पीने वाले और महा प्रतापी थे। बड़ी अवस्था में इन्द्र की भक्ति के प्रभावसे इनको वृचया नामा युवति स्त्री प्राप्त हुई थी—और इनके घर में सहस्रों गौएं घोड़े रथ और बहुत सुवर्ण था इन्हों ने बहुत सोमयज्ञ कराए, और यद्यपि दासी के पुत्र थे परन्तु सोम के प्रभाव से ऐसा प्रताप और तेज प्राप्त कर लिया था—कि ऋषि की प्रार्थना है कि वेदके पालक अग्निदेव सब सोमपान करने वालों को ऐसा तेज देकर प्रकाश युक्त करें ॥

अग्नि परमात्मा के ब्रह्मभाव के प्रकाशक होने से (देखो पृ० ३५) ब्रह्मणस्पति अग्नि का ही नाम है और देवों के दूतपन और हविः प्रापणादि गुणोंसे अतिरिक्त जो देवस्तुति और पूजाके भाव के रक्षक होने का गुण अग्नि में है—उसको ब्रह्मणस्पति शब्द सूचन करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सो॒मानं॒स्वर॑णं कृ॒णु॒हिब्र॑ह्मणस्पते । क॒क्षी-
व॑न्तं॒यऔ॑शि॒जः ॥ १ ॥

सो॒मान॑म्	(सोमस्य) अभिषोतारम्	(सोमके) निचोडने वाले को
स्वर॑णम्	प्रकाशमानम्	प्रकाशमान को
कृ॒णु॒हि	कुरु	करो
ब्र॒ह्म॒ण॒ः	हे ब्रह्मणः+पते	हे ब्रह्मणस्पति
प॒ते॒	+पते	—
{ क॒क्षीव॑- न्तम्	कक्षीवन्तम् (इव) (यास्कः)	कक्षीवान् की न्याईं
यः	यः	जो
औ॒शि॒जः	उशिजः पुत्रः	उशिज् का पुत्र है

संस्कृतार्थः ।

हे ब्रह्मणस्पते ! (सोमस्य)अभिषोतारम्(यजमानम्) कक्षीवन्तम् (ऋषिमिव) प्रकाशमानं कुरु यः (कक्षीवान्) उशिजः पुत्रः (अस्ति) ॥ १ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे ब्रह्मणस्पति ! (सोम) निचोड़ने वाले (यजमान) को प्रकाशमान करो जिस प्रकार (आपने) उशिज के पुत्र कक्षीवान् ऋषि को (किया था) ॥ १ ॥

विनियोग—पहले तीन मंत्र सायं अग्निहोत्र के उपस्थान में पढ़े जाते हैं (श० ब्रा० २ । ३ । ४ । ३५) यजु० ३ । २८, २९, ३० ।

कक्षीवान् ऋषि आङ्गिरा गोती पज्रके वंशमें हुए हैं—यह उशिज नामा दासी के पुत्रथे और कई सूक्तों के द्रष्टा हुए (देखो मं० १ सू० ११६ से १२६ तक मं०९ । सू०७४) यह बड़े सोम के पीने वाले और महा प्रतापी थे। बड़ी अवस्था में इन्द्र की भक्ति के प्रभावसे इनको वृचया नामा युवति स्त्री प्राप्त हुई थी—और इनके घर में सहस्रों गौएं घोड़े रथ और बहुत सुवर्ण था इन्हों ने बहुत सोमयज्ञ कराए, और यद्यपि दासी के पुत्र थे परन्तु सोम के प्रभाव से ऐसा प्रताप और तेज प्राप्त कर लिया था–कि ऋषि की प्रार्थना है कि वेदके पालक अग्निदेव सब सोमपान करने वालों को ऐसा तेज देकर प्रकाश युक्त करें ॥

अग्नि परमात्मा के ब्रह्मभाव के प्रकाशक होने से (देखो पृ० ३५) ब्रह्मणस्पति अग्नि का ही नाम है और देवों के दूतपन और हविः प्रापणादि गुणोंसे अतिरिक्त जो देवस्तुति और पूजाके भाव के रक्षक होने का गुण अग्नि में है–उसको ब्रह्मणस्पति शब्द सूचन करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मणस्पतिर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

योरेवान्योअमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः ।
सनःसिषक्तुयस्तुरः ॥ २ ॥

यः	यः	जो
रेवान्	धनवान्	धनवान्
यः	यः	जो
अमीवऽहा	रोगाणां हन्ता	रोगों को दूर करने वाला
वसुऽवित्	धनस्यज्ञाता	धन के जानने वाला
पुष्टि ऽवर्धनः	पुष्टेर्वर्धयिता	पुष्टि के बढ़ाने वाला
सः	सः	वह
नः	अस्मान्	हम को
सिसक्तु	सेवताम्	सेवन करे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः	यः	जो
तुरः	शीघ्रकारी	शीघ्रकारी

संस्कृतार्थः।

यः (ब्रह्मणस्पतिः) धनवान् यो रोगाणां हन्ता धनस्य ज्ञाता पुष्टेर्वर्धयिता यः (च) शीघ्रकारी सोऽस्मान्सेवताम् ॥ २ ॥

भाषार्थः।

जो (ब्रह्मणस्पति) धनवान् (हैं) जो रोगों के दूर करने वाले, धन के जानने वाले, और पुष्टि के बढ़ाने वाले (हैं) जो शीघ्रकारी (हैं) वह हम को सेवन करें ॥ २ ॥

सेवन करने से तात्पर्य्य यह है कि ब्रह्मणस्पति हमारे साथ होजावें और हम को कदापि त्याग न करें। वेद मंत्रों द्वारा स्तुति करने से मनुष्य धनवान् रोगरहित धन को जानने वाला पुष्टि से युक्त और शीघ्र काम करने के स्वभाव वाला बनजाता है—क्योंकि स्तुति के पालक ब्रह्मणस्पति इन सब गुणों से युक्त हैं ॥

धन को जानना भी बड़ा गुण है हमारे चारों ओर ओषधि खनिज जलसमूह इत्यादि अनेक रूपमें धन बिखरा हुआ है—इस धन को जाननेवाले अर्थात् ओषधि विद्या प्रवीण (Botanist) धातु शास्त्राभिज्ञ (Minerologist) और विद्युत् क्रिया कुशल (Electrical Engineer) इत्यादि उस धन से लाभ उठाते हैं—न जानने वाले कुछ लाभ नहीं उठा सक्ते ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ब्रह्मणस्पतिर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य।
रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥ ३ ॥

मा	न	न
नः	अस्मान्	हम को
शंसः	परिवादः	आक्षेप
अररुषः	(हविषः) अदातुः (रादाने क्वसुः)	नास्तिक का
धूर्तिः	हिंसा (धुर्वी हिंसायाम् भावेक्तिन्)	हिंसा
प्रणक्	प्रणश्यतु (णश अदर्शने लोडर्थे लुङ्)	नष्ट हो
मर्त्यस्य	मर्त्यस्य	मरण शील की
रक्ष	रक्ष	रक्षा करो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्मान्	हम को
ब्रह्मणः	हे ब्रह्मणः+पते	हे ब्रह्मणस्पति
पते	+पते	

संस्कृतार्थः ।

हविरदातुः (नास्तिकस्य) परिवादोऽस्मान्न (प्राप्नोतु) मर्त्यस्य हिंसा (च) प्रणश्यतु हे ब्रह्मणस्पते ! अस्मान् रक्ष ॥ ३ ॥

भाषार्थः

नास्तिक का आक्षेप हमको न (प्राप्त हो) और मरणशील प्राणी की हिंसा नष्ट हो हे वेद के पालक ! हमारी रक्षा करो ॥ ३ ॥

नास्तिक का आक्षेप सदा पीड़ा जनक होता है ऐसे ही मर्त्य की हिंसा। इन से हम आस्तिकों को ब्रह्मणस्पति बचावें–मर्त्य शब्द का प्रयोग इसलिये है-कि अमर्त्य जो देवता हैं वह हिंसा से शून्य हैं-वह सदा सब मनुष्यों का कल्याण करते हैं-हिंसा रहित मनुष्य भी देव तुल्य होता है।

इन्द्रसोमब्रह्मणस्पतयो देवता गायत्रीछन्दः ८। ८। ८।

सघावीरोनरिष्यति यमिन्द्रोब्रह्मणस्पतिः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमो॑ हि॒नोति॒ मर्त्य॑म् ॥ ४ ॥

सः	सः	वह
घ॒	खलु	निश्चय करके
वी॒रः	वीरः	वीर
न	न	नहीं
रि॒ष्य॒ति॒	व्यथते (रिषहिंसायाम्)	पीडित होता है
यम्	यम्	जिस को
इन्द्रः॑	इन्द्रः	इन्द्र
ब्र॒ह्म॑णः	ब्रह्मणः+पतिः	ब्रह्मणस्पति
पति॑ः	+पतिः	—
सोमः॑	सोमः	सोम
हि॒नोति॑	प्रेरयति(हि गतौ, अन्तर्भावित-ण्यर्थः)	—
मर्त्य॑म्	मर्त्यम्	मनुष्य को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

यं मर्त्य मिन्द्र सोम ब्रह्मणस्पतयः प्रेरयन्ति स वीरो न व्यथते खलु ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

जिस मनुष्य को इन्द्र, सोम (और) ब्रह्मणस्पति, प्रेरण करते हैं वह वीर कभी पीडित नहीं होता ॥ ४ ॥

जब मनुष्य अपनी इच्छा को देवताओं के अधीन कर देता है तो उसको देवता कल्याण की ओर प्रेरण करते हैं-यह जानना बहुत आवश्यक है कि अपनी इच्छा को देवताओं से अतिरिक्त किसी और व्यक्ति जैसे योगी सिद्ध महात्मा अपरोक्ष आत्माएं इत्यादि के अधीन कदापि नहीं करना चाहिये-क्योंकि इन सब में मनुष्य गन्ध है चाहे सशरीरहों चाहे शरीर रहित, देवताओं की प्रणीति में मनुष्य अपने को निःशंक होकर डाल सक्ता है ।

सोम परमात्मा की वह शक्ति है जो सोम वल्ली का रसपीने से भक्त में वीरता,निर्भयता,जयशीलता, शीघ्रकारित्व, प्रमुदिता,पवित्रता इत्यादि रूप में प्रादुर्भूत होती है ॥

इन्द्रसोमदक्षिणाब्रह्मणस्पतयोदेवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८

त्वन्तंब्र॑ह्मणस्पते सोम॒इन्द्र॑श्च॒मर्त्य॑म् ।

दक्षि॑णापा॒त्वंह॑सः ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्वम्	त्वम्	तू
तम्	तम्	उस को
ब्रह्मणः	हे ब्रह्मणः +पते	हे ब्रह्मणस्पति
पते	+पते	—
सोमः	सोमः	सोम
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
च	च	और
मर्त्यम्	मर्त्यम्	मनुष्य को
दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा
पातु	पातु	रक्षा करे
अंहसः	पापात्	पाप से

संस्कृतार्थः ।

हे ब्रह्मणस्पते ! त्वं तं मर्त्यं पापात् (पाहि) सोमेन्द्र दक्षिणाश्चपान्तु ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे ब्रह्मणस्पति ! आप और सोम, इन्द्र, दक्षिणा, उस मनुष्य को पाप से बचाओ ॥ ५ ॥

जो मनुष्य देवपरायण होजाता है-उसको ब्रह्मणस्पति रूप से इन्द्र सोम, और जो दक्षिणा वह यज्ञ में देता है यह सब पाप से रक्षा करते हैं पाप से बचना वड़ा कठिन है परन्तु देव प्रणीत होने से शनैः२ पाप क्षीण होजाते हैं ऋत के अनुकूल चलने का सहज उपाय यही है इसी उपाय को बतलाने की (पृ॰ ७१ की पंक्ति २२ में) प्रतिज्ञा की थी ।

शुद्ध निष्पाप केवल देवता हैं-मनुष्य जितना कम पाप करता है उतना ही देवताओं के समीप पहुंचता जाता है पापों से निर्मुक्त होने के लिये सदा देवताओं से प्रार्थना करने की आवश्यकता है ।

सदसस्पतिर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम् । सनिंमेधामयासिषम् ॥ ६ ॥

सदसः	सभायाः	सभा के
पतिम्	पालकम्	पालने वाले को
अद्भुतम्	आश्चर्यरूपम्	आश्चर्यरूप को
प्रियम्	प्रियम्	प्यारे को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र के
काम्यम्	काम्यम्	इष्ट (मित्र) को
सनिम्	धनम् (ऋ० ६।६१।६)	धन को
मेधाम्	मेधाम्	मेधा को
अयासिषम्	प्राप्तवानस्मि (या प्रापणे)	प्राप्त हुआ हूं

संस्कृतार्थः।

(अहम्) आश्चर्य्यरूपं प्रियमिन्द्रस्य काम्यं सभापतिम् (अग्निदेवम्) धनं मेधाम् (च लब्धुम्) प्राप्तवानस्मि ॥ ६ ॥

भाषार्थः।

मैं आश्चर्यरूप प्यारे इन्द्र के इष्ट मित्र और सभा के पालक (अग्नि देव) को धन और बुद्धि के लिये प्राप्त हुआ हूं ॥ ६ ॥

आर्य्यों के सभापति अग्नि हैं-इसीलिये सभा में सभ्य अग्नि का स्थापन किया जाता है सभा के पति अग्नि देव अद्भुत रूप हैं हमारे प्रिय हैं, इन्द्र के प्रियमित्र हैं,इन्द्र और अग्नि दोनों को ऋ०१।२१।५ में " सभापती " कहा है। अग्नि, सभा के ब्रह्म बल के रक्षक और इन्द्र, क्षत्र बल के रक्षक हैं वा सभापति अग्नि दोनों बलों के रक्षक हैं जैसे श०ब्र०६।६।३।१५में पढ़ा है"अग्निर्ब्रह्म च क्षत्रं च"(यह मंत्र सर्वमेध यज्ञ के सातवें दिन आप्तोर्याम संज्ञक सर्वहोम के मन्त्रों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से एक है (देखो यजुः ३२ । १३) गृह्य अग्नि के उपस्थान में भी यह मन्त्र पढ़ा जाता है) ॥

सदसस्पतिर्देवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

यस्मा॑दृ॒तेन॒सिध्य॑ति य॒ज्ञोवि॑प॒श्चित॑श्च॒न

सधीनां॑योग॑मिन्वति ॥ ७ ॥

यस्मा॑त्	यस्मात्	जिस से
ऋ॒ते	ऋते	विना
न	न	नहीं
सिध्य॑ति	सिध्यति	सिद्ध होता है
य॒ज्ञः	यज्ञः	यज्ञ
वि॒प॒ःऽचित॑ः	विदुषः	विद्वान् का
च॒न	अपि	भी
सः	सः	वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu .

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धीनाम्	ध्यानानाम्	ध्यानों के
योगम्	योगम्	मेल को
इन्वति	प्रेरयति	प्रेरण करता है

संस्कृतार्थः ।

यस्माद्दृते विदुषोऽपि यज्ञो न सिध्यति सः (सभापतिरग्निदेवः) ध्यानानां योगं प्रेरयति ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

जिस के बिना विद्वान् का भी यज्ञ नहीं सिद्ध होता वह (सभापति अग्निदेव ही) ध्यानों के मेल को प्रेरण करते हैं ॥ ७ ॥

बुद्धिमान् पुरुष का भी यज्ञ बिना सभापति अग्निके सिद्ध नहीं होता क्योंकि यज्ञ के सभासद अर्थात् ऋत्विज् यजमानादि सब के ध्यानों को सभापति अग्नि ही एक ओर प्रेरण कर सकते हैं यदि किसी का ध्यान कहीं हो और किसी का कहीं तो यज्ञ कदापि सिद्ध नहीं हो सकता चाहे यजमान कैसा ही बुद्धिमान् हो ।

सदसस्पतिर्देवता गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

आदृध्नोतिहविष्कृतिं प्राञ्चं-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कृणोत्यध्वरम् । होत्रा॑दे॒वेषु॑गच्छति ॥८॥

आत्	अनन्तरम्	इस से पीछे
ऋ॒ध्नो॒ति॒	समर्द्धयति	समृद्ध करता है
ह॒विःऽकृ॑तिम्	हविष्क्रियाम्	हवि के कर्म को
प्राञ्चं॑म्	अग्रगम्	आगे बढ़ने वाले को
कृ॒णो॒ति॒	करोति (कृविकरणे)	करता है
अ॒ध्व॒रम्	यज्ञम्	यज्ञ को
होत्रा॑	घोषः(निघं० १।११)	पुकार
दे॒वेषु॑	देवेषु	देवताओं में
ग॒च्छ॒ति॒	गच्छति	पहुंचती है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

तत्पश्चात् (सभापतिरग्निः) हविष्क्रियां समर्द्धयति यज्ञमग्रगं करोति (सभासदाञ्च) घोषो देवेषु गच्छतिं ॥ ८ ॥

भाषार्थः

फिर (सभापतिअग्निदेव) हवि को समृद्ध करते हैं यज्ञ को आगे बढाते हैं और (सभासदों की) पुकार देवताओं को पहुंचती है ॥ ८ ॥

जब अग्नि की प्रेरणा से ऋत्विज् यजमानादि सब सभासदों का ध्यान एक ओर होता है तब सभापतिअग्नि हविरूपी कर्मको समृद्ध करते हैं यज्ञ को आगे बढ़ाते हैं और तभी सभासदों की पुकार देवताओं को पहुंचती है।

नराशंसोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

नराशंसंसुधृष्टम मपश्यंसप्रथस्तमम् ।
दिवोनसद्ममखसम् ॥ ९ ॥

नराशंसम्	नरैःप्रशंसितम् (अग्निम्)	मनुष्यों से स्तुति किये गए (अग्नि) को
सुऽधृष्टमम्	अतिधार्ष्ट्ययुक्तम्	अतिप्रगल्भ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपंश्यम्	अपश्यम्	मैंने देखा है
सप्रथंःऽतमम्	अतिशयेन प्रख्यातम्	अतिविख्यात को
दिवः	द्युलोकात्	द्युलोक से
न	इव	की न्याईं
सद्मंऽमखसम्	सद्मनि गृहे मखः पूजनं यस्य तम्	घर में पूजे जानेवाले को

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) अतिधार्ष्ट्ययुक्तमतिशयेन प्रख्यातं गृहे पूज्यं नरैः प्रशंसितम्(अग्निदेवम्)द्युलोकात्(प्रकटितम्) इवापश्यम् ॥ ९ ॥

भाषार्थः

मैंने अत्यन्त प्रगल्भ और अतिविख्यात मनुष्यों से स्तुति किये गये और घरमें पूजे गए (अग्निदेव) को द्युलोक से (प्रकट हुए) की न्याईं देखा ॥ ९ ॥

मेधातिथि ऋषि को अग्निदेवता ने दिव्य रूप में दर्शन दिया उसी अनुभव को कहते हैं कि यद्यपि अग्निदेव इस पृथिवी पर घर में आहवनीयादि खरों में पूजे जाते हैं परन्तु मुझे द्युलोक से प्रकट हुए की न्याईं दिखाई दिये ।

इत्यष्टादशं सूक्तम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं०१ सू० १९।

अग्नामरुतोदेवता मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः ८।८।८।

प्रति॒त्यंचारुंमध्व॒रं गोपी॒थाय॒प्रहूंयसे ।
म॒रुद्भिरग्न॒आगंहि ॥ १ ॥

प्रति	प्रति	प्रति
त्यम्	तम्	उस को
चारुम्	चारुम्	सुन्दर को
अ॒ध्व॒रम्	यज्ञम्	यज्ञ को
गो॒ऽपी॒थाय॑	सोमपानाय (नि० १०।३६)	सोमपान के लिये
प्र	प्र+	—
हू॒य॒से॒	प्र+हूयसे	बुलाए जाते हो
म॒रुत्ऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अ॒ग्ने॒	हे अग्ने	हे अग्नि
आ	आ+	—
ग॒हि॒	आ+गहि, आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने (त्वम्) तं चारुं यज्ञं प्रति सोमपानाय प्रहूयसे (अतः) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि आप उस सुन्दर यज्ञ के प्रति सोम पान के लिये बुलाए जाते हैं (इस लिए) मरुतों के साथ आइये ॥ १ ॥

"उस सुन्दर यज्ञ" से तात्पर्य्य है वह जो हमारा सुन्दर यज्ञ है उसके प्रति मरुद्गण के सहित अग्निदेव आवें। मरुद्गण जैसे इन्द्र के साथ बुलाए जाते हैं वैसे ही अग्नि के साथ भी इसलिये बुलाए गए हैं कि उनके आने से हमारा भय नष्ट हो और हमारी पूर्ण रीति से सहायता हो "गोपीथ" का अर्थ सहायता भी है (देखो आ०को०) मरुद्गण कैसे असह्य बल वाले, शत्रु नाशक और रक्षा करने में समर्थ हैं यह आगे मन्त्रों में आएगा।

विनियोग—वर्षकामेष्टि में सामिधेनी मन्त्रों के अन्त में जो दो मन्त्र धाय्या नामक होते हैं जिन से दो अधिक समिधाएं अग्नि में डाली जाती हैं उन दो धाय्या मन्त्रों में से एक यह है (आ०औ०सू०२।१.३।८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः।८।८।८।

नहिदेवोनमर्त्यो महस्तवक्रतुंपरः । मरुद्भि
रग्नआगहि ॥ २ ॥

नहि	नहि	नहीं
देवः	देवः	देव
न	न	नहीं
मर्त्यः	मर्त्यः	मनुष्य
महः	महतः	बड़े के
तव	तव	आप के
[1]क्रतुम्	बलम्	बल को
परः	अतीत्य (वर्तते)	परे (है)
मरुत्ऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	–
गहि	आ+गहि.आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

नहि देवो न मर्त्यो महतस्तव बलमतीत्य वर्तते हे अग्ने ! (त्वम्) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

कोई देवता वा मनुष्य महान आप के बल से परे नहीं है हे अग्नि आप मरुतों के साथ आओ॥२॥

(१) अग्नि देव इन्द्र की न्याई परमात्मा के क्षत्रवल के भी प्रतिनिधि हैं इस लिये सव देवता और मनुष्यों का बल अग्नि के अन्तर्गत है, कोई उससे परे नहीं है–सव वल (Forces) अग्नि में विद्यमान हैं–उससे कोई वाहर नहीं है ।

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

येमहोरजसोविदु र्विश्वेदेवासोअद्रुहः।

मरुद्भिरग्नआगहि ॥ ३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये	ये	जो
म॒हः	महत् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	महान् को
१रज॑सः	अन्तरिक्षम् (द्वितीयार्थेषष्ठी)	अन्तरिक्ष को
१वि॒दुः	विदुः	जानते हैं
विश्वे॑	विश्वे	विश्वे
दे॒वास॑ः	देवाः	देव
२अ॒द्रुह॑ः	द्रोहरहिताः	द्रोह रहित
म॒रुत्ऽभिः॑	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अ॒ग्ने॒	हे अग्ने !	हे अग्नि
आ	आ+	—
ग॒हि॒	आ+गहि,आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

ये द्रोहरहिता विश्वेदेवा महदन्तरिक्षं विदुः हे अग्ने ! (तैर्विश्वेदेवसंज्ञकैः) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

जो द्रोहरहित विश्वेदेवा महान् अन्तरिक्ष को जानते हैं हे अग्नि उन मरुतों के साथ आओ ॥ ३ ॥

(१) मरुद्‌गण महान् अन्तरिक्ष को जाननेवाले हैं । क्योंकि वही उन का घर है (२) मरुद्‌गण द्रोह से रहित हैं अर्थात् सदा हमारे हित में बुद्धि रखते हैं कभी द्रोह नहीं करते ॥

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

यउ॒ग्रा अ॒र्कमा॑नृ॒चु रना॑धृष्टास॒ ओज॑सा ।

म॒रुद्भि॑रग्न॒ आग॑हि ॥ ४ ॥

ये	ये	जिन
उ॒ग्राः	उग्राः	भयानकों ने
अ॒र्कम्	स्तोत्रम् (ऋ० ५।३०।६)	स्तोत्र को
आ॒नृ॒चुः	स्तुतवन्तः (ऋ०५।३०।६)	स्तवन किया है
अना॑धृष्टा-सः	अनाक्रान्ताः	न दबाए जाने वालों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओजंसा	बलेन	बल से
मरुत्ऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
आ	आ+	—
गहि	आ+गहि, आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः

यउग्राबलेनाऽनाक्रान्ताः स्तोत्रं स्तुतवन्तः हे अग्ने (तैः) मरुद्भिस्सहाऽऽआगच्छ ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

जिन भयानक (और) बल से न दबाए जाने वालों ने स्तोत्र को स्तवन किया है हे अग्नि उन मरुतों के साथ आओ ॥ ४ ॥

मरुद्गण भयानक और किसी से न दबने वाले प्रचंण्ड वायु रूप में साएं २ करते हुए आते हैं—यह शब्द उनका परमात्मा की स्तुति को गाना द्योतन करता है ॥

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

येशुभ्राघोरवर्पसः सुक्षत्रासोरिशादसः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

म॒रुद्भि॑रग्न॒आग॑हि ॥ ५ ॥

ये	ये	जो
शु॒भ्राः	शुभ्राः	उज्ज्वल
घो॒रऽव॑र्पसः	घोररूपाः (वर्प- इति रूपनाम निघं० ३।७)	घोर रूप वाले
सु॒ऽक्ष॒त्रासः॑	सुष्ठु क्षतात् त्रायन्त इति	हिंसा से अच्छी तरह रक्षा करने वाले
रि॒शाद॑सः	शत्रूणामत्तारः	शत्रुओं के खाने वाले
म॒रुत॒ऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अ॒ग्न॒	हे अग्ने !	हे अग्नि
आ	आ+	—
ग॒हि	आ+गहि, आ-गच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! ये शुभ्रा घोररूपाः सुरक्षकाः शत्रूणामत्तारः (च सन्ति तैः) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥ ५ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे अग्नि जो उज्ज्वल, घोररूपवाले, अच्छे रक्षक, (और) शत्रुओं को खाने वाले हैं (उन) मरुतों के साथ आओ ॥ ५ ॥

हम मरुद्गण को अग्नि के साथ इसलिये बुलाते हैं कि वह घोर रूप वाले हमारे शत्रुओं को खाने वाले और सब प्रकार की हिंसा से हमारे रक्षक हैं । उनका रूप उज्ज्वलता सहित घोर है जैसे प्रचण्ड ग्रीष्म के सूर्य्य का होता है । उनकी घोरता में तमोगुण का आवेश लेशमात्र भी नहीं है । तमोगुण लिये हुए घोरता देवगुण नहीं है ॥

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ८ । ८ । ८ ।

येनाकस्याधिरोचने दिविदेवासआसते ।

मरुद्भिरग्नआगहि ॥ ६ ॥

ये	ये	जो
नाकस्य	स्वर्गलोकस्य (श० ब्रा० ८।६।१।१२)	स्वर्ग लोक के
अधि	उपरि	ऊपर
रोचने	दीप्यमाने	दीप्यमान में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दि॒वि	द्युलोके	द्युलोक में
दे॒वासः॑	देवाः	देवता
आस॑ते	आसते	बैठते हैं
म॒रुत्ऽभिः॑	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अग्न॒	हे अग्ने !	हे अग्नि
आ	आ+	—
ग॒हि॒	आ+गहि,आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! ये स्वर्गलोकोपरि दीप्यमाने द्युलोके देवा आसते (तैः) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥ ६ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि जो स्वर्गलोक से ऊपर दीप्यमान द्युलोक में देवता बैठते हैं (उन) मरुतों के साथ आओ ॥६॥

"दीप्यमान द्युलोक में स्वर्ग लोक अर्थात् सूर्य्य से ऊपर बैठने वाले देवता" इस से प्रतीत होता है कि जिस प्रकार पृथिवी सम्बन्धी मरुद्गण अन्तरिक्ष में रहते हैं—इसी प्रकार सूर्य्य लोक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के ऊपर के लोकों में भी मरुद्गण रहते हैं—अग्निदेवता इनको भी हमारे यज्ञ में लावें ॥ (देखो श० ब्रा० ११।२।३।२॥

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

यईंखयंन्तिपर्वतान् तिरः संमुद्रमंर्णवम् ।
मरुद्भिंरग्नआगंहि ॥ ७॥

ये	ये	जो
ईंखयंन्ति	चालयन्ति (ईंख गतौ निघं० २।१४)	चलाते हैं
पर्वतान्	मेघान् (निघं० १।१०)	बादलों को
तिरः	पारम्	पार
समुद्रम्	समुद्रम्	समुद्र को
अर्णवम्	जलोपेतम् (अर्णइत्युदक नाम निघं१।१२)	जलवाले को
मरुतऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ +	—
गहि	आ+गहि आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! ये मेघान् जलोपेतस्य समुद्रस्य पारं चालयन्ति (तैः) मरुद्भिस्सह हाऽऽगच्छ ॥७॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि जो बादलों को जलवाले समुद्र के पार चलाते हैं (उन) मरुतों के साथ आओ ॥७॥

मरुद्गण वृष्टि के देनेवाले हैं क्योंकि जो समुद्र के जलों से वाष्प उठकर बादल बन जाते हैं उनको मरुद्गण समुद्र के पार चलाकर स्थल पर ले आते हैं यदि मरुद्गण की प्रेरणा न होती तो बादल समुद्र से उत्पन्न होकर वहीं रहते और कहीं भी वृष्टि न होती इसलिये हम अपने परम हितकारी मरुद्गण को बुलाते हैं उन के आने से समुद्र से बादल भी उन के साथ आएंगे और हमारे देश में वृष्टि होगी ॥

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

आयेतन्वन्तिरश्मिभिं स्तिरःसमुद्रमोजसा ।

मरुद्भिरग्नआगहि ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ+	—
ये	ये	जो
तन्वन्ति	आ+तन्वन्ति प्रसरन्ति	फैल जाते हैं
रश्मिऽभिः	रश्मिभिः	किरणों से
तिरः	पारम्	पार
समुद्रम्	समुद्रम्	समुद्र को
ओजसा	बलेन (निघं०२।९)	बल से
मरुत्ऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
आ	आ+	—
गहि	आ+गाहि, आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः

हे अग्ने ! ये (सूर्य्यस्य) किरणैस्समुद्रस्य पारं बलेन प्रसरन्ति (तैः) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

हे अग्नि जो सूर्य्य की किरणों के द्वारा समुद्र के पार बलसे फैल जाते हैं उन मरुतों के साथ आओ ॥८॥

इस पृथिवी पर एक मात्र बल का आधार सूर्य्य की किरणें हैं–वही मरुतों को समुद्र पर बल युक्त करके फैलाती हैं–मरुद्गण की चालक और उन के बल की उत्पादक सूर्य्य की किरणे हैं ॥

अग्नामरुतोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

अभित्वांपूर्वपींतये सृजामिंसोम्यंमधुं ।

मरुद्भिरग्नआगंहि ॥ ९ ॥

अभि	अभि+	–
त्वा	त्वाम्	तुझको
पूर्वऽपींतये	प्रथमपानाय	पहले पान करने के लिये
सृजामिं	अभि+सृजामि, अभिषिञ्चामि (ऋ०१।१३५।६)	सिंचन करता हूं
सोम्यम्	सोमसम्बन्धिनम्	सोमसम्बन्धीको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मधुं	मधुर रसम्	मीठे रस को
मरुत्ऽभिः	मरुद्भिस्सह	मरुतों के साथ
अग्ने	हे अग्ने !	हे अग्नि
आ	आ+	–
गहि	आ+गहि,आगच्छ	आओ

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने ! (अहम्) त्वदीय प्रथमपानाय सोमसम्बन्धिनं मधुररसमभिषिञ्चामि (त्वम्) मरुद्भिस्सहाऽऽगच्छ ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि मैं आप के प्रथम पान करने के लिये मीठा सोमरस सिंचन करता हूं आप मरुतों के साथ आओ ॥ ९ ॥

जीवन का एक मात्र आधार होने से अग्नि ही हमारे सब से पहले पूज्य हैं। इसलिये प्रथम उन्हीं के लिये सोम अर्पण किया जाता है ।

इत्येकोनविंशं सूक्तम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ०मं०१सू०२०।

ऋभवोदेवता मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

अयंदेवायजन्मने स्तोमोविप्रेभिरासया ।
अकारिरत्नधातमः ॥ १ ॥

अयम्	अयम्	यह
देवाय	देवाय+	
जन्मने	देवाय+जन्मने देवजातये	देव जाति के लिये
स्तोमः	स्तोत्रम्	स्तोत्र
विप्रेभिः	विप्रैः	कवियों से
आसया	(स्वकीयेन) आस्येन	(अपने) मुख से
अकारि	कृतम्	किया गया है
रत्नऽधा तमः	रत्नानिदधातीति रत्नधा,अतिशयेन रमणीयइति भावः	अतिशय करके रमणीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अतिशयेन रमणीयमिदं स्तोत्रं विप्रैर्देवजातये स्वकीयेनाऽऽस्येन कृतम् ॥ १ ॥

भाषार्थः ।

अतिशय करके रमणीय यह स्तोत्र कवियों ने देव जाति के लिए (अपने) मुख से बनाया है ॥ १ ॥

विनियोग—पहले तीन मन्त्र द्वादशाह के व्यूढछन्दोम के वैश्वदेव शस्त्र में पढ़े जाते हैं (आ०श्रौ०सू०७०२।९।५) ।

यह स्तोत्र ऋषियों ने देव जाति अर्थात् सब देवताओं के लिए अत्यन्त रमणीय रचा है इस के पढ़ने से मनुष्य गदगद होजाता है, और ऋभुओं की न्याई देवता बनने के लिये उत्सुक होता है। ऋभु, विभ्वा, और वाज यह तीनों अङ्गिरा वंशी सुधन्वा ऋषि के पुत्र थे, (देखो ऋ० १।११०,१।१६१) सब से बड़े ऋभु थे—इस लिये तीनों को मिला कर "ऋभवः" कहा जाता है—इन्होंने कैसे २ कर्म किए जिन से यह देवपदवी को पहुंचे यह सब आगे के मन्त्रों में वर्णन किया गया है—ऋभु, विभ्वा, और वाज देवता बने पीछे के नाम हैं (देखो ऋ० १ । १६१ । ५) यास्क मुनि ने सूर्य्य की किरणों को ऋभु माना है कोई इनको ऋतुओं के अधिष्ठाता बतलाते हैं इसका समाधान ऐसे होसकता है कि देवता हुए पीछे वे सूर्य्य की किरणों वा ऋतुओं को प्राप्त होकर तद्रूप बने—पूर्व में मनुष्य थे जैसे मन्त्रों से स्पष्ट प्रतीत होता है ।

ऋभवोदेवता गायत्रीछन्दः । ८ । ८ । ८ ।

यइन्द्रा॑यवचो॒युजा॑ ततृ॒क्षुर्मन॑सा॒हरी॑ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शमीभिर्यज्ञमाशत ॥ २ ॥

ये	ये	जिन्हों ने
इन्द्राय	इन्द्राय	इन्द्र के लिये
वचःऽयुजा	वचसा युञ्जानौ	बाणी से जुड़ने वालों को
ततक्षुः	निर्ममुः	रचा है
मनसा	मनसा	मन से
हरी०	अश्वौ	घोड़ों को
शमीभिः	कर्मभिः (निघं०२।१)	कर्मों से
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
आशत	प्राप्ताः	प्राप्त हुए

संस्कृतार्थः ।

य इन्द्राय वचसा युञ्जाना वश्वौ मनसा निर्ममुः (तऋभवस्स्वकीयैः) कर्मभिर्यज्ञं प्राप्ताः ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

जिन्होंने इन्द्र के लिये बाणी से जुड़ने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घोड़ों को मन से रचा (वे ऋभु अपने) कर्मों से यज्ञ को प्राप्त हुए ॥ २ ॥

ऋभु अपने निष्काम कर्मों द्वारा यज्ञ को प्राप्त हुए अर्थात देवताओं के साथ इन को भी यज्ञ में भाग दिया जाने लगा।

इनसे पूर्व ऋषि सोमादि यज्ञों में ऋभुओं को नहीं जानते थे, परन्तु इन से पीछे के सब ऋषि इनको भी यज्ञ में भाग देनेलगे क्योंकि यह आगे वर्णन किए हुए कर्मों से देवपदवी को पहुंचे।

प्रथम कर्म इनका यह था कि इन्होंने मन से इन्द्र के लिये घोड़े रचे अर्थात सूर्य्य के उदय और अस्त के समय जो लाली दिखलाई देती है (देखो पृ० १.४१. पं० १.७) उसमें ऋभुओं ने इन्द्र के घोड़ों की कल्पना की। इनसे पूर्वऋषि इन्द्र का घोड़ों के साथ आवाहन नहीं करते थे। इन्द्र को वज्र, हिरण्यमय रूप, इत्यादि से तो पूर्व ऋषियों ने समन्वित किया था परन्तु ऋभुओं ने अपने मनोवल से इन्द्र को घोड़ों से युक्त किया। जैसे और ऋषि अपने वा अपनी जाति के लिये धनादि की प्रार्थना करते थे वैसे निष्काम ऋभु यह संकल्प और प्रार्थना करते थे कि देवता इन्द्र को घोड़ों से युक्त करें, इस तीव्र संकल्प का यह फल हुआ कि इन्द्रदेवता घोड़ों से संयुक्त होगए। और इस से पीछे आवाहन में (और दिव्य दर्शन में भी) इन्द्र घोड़ों सहित प्रकट होने लगे। और ऋ० मं० ४सू० ३३मं०२ में पढ़ा है कि ऋभुओं की भक्ति का फल ऋषियों ने भोगा अर्थात उपास्यदेव की न्याईं इन्द्र के उपासक भी घोड़ों से सम्पन्न होने लगे।

ऋभवोदेवता विराड्गायत्रीछन्दः।८।८।८।

तक्षन्नासंत्याभ्यां परिज्मानंसुखंरथम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तक्ष॑न्धे॒नुं स॑ब॒र्दुघा॑म् ।३।

तक्ष॑न्	अतक्षन् (अडभावः)	बनाया
नास॑त्याभ्याम्	असत्यरहिताभ्याम् (अश्विभ्याम्)	अश्वि देवताओं के लिये
परि॑ऽज्मानम्	परितोगन्तारम् (परिपूर्वस्याऽजेर-कारस्यलोपः)	चारों ओर चलने वाले को
सु॒ऽखम्	सुखकरम्	सुखकारी को
रथ॑म्	रथम्	रथ को
तक्ष॑न्	अतक्षन्	रचा
धे॒नुम्	धेनुम्	गौ को
स॒ब॒ःऽदुघा॑म्	अमृतस्यदोग्ध्रीम् (ऋ०९।२१।७।)	अमृत के देने वाली को

संस्कृतार्थः ।

(ऋभवोदेवाः) अश्विभ्यां परितोगन्तारं सुखकरं रथमतक्षन्, अमृतस्यदोग्ध्रीं धेनुम् (च) निर्ममुः ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

(उन्होंने) अश्वि देवताओं के लिये सब ओर चलने वाला सुखकारी रथ बनाया (और) अमृत के देने वाली गौ को रचा ॥ ३ ॥

दूसरा कर्म ऋभुओं का यह था कि जैसे उन्होंने संकल्प बल से इन्द्र को घोड़ों से युक्त किया था वैसे ही उत्तर मेरु के समीप जो सूर्य्य के उदय होने से पूर्व और अस्त होने के पश्चात् बहुत दिनों तक उषा की लाली आकाश में चारों ओर घूमती हुई दिखाई देती है उससे भी पूर्व जो अन्धेरे की कालस में मिली हुई लाली के भ्रमण का भान होता है उसमें ऋभुओं ने अश्विदेवों के चारों ओर घूमने वाले सुखदाई रथ की कल्पना की और तीव्र चिन्तन द्वारा अश्वि देवताओं को सचमुच रथ से युक्त कर दिया (दिव्य दर्शन में देवता के रथ का दिखाई देना ऋ०मं०१ सू० २५ मं० १.८ से स्पष्ट प्रतीत होता है) और ऋभुओं के पीछे सब ऋषि आश्विदेवों को रथ में आरूढ हुए २ चिन्तन और आवाहन करने लगे। ऋभुओं का तीसरा कर्म यह था कि उन्होंने अमृतरूपी दुग्ध और घृतआदि के देनेवाली गौ को रचा अर्थात् बनमें जङ्गली पशुकी न्याईं फिरती हुई दुबली पतली गौ को ग्राम में लाकर पाला और उसको पुष्ट करके दूध देना सिखाया। ऋभुओं से पहले कोई गौ से लाभ नहीं उठाता था और उसका होना न होना बराबर था इसलिये वस्तुतः ऋभुओं ने ही गौ को आर्य्य जाति के लिये रचा और उसके दुग्ध और घृत रूप में मनुष्यों और (यज्ञमें) देवताओं को अमृत प्रदान किया। गौ में आर्य्यों की भक्ति ऋभुओंके समय से है भरद्वाज ऋषि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो ऋभुओं से पीछे हुए हैं गौ के विषय में कहते हैं, "कि गौएं ही साक्षात् ऐश्वर्य्य हैं। मुझे तो गौएं ही इन्द्र प्रतीत होती हैं। गौएं सब से पहले (दूध रूपमें) सोम का भक्ष्य होती हैं। हे मनुष्यो निस्संदेह यह गौएं ही इन्द्र हैं जिस इन्द्र को मैं हृदय और मन से इच्छा करता हूं"। (ऋ० ६।२८।५)

हे गौओ! तुम दुबले को मोटा करती हो और कुरूप को रूपवान बनाती हो। हे कल्याण युक्त रांभ (शब्द) से युक्त गौओ! मेरे घर को कल्याण युक्त करो हमारी (आर्य्यों की) सभाओं में तुम्हारा बड़ा बल माना जाता है। (ऋ० ६।२८।६)

हे गौओ! तुम सन्तानवाली हो सुन्दर घास चरो और सुन्दर जल के स्थानों से शुद्ध जल को पीओ चोर वा पापी तुम्हार स्वामी न बने रुद्र के (रोग रूपी) बाण तुमसे अलग रहें॥

(ऋ० ६।२८।७)

ऋभवोदेवता गायत्रीछन्दः।८।८।८।

युवा॑ना पि॒तरा॑ पुन॑: स॒त्यम॑न्त्रा ऋजू॒यव॑:।
ऋ॒भवो॑ वि॒ष्ट्य॑क्रत ॥४॥

युवा॑ना	तरुणौ	जवानों को
पि॒तरा॑	पितरौ	माता पिता को
पुन॑:	पुनः	फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्यऽमंन्त्राः	सत्यमन्त्रोपेताः	सच्चेगूढआशय वाले
ऋजूऽयवं:	आर्जवंकामयमानाः	सरलता को प्यार करने वाले
ऋभवं:	ऋभवः	ऋभु देवों ने
विष्टी	वेतनमन्तरेण कर्मशीलाः	बिना वेतन काम करने वालों ने
अक्रत	कृतवन्तः	बनाया

संस्कृतार्थः ।

सत्यमन्त्रोपेता आर्जवं कामयमाना वेतन मन्तरेण कर्मशीला ऋभवः पितरौ पुनस्तरुणौ कृतवन्तः ॥४॥

भाषार्थः ।

सच्चे गूढ़आशय वाले सरलता को प्यार करने वाले बिना वेतन काम करने वाले ऋभुओं ने माता पिता को फिर से जवान बनाया ॥ ४ ॥

विनियोग—यह और अगले दो मंत्र द्वादशाह के द्वितीयछन्दोम के वैश्वदेव शस्त्र में पढ़े जाते हैं (आ० श्रौ० सू० उ० २ । १० । २)

ऋभु सच्चे गूढ़आशय (policy) वाले बिना बदले की आशा के काम करने वाले और सरलता को प्यार करने वाले थे, ऐसे गुणों से ही मनुष्य देवता हो सकता है। इन का चौथा कर्म यह था कि द्यौ और पृथिवी जो सब देवताओं के (और मनुष्यादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवों के भी) पिता और माता हैं बहुत प्राचीन और बड़ी अवस्था वाले होने से ऋषिओं से वृद्ध और जीर्ण स्वरूप में चिन्तन और स्तुति किये जाते थे ऋभुओं ने इस नियम को जानकर कि जैसा मनुष्य चिन्तन करता है वैसा ही स्वयं भी होजाता है अपने ध्यान बल से उनको फिर युवा बनाया उनके तप का फल यह हुआ कि सब ऋषि युवावस्था में उनका चिन्तन और आवाहन करने लगे (देखो ऋ० १।१८ जहां द्यावा पृथिवीको युवती कहा है) ऋभुओं के चरित्र से यह भी उपदेश मिलता है कि मनुष्य जिस शुभ चलन का प्रचार करना चाहे उस पर स्वयं दत्तचित्त होकर आरूढ़ हों और तन्मय होजावे। ऐसा करने से वह चलन शीघ्र फैल जावेगा॥

ऋभवोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

संवोमदासोअग्मतेन्द्रेणचमरुत्वता। आदित्येभिश्चराजभिः॥५

सम्	सम् +	–
वः	युष्मदर्थम्	आप के लिये
मदासः	मदहेतवः(सोमाः)	मद केदेने वाले (सोमरस)
अग्मत	सम्+अग्मत प्राप्ताः	प्राप्त हुए हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रेण	इन्द्रेण	इन्द्र के सहित
च	(पूरणः)	-
मरुत्वता	मरुद्भिर्युक्तेन	मरुद्गण से युक्त के साथ
आदित्येभिः	आदित्यैस्सह	आदित्यों के साथ
च	च	और
राजऽभिः	दीप्यमानैः	दीप्यमानों के साथ

संस्कृतार्थः ।

युष्मदर्थं मदहेतवः (सोमाः) मरुद्भिर्युक्तेनेन्द्रेण दीप्यमानैरादित्यैश्च सह प्राप्ताः ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

मद के देनेवाले (सोमरस) मरुद्गण सहित इन्द्र और आदित्यों के साथ आप के लिये प्राप्त हुए हैं ॥ ५ ॥

सोम यज्ञ के तृतीय सवन में आदित्य सविता, वायु, द्यावा पृथिवी विश्वेदेव और ऋभुओंको सोम अर्पण किया जाता है ऐ०ब्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

३।३० में वर्णन है कि कैसी कठिनाई से प्रजापति ने देवताओं के आग्रह को हटा कर ऋभुओंको यज्ञमें भाग दिलवाया। अग्नि और वसुओं ने इनको प्रातः सवन से निकाल दिया, इन्द्र और रुद्रों ने माध्यन्दिन सवन से निकाल दिया और विश्वेदेवोंने तृतीय सवन से इनको निकालना चाहा। तब प्रजापति ने सविता से कहा कि यह तेरे शिष्य हैं (क्योंकि यह देवता बनकर किरण रूप से सविता को प्राप्त हुए थे) तू इन के साथ सोमपान कर तिसपर सविता ने ऋभुओं के साथ सोमपान किया फिर उनके दोनों ओर खडे होकर प्रजापति ने उनके साथ सोमपान किया। तिस पर भी अन्य देवताओं ने उनकी मनुष्य गन्ध को न सहार कर ऋभुओं के और अपने बीच में दो धाय्या मंत्रों को रख कर फिर सोम पान किया।

इससे शिक्षा मिलती है कि मनुष्य गन्ध (मनुष्य की कमज़ोरियां) लेशमात्र भी न रहने से देवपदवी मिलती है और देवता सहज में मनुष्य को अपने में नहीं मिलाते ॥

ऋभवोदेवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

उतत्यंचमसंनवं त्वष्टुर्देवस्यनिष्कृतम्। अकर्तचतुरःपुनः॥ ६॥

उत	अपिच	और
त्यम्	तम्	उस को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चमसम्	सोमधारणक्षमं काष्टपात्रम्	चमस को
नवम्	नूतनम्	नए को
त्वष्टुः	त्वष्ट्रा (तृतीयार्थे षष्टी)	त्वष्टा से
देवस्य	देवेन (,,)	देव से
निःऽकृतम्	निर्मितम्	बनाया गया
अकर्त	कृतवन्तः	बना दिये
चतुरः	चतुरः	चार
पुनः	पुनः	फिर

संस्कृतार्थः ।

अपिच त्वष्ट्रा देवेन निर्मितं तं नूतनं चमसं पुन श्चतुरः कृतवन्तः ॥ ६॥

भाषार्थः ।

और उस नए चमस के जो त्वष्टा ने बनाया था फिर से चार बना दिये ॥ ६ ॥

समष्टि यज्ञ में सब देवता एक ही चन्द्र रूपी चमस से सोम पान करते हैं—क्योंकि त्वष्टा ने यह एक ही चमस बनाया था इसी का अनुकरण करके ऋषि सोम यज्ञमें एक ही चमस बरतते थे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस से बहुत हानि होती थी क्योंकि ऋत्विज् यजमान सब को उस एक ही चमस से सोम अर्पण और पान करना पड़ता था, देवता और मनुष्य दोनों को अपने भाग के लिये बहुत देर तक प्रत्याशा करनी पड़ती थी ऋभुओं ने इस क्लेश की निवृत्ति के लिये चार चमस बनाए और यह उनका कर्म त्वष्टा ने भी स्वीकार किया (इस से आशा पड़ती है कि अगले कल्प में इस अभागी पृथिवी को भी जो महीने में १५ रात्री अंधेरे में काटती है चार चन्द्रमा मिलेंगे, यह आशा अयुक्त नहीं है क्योंकि अब भी मंगल में २ बृहस्पति में ५ यूरेनस में ४ और शनिलोक में ८ चन्द्रमा हैं)

इस समय सोम यज्ञ में यह चमस बरते जाते हैं ॥

१ होता का चौकोन का खात वाला

२ ब्रह्मा का गोल खात वाला ॥

३ उद्गाता का त्रिकोण खात वाला ॥

४ यजमान का हथेली के सदृश खात वाला ॥

और ऋत्विजों के चमसों में यह विशेषता है कि प्रशास्ता का नीचे से छिन्न दण्डवाला, ब्राह्मणाच्छन्सी का ऊपर से छिन्न दण्ड वाला पोता का आगे से चिरे हुए दण्ड वाला नेष्टाका विभक्त दण्डवाला अच्छावाक का रास्ना अर्थात् मेखला युक्त दण्ड वाला और आग्नीध्र का अग्रभाग में तीक्ष्ण दण्ड वाला होता है ।

ऋभवो देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

तेनोरत्नानिधत्तन त्रिरासाप्तानि-सुन्वते । एकमेकंसुशस्तिभिः ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ते	ते (ययम्)	वे आप
नः	अस्माकम्	हमारे
रत्नानि	रत्नानि	रत्नों को
धत्तन	प्रयच्छत	देवें
त्रिः	त्रिवारम्	तीन बार
आ	आवृत्तानि	गुणे हुए
साप्तानि	सप्तसंख्याकानि	सात
सुन्वते	सोमाभिषवंकुर्वते (यजमानाय)	सोमनिष्पीडन करने वाले यजमानके लिये
एकम्ऽएकम्	(क्रमेण)प्रत्येकम्	एक एक को
सुशस्तिऽभिः	शोभनैश्शंसनैः	सुन्दर स्तुतियों से

संस्कृतार्थः ।

ते (यूयम्) शोभनैश्शंसनैः (युक्ताः) अस्मदीयायसोमाभिषवं कुर्वते (जमानाय)त्रिरावृत्तानि सप्त

पुस्तकालय NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संख्याकानि रत्नानि एकैकम् (विधाय) प्रयच्छत ॥७॥

भाषार्थः ।

वे (आप) (हम से) सुन्दर रीति से स्तुति किये जा कर हमारे सोमनिष्पीड़न करने वाले यजमान को एक २ करके तीन गुणे सात अर्थात् इक्कीसों रत्नों को देवें ॥ ७ ॥

हमारे यजमान से तात्पर्य्य हम आर्य्यों में जो सोमनिष्पीडन करने वाले हैं उनको ऋभु देव २१ प्रकार के रत्न एक २ करके देवें। बृहत्संहिता में २२ रत्न लिखे हैं वे ये हैं १ वज्र (हीरा) २ इन्द्र नील (नीलम) ३ मरकत (पन्ना) ४ कर्केतन ५ पद्मराग (लाल) ६ रुधिर ७ वैदूर्य्य (लहसुनिया) ८ पुलक ९ विमलक १० राजमणि ११ स्फटिक १२ चन्द्रकान्त १३ सौगन्धिक १४ गोमेदक (पीलीमणि) १५ शङ्ख १६ महानील १७ पुष्पराग (पुखराज) १८ ब्रह्ममणि १९ ज्योतीरस २० सस्यक, २१ मुक्ता (मोती) २२ विद्रुम (मूंगा) ॥

ऋभवो देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अधारयन्तवह्नयो भजन्तसुकृत्यया । भागं देवेषुयज्ञियम् ॥ ८ ॥

अधारयन्त	धृतवन्तः	डटे रहे
वन्हयः	देवाः (आ०को०)	(ऋभु) देवता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभ॑जन्त	अभजन्त	प्राप्त किया
सु॒ऽकृ॒त्यया॑	सुकर्मणा	सुकर्म से
भा॒गम्	भागम्	भाग को
दे॒वेषु॑	देवेषु	देवताओं में
य॒ज्ञिय॑म्	यज्ञियम्	यज्ञ में होने वाले को

संस्कृतार्थः।

(ऋभवः) देवा धृतवन्तः सुकर्मणा देवेषु यज्ञियं भागम् (च) अभजन्त ॥ ८॥

भाषार्थः।

(ऋभु) देवता डटे रहे (और) सुकर्म से देवताओं में यज्ञ के भाग को प्राप्त किया ॥ ८॥

डटे रहना जबतक काम पूरा न हो, यही अभ्युदय का नियम है। डटे रहने वालों को कोई दुष्कर कर्म भी असाध्य नहीं है। मनुष्य से देवता बन जाना इस से दुष्कर कर्म क्या होसक्ता है। परन्तु डटे रहने से ऋभुओं ने इसको भी सिद्ध करलिया।

इतिविंशं सूक्तम्

ऋ० मं०१ सू०२१ मं०१

इन्द्राग्नीदेवते काण्वो मेधातिथिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः८।८।८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इ॒हेन्द्रा॒ग्नी उप॑ ह्वये त॒योरित्स्तोम॑मुश्मसि। ता सोमं॑ सोम॒पात॑मा ॥१॥

इ॒ह	अस्मिन्स्थाने	यहां
इ॒न्द्रा॒ग्नी	इन्द्राग्नी	इन्द्र और अग्नि को
उप॑	उप +	—
ह्व॒ये॒	उप + ह्वये समीपमाह्वयामि	मैं पास बुलाता हूं
त॒योः	तयोः	उन दोनों के
इ॒त्	एव	ही
स्तोम॑म्	स्तोत्रम्	स्तोत्र को
उ॒श्म॒सि॒	कामयामहे	हम इच्छा करते हैं
ता	तौ	वे दोनों
सोम॑म्	सोमम्	सोमरस को
सो॒म॒ऽपा॒-त॑मा	अतिशयेनसोमपौ	अतिशय करके सोम पीने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) अस्मिन्स्थान इन्द्राग्नी समीपमाह्वयामि (वयम्) तयोरेव स्तोत्रं कामयामहे अतिशयेन सोमपौ तौ सोमम् (पिबताम्) ॥१॥

भाषार्थः ।

(मैं) इस स्थान में इन्द्र और अग्नि को बुलाता हूं (हम) उन्हीं के स्तोत्र की इच्छा करते हैं अतिशय करके सोम पीने वाले वे दोनों सोम को (पानकरें) ॥ १ ॥

इस सूक्त में इन्द्र और अग्नि की इकट्ठी स्तुति है कारण यह है कि हम दोनों के स्तोत्र की कामना करते हैं; दोनों ही हमारे सोम को अतिशय करके पान करने वाले हैं इस लिये दोनों हमें अत्यन्त प्रिय हैं ॥

इन्द्राग्नी देवते गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

ताय॒ज्ञेषु॒ प्रशं॑सते॒न्द्राग्नी शुं॑भता नरः । ता गा॑य॒त्रेषु॑ गायत ॥ २ ॥

ता	तौ	उन दोनों को
य॒ज्ञेषु॑	यज्ञेषु	यज्ञों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्र	प्र+	-
शंसत	प्र+शंसत	प्रशंसा करो
इन्द्राग्नी	इन्द्राग्नी	इन्द्र और अग्नि को
[1]शुंभत	शोभां कुरुत	शोभा करो
नरः	हे नरः	हे नरो
ता	तौ	उन दोनों को
गायत्रेषु	स्तोत्रेषु	स्तोत्रों में
गायत	गायत	गाओ

संस्कृतार्थः ।

हे नरस्ताविन्द्राग्नी यज्ञेषु प्रशंसत, (तयोरेव) शोभां कुरुत तौ स्तोत्रेषु गायत ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

हे नरो उन दोनों इन्द्र और आग्न की यज्ञों में प्रशंसा करो, उन्हीं की शोभा करो, उन (हीं) को स्तोत्रों में गाओ ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) इन्द्राग्नी की शोभा करो। जिस से लोग उन को प्यार करना सीखें।

इन्द्राग्नी देवते गायत्री छन्दः। ८।८।८।

तामित्रस्यप्रशस्तय इन्द्राग्नी

ताहवामहे। सोमपासोमपीतये।३।

ता	तौ	उन दोनों को
१मित्रस्य	मित्रस्य	मित्र के
१प्रऽशस्तये	गुणकीर्तनाय	गुण कीर्तन के लिये
इन्द्राग्नी	इन्द्राग्नी	इन्द्र और अग्नि को
ता	तौ	उन दोनों को
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
सोमऽपा	सोमपौ	सोम पीने वालों को
सोमऽपीतये	सोमपानार्थम्	सोम पीने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) ताविन्द्राग्नी मित्रस्यगुणकीर्तनाय सोमपौ तौ सोमपानार्थम् (च) आह्वयामः ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

(हम) उन दोनों इन्द्र और अग्नि को मित्र के गुण कीर्तन के लिये और सोम पीने वाले उन दोनों को सोम पान के लिये बुलाते हैं ॥३॥

वह मित्र जिसकी प्रशंसा के लिये हम इन्द्र और अग्नि को बुलाते हैं वह स्वयं ही हैं क्योंकि उन से अन्य मित्र को हम नहीं जानते ।

इन्द्राग्नी देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

उ॒ग्रा सन्ता॑ हवामह उपे॒दं सव॑नं सु॒तम् । इ॒न्द्रा॒ग्नी ए॒ह ग॑च्छताम् ॥४॥

उ॒ग्रा	उग्रौ	उग्रों को
सन्ता॑	सन्तौ	होने वालों को
ह॒वा॒म॒हे॒	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
उप॑	प्रति	प्रति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इदम्	इदम्	इस को
सवनम्	सवनम्	सवन को
सुतम्	अभिषवोपेतम्	जिसमें सोम निष्पीडन किया है उसको
इन्द्राग्नी	इन्द्राग्नी	इन्द्र और अग्नि
आ	आ+	–
इह	अस्मिन् स्थाने	यहां
गच्छताम्	आ+गच्छताम्	आवें

संस्कृतार्थः।

उग्रौ सन्तौ (इन्द्राग्नी) अभिषवोपेतमिदं सवनं प्रति आह्वयामः (तौ) इन्द्राग्नी अस्मिन् (स्थाने) आगच्छताम् ॥ ४ ॥

भाषार्थः।

(हम) उग्र होनेवाले (इन्द्र और अग्नि) को (अपने) इस सवन के प्रति जिस में सोम निष्पीडन किया है बुलाते हैं, (वे) इन्द्र और अग्नि यहां पर आवें ॥ ४ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हम इन्द्र और अग्नि को अपने सवन (सोम द्वारा) देवपूजन कर्म) के प्रति बुलाते हैं क्योंकि वे उग्र होने वाले हैं। उनके आने से कोई शत्रु हमारे पास नहीं ठहर सकेगा। और हम भय रहित हो जाएंगे।

इन्द्राग्नी देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

ता म॒हान्ता॒ सद॒स्पती॒ इन्द्रा॑ग्नी॒ रक्ष॑ उब्जतम्। अप्र॑जाः सन्त्व॒त्रिणः॑ ॥ ५ ॥

ता	तौ	वे दोनों
म॒हान्ता	हे महान्तौ	हे महान्
१सद॒स्पती	हे सभापालकौ	हे सभा के पालने वालो
इन्द्राग्नी	हे इन्द्राग्नी	हे इन्द्र और अग्नि
रक्षः	राक्षसजातिम्	राक्षस जाति को
उ॒ब्ज॒त॒म्	अभि भवतम् (आ०को)	दबाओ
२अप्रजाः	सन्तानरहिताः	सन्तान से रहित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्तु	सन्तु	हों
२ अत्रिणः	(मनुष्याणाम्) भक्षकाः	(मनुष्योंको) खाने वाले

संस्कृतार्थः ।

हे महान्तौ सभापालकाविन्द्राग्नी तौ (युवाम्) राक्षसजातिमभिभवतम् (मनुष्याणाम्) भक्षकास्सन्तानरहितास्सन्तु ॥ ५ ॥

भाषार्थः ।

हे महान् और सभा के पालक इन्द्र और अग्नि (वे) आप दोनों राक्षस जातिको दबावें,(मनुष्यों को) खानेवाले (राक्षस) सन्तान रहित हों॥ ५॥

(१) देखो व्याख्यान पृष्ठ ३७२

(२) "अत्रिणः" सम्भव है कि यक्ष्मा, मोतीझरा,प्लेग इत्यादि रोगों के उत्पन्न करने वाले जीव(Disease germs)हो हों। क्योंकि एक तो यह बहुत प्रजावाले होते हैं और इन की वृद्धि ही रोगों का कारण है। यदि यह प्रजा रहित हो जावें। तौ मनुष्य को नहीं भक्षण कर सकते। दूसरे यह कि अग्नि और सूर्य्य इनके परम नाशक हैं। ये जीव इतने सूक्ष्म होते हैं कि कतार बांधने से १००० से १३००० तक एक यव की मुटाई में आजाएं ये अनेक रूपवाले होते हैं। दो टूक होकर एक के दो होजाते है। और आधे घण्टे में बच्चा बाप के बराबर होकर अपने फिर दो टूक करलेता है। इस प्रकार २४ घण्टे में एक जीव के १० करोड़ से अधिक बन जाते हैं।

३०० दर्जे की गरमी के सम्पर्क होने पर कोई विरला ही जीवित रहता है । प्रायः २०० दर्जे से कम गरमी में ही थोड़ी देर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहने से मर जाते हैं (खौलते हुए पानी की गरमी २१२ दर्जे होती है)अग्नि को श०ब्रा० में "विरक्षस्तम" कहा है(देखोश०ब्रा०३।४।३।८)

इन्द्र और अग्नि का चिन्तन, स्तुति, पूजन और सेवन राक्षसों के सब प्रकार के आक्रमण से रक्षा करता है ॥

इन्द्राग्नी देवते गायत्री छन्दः। ८। ८। ८।

तेनसत्येनजागत मधिप्रचेतुने

पदे। इन्द्राग्नीशर्मयच्छतम् ॥ ६ ॥

२ तेन	तेन	उस से
२ सत्येन	सत्येन	सत्य से
३ जागृतम्	अधि + जागृतम्	पूरी तरह से जागो
१ अधि	अधि +	–
१ प्रऽचेतुने	प्रकर्षेण चेतनावति	प्रकर्ष करके चेतनता वाले में
१ पदे	स्थाने	स्थान में
इन्द्राग्नी	हे इन्द्राग्नी	हे इन्द्र और अग्नि
शर्म	शरणं	शरण को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यच्छ्रुतम्	दत्तम्	दो

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्राग्नी (युवाम्) तेन सत्येन (कर्मणा) प्रकर्षेण चेतनावति स्थाने सम्यग्जागृतम् (अस्मभ्यम्) शरणं (च) दत्तम् ॥ ६ ॥

भाषार्थः

हे इन्द्र और अग्नि (आप) उस सच्चे (कर्म) से प्रकर्ष करके चेतनावाले स्थान में जागो और (हम को) शरण दो ॥ ६ ॥

(१) यों तो सभी पदार्थ चेतन हैं। परन्तु मनुष्य का मन प्रकर्ष करके चेतन है। उस प्रचेतन स्थान अर्थात् हमारे मन में।

(२) उस सत्य से अर्थात् जो सच्चा काम हमने किया है उस के प्रभाव से।

(३) इन्द्र और अग्नि पूरी तरह से जागें। हमारे मन में इन्द्र और अग्नि के पूरी तरह से जागने से ही हम मन पर आक्रमण करनेवाले राक्षसों को जीत सकें हैं॥

इत्येकविंशं सूक्तम्।

ऋ० मं० १ सू० २२

अश्विनौ देवते काण्वोमेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दः ८।८।८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रातर्युजाविबोधयाश्विनावेहगच्छताम् । अस्यसोमस्यपीतये ॥१॥

१ प्रातःऽयुजा	प्रातर्युजौ	प्रातःकाल में जुड़नेवालों को
वि	वि+	--
२ बोधय	वि + बोधय	सचेत कर
अश्विनौ	अश्विनौ	अश्विनीदेवों को
आ	आ +	-
१ इह	इह	यहां
३ गच्छताम्	आ + गच्छताम्	आएं
अस्य	अस्य	इसके
२ सोमस्य	सोमस्य	सोम के
१ पीतये	पानाय	पीने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

(हे अग्ने) प्रातर्युजावश्विनौ विबोधय (तौ) अस्य सोमस्य पानायेहाऽऽगच्छताम् ॥ १॥

भाषार्थः ।

(हे अग्नि) प्रातःकाल में जुड़नेवाले अश्विनी देवों को सचेत करो (वे) इस सोम के पीने के लिये यहां आवें ॥ १ ॥

प्रातःकाल में उषा से पहले आने वाली रात्रि की कालस में मिली हुई प्रकाश की लाली अश्विनीदेवता हैं। इनका दर्शन उत्तर मेरु के प्रांत में ही ठीक होता है। वहां उषा के पूर्ण रीति से प्रकाश होने से पहिले कई दिन तक इन देवताओं का रथ आकाश मण्डल में चारों ओर भ्रमण करता हुआ दिखाई देता है (देखो पृ० ३९८।)

(१) अश्विनीदेवता प्रातःकाल में उषा से पहले अपने काम में जुड़ जाते हैं. वा अपने रथ को जोड़ते हैं इनके प्रादुर्भूत होने का कारण अग्निदेव हैं (देखो पृ० ३३२)

(२) वह उन को हमारे लिये सचेत करें। जिस से वह सब से पहले

(३) हमारे पास सोमपान करने को आवें।

यह मंत्र आश्विन ग्रह का पुरोनुवाक्या है। अध्वर्यु से प्रैष को पाकर होता जिन मंत्रों को पूर्व में उच्चारण करता है उन्हें पुरोनुवाक्या कहते हैं।

यह और अगले तीन मंत्र प्रातरनुवाक के आश्विन क्रतु में भी पढ़े जाते हैं प्रातःकाल में आने वाले देवता अग्नि उषा और अश्विनी हैं यही प्रातरनुवाक के देवता हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विनौ देवते गायत्री छन्दः ८।८।८।

यासुरथारथीतमोभादेवादिवि-
स्पृशा। अश्विनाताहवामहे ॥२॥

या	यौ	जो
१ सुऽरथा	शोभनरथयुक्तौ	सुन्दर रथ वाले
१ रथिऽतमा	अतिशयेनरथिनौ	अतिरथी
उभा	उभौ	दोनों
देवा	देवौ	देव
२ दिविऽस्पृशा	द्युलोके स्पर्शवन्तौ	द्युलोक में स्पर्श वाले
अश्विना	अश्विनौ	अश्विनी (देव)
ता	तौ	उन दोनों को
हवामहे	आह्वयामः	(हम) बुलाते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

यावुभावश्विनौ देवौ शोभनरथयुक्तावतिशयेन रथिनौ द्युलोके स्पर्शवन्तौ (स्तः) तावाह्वयामः ॥२॥

भाषार्थः ।

जो दोनों अश्विनी देव शोभनरथयुक्त अतिरथी (तथा) द्युलोक में स्पर्श वाले हैं उनको (हम) बुलाते हैं ॥ २ ॥

(१) अश्वनी देव सुन्दर रथ वाले और रथियों में श्रेष्ठ हैं उन का उपासक भी अतिरथी बन जाता है।

(२) यह दोनों देवता द्युलोक में स्पर्श वाले हैं परन्तु भक्त के बुलाने से पृथिवी पर भी आजाते हैं।

अश्विनौ देवते गायत्री छन्दः ८। ८। ८।

या वां॒ कशा॒ मधु॑म॒त्यश्वि॑ना सू॒नृता॑वती। तया॑ य॒ज्ञं मि॑मिक्षतम् ॥३॥

या	या	जो
वा॒म्	युवयोः	आप दोनों की
१ कशा॑	अश्वताडनी अथवा वाक् (निघ १।११)	चाबुक वा बाणी
मधु॑ऽमती	माधुर्ययुक्ता	मीठी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विनी देवों
सूनृताऽवती	प्रियसत्योपेता	प्यारीऔर सच्ची
तया	तया	उस से
यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
मिमिक्षतम्	सेक्तुमिच्छतम्	सिञ्चन करने की इच्छा करो

संस्कृतार्थः।

हे अश्विनौ या युवयोः माधुर्ययुक्ता प्रियसत्योपेता कशा (अस्ति) तया यज्ञं सेक्तुमिच्छतम्॥३॥

भाषार्थः।

हे अश्विनी देवो जो आप दोनों की मीठी प्यारी और सच्ची कशा (है) उस से यज्ञ को सिञ्चन करने की इच्छा करो॥ ३ ॥

(१) कशा चाबुक और बाणी दोनों का नाम है। और यहां पर मधुमती और सूनृतावती का विशेष्य होने से बाणी का अर्थ ठीक बैठता है। परन्तु वह बाणी चाबुक की तडाक ही, प्रतीत होती है। मंत्रका आशय यह है कि अश्विनी देवों के रथ में जुडे हुए घोड़ो को हांकने के चाबुक की तड़ाक का शब्द हमारे यज्ञमें मधु प्रेम और सचाई टपकाता हुआ आवे।

यह मंत्र यजुर्वेद ७। ११ का पूर्वार्द्ध है इससे आश्विनग्रह लिया जाता है॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अश्विनौ देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

नहिवामस्तिदूरके यत्रारथेन-

गच्छथः। अश्विनासोमिनोगृहम् ॥४॥

नहि	नहि	नहीं
वाम्	युवाम्	आप दोनों को
अस्ति	अस्ति	है
दूरके	दूरे	दूर
यत्र	यस्मिन् (पथि)	जिस रस्ते में
रथेन	रथेन	रथ से
गच्छथः	गच्छथः	जाते हो
अश्विना	हे अश्विनौ	हे अश्विनीदेवो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोमिनः	सोमवतः (यजमानस्य)	सोमवाले (यजमान) का
गृहम्	गृहम्	घर

संस्कृतार्थः

हे अश्विनौ युवां यस्मिन्पथि रथेन गच्छथः (ततः) सोमवतः (यजमानस्य) गृहं दूरे नास्ति ॥४॥

भाषार्थः ।

हे अश्विनीदेवो आप दोनों जिस रस्ते में रथ से जाते हो वहां से सोमवाले (यजमान) का घर दूर नहीं है ॥ ४ ॥

सोम वाले की ऐसी भक्ति हो तो अश्विनीदेव उसके घर जाने से कैसे टल सक्ते हैं।

सविता देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुपह्वये।

सचेत्तादेवतापदम् ॥५॥

२ हिरण्यऽपाणिम्	सुवर्णहस्तम्	सोने के हाथ वाले को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ ऊतये	रक्षायै	रक्षा के लिये
१ सवितारम्	सवितारम्	सविता को
उप	उप+	–
ह्वये	उप+ह्वये आह्वयामि	बुलाता हूं
सः	सः	वह
१ चेत्ता	चेतयिता	चिताने वाला
देवता	देवता	देवता
पदम्	(प्राप्यम्) स्थानम्	(प्राप्त करने के योग्य) स्थान को

संस्कृतार्थः

(अहम्) सुवर्णहस्तं सवितारमाह्वयामि स देवता (प्राप्यम्) स्थानं चेतयिता (अस्ति) ॥ ५॥

भावार्थः

(मैं) सोने के हाथ वाले सविता को बुलाता हूं वह देव (प्राप्त करने योग्य) स्थान को चिताने वाले (हैं) ॥ ५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) सविता सूर्य्यरूप में परमात्मा की प्रेरक शक्ति को प्रकट करते हैं। इस पृथिवी पर जो कुछ भी होता है सूर्य्य की प्रेरणा से होता है। अन्न जल वायु वनस्पति इत्यादि का तो किरणों द्वारा सूर्य्य से प्रेरित होना प्रत्यक्ष ही है। परन्तु हमारे मनोव्यापार हमारी कामनाएं हमारी बुद्धि प्रत्येक जाति की बुद्धि इन सब के प्रेरक भी सूर्य्य भगवान् ही हैं। इसी लिये गायत्री मंत्र में बुद्धि की प्रेरणा के लिये सविता से प्रार्थना है।

(२) जब कोई बड़ा छोटे को रक्षा प्रदान करता है। तो उसके सिर पर हाथ रखता है सविता का सोने का हाथ हमारे सिर पर हो।

(३) प्राप्त करने के योग्य स्थान स्वर्ग अर्थात् सूर्य्य लोक है और सविता उस के अधिष्ठाता होने से उस के चितानेवाले हैं।

यह और अगले तीन मंत्र वैश्वदेव शस्त्र में पढ़े जाते हैं।

सविता देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

अपांनपातमवसे सवितारमुपस्तुहि । तस्यव्रतान्युश्मसि ॥६॥

(१)अपाम्	जलानाम्	जलों के
(१)नपातम्	अपत्यम्(नि०२।२)	सन्तान को
अवसे	रक्षार्थम्	रक्षा के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सवितारम्	सवितारम्	सविता को
उप	उप+	--
स्तुहि	उप+स्तुहि	स्तुति कर
तस्य	तस्य	उस के
(२)व्रतानि	आचारनियमान् (आ०को)	आचार के नियमों को
उश्मसि	कामयामहे	हम कामना करते हैं

संस्कृतार्थः।

जलानामपत्यं सवितारं रक्षार्थमुपस्तुहि(वयम्) तस्याचारनियमान् कामयामहे॥ ६॥

भाषार्थः।

जलों के सन्तान सविता (देव) को रक्षा के लिये स्तुति कर (हम) उन के आचार के नियमों की कामना करते हैं॥ ६॥

(१) यहां पर जलों से ब्रह्माण्ड के कारण भूत सूक्ष्म परमाणुओं (cosmic waters) से तात्पर्य्य है जिस को हम आकाश गंगा (milky way)में अब भी ब्रह्माण्ड बनाते हुए देखते हैं मनु में इन्हीं जलों का वर्णन है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"अपएव ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्" १।८
"तदण्डमभवद्धैमं सहस्रांशुसमप्रभम्" १।९

इन जलों से ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर उसमें से पृथिवी मंगल, बुध इत्यादि अनेक लोक निकले और उन सब को प्रकाश और जीवन देने वाले सविता सब के केन्द्र में सूर्य्य रूप से स्थित हुए।

(२) हम उन जैसे आचरण नियमों की कामना करते हैं जिस तरह वह ऋत के अनुकूल चलते हुए परोपकार के लिये दिन रात अपने काम में लगे रहते हैं, वैसे ही हम भी करना चाहते हैं।

सविता देवता गायत्री छन्दः ।८।८।८।

विभक्तारं॑ हवामहे वसो॑श्चित्रस्य॒ राध॑सः। सवि॒तारं॑ नृ॒चक्ष॑सम् ॥७॥

विऽभक्तारम्	विभक्तारम्	बांटने वाले को
हवामहे	हवामहे	हम बुलाते हैं
वसोः	धनस्य	धन के
चित्रस्य	नानाविधस्य	नानाप्रकार की
राधसः	वैभवस्य(आ०को)	विभूति के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सवितारम्	सवितारम्	सविता देव को
नृऽचक्षसम्	नृणां द्रष्टारम्	पुरुषों के द्रष्टा को

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) धनस्य नानाविधस्य वैभवस्य (च) विभक्तारं नृणां द्रष्टारं सवितारं हवामहे ॥७॥

भाषार्थः

(हम) धन के (और)नाना प्रकार की विभूति के बांटने वाले मनुष्यों के द्रष्टा सविता (देव)को बुलाते हैं ॥७॥

सविता सब को देखते हैं और सब की पात्रताको जानते हुए नाना प्रकार के ऐश्वर्य्य और धन यथाधिकार सब को बांटते हैं।

सविता देवता गायत्रीछन्दः ८॥८॥८।

सखायआनिषीदत सवितास्तो

म्योनुनः। दाताराधांसिशुम्भति॥८।

१ सखायः	हे सखायः	हे मित्रो
आ	समन्तात्	चारों ओर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नि	नि+	
२ सीदत	नि+सीदत उपविशत	बैठिये
सविता	सविता	सविता (देव)
स्तोम्यः	स्तुत्यः	स्तुतिके योग्य
नु	यस्मात्	क्योंकि
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
दाता	दाता	देने वाला
राधांसि	धनानि	धनों को
शुम्भति	शोभां प्रकटयति	सौंदर्य्य प्रकट करता है

संस्कृतार्थः ।

हे सखायः समन्तादुपविशत यस्मात् स्तुत्यो धनानां च दाता सविता अस्मभ्यं शोभां प्रकटयति॥८॥

भाषार्थः ।

हे मित्रो चारों ओर बैठ जाओ क्योंकि स्तुति के योग्य(और)धनों के देने वाले सविता(देव)हमारे लिये सौन्दर्य्य प्रकट करते हैं ॥ ८ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) जिन में हम उठते बैठते और रहते सहते हैं। उन को मित्र भाव से देखना, मित्र कह कर पुकारना और उन से मित्र का सा वर्ताव करना चाहिये।

(२) जब २ सूर्य्य के दर्शन होते हैं। तब २ धन के देने वाले सविता की शोभा प्रकट होती है। इस लिये सूर्य्य के निकलते ही सब को मिल कर सविता का आराधन करना चाहिये।

अग्निर्देवता गायत्री छन्दः।८।८।८।

अग्ने पत्नीरिहावह देवाना

मुशतीरुप। त्वष्टारं सोमपीतये।९।

अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
पत्नीः	पत्नीः	पत्नियों को
इह	इह	यहां पर
आ	आ+	--
वह	आ+वह	लाओ
देवानाम्	देवानाम्	देवताओं की
उशतीः	कामयमानाः	कामना करने वालयों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उप	समीपम्	समीप
त्वष्टारम्	त्वष्टारम्	त्वष्टा को
सोम ऽपीतये	सोमपानाय	सोमपीने के लिये

संस्कृतार्थः ।

हे अग्ने कामयमाना देवानां पत्नीरिह समीप मावह सोमपानाय त्वष्टारम् (चावह) ॥ ९ ॥

भाषार्थः ।

हे अग्नि कामना करनेवाली देवताओं की पत्नियों को यहां समीप लाओ (और) सोम पीने के लिये त्वष्टा को लाओ ॥ ९ ॥

रूप बनाने वाले त्वष्टा का व्यवसाय समष्टि के स्त्री विभाग में विशेषता से रहने से वह देव पत्नियों के साथ बुलाए जाते हैं ॥

यह मंत्र अग्निष्टोम के प्रातःसवन में नेष्टा का प्रस्थित याज्या है। अर्थात् वह अध्वर्यु से प्रेषित होकर वषट् कार से पूर्व इस का उच्चारण करता है।

अग्निर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

आग्ना अग्न इहावसे होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरूत्रीं धिषणां वह ॥१०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आ	आ +	--
ग्नाः	देवपत्नीः अर्थात् देवीः	देवियों को
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
इह	इह	यहां
अवसे	रक्षार्थम्	रक्षा के लिये
होत्राम्	होत्राम्	होत्रा को
यविष्ठ	हे युवतम	हे निपट युवान
भारतीम्	भारतीम्	भारती को
वरूत्रीम्	वरूत्रीम्	वरूत्री को
धिषणाम्	धिषणाम्	धिषणा को
वह	आ+वह	लाओ

संस्कृतार्थः ।

हे युवतम अग्ने (अस्माकम्) रक्षार्थं होत्रां भा·

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रतीं वरूत्रीं धिषणाम् (च) देवीरिहावह ॥१०॥

भाषार्थः ।

हे निपटयुवान अग्नि (देव हमारी) रक्षा के लिये होत्रा, भारती, वरूत्री और धिषणा देवियों को यहां लाओ ॥ १० ॥

होत्रा से देवताओं के आह्वान रूपी देवी का ग्रहण है (देखो ऋ० ७।१०४।६)

भारती—स्तुति रूप बाणी की देवी हैं।

वरूत्री—रक्षा रूपी देवी हैं (देखो ऋ० ५।४१।१५)

धिषणा—संपत्ति रूपी देवी हैं (देखो ऋ० १०।३५।७)

ऋषियों ने इन नामों से देवताओं के आह्वान उनकी स्तुति उनकी दी हुई रक्षा और संपत्ति में देवियों की भावना की है अग्नि इन सब देवियों को हमारे पास लावें जिस से हम सदा देवताओं के बुलाने वाले उन की स्तुति करने वाले और उन से रक्षा और संपत्ति की इच्छा करने वाले हों ॥

देव्योदेवताः गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अभिनोदेवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः । अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम् ॥११॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अभि	अभि+	–
नः	अस्मान्	हम को
देवीः	देव्यः	देवियां
अवसा	रक्षणेन	रक्षा से
महः	महता	महान् से
शर्म्मणा	शरणेन	शरण से
नृऽपत्नीः	वीरपत्न्यः	वीरपत्नियां
अच्छिन्नऽपत्राः	अच्छिन्नपक्षाः	बिना पक्ष कटी हुइ
सचन्ताम्	अभि+सचन्ताम् सेवन्ताम्	सेवें

संस्कृतार्थः ।

वीरपत्न्योऽच्छिन्नपक्षा देव्योरक्षणेन महता शरणेन (च) अस्मान् सेवन्ताम् ॥ ११ ॥

भाषार्थः ।

वीरपत्नी विना पक्ष कटी हुईं देवियां रक्षा से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और महान् आश्रय से हम को सेवें ॥ ११ ॥

जिस तरह स्त्री पक्षी अपने अंडो को पर फैला कर सेती है इस तरह वीरपत्नो देवियां हम को सेवें। यह देवियां अच्छिन्न पत्रा हैं। इस लिये हम इन के पक्षों के नीचे निर्भय होकर रह सक्ते हैं। इनकी शरण छिद्र रहित है।

इन्द्राणीवरुणान्यग्नाय्योदेवताः गायत्रीछन्दः ८।८।८।

इहेन्द्राणीमुपह्वये वरुणानींस्वस्तये। अग्नायींसोमपीतये ॥ १२ ॥

इह	इह	यहां
इन्द्राणीम्	इन्द्राणीम्	इन्द्राणी को
उप	उप+	–
ह्वये	उप+ह्वये आह्वयामि	बुलाता हूं
वरुणानीम्	वरुणपत्नीम्	वरुण की पत्नी को
स्वस्तये	स्वस्तये	कल्याण के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्नायीम्	अग्निपत्नीम्	अग्नि की पत्नी को
सोमऽपीतये	सोमपानाय	सोमपान के लिये

संस्कृतार्थः ।

(अहम्) इन्द्राणीं वरुणपत्नीमग्निपत्नीं स्वस्तये सोमपानाय (च) इहाह्वयामि ॥ १२ ॥

भाषार्थः ।

(मैं) इन्द्राणी वरुण की पत्नी (और) अग्नि की पत्नी को कल्याण के लिये (और) सोमपान के लिये यहां बुलाता हूं ॥ १२ ॥

देवपत्नियों के विषय में (देखो व्या० पृ० ३०५)

साएंस वाले केवल विद्युत में पुम् (Positive) और स्त्री (Negative) भेद को जानते हैं। परन्तु वास्तव में यह भेद परमात्मा की सब शक्तियों में है और किसी दिन हम पुंअग्नि (Positive heat) और स्त्री अग्नि (Negative heat) पुंवरुण (Positive ether) और स्त्री वरुण (Negative ether) के निरूपण को भी सुनेंगे ॥

द्यावापृथिव्यौ देवते गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ॥ १३ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मही	महती	बड़ी
द्यौः	द्यौः	द्युलोक
पृथिवी	पृथिवी	पृथिवी
च	च	और
(१)नः	अस्मदर्थम्	हमारे लिये
इमम्	इमम्	इस को
(१)यज्ञम्	यज्ञम्	यज्ञ को
(१)मिमिक्षताम्	सेक्तुमिच्छताम्	सींचने की इच्छा करें
(२)पिपृताम्	पूरयताम्	पूर्ण करें
नः	अस्मान्	हम को
(२) भरीमऽभिः	पोषणैः	पोषणों से

संस्कृतार्थः

महती द्यौः पृथिवी (च) अस्मदर्थमिमं यज्ञं सेक्तुमिच्छतामस्मान् पोषणैः (च) पूरयताम् ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः

महान् द्यौ और पृथिवी हमारे इस यज्ञ को सींचने की इच्छा करें (और) हम को पुष्टियों से पूर्ण करें ॥ १३ ॥

१ हमारे लिये यज्ञ को सिंचन करने की इच्छा करें—जिस प्रकार प्रेम से आसक्त पति स्त्री के लिये गर्भाशय को सिंचन करता है—

२ और जिस तरह वह उस को सन्तान से पूर्ण करती है—इस तरह द्यावा पृथिवी हमको सब प्रकार की पुष्टि से पूर्ण करें॥

यह मन्त्र आग्रायणेष्टि में अग्नि मन्थन में और भी कई कर्मों में विनियुक्त होता है—

यजु: ८।३२ और १३।३२ में भी इसका पाठ है—

द्यावापृथिव्यौ देवते गायत्री छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

तयोरिद्घृतवत्पयो विप्रारिहन्ति

धीतिभिः । गन्धर्वस्यध्रुवेपदे १४ ॥

तयोः इत्	तयोः (द्यावा-पृथिव्योः) एव	उन (आकाश और पृथिवी) का ही
घतऽवत्	घृतसदृशम्	घीके सदृश को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पयः	जलम् (निघं०१।१२)	जल को
२ विप्राः	मेधाविनः	बुद्धिमान्
२ रिहन्ति	आस्वादयन्ति	स्वाद लेते हैं
२ धीतिऽभिः	ध्यानैः	ध्यानों से
१ गन्धर्वस्य	गन्धर्वस्य	गन्धर्व के
१ ध्रुवे	ध्रुवे	निश्चल में
१ पदे	स्थाने	स्थान में

संस्कृतार्थः ।

मेधाविनो द्यावापृथिव्योरेव घृतसदृशं जलं गन्धर्वस्य निश्चले स्थाने ध्यानैरास्वादयन्ति ॥ १४॥

भाषार्थः ।

बुद्धिमान् आकाश और पृथिवी ही के घी जैसे जल को गन्धर्व के निश्चल स्थान में ध्यानों से आस्वादन करते हैं ॥ १४ ॥

'गन्धर्व' मनुष्य से उच्च और देवता से न्यून एक योनि विशेष का नाम है गन्धर्वों के रहने का स्थान वायुमण्डल के ऊपर का अन्तरिक्ष है। जो निश्चल है अर्थात पृथिवी के भ्रमण की सीमा से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाहर है जिस गन्धर्व की पदवी को पुण्यवान् जीव मरे पीछे प्राप्त करते हैं उस को ॥

(२) बुद्धिमान् जीते जी ध्यान द्वारा भोग सक्ते हैं। और द्यावा-पृथिवी के बीच में जो निर्मल घृत जैसा स्वादु जल है जिसको गन्धर्व ही आस्वादन करते हैं उसको ध्यान द्वारा मेधावी पुरुष प्राप्त कर लेते हैं ॥

पृथिवी देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

स्योनापृथिविभवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छानःशर्मसप्रथः ॥१५॥

स्योना	सुखकरा	सुख देनेवाली
पृथिवि	हे पृथिवि	हे पृथिवी
भव	भव	हो
अनृक्षरा	कण्टकरहिता	कण्टक रहित
निऽवेशनी	निवेशस्थान भूता	रहने का स्थान
यच्छ	देहि	दे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न॒:	अस्मभ्यम्	हमारे लिये
शर्म॑	शरणम्	शरण को
स॒ऽप्रथः	विस्तारभूतम्	विस्तृत को

संस्कृतार्थः ।

हे पृथिवि सुखकरा कण्टक रहिता निवेशस्थानभूता भव, अस्मभ्यं विस्तृतं शरणं (च)देहि ॥१५॥

भाषार्थः

हे पृथिवी सुख देने वाली कण्टक रहित और रहने का स्थान देने वाली हूजिये (और) हमारे लिये विस्तृत शरण को दीजिये ॥ १५ ॥

पृथिवी प्रत्यक्ष देवता है और हम को सुख और विस्तृत शरण प्रदान करती है—यह देवी हमें निवेश स्थान न दे और त्याग देवे तो हमारी भी उल्कापात वाली गति हो ॥

पृथिवी को भी परमात्मा की शक्ति कह सक्ते हैं । क्योंकि आजकल साएन्सने यह सिद्ध करदियाहै—कि सब पदार्थ (Matter) विद्युत शक्ति के ही रूपान्तर हैं और जो कुछ हम को दीखता है वह सब शक्ति ही का आविर्भाव है ॥

यह मंत्र महानाम्नी व्रत में भूमि को स्पर्श करके और मार्गशीर्ष की पौर्णिमा के दिन प्रत्यवरोहण कर्म में पृथिवी पर शयन करते समय पढ़ा जाता है।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णु

र्विचक्रमे । पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥ १६ ॥

४ अतः	अस्याः	इस से
४ देवाः	देवाः	देवता
४ अवन्तु	अवन्तु	रक्षा करें
नः	अस्मान्	हम को
यतः	यस्याः	जिस से
१ विष्णुः	विष्णुः	विष्णु ने
विऽचक्रमे	विक्रमणं कृतवान्	विक्रमण किया
२ पृथिव्याः	पृथिव्याः	पृथिवी से
३ सप्त	सप्त	सात
३ धामऽभिः	स्थानैः (सहितायाः)	स्थानोंसे (युक्तसे)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

अस्या देवाअस्मानवन्तु यस्यास्सप्तस्थानैः (सहितायाः) पृथिव्या विष्णुर्विचक्रमे ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

इस से देवता हमारी रक्षा करें । जिस सात स्थानों से युक्त पृथिवी से विष्णु ने विक्रमण किया ॥ १६ ॥

(१) विष्णु यज्ञरूप में परमात्मा का नाम है । यज्ञ दो हैं एक समष्टि जिसमें अग्नि और सूर्य होता, अश्विनी अध्वर्यु, इन्द्र यजमान, देव पत्नी, यजमान पत्नी, त्वष्टा नेष्टा इत्यादि देवता अपने २ काम में आलस्य रहित लगे रह कर सृष्टि को नियम पूर्वक चला रहे हैं । इसी से सृष्टि का पालन कर्म विष्णु का कर्म कहा जाता है । दूसरा व्यष्टि यज्ञ जो समष्टि यज्ञ की अनुकृति से मनुष्य करते हैं । व्यष्टियज्ञ पृथिवी से अन्तरिक्ष और वहां से सूर्य्य लोक को जाता है । यही इस मन्त्र में विष्णु का 'पृथिवी से आरम्भ करके पाद क्रमण" है । जो यजमान को पृथिवी से अन्तरिक्ष और वहां से सूर्यलोक अर्थात् स्वर्ग में पहुंचाता है । और इसी आशय को लेकर श० ब्रा० १।९।३।९, १० में पृथिव्यादि क्रम से यजमान के लिये पाद क्रमण करने की विधि है ॥

समष्टि यज्ञ रूपी विष्णु का पादक्रम इस से विपरीत क्रम से है । क्योंकि सृष्टि की उत्पत्ति और पालन सूर्य्य से आरम्भ करके अन्तरिक्ष और पृथिवी की ओर हैं । और समष्टि यज्ञ का फल वृष्टि, प्रकाश, जीवन इत्यादि ऊपर से नीचे की ओर देखा जाता है । इसी आशय से श० ब्रा० (१।९।३।१२) में यज-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मान के लिये पादक्रम का यह क्रम भी विकल्प से लिखा है और [यजु० अ० २।२५) में भी यही क्रम है॥

(२) विष्णु अर्थात् व्यष्टियज्ञ ने पृथिवी से आरम्भ करके पादक्रमण किया॥

(३) जो पृथिवी सात धाम से युक्त है। पृथिवी के सात धाम पूर्व में क्या थे इस का तो निश्चय नहीं है। स्यात् सात द्वीपों से तात्पर्य्य हो जिनके नाम किसी काल में जम्बु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर थे, आजकल यह सात विभाग होसक्ते हैं।

[१] यूरोप-एशिया पूर्वोत्तर विभाग [स्यात् यही जम्बू द्वीप हो]।

[२] इस से दक्षिण पूर्व में आस्ट्रेलिया।

[३] यूरोप-एशिया से पश्चिम में ऐफ्रीका।

[४] ऐफ्रीका से उत्तर पश्चिम में ग्रीनलैण्ड और उत्तर अमेरिका।

[५] इससे दक्षिण में दक्षिण अमेरिका

[६] अमेरिका के पश्चिम में पौलिनीशिया और औस्ट्रलेशिया

[७] इन सब के दक्षिण में ऐन्टार्क्टिक कैन्टिनेन्ट [दक्षिण मेरु के समीप का स्थल]

(४) इस से देवता हमारी रक्षा करें। अर्थात् इस पृथिवी के मनुष्य, पशु, वृक्ष, समुद्र, पर्वत इत्यादि से हमें किसी प्रकार का भय न हो।

यह और अगले ५ मंत्र सोमयज्ञ के प्रातः सवन समाप्त हुए पीछे पढ़े जाते हैं और दर्शपौर्णमास के प्रायश्चित्त होम में यह और अगली ऋचा पढ़ी जाती हैं॥

विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः।८।८।८।

इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समूह्ळमस्यपांसुरे ॥१७॥

इदम्	इदम् (जगत्)	इस (जगत्) को
विष्णुः	विष्णुः	विष्णु ने
वि	वि+	--
चक्रमे	वि+चक्रमे विक्रमणं कृतवान्	विक्रमण किया
त्रेधा	त्रिवारम्	तीनबार
नि	नि +	--
दधे	नि+दधे	रक्खा
पदम्	पादम्	पैर को
समऽऊह्ळम्	सम्यगन्तर्भूतम्	पूरीतरह समाया ह
अस्य	अस्य	इस के
पांसुरे	धूलियुक्ते (पादस्थाने)	धूलियक्त (पाद स्थान) में

संस्कृतार्थः ॥

विष्णु रिदम् (जगत्) विक्रमणं कृतवान्, त्रिवारं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पादं निदधे (इदंसर्वम्) अस्य धूलियुक्ते (पादस्थाने) सम्यगन्तर्भूतम् ॥ १७ ॥

भाषार्थः।

विष्णु ने इस (जगत्) को विक्रमण किया तीन बार पैर रक्खा (यह सब) इनके धूलि युक्त पैर में पूर्णतया समागया ॥ १७ ॥

यह सब अर्थात् सूर्य्य अन्तरिक्ष और पृथिवी विष्णु के तीन बार पैर रखने से जितनी धूलि पैर में लगे उस में पूरी तरह से समाया हुआ है यह सौर ब्रह्माण्ड जिस के मध्य में सूर्य्य है और उसके चारों ओर बुध शुक्र पृथिवी, इत्यादि ग्रह अपने चन्द्रमाओं सहित हैं, जिसका व्यास अन्तिम ग्रह तक ५५ अर्ब १८ करोड़ मील अर्थात् ९ अर्ब ३० करोड़ योजन है—यह सब समष्टि जगत् की अपेक्षा इतना है जितनी पुरुष की अपेक्षा वह धूलि है जो तीन बार पैर रखने से पैर में लगजाए।

वास्तव में समष्टि जगत् का प्रमाण इतना बड़ा है कि मनुष्य की वुद्धि उस को ग्रहण नहीं कर सक्ती—हजारों नक्षत्र जो अत्यन्त दूर होने के कारण हमें ज्योति के फूलों जैसे प्रतीत होते हैं और जो वडे से वडी दूरवीन में ज्योति के विन्दु समान दिखाई देते हैं वास्तव में सूर्य्य से कई गुने वड़े हैं।

सूर्य्य पृथिवी से १३ लाख गुना है अगस्त्य तारा सूर्य्य से १ करोड़ गुना है—जो नक्षत्र सौर ब्रह्माण्ड से बहुत समीप हैं वे भी इतनो दूर हैं कि उस दूरी के मण्डल में ७ खर्व ६६ अर्ब सौर ब्रह्माण्ड समा जावें जो नक्षत्र दूर हैं और विना दूरबीनके दिखाई नहीं देते, उनके प्रमाण का हिसाव तो हम अंकों में करही नहीं सक्ते।

इस लिये सौर ब्रह्माण्ड की पुरुष के पाद की धूलि से साद-श्यता बहुत उचित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥१८॥

त्रीणि	त्रीणि	तीनों को
पदा	पदानि	पादों को
वि	वि+	–
चक्रमे	वि+चक्रमे विक्रमणं कृतवान्	विक्रमण किया है
विष्णुः	विष्णुः	विष्णु ने
गोपाः	रक्षकः	रक्षक ने
अदाभ्यः	वंचनरहितः	जिसे कोई धोखा नहीं दे सक्ता
अतः	अतःप्रभृति	इससे पीछे
धर्माणि	नियमान्	नियमों को
धारयन्	धारयन्	धारण करता हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

रक्षको वंचनरहितो विष्णुस्त्रीणि पदानि वि-चक्रमे । अतःप्रभृति (सृष्टि) नियमान्धारयन् (सन् विद्यते) ॥ १८ ॥

भाषार्थः ।

रक्षक और किसी से न धोखा दिये जाने वाले विष्णु ने तीन कदम रक्खे इस से पीछे (सृष्टि) नियमों को धारण करते हुए (विराजमान हैं) ॥१८॥

विष्णु ने पहले तीन कदम रक्खे अर्थात् सूर्य्य अन्त-रिक्ष और पृथिवी को विस्तृत (Evolve) किया। इस से पीछे सृष्टि नियम को धारण करते हुये अब भी सृष्टि में विराजमान हैं॥

यह मंत्र उपसद इष्टि में वैष्णवयाग के प्रातःकाल का याज्या और सायंकाल का अनुवाक्या है।

विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः ८ । ८ । ८ ।

विष्णोःकर्माणिपश्यत यतोव्र-तानिपस्पशे । इन्द्रस्ययुज्यःसखा१९

विष्णोः	विष्णोः	विष्णु के
कर्माणि	कर्माणि	कर्मों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पश्यत	पश्यत	देखो
यतः	यैः	जिन से
व्रतानि	नियमान्	नियमों को
पस्पशे	स्पृष्टं कृतवान्	स्पष्ट किया है
इन्द्रस्य	इन्द्रस्य	इन्द्र का
युज्यः	सहकारी	साथ काम करने वाला
सखा	सखा	सखा

संस्कृतार्थः ।

(यूयम्) विष्णोः कर्माणि पश्यत यैरिन्द्रस्य सहकारी सखा नियमान् स्पष्टं कृतवान् ॥ १९ ॥

भाषार्थः ।

विष्णु के कर्मों को देखो जिन से इन्द्र के साथ कार्य करने वाले सखा (विष्णुने) नियमों को दर्शाया है ॥ १९ ॥

समष्टि यज्ञ रूपी परमात्मा के कर्मों को देखने से उसके नियम स्पष्ट प्रतीत हो जाते हैं–जैसे दिन रात्रि के चक्र को और नक्षत्रों के उदयास्त को देखने से पृथिवी का अपनी कक्षापर भ्रमण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य्य के कलंक कुछ काल तक देखने से सूर्य्य का अपनी कक्षा पर भ्रमण एवं ग्रहों का अपनी कक्षा पर और सूर्य्य के चौफेरे भ्रमण नक्षत्रों को कुछ काल तक देखने से सूर्य्य का पृथिव्यादि ग्रहों को साथ लिये अभिजित् (Lyre) नक्षत्र की ओर गमन नक्षत्रों के आकाश गंगा के केन्द्र पर भ्रमण की सम्भावना इत्यादि कर्मों के देखने से यह नियम स्पष्ट प्रतीत हो जाता है कि इस सृष्टि में कोई स्थिर नहीं हैं–सब चल रहे हैं।

जितने साएंस के नियम हैं वे विष्णु के कर्मों को देखने से प्रतीत हुए हैं। और समष्टि यज्ञ का प्रयोजन यही है कि मनुष्य सृष्टि के नियमों को समझ कर सृष्टि कर्ता को समझे।

विष्णु इन्द्र के साथ काम करने वाले सखा हैं–केवल इन्द्र अर्थात् बलशक्ति (Force) से यह सृष्टि रचना और सृष्टि धारण करना नहीं हो सक्ता–इसमें विनियोग (application of force) की आवश्यकता है यही बल का विनियोग यज्ञ है इसी का नाम विष्णु है।

यह मंत्र अग्नि चयन में विनियुक्त है देखो (यजु० १३।३३)

विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥२०॥

तत्	तत्	उसको
विष्णोः	विष्णोः	विष्णु के
(१) परमम्	परमम्	सबसे ऊंचेको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) पदम्	पदम्	पद को
(२) सदा	सदा	सदा
(३) पश्यन्ति	पश्यन्ति	देखते हैं
(३) सूरयः	विद्वांसः	विद्वान्
(१) दिवीऽइव	यथाऽऽकाशे	जैसे अकाश में
(१) चक्षुः	चक्षुः	नेत्र
(१) आऽततम्	प्रसृतम्	फैला हुआ

संस्कृतार्थः

यथाऽऽकाशे प्रसृतं चक्षुः तद्विष्णोः परमं पदम् (पश्यति तद्वत्) विद्वांसः सदा (हृदये तत्पदम्) पश्यन्ति ॥ २० ॥

भाषार्थः

जैसे आकाश में फैलाया हुआ नेत्र विष्णु के उस परम पद को (देखता है-उसी तरह) विद्वान् निरन्तर (अपने हृदय में उस पद को) देखते हैं ॥२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) विष्णु का अवम पद पृथिवी मध्यम पद अन्तरिक्ष और उत्तम पद सूर्य्य है।

(२) इस विष्णु के परम पद को साधारण मनुष्य चक्षु को आकाश में फैलाने से देखते हैं---परन्तु।

(३) विद्वानों के हृदय में निरन्तर उस परम ज्योति का ध्यान बना रहता है साधारण मनुष्यों का मन चिन्तन में लगा रहने से उनके लिये भय, शोक, दीनता इत्यादि क्लेशों को उत्पन्न करता है सूर्य्य की ओर आंख फैला कर देखने से थोड़ी देर के लिये जब तक उस का चिन्तन मन में बना रहे सब क्लेश दूर हो सके हैं, परन्तु विद्वानों का मन निरन्तर परम पद ज्योति के चिन्तन में लगा रहता है-और उनके लिये सदा निर्भयता, आनन्द, अदीनता इत्यादि सुखों को उत्पन्न करता है।

विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

तद्विप्रासोविपन्यवो जागृवांसः

समिन्धते। विष्णोर्यत्परमंपदम् ॥२१॥

तत्	तत्	उस को
विप्रासः	मेधाविनः	मेधावी
विपन्यवः	विशेषेण स्तोतारः	विशेष स्तुति करने वाले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जागृऽवांसः	जागरूकाः	जागरण शील
सम्	सम्+	-
इन्धते	सम्+इन्धते सम्यग्दीपयन्ति	भली प्रकार प्रकाशित करते हैं
विष्णोः	विष्णोः	विष्णु के
यत्	यत्	जो
परमम्	परमम्	सब से ऊंचेको
पदम्	पदम्	पद को

संस्कृतार्थः ।

विष्णोर्यत्परमं पदम्(अस्ति)तद्विशेषेण स्तोतारो जागरूका मेधाविनः सम्यग्दीपयन्ति ॥ २१ ॥

भाषार्थः ।

विष्णु का जो सब से ऊंचा पद है उस को विशेष स्तुति करने वाले जागरण शील मेधावी भली प्रकार प्रकाशित करते हैं ॥ २१॥

विष्णु का परम पद सूर्य्य रूप से आकाश में ही वर्तमान नहीं है–किन्तु यहां पृथिवी पर भी उस को देख सके हैं–उस परम पद को विशेष स्तुति करने वाले जागरण शील (not dreamers) तमो गुण से रहित वुद्धिमान् प्रकाश करते हैं–अर्थात् उस पद की झलक ऐसे पुरुषों के जीवन में दीख पड़ती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋ० मं० १ सू० २३

वायुर्देवता काण्वो मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री

छन्दः । ८ । ८ । ८ ।

तीव्राः सोमास आ गह्याशीर्वन्तः

सुता इमे । वायो तान्प्रस्थितान्पिब ॥१॥

तीव्राः	वेगवन्तः	वेगवाले
सोमासः	सोमाः	सोमरस
आ	आ+	--
गहि	आ+गहि आगच्छ	आओ
१ आशीः-ऽवन्तः	दुग्धेन मिश्रिताः (ऋ०३।५३।१४)	दूध से मिले हुए
सुताः	निष्पीडिताः	निष्पीडन किये हुए
इमे	इमे	ये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वायो	हे वायो	हे वायु
तान्	तान्	उन को
प्रऽस्थितान्	निवेदितान्	निवेदन किये हुओं को
पिब	पिब	पान करो

संस्कृतार्थः

वेगवन्तो दुग्धेन मिश्रिता निष्पीडिता इमे सोमाः (सन्ति), हे वायो आगच्छ निवेदितांस्तान् पिब॥१॥

भाषार्थः।

वेगवाले दूध से मिले हुए निष्पीडन किये हुए ये सोमरस (हैं) हेवायु आओ निवेदन किये हुए उनको पान करो ॥ १ ॥

विनियोग—द्वितीय अभिप्लव षडहके प्रउग शस्त्रमें इसका और अगले २ मंत्रों का पाठ होता है देखो (आ० श्रौ० सू० उ० १।६।२)

आशिर् का अर्थ सोम में मिलाया जाने वाला पदार्थ है जो प्रायः दूध होता है (देखो ऋ० ३।५३।१४ "नाशिरं दुह्रे") और कभी दही होता है (देखो पृ० १२७)

इन्द्रवायू देवते गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

उभा॒दे॒वा दि॑वि॒स्पृशे॑ न्द्रवा॒यू ह॑वामहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अस्यसोमस्यपीतये ॥ २ ॥

उभा	उभौ	दोनों को
देवा	देवौ	देवों को
दिविऽस्पृशा	द्युलोके स्पर्श-वन्तौ	द्युलोक में स्पर्श वालों को
इन्द्रवायू	इन्द्रवायू	इन्द्र और वायुको
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
अस्य	अस्य	इस के
सोमस्य	सोमस्य	सोम के
पीतये	पानाय	पीने के लिये

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) द्युलोके स्पर्शवन्तावुभाविन्द्रवायू देवावस्य सोमस्य पानायाह्वयामः ॥ २ ॥

भाषार्थः ।

(हम) द्युलोक में स्पर्श वाले इन्द्र और वायु दोनों देवों को इस सोमके पीनेके लिये बुलातेहैं ॥२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यद्यपि इन्द्र और वायु दोनों अन्तरिक्ष के देवता हैं—परंतु जैसे द्युलोक में रहने वाले मरुद्गण हैं (देखो पृ० ३८७) वैसे ही वायु और इन्द्र भी हैं—देखो पृ० २२ जिसमें श० ब्रा० ११।२।३।२ का अर्थ किया है कि जिस प्रकार इन तीन लोकों में देवता हैं वैसे इनसे भी ऊपर के लोकों में हैं)

इन्द्रवायू देवते गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

इन्द्रवायूमनोजुवा विप्राहवन्तऊ-
तये। सहस्राक्षाधियस्पती ॥३॥

इन्द्रवायू	इन्द्रवायू	इन्द्रऔर वायको
मनःऽजुवा	मनइववेगवन्तौ	मन की तरह वेग वालों को
विप्राः	मेधाविनः	ज्ञानी पुरुष
हवन्ते	आह्वयन्ति	बुलाते हैं
ऊतये	रक्षायै	रक्षा के लिये
सहस्र-ऽअक्षा	सहस्राक्षौ	सहस्र नेत्रों वालों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धिय॒:	कर्मणः	कर्म के
पती॑	पालकौ	पालने वालों को

संस्कृतार्थः ।

मेधाविनो मन इववेगवन्तौ सहस्राक्षौ कर्मणः पालका विन्द्रवायू रक्षायै आह्वयन्ति ॥ ३ ॥

भाषार्थः ।

ज्ञानी जन मन की तरह वेगवाले सहस्र नेत्रों वाले कर्म के पालने वाले इन्द्र और वायु को रक्षा के लिये बुलाते हैं ॥ ३ ॥

इन्द्र और वायु अपने वास्तविक रूप में मन जैसे वेग वाले हैं—क्योंकि वास्तव में मन भी इन्द्रका ही रूप है—और वायु भी उसी का रूप है यह देवता सहस्रों नेत्र वाले हैं कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां इनका नेत्र न हो—क्योंकि यह सर्वव्यापी हैं कर्म के पालक हैं इन्हीं की रक्षा से मनुष्य शुभ कर्म करने में समर्थ होता है—इसी लिये ज्ञानी जन रक्षा के लिये इनको बुलाते हैं-अज्ञानी पुरुष अपनी मूर्खता के कारण इनको परमात्मा का रूप न जानकर इनकी सहायतासे वञ्चित रहते हैं ॥

मित्रावरुणौ देवते गायत्री छन्दः ८ । ८ । ८ ।

मि॒त्रं व॒यं ह॑वामहे॒ वरु॑णं॒ सोम॑पीतये ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जज्ञानापूतदक्षसा ॥ ४ ॥

मित्रम्	मित्रम्	मित्र को
वयम्	वयम्	हम
हवामहे	आह्वयामः	बुलाते हैं
वरुणम्	वरुणम्	वरुण को
सोमऽपीतये	सोमपानाय	सोम पीने के लिये
१जज्ञाना	प्रादुर्भूतौ	प्रकट हुए २
पूतऽदक्षसा	पवित्रबलौ	पवित्र बल वालों को

संस्कृतार्थः ।

वयं मित्रं वरुणम् (च) सोमपानायाह्वयामः (यौ) पवित्रबलौ प्रादुर्भूतौ ॥ ४ ॥

भाषार्थः ।

हम मित्र (और) वरुण को सोम पीने के लिये बुलाते हैं (जो) पवित्र बल वाले प्रकट हुए हैं ॥४॥

विनियोग—सत्र के चतुर्विंश नामक द्वितीय दिन में मैत्रावरुण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शास्त्र में इस मंत्र और अगले २ मंत्रों का पाठ है—देखो (आ० श्रौ० सू० उ० १।२।२)

१--मित्र और वरुण पवित्र बल वाले प्रकट हुए हैं इनका जन्म इसी लिये हुआ है कि यह अपनी शक्ति से सृष्टि को पवित्र करें दिन में सूर्य्य के किरणों की पावक शक्ति अपवित्र पदार्थों के परमाणुओं को छिन्न भिन्न करके सूक्ष्म कर देती है और रात्रि में ऊष्मा के साथ वह सूक्ष्म परमाणु उठ कर आकाशमें चले जाते हैं। इस लिये दिन और रात्रि के आकाश रूप में मित्र और वरुण ही पृथिवो को पवित्र करने की सामर्थ्य लिए हुए उत्पन्न हुए हैं॥

मित्रावरुणौ देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

ऋतेनयावृतावृधा ऋतस्यज्योतिष-
स्पती। तामित्रावरुणाहुवे ॥५॥

१ ऋतेन	ऋतेन	ऋत से
यौ	यौ	जो
१ ऋतऽवृधौ	ऋतस्यवर्धयितारौ	ऋत के बढ़ाने वाले
२ ऋतस्य	ऋतस्य	ऋत के
२ ज्योतिषः	प्रकाशरूपस्य	प्रकाश रूप के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२ पती	पालकौ	पालने वाले
ता	तौ	उनको
मित्रावरुणा	मित्रावरुणौ	मित्र और वरुण को
हुवे	आह्वयामि	मैं बुलाता हूं

संस्कृतार्थः।

यावृतेन ऋतस्य वर्धकौ, प्रकाशरूपस्य ऋतस्य पालकौ तौ मित्रावरुणौ (अहम्)आह्वयामि ॥५॥

भाषार्थः।

जो ऋत से ऋत के बढाने वाले प्रकाशरूप ऋत के पालने वाले (हैं) उन मित्र और वरुण को (मैं) बलाता हूं ॥ ५ ॥

(१) मित्र और वरुण ऋत के द्वारा अर्थात् स्वयं ऋत के अनुकूल चलने से ऋत को बढ़ाने वाले हैं। मनुष्य भी जो ऋत के अनुकूल चलता है वह यही नहीं कि अपने को ही लाभ पहुंचाता है-परंतु सारी सृष्टि को किसी अंश में सुख पहुंचाता है-सृष्टि रक्षा में वह देवताओं का सहायक होता है। यही ऋत को बढ़ाने से तात्पर्य्य है। (ऋत के अर्थ के लिये देखो पृ० ७०, ७१)

(२) ऋतका रूप प्रकाश है। जो आचरण प्रकाश रूप है जो किसी से भी छिपाने के योग्य नहीं है जिस आचरण से मन में प्रकाश रहता है, चेहरे पर प्रकाश रहता है, वह आचरण ऋत के अनुकूल है। यह ऋत के जानने का छठा उपाय हुआ (देखो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पृ० ७१ और पृ० ३७१) प्रकाश रूप ऋत के पालक मित्र और वरुण हैं। इस लिये ऋत के लिये इन्हीं से प्रार्थना करनी चाहिये।

मित्रावरुणौ देवते गायत्रीछन्दः ८।८।८।

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभि-

रूतिभिः। करतां नः सुराधसः ॥६॥

वरुणः	वरुणः	वरुण
प्रऽअविता	प्रकर्षेण रक्षकः	पूरी तरहसे रक्षा करने वाला
भुवत्	भवतु	हो
मित्रः	मित्रः	मित्र
विश्वाभिः	सर्वाभिः	सब से
ऊतिऽभिः	रक्षाभिः	रक्षाओं से
करताम्	कुरुताम्	करें
नः	अस्मान्	हम को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुऽराधसः	सुष्ठु धनयुक्तान्	खूब धन वालों को

संस्कृतार्थः ।

वरुणः प्रकर्षेण रक्षको भवतु मित्रः(च)सर्वाभी रक्षाभिः (रक्षको भवतु) (तावुभौ) अस्मान् सुष्ठु धनयुक्तान् कुरुताम् ॥ ६ ॥

भावार्थः ।

वरुण पूरी तरह रक्षा करने वाले हों-मित्र सब रक्षाओं से (रक्षा करने वाले हों) (वे दोनों) हम को खूब धनवान् बनावें ॥ ६ ॥

यह एक अनुभव की वात है कि धनी पुरुष ही देव पूजन और परोपकार के कामों में प्रवृत्त होते हैं—और जिस जाति में बहुत धनवान् हैं वही जाति धर्मात्मा और देवताओं की रक्षा से युक्त होती है—निर्धन जाति को देवता भी त्याग देते हैं। इस लिये नित्य प्रार्थना करनी चाहिये कि हम सव खूव धनवान् हों ॥

इन्द्रोमरुत्वान्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

मरुत्वन्तंहवामह इन्द्रमासोमपी-

तये। सजूर्गणेनतृम्पतु ॥ ७ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुत्वन्तम्	मरुद्भिर्युक्तम्	मरुतोंसे युक्त को
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
इन्द्रम्	इन्द्रम्	इन्द्र को
आ	(पूरणः)	--
सोमऽपीतये	सोमपानाय	सोम पीने के लिये
सऽजूः	सहितः(आ०को)	साहत
गणेन	मरुद्गणेन	मरुद् गण से
तृम्पतु	तृप्तोभवतु	तृप्त हो

संस्कृतार्थः ।

(वयम्) मरुद्भिर्युक्तमिन्द्रं सोमपानायाह्वयामः मरुद्गणेन सहितः (सः) तृप्तो भवतु ॥ ७ ॥

भाषार्थः ।

(हम) मरुतों के सहित इन्द्र को सोमपीने के लिये बुलाते हैं (वह) मरुद्गण के सहित तृप्त हों॥७॥

देखो व्याख्या पृ० ३७९ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इन्द्रोमरुत्वान्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

इन्द्रज्येष्ठामरुद्गणा देवासःपूष-

रातयः । विश्वेममश्रुताहवम् ॥८ ॥

इन्द्रऽज्येष्ठाः	हे इन्द्रमुख्याः	इन्द्र हैं प्रधान जिन में
मरुत्ऽगणाः	हे मरुद्गणाः	हे मरुद्गणो
देवासः	हे देवाः	हे देवताओ
पूषऽरातयः	पूषादेवोरातिर्दाता येषां ते, तत्सम्बुद्धौ	पूषा है दाता जिनमें
विश्वे	सर्वे	सब
मम	मम	मेरी
श्रुत	शृणुत	सुनो
हवम्	आह्वानम्	पुकार को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः ।

हे इन्द्रमुख्याः पूषरातयो मरुद्गणा देवाः (यूयम्) सर्वे ममाह्वानं शृणुत ॥८॥

भाषार्थः ।

इन्द्र जिनमें प्रधान हैं और पूषा जिन में दाता हैं ऐसे हे मरुद्गण देवताओ (आप) सब मेरी पुकार को सुनो ॥ ८ ॥

इन्द्र सब देवताओं में वडे हैं और पूषा उनमें भागके बांटने वाले हैं ऐसे मरुत् संज्ञक विश्वेदेव मेरी पुकार को सुनें वह पुकार सुनकर क्या करें सो अगले मंत्र में कहते हैं ॥

इन्द्रोमरुत्वान्देवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

हतवृत्रंसुदानव इन्द्रेणसहसायुजा ।

मानोदुःशंसईशत ॥ ९ ॥

हत	नाशयत	नाश करो
वृत्रम्	शत्रुम्	शत्रुको
सुऽदानवः	हे शोभनदानयुक्ताः (मरुद्गणाः)	हे सुन्दरदानी
इन्द्रेण	इन्द्रेण	इन्द्र से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स॒हसा॑	बलवता	बलवाले से
यु॒जा	सहायकेन	साथीसे
मा	मा	मत
न॒ः	अस्मान्	हम को
दु॒:शंस॒:	दुर्वाच्यः	निन्दित
ई॒श॒त	प्रशास्तु	शासन करे

संस्कृतार्थः।

हे शोभनदानयुक्ताः (मरुद्गणा यूयम्) बलवता सहायकेनेन्द्रेण (युक्ताः) शत्रुं नाशयत दुर्वाच्यः (पुरुषः) अस्मान् मा प्रशास्तु ॥ ९ ॥

भाषार्थः

हे सुन्दर दानी (मरुद्गण आप) बलवान् सहायक इन्द्र से युक्त हुए २ शत्रु को नाश करो निन्दित (पुरुष) हम पर शासन न करे ॥ ९ ॥

बलवान् सहायक इन्द्र के साथ मिलकर मरुद्गण हमारे शत्रु को नाशकरें, शत्रुके रहते मनुष्य वा जाति अपनेको उन्नत नहीं कर सके। दुःशंस वह है जिस को सब बुरा कहें ऐसा पुरुष हम पर राज्य न करे ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ८।८८।

विश्वान्देवान्हवामहे मरुतःसोमपीतये। उग्राहि पृश्निमातरः॥१०॥

विश्वान्	सर्वान्	सब को
देवान्	देवान्	देवताओं को
हवामहे	आह्वयामः	हम बुलाते हैं
मरुतः	मरुत्संज्ञकान्	मरुतों को
सोमऽपीतये	सोमपानाय	सोम पीनेकेलिये
२ उग्राः	उग्राः	भयानक
हि	खलु	निश्चय करके
१ पृश्निऽमातरः	अन्तरिक्षपुत्राः (पृश्नीति अन्तरिक्षनाम निघं० १।४)	अन्तरिक्ष के पुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः

(वयम्) मरुत्संज्ञकान्सर्वान्देवान् सोमपानाया ह्वयामः, अन्तरिक्षपुत्राः (ते) उग्राः खलु ॥ १० ॥

भाषार्थः ।

मरुत् नाम वाले सब देवताओं को सोम पीने के लिये हम बुलाते हैं सचमुच वह अन्तरिक्ष के पुत्र भयानक हैं ॥ १० ॥

(१) मरुत अन्तरिक्ष से उत्पन्न होते हैं (देखो पृ० १४५) इसलिये अन्तरिक्ष के पुत्र हैं।

(२) हम इन को इसलिये बुलाते हैं कि वे भयानक हैं और उनके पास होने से हमें शत्रु का भय कुछ नहीं रहेगा।

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

जयतामिवतन्यतु र्मरुतामेतिधृष्णुया । यच्छुभंयाथनानरः ॥ ११ ॥

जयताम् ऽइव	जयतामिव	जीतते हुओं की तरह
तन्यतुः	गर्जनम् (आ०को)	गर्जन
मरुताम्	मरुताम्	मरुतों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एति	गच्छति	जाती है
धृष्णुऽया	प्रगल्भतायुक्तम्	वीरता युक्त
यत्	यस्मात्	जिस से
शुभम्	कल्याणम्	कल्याण को
याथन	प्राप्नुथ	प्राप्तहोते हो
नरः	हे नरः	हे मनुष्यो

संस्कृतार्थः ।

मरुतां प्रगल्भतायुक्तं गर्जनं जयतामिव गच्छति यस्मात् (गर्जनात्) हे नरःयूयम्कल्याणं प्राप्नुथ ॥ ११ ॥

भाषार्थः ।

मरुतों की वीरता युक्त गर्जन विजय करनेवालों की तरह जाती है जिस (गर्जन) से हे मनुष्यो तुम कल्याण को प्राप्त होते हो ॥ ११॥

जिस प्रकार युद्ध में शत्रुको जीतने वाले वीर गर्जते हैं ऐसे ही मरुतों की गर्जन मनुष्यों के निकट जाती है और जिस प्रकार युद्ध की गर्जन विजय को सूचन करती है इसी प्रकार मरुतों की गर्जन मनुष्यों के कल्याण को सूचन करती है वह गर्जन उनके लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भयका कारण नहीं है किन्तु रोगादि के नाश करने से और बृष्टि को लाने से उनके लिये कल्याण को देने वाली है ॥

विश्वेदेवादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

हस्कारा॒द्वि॒द्युत॒स्पर्य॑तो जा॒ता अ॑वन्तु नः। म॒रुतो॑ मृळयन्तु नः ॥ १२ ॥

हस्कारात्	हास्यमुखात्	हसमुख से
विऽद्युतः	विद्युतः	बिजली से
परि	उपरि (आ० को)	ऊपर
अतः	तस्मात् (सूर्यात्)	उस (सूर्य) से
जाताः	उत्पन्नाः	जन्मे हुए
अवन्तु	अवन्तु	रक्षा करें
नः	अस्मान्	हम को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मरुतः	मरुतः	मरुत
मृळयन्तु	कृपां कुर्वन्तु	कृपा करें
नः	अस्मभ्यम्	हमारे लिये

विद्युतोपरि हास्यमुखात्तस्मादुत्पन्ना मरुतोऽस्मानवन्तु (तथा) अस्मभ्यं कृपां कुर्वन्तु ॥१२॥

भाषार्थः।

बिजली से ऊपर उस हंसमुख से जन्मे हुए मरुत हमारी रक्षा करें (तथा) हमपर कृपा करें॥१२॥

"उस हंस मुख" से तात्पर्य्य सूर्य्य है जो सदा हंसता रहता है। मरुतों की उत्पत्ति बादल और बिजली से ऊपर अन्तरिक्ष में सूर्य्य की किरणों द्वारा है ऐसे मरुत हमारी रक्षा करें। सदा हंसमुख रहना देवगुण है इसका अभ्यास करना चाहिये।

पूषादेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

आ पूषञ्चित्रबर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः। आजा नष्टं यथा पशुम् ॥१३॥

आ	(पूरणः)	--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ पूषन्	हे पूषन्	हे पूषा:
२ चित्रऽबर्हिषम्	चित्रदर्भयक्तम् (श० ब्रा० १।३।३।६)	अद्भुत कुशा से युक्त को
१ आघृणे	आसमन्ताद्घृण योरश्मयोयस्य तत्सम्बुद्धौ	हे चारोंओर किरणों वाले
२ धरुणम्	धारकम्	धारण करनेवाले को
३ दिवः	द्युलोकस्य	द्युलोक के
आ	आ+	--
अज	आ+अज, प्रेरय	प्रेरण करो
नष्टम्	नष्टम्	खोए हुए को
यथा	यथा	जैसे
पशुम्	पशुम्	पशु को

संस्कृतार्थः ।

हे समन्ततो रश्मियुक्त पूषन् चित्रदर्भयुक्तं द्युलोकस्य धारकम् (सोमम्) (अस्मदर्थम्) प्रेरय यथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नष्टं पशुम् (राजा स्वामिनं प्रति प्रेरयति) ॥ १३ ॥

भाषार्थः ।

हे सब ओर किरणोंवाले पूषा (देव) अद्भुत कुशासे युक्त द्युलोक के धारण करनेवाले (सोम) को (हमारे लिये)प्रेरण करो जिस प्रकार खोए हुए पशुको (राजा पशुके स्वामी की ओर प्रेरण करता है) ॥१३ ॥

खोए हुओं को रस्ता दिखाने के गुण से विशिष्ट सूर्य्य भगवान् पूषा कहलाते हैं । जिस प्रकार किसी का पशु खोया जावे तो राजा के कर्मचारी उस पशु को ढूंढकर उसके मालिक की ओर प्रेरण करते हैं इसी प्रकार चारों ओर किरणों से युक्त पूषा देव

(२) सोम को हमारे लिये प्रेरण करें जो सोम अद्भुत् कुशा से युक्त है अर्थात् जिस सोमलता के समीप अद्भुत् रूप वाली वा अनेक रंगों वाली कुशा उगी हुई होती हैं और जो सोम भक्तिपूर्वक ।

(३) मनुष्य से अर्पण किया जाकर देवताओं को द्युलोक के धारण करने में सहायता देता है ॥

वह सोम जिस प्रकार आजकल हमारे मंदभाग्य से नष्ट होगया है इसी प्रकार किसीकारण पहले भी कभी नष्ट होगया होगा इस लिये पूषा देव से प्रार्थना है कि वह सोम को प्रेरण करें ।

अब भो सोम के चाहने वाले इस और अगले मंत्र से प्रार्थना किया करें तो कदाचित् सोम देव प्रगट होजावें ॥

पूषादेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

पूषाराजानमाघृणि रपगूह्ळंगुहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ह्रि॑तम् । अवि॑न्दच्चि॒त्रब॑र्हिषम् ॥१४

पू॒षा	पूषा	पूषा ने
राजा॑नम्	राजानम्(सोमम्)	राजा (सोम) को
आघृ॑णिः	समन्ततोरश्मि-वान्	चारों ओर कि-रण वाले ने
अप॑ऽगूह्ळम्	तिरोहितम्	छिपे हुए को
गुहा॑	गुहायाम्	गुफा में
ह्रि॑तम्	स्थितम्	स्थित को
अवि॑न्दत्	अलभत	पाया
चि॒त्रऽब॑र्हिषम्	चित्रदर्भयुक्तम्	अद्भुत कशा से युक्त को

संस्कृतार्थः।

समन्ततोरश्मिवान् पूषा तिरोहितं गुहायां स्थितं चित्रदर्भयुक्तं राजानम् (सोमम्) अलभत ॥१४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भापार्थः ।

सब ओर किरणों वाले पूषा ने छिपे हुए गुफा में स्थित (और) अद्भुत कुशा से युक्त राजा (सोम) को पाया ॥१४॥

पूर्वकाल में भी पूषा ने ही छिपे हुए सोम राजा को ब्राह्मणों के लिये प्रकट किया था । अब भी वही प्रकट करेंगे । इसमें तनिक सन्देह नहीं है । ब्राह्मणों के इच्छा करने की देर है ॥

पूषा देवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

उतोसमह्यमिन्दुभिः षड्युक्ताँअनुसेषिधत् । गोभिर्यवंनचर्कृषत् ॥१५॥

उतो	अपिच	और
सः	सः (पूषा)	वह (पूषा)
मह्यम्	मह्यम्	मेरे लिये
इन्दुऽभिः	सोमैः	सोमों से
षट्	षट्	छः को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu
पुस्तकालय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

युक्तान्	युक्तान् (ऋतून्)	सुघटित (ऋतुओं) को
अनुऽसेसिधत्	पुनःपुनः प्रापयेत् (लिङर्थे लेट्)	बार २ प्राप्त करावे
गोभिः	बलीवर्दैः	बैलों से
यवम्	यवम्	जौ को
न	यथा	जैसे
चर्कृषत्	पुनःपुनःकृषन् कृषीवल इत्यर्थः	बार २ वाहता हुआ (किसान)

संस्कृतार्थः ॥

अपिच सः (पूषा) मह्यंयुक्तान् षट् (ऋतून्) सोमैः पुनःपुनः प्रापयेत् यथा कृषीवलः बलीवर्दैर्यवम् (प्राप्नोति) ॥१५॥

भाषार्थः।

और वह (पूषा) मेरे लिये सुघटित छः ऋतुओं को सोमों द्वारा पुनःपुनः प्राप्त करावे जैसे बैलों द्वारा किसान जौ को (बार बार प्राप्त करता है) १५

सोम के मिलने से यह लाभ होगा कि जिस प्रकार बैलों द्वारा किसान बार बार जौ को प्राप्त करता है। उसी प्रकार हम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोम अर्पण करके बार २ सुघटित छः ऋतुओं को प्राप्त कर सकेंगे। जिस प्रकार आजकल ऋतु सुघटित न होने से विपरीत हो कर रोग उत्पन्न करती हैं और हमारी जाति नष्ट हुई चली जाती है। ऐसा नहीं होगा। परन्तु सोम से बल युक्त होकर देवता ऋतुओं को मर्यादा पूर्वक चलाने में समर्थ होंगे ॥ मह्यम् "का अर्थ यहां मेरो खातिर" मुझ पर कृपा करके ऐसा प्रतीत होता है ॥

आपोदेवता गायत्रीछन्दः ।८।८।८।

अम्बयोयन्त्यध्वभि र्जामयो अध्वरी-
यताम् ॥ पृञ्चतीर्मधुनापयः ॥१६॥

१ अम्बयः	मातृ(भूता आपः)	माता(रूपीजल)
यन्ति	गच्छन्ति	जाते हैं
अध्वभिः	मार्गैः	मार्गों से
२ जामयः	बन्धवः(निघं४।१)	बन्धु
अध्वरिऽयताम्	अध्वरमिच्छताम्	याग की इच्छा करनेवालों के
३ पृञ्चतीः	संयोजयन्त्यः	मिलातीं हुई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१ मधुना	माधुर्य्येण	मिठास से
२ पयः	दुग्धम्	दूध को

संस्कृतार्थः ।

अध्वर मिच्छतां बन्धवो (सर्वेषां च) मातृ भूताः (आपः) माधुर्य्येण दुग्धं संयोजयन्त्यो (स्वकीयैः) मार्गैर्गच्छन्ति ॥ १६ ॥

भाषार्थः ।

याग की इच्छा करने वालों के बन्धु(और सब के) माता रूपी जल देवी (अपने) मिठास से दूध को मिलाती हुई (अपने) मार्गों से चलती हैं ॥१६ ॥

विनियोग—सोमयाग में एकधना संज्ञक जलों के हविर्धान की ओर लेजाते हुए यह और अगला मंत्र पढ़े जाते हैं प्रविष्ट होने पर तीसरा मंत्र पढ़ा जाता है देखो (आ०श्रौ०सू० ५।१ । १०, १८)

(१)जल हमारी माता हैं—क्योंकि हमारी उत्पत्ति जलों से है (Man is a Marino Animal)—ऐसे माता रूपी जल हमारे उपकार के लिये पृथिवी के ऊपर और नीचे अपने मार्गों पर बहती है (कूपादिका जो जल है वहभी पृथिवीके नीचे धारा रूपसे बहता है)

(२) यह जल देवी यज्ञ की इच्छा करने वालों की बन्धु हैं अर्थात् बन्धु की तरह सहायक हैं यज्ञ में पद २ पर जल की आवश्यकता होती है और बिना जल के कोई यज्ञ नहीं होसका ॥

(३) दूध में जो मिठास है वह भी जल का ही प्रभाव है-इसी लिये गौओं को उत्तम जल देने का उपदेश है (देखो पृ० ३९८)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह ।

तानो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥१७॥

अमूः	अमूः	ये
याः	याः	जो
उप	समीपम्	समीप
सूर्ये	सूर्यस्य (षष्ठ्यर्थे सप्तमी)	सूर्य के
याभिः	याभिः	जिन्होंसे
वा	अथवा	अथवा
सूर्यः	सूर्यः	सूर्य
सह	सह (वर्तते)	साथ (है)
ताः	ताः	वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नः	अस्मदीयम्	हमारे
हिन्वन्तु	प्रेरयन्तु	प्रेरण करें
अध्वरम्	यज्ञम्	यज्ञ को

संस्कृतार्थः ।

अमूर्याः सूर्यस्य समीपम् (अवस्थिताः) अथवा सूर्योयाभिस्सह (वर्तते) ताः (आपः) अस्मदीयं यज्ञं प्रेरयन्तु ॥ १७ ॥

भाषार्थः ।

ये जो सूर्य के समीप (स्थित हैं), अथवा सूर्य जिन के साथ (है) वे हमारे यज्ञ को प्रेरण करें॥१७॥

जैसे इस पृथिवी पर समुद्रादि रूप में स्थल से भी कई गुणा अधिक जल विद्यमान है इसी प्रकार सूर्य्य के समीप भी सूक्ष्म रूप में बहुत जल विद्यमान है। वल्कि यह कहना चाहिये कि सूर्य्य उनके समीप वर्तमान है क्योंकि उनके प्रमाण की अपेक्षा सूर्य्य का प्रमाण कम है। वह दिव्य जल हमारे यज्ञ को प्रेरण करें।

आपोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

अपोदेवीरुपह्वये यत्रगावः पिबन्तिनः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः ॥ १८ ॥

अपः	अपः	जलों को
देवीः	देवी	दिव्यों को
उप	उप+	--
ह्वये	उप+ह्वये आह्वयामि	मैं बुलाता हूं
यत्र	यासु	जिन में
गावः	गावः	गौएं
पिबन्ति	पिबन्ति	पीती हैं
नः	अस्मदीयाः	हमारीं
सिन्धुऽभ्यः	स्यन्दनशीलाभ्यः(अद्भ्यः)	बहने वालों के लिये
कर्त्वम्	कर्त्तव्यम्	करने योग्य
हविः	हविः	हवि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

यास्वस्मदीयागावः पिबन्ति (ताः)आपो देवी राह्वयामि (यस्मात्) स्यन्दनशीलाभ्यः (अद्भ्यः) हविः कर्त्तव्यम् ॥ १८ ॥

भाषार्थः।

जिन में हमारी गौएं पीती हैं (उन) जल देवियों को मैं बुलाता हूं (क्योंकि इन) बहने वालों के लिये हवि करनी है ॥ १८ ॥

और देवताओं की तरह जलों का भी आवाहन करना चाहिये और उनको हवि देनी चाहिये क्योंकि आवाहन और पूजन से ही इनके दिव्य गुण हम में हो सक्ते हैं।

आपोदेवताः पुरउष्णिक छन्दः ।१२।८।८।

अप्स्वन्तरमृतमप्सुभेषज मपामुत

प्रशस्तये। देवाभवतवाजिनः ॥१९॥

अप्ऽसु	अप्सु	जलों में
अन्तः	मध्ये	मध्य में
१ अमृतम्	अमृतम्	अमृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अप्ऽसु	अप्सु	जलों में
२ भेषजम्	भेषजम्	औषध
अपाम्	अपाम्	जलों के
उत	अपिच	और
प्रऽशस्तये	प्रशंसया (तृतीयार्थे चतुर्थी)	प्रशंसा से
देवाः	हे देवाः	हे देवताओ
भवत	भवत	बनो
वाजिनः	वेगवन्तः	वेगवाले

संस्कृतार्थः।

अप्सुमध्येऽमृतमप्सु भेषजम् (अस्ति) अपिच अपां प्रशंसया वेगवन्तो देवा भवत ॥ १९ ॥

भाषार्थः।

जलों के बीच में अमृत (है) जलों में औषध (है) जलों की प्रशंसा से वेगवाले देवता बनो ॥१९॥

(१) जलों के बीच में अमृत है इस लिये तुम जलों की स्तुति से मृत्यु को जीत सके हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) जलों के बीच में भेषज है तुम उनके उचित प्रयोग से सब रोगों को जीत सक्ते हो यही नहीं किन्तु ॥

(३) जलों की स्तुति से वेग वाले देवता बन सक्ते हो जलों में अमृत देव भाव को और भेषज वेग को देने वाला है—(जलों की अद्भुत शक्ति सायंस को आजकल प्रकट हो रही है) "देवाः" इस में स्वर, सम्बोधन अर्थ की निवृत्ति करता है इस लिये यही अर्थ हो सक्ता है जो ऊपर दिया है यदि "प्रशस्तये" का अर्थ स्तुति के लिये करें—तो यह अर्थ होगा कि जलोंकी स्तुति के लिये देवताओं जैसे वेग वाले बनो ॥

आपोदेवता अनुष्टुप् छन्दः । ८।८।८।८।

अप्सुमेसोमोअब्रवी दन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निञ्चविश्वशम्भुव मापश्चविश्वभेषजीः ॥ २० ॥

अप्ऽसु	अप्सु	जलों में
मे	मह्यम्	मेरे ताईं
सोमः	सोमः	सोम ने
अब्रवीत्	अब्रवीत्	कहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तः	मध्ये	बीच में
विश्वानि	सर्वाणि	सब को
भेषजा	औषधानि	औषधों को
अग्निम्	अग्निम्	अग्निको
च	च	और
विश्वऽशम्भुवम्	अखिलसुखकरम्	सब सुख देने वाले को
आपः	अपः	जलों को
च	च	और
विश्वऽभेषजीः	सर्वभेषजीः	सब प्रकार के आरोग्य देने वालों को

संस्कृतार्थः ।

अप्सुमध्ये सर्वाण्यौषधानि (सन्तीति) मह्यं सोमो (देवः) अब्रवीत्(तथा) अखिल सुख करमग्निञ्च, सर्वौषधवतीरपश्च ॥२०॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थः ।

जलों के बीच में सब ओषध (हैं यह) मुझे सोमने कहा है और सब सुखों के देने वाली अग्नि को और सब प्रकार के आरोग्य देने वाले जलों को मुझे बतलाया है ॥ २० ॥

मेधातिथि ऋषि को सोम देवता ने इस गूढ ज्ञान को प्रकाशित किया कि जलों में सब रोगों की औषध है अर्थात् जल के प्रयोग विशेष से सब रोग निवारण होसक्ते हैं और यह भी ज्ञान दिया कि अग्नि सब सुखों के देने वाली है अर्थात् अग्नि के यथोचित सेवन से सब दुःख दूर होसक्ते हैं जल के सम्बन्ध में इस उपदेश का यह तात्पर्य्य है कि अग्नि के प्रयोग का उत्तम उपाय जलद्वारा है, इस का कारण यह है कि जितनी अग्नि जल में समासक्ती है और इस लिये जितनी गरमी उष्ण जल से मिल सक्ती है उतनी और किसी पदार्थ से मिलनी सम्भव नहीं, जल के एक दर्जा भर शीतल होने से जितनी गरमी मिल सक्ती है उतनी सुवर्ण वा पारे वा सीसे के ३० दर्जे शीतल होने से नहीं मिल सक्ती "आपश्च, विश्वभेषजीः" मंत्र के आदि में कही हुई बात का यह दुबारा उपदेश उसी बात को निश्चय कराने के लिये है, आजकल पश्चिमी जल चिकित्सिक (Hydropathists) भी यह कहते हैं कि यदि किसी रोग की चिकित्सा जल से न होसके तो निश्चय जानो कि किसी ओषधि से भी नहीं हो सकेगी।

आपोदेवता गायत्रीछन्दः ८।८।८।

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्योक्चसूर्यंदृशे ।२१ ॥

आपः	हे आपः	हे जलो
पृणीत	पूरयत	भरो
भेषजम्	भेषजम्	औषध को
वरूथम्	तनुत्राणम्	शरीर की रक्षा करनेवालेको
तन्वे	शरीरे	शरीर में
मम	मम	मेरे
ज्योक्	चिरम्	चिरकाल
च	(पूरणः)	-
सूर्यम्	सूर्यम्	सूर्यको
दृशे	दर्शनार्थम	देखने के लियें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृतार्थः।

हे आपः (यूयम्) चिरं सूर्यदर्शनार्थं मम शरीरे तनुत्राणं भेषजं पूरयत॥ २१ ॥

भाषार्थः।

हे जलो (आप) चिरकाल तक सूर्य के दर्शन करने के लिये शरीर की रक्षा करने वाले औषध को मेरे शरीर में भरो ॥२१॥

स्नान वा आचमन करते समय यदि इस मंत्र से प्रार्थना की जाय तो सम्भव है कि चिर रोगी भी स्वास्थ्य को प्राप्त करलेवे।

आपोदेवता अनुष्टुपछन्दः ८।८।८।८

इदमापःप्रवहत यत्किञ्चदुरितं

मयि। यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वाशप

उतानृतम् ॥ २२ ॥

इदम्	इदम्	इस को
आपः	हे आपः	हे जलो
प्र	प्र+	—

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वहत	प्र+वहत	बहा दो
यत्	यत्	जो
किम्	किम्+च	कुछ भी
च	+च	–
दुःऽइतम्	दुरितम्	पाप
मयि	मयि	मेरे में
यत्	यत्+	–
वा	यत्+वा	अथवा
अहम्	अहम्	मैंने
अभिऽदुद्रोह	द्रोहंकृतवान् (अस्मि)	द्रोह किया है
यत्	यत्+	--
वा	यत्+वा	अथवा
शेपे	शप्तवान्	गाली दी है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत	अपिच	और
अनृतम्	अनृतम्	झूठ को

संस्कृतार्थः ।

हे आप इदं प्रवहत यत्किञ्च मयिदुरितं यद्वाऽहमभिद्रोहं कृतवान् यद्वा (अहम्) शप्तवान् अनृतञ्च (प्रवहत) ॥२२॥

भाषार्थः ।

हे जलो इस को बहादो जो कुछ मुझ में पाप है जो कुछ मैंने द्रोह किया है जो कुछ मैंने गाली दी है और झूठ को ॥२२॥

विनयोग—यज्ञ के अन्त में इस मंत्र और "सुमित्रिया न आप ओषधयः" इस से अवभृथ स्नान किया जाता है ॥

यह मंत्र नदी में नित्य स्नान करते समय जपने के योग्य है इस में प्रार्थना है कि जिस प्रकार मिट्टी तृण, शरीर के पसीने इत्यादि को जल बहा कर ले जाते हैं इसी प्रकार हमारे झूठ को हमारे पाप को हमारे द्रोह (किसी का बुरा चींतने) को मन में वा जिह्वा से किसी को "तेरा बुरा हो" इत्यादि गाली देने के हमारे स्वभाव को, बहाकर हम से दूर करें बार २ प्रार्थना करने से ही मनुष्य किये हुए पापको धो सक्ता है और आगे के लिये अपनी आत्मा को पाप से अजेय (invincible) बना सक्ता है ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्धर्च आपो देवता अर्धर्च पयस्वानग्निर्देवता
अनुष्टुप् छन्दः । ८ । ८ । ८ । ८ ॥

आपो॒ अ॒द्यान्व॑चारिषं॒ रसे॑न॒ सम॑
गस्महि । पय॑स्वानग्न॒ आग॑हि॒ तं
मा॒ सं सृ॑ज॒ वर्च॑सा । २३ ।

आपः	अपः	जलों को
अ॒द्य	अद्य	आज
अनु	अनु +	--
अ॒चा॒रि॒षम्	अनु+अचारिषं प्राप्तवानस्मि	मैंने प्राप्त किया है
रसे॑न	रसेन	रस से
सम्	सम् +	--
अ॒ग॒स्म॒हि॒	सम् + अगस्महि सगतास्स्मः	हम संगत हुए हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पयस्वान्	पयस्सहितः	जलों के सहित
अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
आ	आ +	--
गहि	आ+गहि आगच्छ	आओ
तम्	तम्	उस को
मा	माम्	मुझ को
सम्	सम् +	--
सृज	सम्+सृज संयोजय	युक्त करो
वर्चसा	तेजसा	तेज से

संस्कृतार्थः ।

अद्य (अहम्) अपः प्राप्तवानस्मि (वयम्) रसेन सङ्गतास्स्मः हे अग्ने पयस्सहितः(त्वम्)आगच्छ तम्मां तेजसा संयोजय ॥ २३ ॥

भाषार्थः ।

आज (मैंने) जलों को प्राप्त किया है (हम)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रस से संगत हुए हैं हे अग्नि जलों के सहित आइए उस मुझ को तेज से युक्त कीजिये ॥ २३ ॥

इस मंत्र के प्रथम पाद में एक वचन और द्वितीय में बहु वचन का होना सिद्ध करताहै कि अपने लिये प्रार्थना करने में उन को जिन में हम रहते हैं नहीं विस्मरण करना चाहिये व्यक्ति का कल्याण जाति के कल्याण के साथ बंधा हुआ है बिना जाति के उन्नत हुए व्यक्ति चाहे कितना ही व्यवसाय करे उन्नति के उस शिखर को नहीं पहुंच सक्ती जिस को एक उन्नत जाति की व्यक्ति पहुंच सक्ती है ॥

ऋचा के द्वितीयार्द्ध में "पयस्वानग्नि" अर्थात् जलों के साथ मिले हुए अग्नि से तेज के लिये प्रार्थना है इस से यह शिक्षा भी मिलती है कि आग्नेय और जलीय शक्ति से मिले हुए पदार्थ (जैसे दही) के सेवन से तेज की प्राप्ति होती है ।

अग्निर्देवता अनुष्टुप्छन्दः ८।८।७।९।

संमाग्नेवर्चसासृज संप्रजयासमा

युषा । विद्युर्मेअस्यदेवा इन्द्रोविद्या

त्सहऋषिभिः ॥ २४ ॥

सम्	सम्+	--
मा	माम्	मुझ को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्ने	हे अग्ने	हे अग्नि
वर्चसा	तेजसा	तेज से
सृज	सम्+सृज संयोजय	जोड़ो
सम्	सम् (सृज)	जोड़ो
प्रजया	प्रजया	प्रजा से
सम्	सम् (सृज)	जोड़ो
आयुषा	आयुषा	आयु से
विदुः	जानीयुः	जानें
मे	माम् (द्वितीयार्थे षष्ठी)	मुझ को
अस्य	एनम् (द्वितीयार्थे-षष्ठी)	इस को
देवाः	देवाः	देवता
इन्द्रः	इन्द्रः	इन्द्र
विद्यात्	विद्यात्	जाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स॒ह	सह	साथ
ऋषि॑ऽभिः	ऋषिभिः	ऋषियों से

संस्कृतार्थः ॥

हे अग्ने मां तेजसा संयोजय प्रजया सम् (सृज) आयुषा सम् (सृज)एनं मां देवा विद्युः ऋषिभिश्च इन्द्रः (च)विद्यात् ॥ २४ ॥

भाषार्थः ॥

हे अग्नि मुझ को तेजसे युक्त करो प्रजा से युक्त करो आयु से युक्त करो इस मुझ को देवता जानें और ऋषियों के सहित इन्द्र जानें ॥२४ ॥

(१) अग्नि देवता तेज सन्तान और आयु के देने वाले हैं ॥

(२)देवता मुझे ऐसा जानें अर्थात् तेज सन्तान और आयुसे युक्त को जानें इन्द्र और सप्तर्षि जो आकाश में चमकते हैं मुझे तेज सन्तान और आयु से युक्त को जानें अर्थात् मैं अवश्य इन से युक्त होजाऊं ॥

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY पुस्तकालय
Acc. 25023 / 29053

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu